

जोने जापना पक्ष उगोरायधी या परलोकायधी काम फुट कर सका है, हमी कारण जगयान् धीत
 रागा नी हे न पुनः (= यने आयुगळे) गौतम ऐसा कहक आयुको सय गुणों से घना दिसलाया है,
 और नी अनुनात्म क लपुना से और अनुक्रमक उदय से धमकी रुचि, धर्म का उपदेश करने वाला गुसु
 और उरक यगा या गुनना मित्रजाने पर नी देय गुरु धम रूप तत्यपर सच्ची श्रद्धा होना यज्ञत दुर्जन
 २. निनात्त मयपर मगी यदा होना यही मय्यक्त है, और सय तो मिय्याहृष्टियो की नी होता है, यह
 तय अनुनात्म के सम होजान और अनुक्रमं यदन स जीयको मिलते हैं, इस हेतु अयुजकर्म का क्षय और
 नुनात्म क यदा में पद्य करना अयशय है, अयुजकर्मका क्षय और ज्ञान की यदाने के लिये धर्म के सया
 प और दाद तो यद्य नहीं है, इस हेत धर्म करो २ धर्म ही का संयन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध
 कता में योंक तरह न परिग्रन करत हा फुट काठ धर्म के वास्ते नी परिग्रम करते रहो, कारण के धमी
 पाम गवा यत पाठे पुरुष) की इद्र आदि देयता नी केवल प्रशमा, अनुमोदना और नक्ति करके अय
 ना नम मरुड करन हैं, इतनी श्रद्धि पाके नी उन को धर्म का संयन करना दुर्जन है और नी धमी को
 ग्रिग्रन की लपुना, कलपुद्र, चिनामणि और कामधेनु आपसे दास हो मिलते हैं, तो पुत्र मित्र कलत्र
 पर मजारी और राज्य मिठाना क्या नही चीज है ? धर्म नयन करने वाले का दो घनी का जीना नी
 नरुड और कायंकारक है, परन्तु धमहीन (यपांतु पेय, अयेय, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, नक्ष्य

और अन्नद्वय इत्यादि विचार रहित) का कोटाकोटि यर्प जीना भी निष्फल और अकिंचित्कर है, पशुचत्
 क्षपना छाया पूर्ण कर मरता है, इन्द्रिय का निग्रह कराने वाला, सकल कल्याण और सुगति का कारण,
 नवसागर तरन के लिये नौका रूप तीर्थंकरों का कहा जाया केवल धर्म ही है और धर्म का मूल दया "वि
 ना मतलब पराये दुख को दूर करने की इच्छा" है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं,
 इसलिये दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है। जैनदर्शन में दया के अनेक "स्वदया परदया द्रव्यदया भावदया नि
 श्रयदया व्यग्रद्वारदया स्वरूपदया अनुबध्ददया," जेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्वदर्शनी दया का उपयोग
 रखत हैं परन्तु सर्वज्ञो दया का उपयोग तो जैनदर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैनमत श्रेष्ठ भी कहाता
 है, दयाके सर्वांश उपयोग होनेकी रीति यही है कि जैसे मोजन के वास्ते कोई एक पक्कान्न बनाया जाय
 तो धृत पिष्ट धोनी इत्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होनेपर भी यथाविधि यथार्थ ए
 कछा होने से तथाविध स्वादिष्ट पक्कान्न तयार होता है परन्तु हीनाधिक वस्तु होजाने से कदापि वैसा
 पक्कान्न नहीं होता तैस ही यथाविधि दया पायीजाय तो तथाविध धर्मोपलब्धि होय, यद्यपि सर्वदर्शनी
 में दयाका मान है परन्तु उसके स्वरूप में फेरफार कर देने से गतप्राय (अर्थात् अकिंचित्कर दया) है, जत्र
 के उसका स्वरूपही ज्ञाखानुसार यथार्थ नहीं जानसक्ते हैं तो पालन करना कैसे हो सके, फेरफार असा के
 कोई कहते हैं पशुप्राणघात अर्थात् पशुजन्म से लोछाना दया है, कोई जिस जरीर को धारण करके जीव

गुरी १ होय प्रचुन दृगित होय व्याधिग्रस्तादि दीप युक्त होय तो छीसे प्राणीको तादृज शरीर से मुक्त कर
 रण नी दया ही है, कोइ मूढ़न अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख दते हैं उनका नाश करना दया है,
 कोइ पाणि पागादिक में प्राणियधरुने से नी पुण्य मानत हैं और कोइ स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहत
 है, दुग गरद दया का उपयोग अन्यदार्जनी रखते हैं लेकिन यह ज्ञम है, और अकरीत से—आचारधर्म दया
 पर त्रिपाथम और धनुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारों धर्मों के दान शील तप और चाय
 पार शरन हैं, तप धनयल होय तो दान होय, मनयल होय तो शील पाछा जाय, शरीरयल होय तो
 तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो चाय होय, यह ज्ञाधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के ज्ञा
 यधर्म का शरन ज्ञानयल है “जिस्से यस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं”, ज्ञानसे जैसी
 धारणा की यदि और नरदृग होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमा
 न, मास अनुपाग का यिगर, सप्तमगो, पुरुद्रव्ययिचार, अद्विक सर्व ज्ञानहीसे जीवकी परिपूर्ण प्राप्त हो
 न है। दार्शनिक में उल्ला है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्षेत्ररूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दा
 मो है और नक्षेत्री तथा जरत महाराज वैसी अवस्थामें जी रहके जो कर्म विमुक्त जाए यह ज्ञानहीका
 माशाम्य है, ज्ञानही तो तीक्ष्णता सोही अयधचारित्र है, जो निष्काचित कर्म कोटियर्यपर्यंत दानादि कर
 नेमें नी नष्ट नहीं होता वह ज्ञानी के एक स्वासोस्वास में नष्ट होशका है इसीलिपु ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

और क्रियागुरु की पीपल के पान ऐसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त अहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्त क्रिया का मूल श्रद्धा नहीं होते यह कारण ज्ञानोपार्जन के लिए अशुभय यत्न करना चाहिए ज्ञानके पाच चेट--म त्ति श्रुत अर्वाधि मनपर्यव और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सत्यसे अर्थकोपयोगी है क्योंकि यह पदार्थमान लोकालोक स्वमत परमत का प्रकाशक अज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य और दुस्समकालरूप रात्री में दीप सदृश है, उद्देश समुद्देश्य अज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धान को प्राप्ति होती है इसे शुद्धात्माका आचरण आसेवन अनुभवन होता है और इससे परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल में श्रीगौतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए वर्तमान में महाविदेहक्षेत्र से विरहमान जिनन्द्रो से सुनके जीव मुक्त होते हैं, आगामिकालमें पद्मनाभ आदि तीर्थकरोसे सुन अनेक जीव मुक्त होगे, इत श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छना परावर्तना अनु प्रेक्षा और धर्मकथा होती है, श्रीउवाई सुत्रमें धर्मकथा चार प्रकार की कही है--आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदिनी और संवेदिनी, जिससे तत्त्वमार्ग में प्रवृत्ति होय उसको आक्षेपिणी, जिससे मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उसकी विक्षेपिणी, जिससे मोक्ष की अमिलापा होय उसको निर्वेदिनी, जिससे वैराग्य की भावना होय उसकी संवेदिनी कहते हैं वह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री अरिहन्त देवाधिदेव तीर्थकर परमेश्वर समवसरणमें बैठ "उपन्नेहवा विगमेहवा धुवेहवा", त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं और त्रिपदी से ही गणधर द्वादशांग

गुणी ७ होय प्रपुन नृ गित होय व्याधिग्रस्तादि दोष युक्त होय तो ऐसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्त कर
 द्या नी द्या ही है, कोई मूढ़न अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख दत हैं उनका नाश करना द्या ही,
 शत्रु पाल पागादिक में प्राणियध करने से भी पुण्य मानत हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को द्या कहत
 है, इग गरद द्या का उपयोग अल्पदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम है, और एकरीत से—आचारधर्म द्या
 धर्म क्रियाधर्म और यन्धुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मों के दान शील तप और ज्ञाव
 पार शरत्र हैं, अथ धनग्रह होय तो दान होय, मनयल होय तो शील पाला जाय, शरीरखल होय तो
 तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो ज्ञाव होय, यह ज्ञावधर्म दान शील तप से ग्रंथ है किसवास्ते के ज्ञा
 धर्म का कारण ज्ञानग्रह है “जिसे वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं”, ज्ञानसे जैसी
 व्यावृत्त की युधि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमा
 न, पाषा अज्ञान का यिहार, सप्तनगी, पञ्चद्वययिहार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त हो
 त है। दर्शनार्थिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल केन्द्ररूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी वा
 मो है, और नक्षेत्री तथा चरत महाराज वैसी अवस्थामें भी रहके जो कर्म विमुक्त जाए यह ज्ञानहीका
 नाशरम्भ है, ज्ञानभी जो तीक्ष्णता सोही अग्रथचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटियर्थपर्यंत दानादि कर
 तेसे भी नष्ट नहीं होता यह ज्ञानी के एक स्वासीस्वास में नष्ट होजाता है इसीलिपु ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

भूमिका ।

—०—

पसखणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द सस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होता है ।

प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकृतिसे (ज्ञा) जानिय (प) पदार्थ जिस्से सो मज्ञापना अर्थात्—समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नहीं करसक्ते केवल तीर्थकर ही यथावास्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावास्थितस्वरूप निरूपण कर्के शिष्योकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिस्से यह प्रज्ञापना कहाती है । यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोको शिष्य की बुद्धि में आरोपण कर्ते हैं परन्तु यथाथ स्वरूप “जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप”, निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नहीं और वह पदार्थ का यथावास्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इससे इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थकहै ।

समवायाङ्ग में कहे जाए पदार्थो का निरूपण इसमें है इससे समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥
कहे का फिरसे कहना निरर्थक है ऐसा नहीं, क्यो कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

की रक्षा करने हैं (उन्को सूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान
 मयापकारी है इमतिष्ठ इस्की यदि और सरक्षण के हेतु प्रयत्नय यत्न करना चाहिये वर्तमान कालमें जितने
 ज्ञानादि के उपाय है मय से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानयुद्धि की अति उत्कृष्ट
 लोत सुगम रीति की स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योंने यह परोपकार के हेतु ग्रथ बनाये हैं
 इसका प्रणिष्ट करना हर एक विद्वानोंको देना इससे अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है , यही सब
 पारलोग शोभुशिशयाद निरासी शोराय धनपातिसिंह बहादुर ने १५ आगम कृपाके हरेक जगे भग्न
 स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इसके करने को प्रयत्न होय के जिस्से पुन जैनमत युवायस्या को
 प्राप्त होय इति शम् ॥ ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

भूमिका ।

—०—

पसवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द ससृष्ट शब्दको आवेष्टा निर्देश करने से सिद्ध होता है । प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकर्षसे (ज्ञा) जानिय (प) पदार्थ जिसे सो प्रज्ञापना अर्थात्—समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नहीं करसक्ते केवल तीर्थकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण कर्के शिष्योकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिसे वह प्रज्ञापना कहाती है । यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोको शिष्य की बुद्धि में आरोपण कर्ते हैं परन्तु यथार्थ स्वरूप “जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप”, निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नहीं और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इससे इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थक है । समवायाह्न में कहे जाए पदार्थो का निरूपण इसमें है इससे समवायाह्न चतुर्थ अह्न का उपाह्न है ॥ कहे का फिरसे कहना निरर्थक है औसा नहीं, क्यो कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

को रखा करते हैं (उसको मूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सय श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान
 मयापगारो है इन्द्रादि इसकी दृष्टि और सरक्षण के हेतु अथत्रय यत्न करना चाहिये वर्तमान कालमें जितने
 ज्ञानदृष्टि के उपाय है मय से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट
 द्वाते सुगम रीति को स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योंने बड़े परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रथ बनाये हैं
 द्वायाने प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको देना इससे अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है, यही सय
 कारण आप श्रीमुनिदायाद निरासी श्रीराय धनपतिसिंह ब्रह्मादुर ने १५ आगम छपत्राके हरेक जगे भट्टार
 रखापन दिये हैं आप लोग भी ययाशक्ति इसके करने को प्रवृत्त होय के जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को
 प्राप्त होय इति शम् ॥ ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

भूमिका ।

—०—

पुखवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द सस्कृत शब्दको आवेग निर्वेग करने से सिद्ध होता है । प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकरणसे (ज्ञा) जानिय (प) पदार्थ जिसे सो प्रज्ञापना अर्थात्-समस्त द्रव्यनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नहीं करसके केवल तीर्थकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण करके शिष्योकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीन आवेक पदार्थ जिसे वह प्रज्ञापना कहाती है । यद्यपि अन्यवर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोको शिष्य की बुद्धि में आरोपण कर्ते हैं परन्तु यथाथ स्वरूप "जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप", निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नहीं और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इससे इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थक है । समवायाङ्ग में कहे जाए पदार्थो का निरूपण इसमें है इससे समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है कहे का फिरसे कहना निरर्थक है जैसा नहीं, क्यो कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना ॥

सम्पत्ति पाते शिष्य लोगों के नाशुह के लिये होता है उसे सार्थक है निरर्थक नहीं ।

यह प्रपञ्च नामक उपाद् भी नय गीय अजीय आविक पदार्थों के ज्ञासन (कहने) से ज्ञास्त्र है और मात नो ज्ञास्त्र म युद्धिमान् पुरुषा को प्रयुक्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये यह या युधा कष्टशायामर्दन को तरह कोई भी इस्में प्रयुक्त न होगा ॥

इसमें प्रपञ्च दो प्रकार है, यैरु पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्मागत श्री मागत होने न डा प्रकार है, तथा द्रव्यास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के गीय दाजाने से कर्मा का लभाय हो है 'जैमा के कहा है—यह द्वादजागी कधी नहीं थी कधी है कधी न जागी तेमा नही (दिन्नु) धुय है नित्य है ज्ञास्वती है" ॥

प्रपञ्चागिहाय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सद्भाव अवश्य होगा, तत्पट्टिसे देखिये तो आगम सून और अर्थ उभयरूप है इसलिये अर्थ को अपेक्षा से नित्य और सूत्र को अपेक्षा से अनित्य होने ने कर्मा का अवश्य सद्भाव है ॥

सम्पत्ति का अनन्तर प्रयोजन सत्यानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अप्रयंगमप्राप्ति है "कहा है—के जो दुखी लोगों को सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश के कृपा करते हैं वो योद्धेही काल में मुक्त हो जाते हैं," अर्थ ये कहनेवाले थरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यों के यह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन बिना अर्थरूप से कहने

का परिश्रम भी व्यर्थ है विनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये औसा न कहो, कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामकम क विपाक का उदय से होता है “कहा है के-तीर्थंकरनामकर्म अगलान धर्मदज्ञाना के देने ही से भोगा जाता है” अर्थात्-तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मदज्ञानाव्यापार होता है उसकर्म का यह भोगही है कोई प्रयोजन अष्मदादिवत् उनकी नहीं है ।

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उसके अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विद्यद्वित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते हैं, विरक्त होके ससार से निकलने की इच्छा से सयममार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं, यथागम सयम मार्ग में प्रवृत्त होने से सयम का प्रकर्ष होता है उसे सकल कर्मद्वय और उसे मोक्षप्राप्ति होती है, लिखा है के-सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में श्यायक्त और क्रिया में श्यायक्त होने से परमगति की पञ्जचते हैं ॥ इस ग्रन्थ में श्रजिधेय जीव श्रजीव पदार्थ का स्वरूप है ।

सम्यन्ध दो प्रकार है उपायोपेय भावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण, तथा पहिला नैयायिक के-जैसे कि यचनरूपापन्न प्रकरण उपाय और उम प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के-जैसा के सूत्रकार श्राने कहेंगे, जानना चाहिये ॥

सम्प्रयुक्ति वाले शिष्य लोगो के अनुग्रह के लिये होता है उससे सार्यक है निर्यक नहीं ।
यह प्रभाव नामक उपाह भी नय गीय अजीय आदिक पदार्थों के ज्ञासन (कहने) से ज्ञास्व है और
भार को आदि स युद्धिमान् पुरुषों को प्रयुक्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अयय्य कहना

चाहिये । इस ता युवा कटकजागामर्दन की तरह कोई भी ठस्में प्रयत्न न होगा
इस प्रयोग को प्रसार है, एक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्तागत श्री
सागत होने से का प्रसार है, तथा द्रव्यास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के

नित्य ज्ञाज्ञाने से कर्त्ता का अभाव ही है "जैना के कहा है—यह द्वावचागी कधी नहीं थी कधी है कधी
न हागी ऐसा नहीं (किन्तु) भुय है नित्य है ज्ञास्वती है"
पर्यायान्तिकनय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सद्भाव अयय्य होगा, तत्त्वदृष्टिसे

देरिये तो आगम सृष्ट और अर्थ उभयरूप है इसलिये अर्थ की अपेक्षा से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से
अनित्य होने से कर्त्ता का अयय्य सद्भाव है ॥

संप्रकृता का अनन्तर प्रयोजन सत्यानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपयर्गप्राप्ति है "कहा है—कैसे जो दुखी
भीषों को गर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश देके कृपा करते हैं वो योहेही काल में मुक्त हो जाते हैं," अर्थ

से कहो थाले स्मरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यों के यह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन बिना अर्थरूप से कहने

का परिश्रम भी व्यर्थ है विनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये ऐसा न कहो, कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामकर्म के विपाक का उदय से होता है “कहा है के-तीर्थकरनामकर्म अगलान धर्मदज्ञाना के देने ही से भोगा जाता है,” अर्थात्-तीर्थकरनामकर्म आधीनता से धर्मदज्ञानाध्यापार होता है उसकर्म का वह भोगही है कोई प्रयोजन अष्टमदाविवत् उनको नहीं है ।

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उसके अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विवक्षित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते हैं, विरक्त होकर ससार से निकलने की इच्छा से सयममार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं, यथागम सयम मार्ग में प्रवृत्त होने से सयम का प्रकर्ष होता है उसे सकल कर्मद्वय और उसे मोक्षप्राप्ति होती है, लिखा है के-सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में श्लाघ्य और क्रिया में श्लाघ्य होने से परमगति की पञ्चवर्ते हैं ॥ इस ग्रन्थ में अजिधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है ।

सम्यन्ध दो प्रकार है उपायोपेय ज्ञावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण, तथा पहिला नैयायिक के-जैसे कि यचनरूपापन्न प्रकरण उपाय और उस प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के-जैसा के सूत्रकार श्रुति कहेंगे, जानना चाहिये ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे रूप श्रया नृत है तोन्नी त्रिपु को ज्ञान्ति के लिये श्रादि मध्य शौर श्रान्त मे मगल कहाजाता है ॥

यत्र ही श्रादि मे मङ्गल निर्ययत्र शास्त्रपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल श्रयगृहीतशास्त्र की स्थितिके लिये है, और गुप्तमगल शिव्य प्रशिव्यो के शास्त्र श्रय्यत्रच्छेद हो इसलिये है ॥

तभीग पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमे जोय श्रजीव श्राश्रय यन्ध सवर निजरा शौर मोक्ष का प्ररूपण किया है तदा प्रज्ञापना यज्जयक्तव्यता विशेष घरमपरिणाम सज्ञक पाच पदमे जीव श्रजीव की प्रज्ञा पना, प्रयोगपद और क्रियापद मे श्राश्रय (काय वचन मन कर्मयाग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमे यन्ध प्रज्ञापना, ममसुधातपद मे सवर निजरा यन्ध शौर मोक्ष की प्ररूपणा, वाकी स्यान श्रादि पदमे कहीं क्रिमी हीनी प्रज्ञापना कीहे, ॥

अथवा इम्म द्रव्य क्षेत्र फाल शौर भाव की प्रज्ञापना है क्योंकि इन चारपदार्थो के सेवाय और कोई प्रज्ञाप नीप पदार्थ नहीं है इही पदार्थो के जानने से तत्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पढने पढाने मे अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढने का अधिकार उसको है जोके मोक्षमार्ग का धर्मि लापी शौर गुरुका आज्ञाकारी हो, और इसके देने का अवशर भी यही है। इतिश्राम् ॥

यनारस जैनप्रमाकर प्रेस नानकचद यती ।

॥ विज्ञापनम् ॥

—०—

स्वाद्योदूयकगोत्रकपुत्रयुग्माः श्रीबीरदासानिघस्तापुत्रोभुचसिञ्जकजितयश्चारसूक्तदीयोगुहोः । स्मातःश्रीलमतापसिद्धविजयी ज्ञायोतुरीयासती
तस्यभोमइतायनामविदिताकुहस्तादीयादज्ञूत् ॥ १ ॥ सद्यारकीर्तिसदारचमदृढधी संक्लीपतेः सादर श्रीमद्रायदशतुरोचनपति विश्वेगुणयामयी ।
श्रीलीलागमसङ्गुहसमकरोल्लोकोपकरयैचिरम् टीकावागताबसुतमुसितपित्रिःसंमुद्रयित्वाशुभम् ॥ २ ॥ कत्वापव्यस्ततस्यसेपुत्रपुनस्तावगत्यहोपुस्तका गा
राक्षेपुत्रपुस्तकानिसुबलाभ्यस्यापपरसादरम् । कुवन्त्वागमपाठनञ्चपठनं सत्स्वाधवाश्रावकाः स्थिरयैश्रीजितशासनस्यचपुनविज्ञानचमंदये ॥ ३ ॥
नामःपञ्चदशयुतस्यगुसकःप्रद्यापनास्मोपुमा नानापुस्तकपाठनेदयदुतोसेसप्रमादादपि । दुवाप्यःसुनुवृत्तिवागसकपुतपाठस्तथाप्राक्तम श्रीमत्पुस्तित
रामचन्द्रगणितज्ञातप्यशुध्यामया ॥ ४ ॥ सद्योप्यातिपरिश्रमेकनितरी चावशरुमेंद्रुनते स्यात्तापिचकिञ्चिदीलुबगतोन्मादादमुदयदि । चागत्वा
श्याप्यमुदारयुविभवेतिशब्देःकपादुष्टितो सिष्यादुक्तमस्तुमयवचसासम्प्राप्यय सकनान् ॥ ५ ॥

—०—

यमारस

जैनप्रजाकर

मानवचमन्द यती

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परंपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वयं प्रया नूत है तोनी विघ्न की शान्ति के लिये छादि मध्य और अन्त में मगल कहाजाता है ॥

ग्रन्थ की आदि में महल निर्विघ्न शास्त्रपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल अथगृहीतशास्त्र की स्थितिके लिये है, और अन्तमगल शिष्य प्रशिक्ष्यो के शास्त्र अथ्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

तत्तीस पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमें जीव अजीव आश्रय वन्ध सवर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तथा प्रज्ञापना यज्ञयत्कथ्यता विशेष चरमपरिणाम सक्षक पाच पदमें जीव अजीव की प्रज्ञा पना, प्रयोगपद और क्रियापद में आश्रय (काय वचन मन कर्मयाग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमें वन्ध प्रज्ञापना, समुद्रयातपद में सवर निर्जरा वन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, बाकी स्थान आदि पदोंमें कहीं किसी भीसी प्रज्ञापना की है, ॥

अथया इसम द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की प्रज्ञापना है क्योंकि इन चारपदार्थों के संघाय और कोई प्रज्ञाप नीय पदार्थ नहीं है इसी पदार्थों के जानने से तत्त्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पढ़ने पढ़ाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढ़ने का अधिकार उसको है जोके मोक्षमार्ग का अभी सापी और गुरुका आज्ञाकारी हो, और इसके देने का अवसर भी यही है। इतिश्राम् ॥

यनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकछद् यती ।

विषय और प्रश्नादि	विषय और प्रश्नादि	पत्राक	पत्राक
पृथ्वीकाय के जेद	(चतुरिन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्त०)	२३	४६
सृष्काय के जेद	पंचेन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्तवणा चार	२७	४७
तेजस्काय के जेद	गति के जेद से चार प्रकार	२८	
वायुकाय के जेद	नारकी सात जेद	२९	
वनस्पति काय के जेद	तिर्यग्योनिः त्रिविध जल यल खचर, इनके जी	२९	४७
(एकेन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्तवणा कही)	जेद मच्छादिक, उनके जी जेद विस्तार से कहे		
	(तिर्यग्योनिः पंचेन्द्रिय ससार समापन्न०)		
द्वीन्द्रिय ससार समापन्न जीव के अनेक जेद	मनुष्य के जेद दो समूर्च्छिम गर्जन, कहा वह	४३	
(द्वीन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्तवणा)	पैदा होते है किस्तरह होते है इत्यादि एकोरु		
त्रीन्द्रिय पन्तवणा के अनेक जेद उवाइया इत्यादि	आदि जेद, शक यवन आदि जेद, आर्य ४	४५	४८
(त्रीन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्तवणा कही)	इत्यादि		
चौरिन्द्री पन्तवणा के अनेक जेद अथिय पोसि	ब्राह्मी लिपि में १८ तरह का लेख्य विधान है		६२
य इत्यादि	(मनुष्य पंचेन्द्रिय ससार समापन्न जीव प०)	४५	

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादसम्बद्धविप्रकाशितपरमेश्वर श्री ५ रायचल
पतिविहवशादुरसु सविनयनावेदनम् ।

आगे, मैंने तुम्हारे पाप की ऐसी इच्छा है कि पैंतासियों कीनाम
को पुस्तकें भूम टीका और प्रापाटीका सहित पाप ५ की बापी को
और सापु मावकों के पटन पाठन के लिये पाचसों स्वामें पुस्तकाल
य स्थापित हो सो यह बात जानइकी बात है परंतु जिन महाशयों
को द्रव्य दत्ते पुस्तक सने की इच्छा हो उनलोगों के निमित्त ही यदि
चाप की जाइताहो तो बेचने के वास्ते पाचसों बापी जैनबुद्धमुसाइटी
की ओरसे भी बयवा ली जावें यह पुस्तकें मैं बचीनमंज से प्रकाश

बख्शंगा अये मुद्रम्, सम्बत् १९२३ । मि० । पे० । ११

४० जैन बुद्ध मुसाइटी

बहर मुरसीदाबाद

बायेंसम्पादक

बचीनमंज

मुद्रति पेट

नकल चिठी २

श्रीविधिपविद्याविचारतत्परसु जैनबुद्धमुसाइटी कायसम्पादक
महाशयस्य प्रतिनिवेदनम् ।

जोकि यह आपका द्रव्य देके उरीदनवासे लोगों के, लिये मुसाइटी
की ओरसे पैंतासियों कीनाम की पाचसों पुस्तकें बयवा लन की
जाइता के विषय मैं आपा लो मैं स्वीकार करताहूँ कि आप जैनबुद्ध
मुसाइटी की तरफ से काम की प्रत्यक्ष पाच ५ की पुस्तकें बेचन के
वास्ते बयवा लेंवें परंतु पाचसों के अपिब कपनकी प्राप्ता में नहीं
देता, यदि और कोई बयवाला चाहे तो उचित है कि पहले मुद्र
स जाइता तलेवे क्योंकि इन ग्रन्थोंपर रजस्वरी दुईहैं, अये मुद्रम् ।

सम्बत् १९२३ । मि० । पे० । १२

४० रायचलपतिविह बहादुर

बहर मुरसीदाबाद

बचीनमंज

विषय और प्रस्तावि	पत्राक	विषय और प्रस्तावि	पत्राक
प्रश्न	८५	धूमप्रभा के नारकी का प्रश्न	११
कहा द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे	८५	तमापृथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी का	१२
कहा द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहा	८६	तमनमा नारकी प० अप० स्थान का प्रश्न	१२
कहा चौरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे	८६	पर्याप्त अपर्याप्त पञ्चैन्द्रिय तिर्यञ्च के स्थान	१३
कहा नारकी पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे	८७	मनुष्य पयाप्त अपर्याप्त के स्थान प्रश्न, उपपात,	१४
कहा नारकी वसते हैं	८७	समुद्रघात, स्वस्थान	
कहा रत्नप्रमापृथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी	८८	भवनवासि देव प० अप० स्थान का प्रश्न भवन	
वसें है और उनके स्थान कहे	८८	वासि के रहने का स्थान और बहुतसा वर्णन	१४
कहा शर्कराप्रमापृथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नार	८९	किया है	
की के स्थान कहे, कहा यह वैसे है	८९	असुरकुमार स्थान प्रश्न कहा रहते हैं इत्यादि	
यालुकाप्रमाके पञ्चाक्ष अपञ्चाक्ष नारकी के स्थान	८९	असुरकुमारी का वर्णन लाकपाल अग्रमाहिषी	
और वसन का	९१	पर्यदा अनीक आदिका वर्णन है	११
पकप्रमा के नारकी का प्रश्न	९१	दक्षिण दिशा के असुरकुमारी का अधिकार	१०२

विषय और प्रस्तावि	पत्राक	विषय और प्रस्तावि	पत्राक
कहा यादर पृथ्वीकाय अर्थात्सक के स्थान कहे	७८	देयता चारप्रकार कहे जवनपति जोतिषी ज्ञान	
कहा सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्त अर्थात्स के स्थान है	७९	व्यन्तर वैमानिक	
यादर अणुकाय पर्याप्तक के स्थान का प्रश्न	८०	जयनपति १० प्रकार असुरकुमार दि	७३
यादर अणुकाय अर्थात्सक के स्थान का प्र०	८१	यानव्यन्तर ८ भेदे किलर कि पुरुषादि	७४
यादर तेजस्काय पर्याप्तक के स्थान का अधि०	८१	जोतिषी ५ प्रकार चन्द्र सूर्यादि	७५
यादर तेजस्काय अर्थात्सक के स्थान का नि०	८२	वैमानिक २ भेदे सौधर्मादि देवलोक गत	७६
सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्त अर्थात्स के स्थान का प्र०	८२	और कल्पातीत, फिर हुनके भेद कहे	७७
यादर वायुकाय पर्याप्तक के स्थान का निर्णय	८२	(पंचद्रिय सवार समापन्न जीव पक्षत्रगा कही)	
यादर वायुकाय अर्थात्सक के स्थान का निर्णय	८३	॥ जीव पक्षत्रगा कही ॥	
सूक्ष्म वायुकाय पर्याप्त अर्थात्स के स्थान का प्र०	८३	॥ पक्षत्रगा नाम प्रथम पद क्षत्रा ॥	
यादर धनस्पतिकाय पर्याप्तक के स्थान का अधि०	८४	॥ २ स्थान नामक पद का प्रारम्भ ॥	
यादर धनस्पतिकाय अर्थात्स के स्थान का प्र०	८४	कहा यादर पृथ्वीकाय पर्याप्तक के स्थान कहे	
सूक्ष्म धनस्पति पर्याप्त अर्थात्स के स्थान का			

विषय और प्रस्तावि	पन्नाक	विषय और प्रस्तावि	पन्नाक
ब्रह्मदेव स्थान का अधिकार	१२४	सिद्धी के वर्णन विषय की गाथा कई एक	१३०
लान्तक देव लोकाधिकार	१२५	(स्थान नामक दूसरा पद पूर्ण)	१३२
महा शुक्रदेव लोक स्थानाधिकार	१२५		१३७
सहस्रार देवलोक का अधिकार	१२६		
आनत प्राणत देवलोक का प्रश्न	१२६	३ पद का प्रारम्भ ऊँच्या है।	
आरण अच्युत देवलोकाधिकार	१२६	दिसिगइइदियकाए यह द्वार निरूपण गाथा २	
अधस्तन ग्रैवेयक विमान का प्रश्न	१२८	प्रथम दिग्द्वार	
मध्यम ग्रैवेयक विमान के विषय का प्रश्न	१२९	दिसाणुवाएण सद्यथोया जीवा पच्चच्छिमेण	
उपरिम ग्रैवेयक विमान का निर्णय	१२९	इत्यादि	
अनुत्तरोपपातिक प० अ० देवस्थान और यह	१३०	सर्वस्तोक पृथिवीकाय दक्षिण में इत्यादि	१३८
कहा सिद्धों के स्थान और कहा सिद्ध रहते हैं		सर्वस्तोक अष्टकाय पश्चिम में	१३८
इत्यादि इपत्ताग्नाराधिकार तथा सिद्धों का		सर्वस्तोक तेजस्काय दक्षिण उत्तर में	१३८
		सर्वस्तोक वायुकाय पूर्व में	१३८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
उत्तर दिशा के असुरकुमारों का अधिकार	१०३	एव मूतों का भी अधिकार जानना यायत्त गधर्व	११४
नागकुमारों के स्थान रहने का स्थान	१०४	पर्यन्त कहना इत्यादि	
दक्षिण के नागकुमारों का अधिकार	१०५	पणपन्ती देवतों के स्थान, रहना इ-	११४
उत्तर के नागकुमारों का अधिकार	१०६	त्यादि अधिकार विस्तार से कहा है	११५
सुवर्णकुमारों के स्थान और रहना कहा है	१०७	ओतिपी देवताओं के स्थान, रहना इत्यादि नि०	११७
वर्द्धिपुणकुमाराधिकार	१०७	वैमानिकों के स्थान, रहने का वर्णन विस्तार से	११९
उत्तरपुणकुमाराधिकार	१०७	सौम्यधर्मदेव स्थान, कहा है इत्यादि वर्णन	१२०
चोथाँठ असुराण इत्यादि गाथा ७, काला असुर	१०८	त्राक्रेत्र का वर्णन विस्तार से	१२१
रकुमारा इत्यादि गाथा ४ कही है	१०९	ईशानदेवस्थान कहा है इत्यादि अधिकार	१२२
यानवन्तर देवों के स्थान और बसने का प्र०	११०	ईशानेन्द्राधिकार विस्तार से	१२२
पिसाचदेवाधिकार, रहना उनका	१११	सनत्कुमार देवताओं का अधिकार	१२३
दक्षिणपिसाचाधिकार	११२	सनत्कुमारेन्द्र का अधिकार	१२३
उत्तर पिसाचों में विशेष कायान	११३	साईदेव देवस्थानाधिकार	१२३

यह सङ्घट्टिय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय
य पंचेन्द्रिय अनिन्द्रिय इन में कौन किस्से अल्प
अधिक तुल्य और विशेषाधिक होय
सङ्घट्टिय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचे
न्द्रिय अपर्याप्त को में कौन किस्से अल्पादि
एकेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का अल्पादि
द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्ता अल्पबहुत्वादि
त्रीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्ता अल्पबहुत्वादि
चौरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्ता का अल्पादि
पंचेन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता का अल्पादि
सङ्घट्टिय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय प
ंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्ता में कौन किस्से अल्पा
दि प्रश्न। १४८

१४६

१४६

१४७

१४८

॥ तिसरा द्वार समाप्त हुआ ॥

॥ चौथा कायद्वार कहते हैं ॥

सकाय पृथिवीकाय अष्काय तेजस्काय वायुकाय

वनस्पतिकाय त्रसकाय अकार्यिको में अल्पादि

सकाय पृथिवीकाय अपूर् तेज वायु वनस्पति और

त्रसकाय अपर्याप्तक में अल्पादि प्रश्न

सकाय पृथिवीकाय आदि यावत् पर्या० में अल्पादि

सकाय पञ्जात अपञ्जात में अल्पादि

पृथिवीकाय पञ्जात अपञ्जात में अल्पादि

अष्काय पञ्जात अपञ्जात में अल्पबहुत्वादि

तेजस्काय पञ्जात अपञ्जात में अल्पादि

वायुकाय पञ्जात अपञ्जात में अल्पादि

वनस्पतिकाय पञ्जात अपञ्जात में अल्पादि

१४८

१४९

१४९

१४०

विषय और प्रश्नादि

१४३
१४३
१४५

पत्राक

विषय और प्रश्नादि

सर्वस्तोक घनस्पतिकाय पश्चिम में
 सर्वस्तोक द्वीन्द्रिय पश्चिम दिशा में
 सर्वस्तोक त्रैन्द्रिय पश्चिम दिशि में
 सर्वस्तोक चौरिन्द्री पश्चिम दिशि में
 सर्व घोडा नारकी पूर्व पश्चिम में
 एय सातो नरक के नारकी का प्रश्न
 सर्व घोडा पर्वेन्द्रिय तिर्यच पश्चिम में
 सर्व घोडा मनुष्य दक्षिण उत्तर में
 सर्व घोडा जवनवासी देव पूर्व पश्चिम
 सर्व घोडा यानव्यन्तर देव पूर्व पश्चिम
 सर्व घोडा जोतिपी देव पूर्व पश्चिम
 सर्व घोडा सोधर्म में देव पूर्व पश्चिम
 इजान में सोधर्म की तरह है

सर्वस्तोक सनत्कुमार देव पूर्व पश्चिम प्र०

एव माहेद्र में, एव सहस्रार स्यादि देवलोक प्र०

सर्व घोडा सिद्ध दक्षिण उत्तर दिशा में

॥ पहला दिशा द्वार ज्ञाता ॥

॥ दूसरा गति द्वार चला है ॥

एह नारकी तिर्यच मनुष्य देव और सिद्धों में की

न किस्से घोडा कौन किस्से ब्रह्मत कौन किस्से

तुल्य और कौन किस्से विशेषाधिक है इत्यादि

एह नारकी तिर्यच तिर्यचणी मनुष्य मनुष्यणी दे

घता देवी और सिद्ध इन छाटो गति में कौन कि

स्ते अल्प बहुत तुल्य और विशेषाधिक है

॥ दूसरा द्वार हुआ ॥

॥ तिसरा द्वार प्रारम्भ ॥

विषय और प्रवृत्तादि	पत्राक	विषय और प्रवृत्तादि	पत्राक
<p>॥ पचम द्वार आरम्भ ॥</p> <p>जीव सयोगी मनोर्यागीषागयोगी काययोगी श्चौर अयोगी इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इ० (पचम द्वार पूर्ण)</p> <p>॥ षष्ठा द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव सर्वेद स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुसकवेद श्चौर एवं दक इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न (षष्ठा द्वार पूर्ण हुआ)</p> <p>॥ सातमा द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव सलेश्व कृष्णलेशी नीललेशी कापोत लेशी तेजोलेशी पद्मलेशी शुक्ललेशी श्चौर अलेशी इनमें कौन किस्से थोड़ा श्चौर घणा इत्यादि (सातमा द्वार हुआ)</p>	१६७	<p>॥ आठवा द्वार कहते है ॥</p> <p>यह जीव सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी सम्यङ्मिथ्यादृष्टी इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि (नवा द्वार हुआ)</p> <p>॥ दशम द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव आभिनिवोधकज्ञानी श्रुतज्ञानी श्रव धिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी केवलज्ञानी इनमें कौन किसे थोड़ा इत्यादि</p> <p>एव अज्ञान प्रश्न निर्णय</p> <p>एव ज्ञान ५ अज्ञान ४ प्रश्न समुदाय से (१० द्वार हुआ)</p> <p>॥ ११ द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव चक्षुर्वर्षनी अक्षुर्वर्षनी श्चवधिदर्शनी</p>	१६९ १७० १७०
	१६८		

विषय और प्रश्नावि	पत्राक	विषय और प्रश्नावि	पत्राक
प्रसकाय पर्याप्त में कौन किस्से थोड़ा ३०	१५१	एव अप्रकाय प्रश्न निर्णय	१५३
यह सकाय पृथिवीकाय अष्टकाय तेजस्काय वा		सूक्ष्म तेजस्काय प्रश्न निर्णय	१५३
युकाय घनस्पतिकाय और प्रसकाय पर्याप्त ० अ		एव वायु घनस्पति निर्गोद प्रश्न निर्णय	१५३
यह सूक्ष्म पृथिवीकाय अष्ट तेज वायु घनस्पति	१५१	यह वादर पृथिवी अष्ट तेज वायु घनस्पति प्र	
और निर्गोद इन में कौन किस्से थोड़ा ३०		त्येक शरीर वादर घनस्पति वादर निर्गोद और	
सूक्ष्म अपर्याप्त पृथिवी अष्ट तेज वायु घनस्पति	१५१	वादर प्रसकायिको में कौन किस्से थोड़ा ३०	१५४
और निर्गोद कौन किस्से थोड़ा यज्ञत हत्यादि		वादर पृथिवीकाय अष्टादि अपर्याप्त प्रश्न निर्णय	१५४
सूक्ष्म पर्याप्त पृथिवीकाय अष्टादि का प्रश्न	१५२	वादर पृथिवीकाय अष्टादि पर्याप्त प्रश्न निर्णय	१५५
(तिसरा द्वार पूर्ण)	१५२	वादर पृथिवीकाय अष्टादि ५० अष्टादि प्रश्न	१५७
॥ चौथा द्वार कहे है ॥		सूक्ष्म पृथिवीकाय अष्टादि यावत् वादर पृथिवी	
सूक्ष्म पर्याप्त पर्याप्त में कौन किस्से थोड़ा	१५३	काय अष्टादि में कौन किस्से थोड़ा अष्टादि प्रश्न	१६०
सूक्ष्म पृथिवीकाय पर्याप्त अपर्याप्त कौन किस्से	१५३	(चौथा द्वार पूर्ण)	

विषय और प्रवृत्तादि	पत्राक	विषय और प्रवृत्तादि	पत्राक
<p>॥ पञ्चम द्वार आरम्भ ॥</p> <p>जीव सयोगी मनोरयोगीयायोगी काययोगी श्वौर अयोगी इनमे कौन किस्से थोड़ा घणा इ० (पञ्चम द्वार पूर्ण)</p> <p>॥ छठा द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव सर्वेद स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुसकवेद और अंबे दक इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न (छठा द्वार पूर्ण हुआ)</p> <p>॥ सातमा द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव सलेत्रय कृष्णलेशी नीललेशी कापोत लेशी तेजोलेशी पद्मलेशी शुक्ललेशी और अलेशी इनमें कौन किस्से थोड़ा और घणा इत्यादि (सातमा द्वार हुआ)</p>	१६७	<p>॥ आठवा द्वार कहते है ॥</p> <p>यह जीव सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी सम्यङ्मिथ्यादृष्टी इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि (नवा द्वार हुआ)</p> <p>॥ दशम द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव आभिमनियोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अत्र धिज्ञानी मनपर्ययज्ञानी केवलज्ञानी इनमें कौन किसे थोड़ा इत्यादि</p> <p>एव अज्ञान प्रश्न निर्णय</p> <p>एव ज्ञान ५ अज्ञान ४ प्रश्न समुदाय से (१० द्वार हुआ)</p> <p>॥ ११ द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव चक्षुर्वर्जनी श्रवक्षुर्वर्जनी श्रवधिदर्जनी</p>	१६९ १७० १७०
	१६८		

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>केवलदर्शनी इनमें कौन किस्से घोड़ा घणा है (११ द्वार पूर्ण छाया) ॥ १२ द्वार कहै है ॥</p> <p>जीय सयत असयत सयतासयत नो सयत नो असयत नो सयतासयत इनमें कौन किस्से घो ड़ा इत्यादि</p> <p>(१२ या द्वार छाया) ॥ १३ या द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीय साकारीपयोगी अनाकारीपयोगी में कौन किस्से घोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न (१३ या द्वार पूर्ण छाया) ॥ १४ या द्वार कहते हैं ॥</p> <p>जीय आहारक अनाहारक में कौन किस्से घोड़ा</p>	१७०	<p>इत्यादि</p> <p>(१४ वां द्वार पूर्ण छाया) ॥ १५ या द्वार कहै है ॥</p> <p>जीय नासक अनासक में कौन किस्से घोड़ा (१५ या द्वार कहा) ॥ १६ या द्वार कहते हैं ॥</p> <p>जीय परिष्ठ अपरिष्ठ नो परिष्ठ नो अपरिष्ठ में कौन किस्से घोड़ा घणा (१६ द्वार छाया) ॥ १७ या द्वार कहते हैं ॥</p> <p>जीय पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त में कौन किस्से घोड़े घणे हैं (१७ द्वार छाया)</p>	१७१ १७२ १७३ १७४

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>॥ १८ द्वार कहते हैं ॥ यह सूक्ष्म वादर नोसूक्ष्म नोत्रादरों में कौन थोड़ा (१८ द्वार ऊँचा) ॥ १९ वा कहै है ॥ यह जीव सजी व्यसजी नो सजी नो असजी में कौन किस्से थोड़ा इत्यादि (१९ द्वार ऊँचा) ॥ २० द्वार कहै हैं ॥ जीव भवसिद्धिक शुभग्रसिद्धिक नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिको में कौन किस्से थोड़ा इ० (२० द्वार ऊँचा) ॥ २१ वा द्वार कहै हैं ॥ यह धर्मास्तिकाय शुधर्मास्तिकाय आकाशास्ति</p>	१७२	<p>काय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अष्टासम ७ मे कौन किस्से द्रव्यार्थता से थोड़ा घणा इत्यादि एव प्रदेयार्थतासे भी प्रश्न निर्णय धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यार्थ प्रदेयार्थ से प्रश्न (२१ द्वार हुआ) ॥ २२ वा द्वार कहै है ॥ जीव चरम अचरम में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि (२२ वा द्वार हुआ) ॥ २३ वा द्वार कहै है ॥ यह जीव पुद्गल अष्टासमय सर्वद्रव्य सर्वप्रदेय सर्व पर्याय में कौन किस्से थोड़ा इत्यादि नि० (२३ द्वार पूर्ण हुआ)</p>	१७३ १७३ १७४ १७७ १७८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>कंधलदर्शनी इनमें कौन किस्से घोड़ा घणा है (११ वा द्वार पूर्ण ज्ञाया) ॥ १२ वा द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव सयत असयत सयतासयत नो सयत नो असयत नो सयतासयत इनमें कौन किस्से घो ड़ा इत्यादि</p> <p>(१२ वा द्वार ज्ञाया) ॥ १३ वा द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी में कौन किस्से घोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न (१३ वा द्वार पूर्ण ज्ञाया) ॥ १४ वा द्वार कहते हैं ॥</p> <p>जीव आहारक अनाहारक में कौन किस्से घोड़ा</p>	१७०	<p>(१४ वा द्वार पूर्ण ज्ञाया) ॥ १५ वा द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव नासक अनासक में कौन किस्से घोड़ा (१५ वा द्वार कहा) ॥ १६ वा द्वार कहते हैं ॥</p> <p>जीव परिश्व अश्व परिश्व नो परिश्व नो अश्व परिश्व में कौन किस्से घोड़ा घणा (१६ वा द्वार ज्ञाया) ॥ १७ वा द्वार कहते हैं ॥</p> <p>जीव पर्याप्त अश्व पर्याप्त नो पर्याप्त नो अश्व पर्याप्त में कौन किस्से घोड़े घने हैं (१७ वा द्वार ज्ञाया)</p>	१७१
	१७०		१७१
	१७१		१७२

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
॥ चौथा पद आरम्भ ॥		पर्या० अपर्या० सूक्ष्म पृथिवीकाय की स्थिति	२१२
नारकी को कितने काल की स्थिति	२०५	अपकाय स्थिति प्रश्न	२१३
पर्याप्त तथा अपर्याप्त नारकी की कितनी स्थिति	२०५	पर्या० अपर्या० अपकाय की स्थिति	२१३
रत्नप्रभादि सात नरक के पर्याप्त अपर्याप्त नार		वादर अपकाय तथा पर्या० अपर्या० वादर अप	
की की स्थिति का प्रश्न	२०६	पकाय की स्थिति	२१४
देवता की कितने काल की स्थिति	२०८	एव वायुकाय वनस्पतिकाय पर्या० अपर्या० की	
पर्याप्त अपर्याप्त देवता की कितनी स्थिति	२०९	सूक्ष्म वादर आदि की स्थिति का प्रश्न	२१४
एव भयनवासी आदि देवता देवी पर्याप्त अप		द्वीन्द्रिय तथा पर्या० अपर्या० की स्थिति	२१५
र्याप्त का की स्थिति का निर्णय	२०९	एव त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पर्या० अपर्या० स्थिति	२१६
पृथिवीकाय की कितने काल की स्थिति	२१२	पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक की स्थिति	२१६
एव पर्याप्त अपर्याप्त पृथिवीकाय की स्थिति का		एव पर्या० अपर्या० पञ्चेन्द्रिय तिर्यच की स्थिति	२१७
प्रश्न	२१२	समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यच की तथा पर्या० अप	
सूक्ष्म पृथिवीकाय की स्थिति का प्रश्न	२१२	र्या० समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यच की स्थिति	२१७

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
॥ २० वा द्वार कहे है ॥ क्षेत्रानुपातसे उरुं लोक आदि में जीवों की सख्या (२० वा द्वार हुआ) ॥ २५ वा कहते हैं ॥ जीव स्यायुक्कर्म के बधक स्वयधक अपर्याप्त प याप्त सुप्त जागर समोदित स्वसमोहित सातावे दक स्वसातावेदक द्वित्रियोपयोगयुक्त नोद्वित्रियो पयोगयुक्त साकारोपयोगयुक्त अनाकारोपयोग युक्त में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि (२५ वा द्वार कहा) ॥ २६ वा द्वार कहे है ॥ क्षेत्रानुपात से पुद्गल का त्रैलोक्य में अरुणादि यह परमाणु पुद्गल सख्यातप्रदेशी असख्यातप्रदे	१७८	शी अनन्तप्रदेशी स्कन्ध डनमें द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ से कौन किस्से थोड़ा इत्यादि एक प्रदेशावगाढ सख्यात असख्यात प्रदेशाय गाढ पुद्गलों में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्रदेशा र्थसे कौन किस्से थोड़ा घणा एक समयस्थितिक सख्यात असख्यात समय स्थितिक पुद्गल में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्र देशार्थ से तथैव एव एकगुण काले का मात्र (२६ द्वार पूर्ण हुआ) सर्व जीव स्वल्प बहुत्व महा दम्भ ॥ तीसरा पद पूर्ण हुआ ॥	१९३ १९६ १९७ १९८ १९८
	१९१		
	१९३		

विषय और प्रवृत्तादि	पत्राक	विषय और प्रवृत्तादि	पत्राक
एव ईशान देव देवी प० अप० आदि की स्थिति	२२७	असुरकुमार के अनन्त पयाय कहे	२४२
सनत्कुमार देवी देव प० अप० आदि स्थिति	२२८	एव जैसे नारकी तथा असुरकुमार के अनन्त पर्याय कहे तैच नागकुमार यात्रत् स्तनितकुमार की कहना	२४४
ब्रह्मदेव देवी से लेके अभ्युत देवलोक के देव ताओ की स्थिति सवित्रीप	२२९	पृथिवीकाय के अनन्ता पर्याय कहे	२४४
नव त्रैलोक्यक विमान देव प० अप० स्थिति	२३२	अष्टकाय के अनन्ता पर्याय कहे	२४५
विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित देव प० अप० स्थिति	२३५	तेजस्काय के अनन्त पर्याय	२४५
सूर्यार्थसिद्ध देव प० अप० स्थिति	२३५	वायुकाय के अनन्त पर्याय	२४५
(चौथा स्थिति पद पूर्ण हुआ)		यनस्पतिकाय के अनन्त पर्याय	२४६
॥ पाचमा पद आरम्भ ॥		वेरित्री के अनन्त पर्याय	
किन्तने भेद पर्यव है, जीव अजीवके पर्यव	२३५	तेरित्री चौरित्री तथा पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के	२४७
नारकी के अनन्ता पर्याय कहे	२३७	मनुष्य के अनन्ता पर्याय	२४७

विषय और प्रस्तादि	पत्राक	विषय और प्रस्तादि	पत्राक
गन्धर्व्युत्क्रान्तिक पर्वेद्विय तिर्यच तथा पर्या० स्थ पर्या० गन्धर्व्युत्क्रान्तिक पर्वेद्विय की स्थिति एवं सलक्षर पर्या० स्थपर्या० पर्वेद्विय तिर्यच स्थिति	२१७	एव मनुष्य पञ्चाक्षर अपञ्चाक्षर समुच्छिन्न गन्धर्व यानव्यन्तर देवता देवी पर्या० स्थपर्या० स्थिति ज्योतिष्क देवता देवी पर्या० स्थपर्या० स्थिति चन्द्राग्रिमान मे देवता पर्या० स्थपर्या० स्थिति सूर्यविमान मे देवता तथा देवी प० स्थप० स्थिति ग्रहविमान मे देवता तथा देवी प० स्थप० स्थिति नक्षत्र विमान देव देवी प० स्थप० स्थिति तारा विमान देव देवी प० स्थप० स्थिति वैमानिक देव देवी प० स्थप० की स्थिति सौधर्म देव देवी पर्या० स्थप० परिगृहीत स्थप रिगृहीत पर्या० स्थप० एव स्यालात्रा १२ मे स्थिति	२२२ २२२ २२३ २२४ २२४ २२५ २२५ २२६ २२६
एव समुच्छिन्न पर्या० स्थपर्या० तथा गन्धर्व्युत्क्रा न्तिक पर्या० स्थपर्या० पर्वेद्विय जलचर स्थिति एव सन्नेद सलक्षर पर्वेद्विय तिर्यच स्थिति उरपरिसर्प सलक्षर पर्या० स्थपर्या० पर्वेद्विय स्थिति	२१७ २१८ २१९		
समुच्छिन्न पर्या० स्थपर्या० सलक्षर उरपरिसर्प पर्वेद्विय	२२०		
एव मुजपरि सर्प की स्थिति एवं सलक्षर पर्वेद्विय तिर्यच स्थिति	२२० २२१		

विषय और प्रश्नादि	पन्नाक	विषय और प्रश्नादि	पन्नाक
जघन्यगुण कालकादि पचेद्विषय तिर्येच पर्यय	२५८	केवलज्ञानी मनुष्य के छानन्ता पर्यय कहे	२६५
जघन्यादि आभिनिवोधिकज्ञानी पचे० तिर्ये० पर्यय	२५९	अजीव पर्यय कितने भेदे	२६६
जघन्याधिज्ञानी पचेद्विषय तिर्येच पर्यय	२५९	अरूपी अजीव पर्यय दशभेदे कहे हैं	२६६
जघन्याधिज्ञानी पचेद्विषय तिर्येच पर्यय	२६०	रूपी अजीव पर्याय चार भेदे कहे	२६६
उल्लुष्टायाधिज्ञानी इसीतरह से कहना	२६१	परमाणु पुद्गल पर्यय वक्तव्यताधिकार	२६७
अर्वाधिज्ञानी तथा विभगज्ञानी कहना	२६१	द्विप्रदेशी अथादि स्कन्ध पर्यय वक्तव्यताधिकार	२६७
जघन्याधिगाही मनुष्य के कितने पर्याय कहे	२६१	एक प्रदेवायगाढ पुद्गल पर्यय प्रश्न	२६९
जघन्यास्थितिक मनुष्य के कितने पर्याय कहे	२६१	एक समयस्थितिक पुद्गल पर्यय प्रश्नोत्तर	२७०
जघन्यगुणकालक मनुष्य के पर्याय	२६२	एकगुण कालक पुद्गल पर्यय प्रश्न	२७१
जघन्याभिनिवोधिक ज्ञानी मनुष्य के पर्यय	२६२	जघन्यायगाह द्विप्रदेशी अथादि स्कन्ध पर्यय	२७२
जघन्याधिज्ञानी मनुष्य के पर्यय कितने हैं	२६३	जघन्यस्थितिक परमाणुपुद्गल पर्ययाधिकार	२७५
जैसे अवधिज्ञानी तैसे मन पर्यय ज्ञानी	२६४	जघन्यगुणकाल आदि परमाणुपुद्गल पर्ययाधि०	२७५
	२६४	८ स्पष्टों की वक्तव्यता कहना	२७६

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
जघन्य उत्कृष्ट अजघन्यानुत्कृष्ट अवगाहना के	२४८	जघन्य उत्कृष्ट मध्यम अवगाहना के असुरकुमार	२५२
नारकी के अनन्ता पर्याय		को अनन्ता पर्याय कहे	२५२
जघन्य उत्कृष्ट मध्यम स्थिति के नारकी के अ-	२४९	एव स्तनितकुमार पर्यन्त कहना	२५२
नन्त पर्याय कहे		जघन्यावगाहना के पूयिषीकाय पर्ययाधिकार	२५३
जघन्य उत्कृष्ट मध्यम गुण कालक नारकी के	२५०	एव उत्कृष्ट मध्यमावगाहना के पूयिषी पर्यय	२५३
पर्यय वक्तव्यता		जघन्य मध्यम उत्कृष्ट स्थितिक पूयिषी पर्यय	२५३
जघन्य उत्कृष्ट मध्यम आमिनिधोधिक ज्ञानी	२५१	जैसे पहले कहे तैसे सर्व आलावा यनस्पतिकाय	२५३
नारकी की पर्यय वक्तव्यता		पर्यन्त सर्व वक्तव्यता कहनी	२५३
एव श्रुतज्ञानी तथा अविज्ञानी नारकी के प	२५१	जघन्यावगाहनादि द्वीन्द्रिय पर्याय यक्तव्यता	२५३
र्यव कहना अज्ञान भी कहना		एव श्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पर्यय वक्तव्यता धिकार	२५६
जघन्य उत्कृष्ट मध्यम चक्षुवर्जनी नारकी के	२५१	जघन्यावगाहनक पञ्चेन्द्रिय तियस पर्यय व-	२५६
अनन्ता पर्याय कहे		कव्यताधिकार	२५७
एव अक्षुवर्जनी अविज्ञानी को कहना	२५२	जघन्य आदि स्थितिक पञ्चेन्द्रिय तियस पर्यय	२५८

विषय और प्रश्नादि	पन्नाक	विषय और प्रश्नादि	पन्नाक
सवार्थसिद्ध विमान देवोपपात विरहकालप्रमाण सिद्धोपपात विरहकालप्रमाण	२९१	क्या सान्तर उपजी के निरन्तर	२९२
रत्नप्रभा आदि पृथिवी के नारकी का व्यवन काल विरहाधिकार एवं सिद्धो को छोड़ के अनुत्तर वि	२९१	सौधमें आदि देवलोक यात्रात् सिद्ध सान्तर उप जी के निरन्तर, एवं उद्धर्तनाभी सिद्धों को छोड़ कर कहनी	२९३
मान तक व्ययन काल विरहाधिकार (२ द्वार हुआ पूर्ण)	२९१	(३ द्वार हुआ पूर्ण) नारकी एक समय में कितने उपजी, एवं ७ नरक के नारकी कहे, असुरकुमार एक समय में कित ने उपजी, एवं स्तनितकुमार पर्यंत कहना	२९३
नारकी सान्तर उपजी के निरन्तर उपजी, मनुष्य सान्तर उपजी के निरन्तर उपजी	२९१	पृथिवीकाय यावद्वनस्पतिकाय एक समय में कि तने उपजी	२९४
देव सान्तर उपजी के निरन्तर, रत्नप्रभा आदि ७ पृथिवी के नारकी सान्तर उपजी के निरन्तर, असुर कुमार सान्तर उपजी के निरन्तर, एवं स्त नितकुमार पर्यन्त कहा, पृथिवीकाय यावद्वन स्पतिकाय द्वीद्विय यावत्पंचेन्द्रिय तिर्यच मनुष्य	२९१	चेरिन्द्रिय एक समय में कितने उपजी, एवं त्रौद्विय चतुरिन्द्रिय समष्टिर्म पंचेन्द्रिय तिर्यच, गर्भस्थ ल्लांतिक पंचेन्द्रिय तिर्यच, समष्टिर्म मनुष्य	२९४

विषय और प्रश्नादि

(पाचमा पद पूर्ण हुआ)

॥ कृष्ण पद आरम्भ ॥

नरक गति में कितने काल विरह है उपपातका
तिर्यच गति में कितना विरह उपपात में
मनुष्य गति, देवगति, और सिद्धिगति में उप
जने का कितना विरह

एव उद्धर्तना भी चारों गति में कहना
रत्नप्रमा आदि सात नरक पृथिवी में उपपात
विरह काल

असुरकुमार आदि यागस्तनितकुमार पर्यन्त
उपपात विरह काल

पृथिवी काय उपपात विरहकालाधिकार

एव अपू तेज वायु वनस्पतिकाय उपपात वि
रहकाल

द्वीन्द्रिय उपपात विरहकाल, त्रीन्द्रिय चतुरि
न्द्रिय उपपात विरह

सम्मुखिंम पचेन्द्रिय तिर्यच उपपात विरहकाल
गर्भयुक्तान्तिक पचेन्द्रिय तिर्यच उपपात विरह

सम्मुखिंम तथागर्भज मनष्य उत्पत्ति विरहाकार
सौधमं आदि १२ देवलोक देवात्पत्ति विरह
कालाधिकार

ग्रेत्रेयक जिमान देवोत्पत्ति विरह, तथा विजय
देवजयन्त जयन्त अपराजित देवलोक देवोप
पात विरहकालाधिकार

विषय और प्रश्नादि	पन्नाक	विषय और प्रश्नादि	पन्नाक
असुरकुमार अनन्तर निकल के कहा जाय कहा उपजै	३१२	पृथिवीकाय कितना आयु शेष रहे पर भ्रम आयु बाधै एव यावत् चौरिद्वी	३१५
पृथिवीकाय अनन्तर निकल के कहा जाय कहा उपजै	३१३	पंचेन्द्रिय तिर्यच कितना आयु शेष रहने से पर भ्रम का आयु बाधै	३१५
एव अप् “तेज वायु, मनुष्य वर्ज,” धनस्पति क्षीरद्वी तौरिद्वी चौरिद्वी जाणना	३१३	एव मनुष्य वानध्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी कहा तैसे कहना	३१७
पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक अनन्तर निकल कहा जाय कहा उपजै	३१३	कितने प्रकार आयुग्रन्थ कहा, त प्रकार कहा नारकी के त प्रकार आयु ग्रन्थ कहा एव २४ दण्डक में कहना	३१७
एव जैसे जिनका उपपात कहा तैसे उद्धर्तना नी कहनी	३१३	जीव जातिनाम निहतायु की कितने आकर्ष से कर नारकी जातिनाम निहतायु की कितने आकर्ष से	३१७
(६ द्वार पूर्ण छाया)		एव गति स्थिति अथगाहन मवेद्य अनुभाव नाम करै एव २४ दण्डक में	३१८
नारकी कितना आयु शेष रहे तब पर भ्रम का आयु बाधै एव २४ दण्डक	३१५		

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
यानव्यन्तर जोतिषी सीधमें स्यादि यावत् श्वनुस्तर विमान देव एक समय में कितने उपजै सिद्ध एक समय में कितने सीढ़ी नारकी एकसमय में कितने घड़े इत्यादि जैसे उपपात कहा जैसे बधन सिद्धों की लोफ के कहना यावत् श्वनुस्तरोंपपात के देव पर्यंत कहा (५ द्वार पूर्ण ऊआ)	२९४ २९५ २९५	पृथिवीकाय कहा से उपजै इत्यादि वक्तव्यता एव श्वप् तेज वायु वनस्पति काय भी कहा घोरित्री तोरित्री घोरित्री जैसे तेजो वायु कहे तैसे देव वज्र जानना पर्येद्रिय तिर्येच योनिक कहा से उपजै इत्यादि निर्णय मनुष्य कहा से उपजै, यानव्यन्तर देवता कहा से उपजै एव वैमानिक देव यक्तव्यताधिकार गैवेयक देव, श्वनुस्तर विमान देव एक समय में फितने उपजै (५ मा द्वार पूर्ण ऊआ)	३०४ ३०७ ३०७ ३०७ ३०८ ३०९ ३०९ ३११
नारकी कहा से उपजै, क्या नारकी से उपजै ति येंब से मनुष्य से देव से उपजै रत्नप्रज्ञा का नारकी कहा से उपजै इत्यादि सात नरक के नारकी का अधिकार असुरकुमार कहा से उपजै इत्यादि यावत् स्त नितकुमार पर्यंत	३०९ ३०९ ३०९ ३०९	नारकी श्वनन्तर निकड के कहा जाय कहा उपजै	३१२

विषय और प्रस्तावि	प्रज्ञाक	विषय और प्रस्तावि	पञ्चाक
नारकी की १० सज्ञा होती है असुरकुमार को १० सज्ञा होती है एव स्त- नितकुमार तक पृथिवीकाय आदि वैमानिक पर्यन्त कहा नारकी क्या आहार सज्ञोपयुक्त के मयसज्ञोपयुक्त इत्यादि प्रश्न आहारसज्ञोपयुक्त यावत्परिग्रहसज्ञोपयुक्त नारकी का अल्प बहुत्व तियेच क्या आहार यावत्परिग्रह सज्ञोपयुक्त तियेच आहार आदि सज्ञोपयुक्त का अल्पवि मनुष्य क्या आहार स० आहारादि सज्ञोपयुक्त मनुष्याल्पबहुत्व देवता क्या आहार सज्ञोपयुक्त है के यावत्परि	३२५ ३२५ ३२६ ३२६ ३२६ ३२७ ३२७	ग्रह सज्ञोपयुक्त है आहारादि १० सज्ञोपयुक्त देवाल्पबहुत्व वक्तव्यता (आठवा पद समाप्त हुआ) ॥ नया पद कहते हैं ॥ कितने प्रकार योनि कहो, तीन प्रकार योनि कहो नारकी के क्या सीतयोनि उल्लयोनि त्रीतोषयोनि असुरकुमार के कौन योनि कहो एव स्तनित- कुमार तक पृथिवीकाय के कौन योनि, एव अप् वायु वन स्पति द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय को योनि कहना तेजस्काय के त्रीति योनि नहीं	३२७ ३२८ ३२८ ३२८ ३२९ ३२९

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
जघन्य १।२।३। उत्कृष्ट ७ आकर्षसे जाति नामनिहत्तायु आदि को करनेवाले जीवों में कौन किस्से घीटा घणा इत्यादि अधिकार ॥ व्युत्क्रान्ति पद कृता पूर्ण हुआ ॥ ॥ सातवा पद का आरम्भ हुआ ॥	३१९	पृथिवीकाय वेमात्रा से आनप्राण सास्योत्स्यास लेवै जोतिषी कितने कालसे एव सौधर्म आदि देव कितने काल से लेवै ग्रेवैयक देव यावत्पचानुत्तर देव कितने कालसे आनप्राण सास्योत्स्यास सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव कितने काल से त्वाश्चोत्स्यासादि लेवै (सातवा उत्स्यास पद हुआ) ॥ आठवा पद कहते हैं ॥	३२१ ३२१ ३२३ ३२४
नारकी कितने कालसे आनप्राण सास्योत्स्यास लेवै असुरकुमार कितने कालसे आनप्राण सास्योत्स्या —स लेवै एव नागकुमार यावत्स्तनितकुमार कितने काल से आनप्राण सास्योत्स्यास लेवै	३२० ३२० ३२१	दवा आहार आदि सज्ञा कही	३२४

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	पत्राक
(नवा पद पूर्ण छात्रा)		३३४
॥ १० वा पद कहते हैं ॥		३३५
रत्नप्रमादि यावत् ईपत्प्राग्गारा		३३६
यह रत्नप्रज्ञा पृथिवी नहीं चरमा नहीं		३३७
नहीं चरमाइ नहीं		३३८
देखा नहीं		३३९
चे सातमी पृथिवी, सौधर्म		३४०
विमान एव ईपत्प्राग्गारा		३४१
परमाणु पुत्रल क्या चरम		३४२
माइ		३४३
विषय और प्रश्नादि		३४४
काय पर्यन्त वेदत्रिय को विवृतयोनिक		३४५
रिद्री पर्यन्त, समष्टिर्म पचेद्रिय		३४६
मनुष्य को विवृतयोनिक		३४७
पर्वत्रिय त्रियेच और मनुष्य को		३४८
मानव्यन्तर जोतिषी		३४९
यह संयुत विवृत		३५०
जीवो में कौन किस्से धोला		३५१
कर्मोन्तल सुखावर्त		३५२
की योनि है कर्मोन्तलता		३५३
स्यान, सुखावर्त		३५४

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
पर्वेद्विय त्रियच योनि की कौनसी योनि सम्पूर्ण पर्वेद्विय त्रियच, गर्भव्युत्क्रान्तिक प र्वेद्विय त्रियच योनि यत्कथ्यताधिकार मनुष्य की कितने प्रकार योनि कही वानव्यन्तर, जोतिषी, और वैमानिक योनि यत्कथ्यता	३२९ ३३० ३३० ३३०	पृथिवीकाय को क्या सचित्त योनि स्थितियोनि सम्पूर्ण पर्वेद्विय त्रियच और मनुष्य योनि नि र्णय गर्भव्युत्क्रान्तिक पर्वेद्विय त्रियच मनुष्य योनि निर्णय वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे- ह्यसुर कुमार को कहा यह सचित्त अचित्त मिश्रयोनिक स्थितिको में कौन किस्से योना घणा इत्यादि सदृश विवृत सदृशविवृत जेदसे तीन प्रकार यो नि कही नारकी के सदृशयोनि कही, एव यावद्वनस्पति	३३१ ३३१ ३३२ ३३२ ३३२ ३३२

विषय और प्रस्ताव	पत्रांक	पत्रांक
विषय और प्रस्ताव	३६२	३६२
मृपा नही	३६३	३६३
मृपा वक्त-	३६६	३६६
अह जाय इत्थी पन्नयणी इत्यादि मापा वक्त-	३६७	३६७
अह भते मन्दकुमारएवा मन्दकुमारियावा इत्यादि प्रश्न निर्णय	३६८	३६८
अह भते उहे गोणे खरे घोढए वि प्रश्न निर्णय	३६९	३६९
अह भते मणुस्से महिसे आसे इत्यादि प्रश्न निर्णय	३७०	३७०
अह भते कस कसोय परिमइल इत्यादि प्रश्न निर्णय	३७१	३७१
अह भते पुढवीति खीवाक इत्यादि प्रश्न निर्णय	३७२	३७२
भापा किमादि कि प्रवह कि पर्यवसित है		

विषय और मन्त्रादि	पत्रांक	विषय और मन्त्रादि	पत्रांक
एव २। ३। ४। ५। ६। ७। ८ मदेची स्कन्धो की वक्तव्यता यावत् सख्यात सख्यात सूनन्त मदेची स्वध तक् कहा परमाणुमियसडह हस्तादि गाथा ६ परिमल्ल स्यादि पाच सस्यानो की वक्तव्यता, परिमल्ल संस्थान क्या सख्यात सख्यात सूनन्त न्त, एवं यावत् श्यायत कहना, परिमल्ल सं ठाण क्या सख्यातमदेची सख्यातमदेची सूनन्त मदेची एव यात्रदायत, परिमल्ल सठाण क्या सख्यातमदेचावगाढ सख्यात मदेचावगाढ एव श्यायत पर्यन्त, परिमल्ल० सख्यातमदेशी क्या सख्यातमदेचावगाढ अनन्तमदेचावगाढ एव श्यायत पर्यन्त	३५७ ३५७ ३५७ ३५७ ३५७ ३५८	जीय गति चरम से क्या चरम के स्युचरम एव निरन्तर वैमानिक नारकी गति चरम से क्या चरमा के स्युचरमा एव वैमानिक पर्यन्त नारकी स्थितिचरम से कदाचित् चरम कदाचित् स्युचरम एव यायत् वैमानिक नारकी नत्रचरम से कदाचित् चरम कदाचित् स्युचरम, एव वैमानिक पर्यन्त, नारकी जाया चरम से चरम स्युचरम जी एव वैमानिक पर्यन्त, एव एकैन्द्रिय को ठोकर के वैमानिक पर्यन्त कहना नारकी स्यानप्राण चरम से चरम के स्युचरम, एव याव वैमानिक एव स्याहार चरम, जाय चरम से कदाचित् चर	३५६ ३५६ ३५७ ३५७ ३५७ ३५८

विषय और प्रश्नादि		पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
पुछोगाढ अणतर यह उक्तार्थ सग्रह गाथा		३७७	नारकी जिन द्रव्यो को भापापणे ग्रहे सो स्थित ग्रहे के अस्थित ग्रहे	३८६
जीय जिन द्रव्यो को भापापणे ग्रहे सो निरन्तर		३८२	एव एकेन्द्रिय को लोहकर वैमानिक पर्यन्त द	३८६
जीय जिनको भापा पणे निकाले सो निरन्तर		३८२	जीव जिन द्रव्यो को भापा पणे ग्रहे सो स्थित के	३८७
जीय जिनको भापा पणे निकाले इत्यादि		३८३	अस्थित ग्रहे एवं पृथक् से भी दृढक पर्यन्त	३८८
जो द्रव्य भापापणे निकाले गृहीत के अगृहीत,		३८४	जीव जिनद्रव्यो को सत्यमापापणे ग्रहे इत्यादि	३८८
इन भापा द्रव्यो का खढ भेदादि निरूपण		३८५	औधिक गमाके ऐसे सर्व कहना फकत खेरिद्री	३८८
खढ भेदादि निरूपण		३८५	तेरिद्री खेरिद्री कोढदेना	३८८
खढ भेदादि अनुवर्तिकाभेद से		३८५	भेद से	३८८
खढ भेद प्रतर्भेद चूर्णिकाभेद		३८६	फितने प्रकार वचन , सोलह भेदे एकवचनादि	३८८
उत्कटिका भव से		३८६	कितने भापाजात , चार कहे , इन चारो को	३८८

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
भाषा कठिन समर्थित इत्यादि गाथा २ कितने प्रकार भाषा है, दो प्रकार भाषा क है पर्याप्तिकी भाषा सत्या मृषा से दो भेद है सत्या पर्याप्तिकी भाषा कितने प्रकार है १० प्रकार मृषा भाषा मो दश प्रकार कहि है क्रोधनिष्ठ तादि भेद से अपर्याप्तिकी भाषा सत्यामृषा असत्यामृषा भेद से दो प्रकार है सत्यामृषा भाषा उत्पन्न मिश्रितादि भेद से दश भेद है असत्यामृषा अपर्याप्तिकी आमन्त्रणी आदिक भेद से १२ भेद है जीव भाषक है के अभाषक है इत्यादि	३७१ ३७२ ३७२ ३७२ ३७३ ३७३ ३७४ ३७४ ३७४	नारकी अपर्याप्त अभाषक पर्याप्त भाषक है एव एकैद्रिय की छोड़कर सर्वदृढक प्रश्नोत्तर कहना चार भाषा की जाति कही जीव क्या सत्य भाषा थोले कि असत्या भाषा थोले इत्यादि नारकी सत्य भी थोले असत्य भी थोले एव असु रकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्विन्द्रिय प्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नहीं सत्य नहीं असत्य नहीं सत्यासत्य असत्यामृषा थोले, पंचेन्द्रिय तिर्यच असत्यामृषा भाषा थोले, जीव जिन द्रव्यों को भाषा पर्जे ग्रहे सो क्या एव द्रव्य क्षेत्र काठ और भाष वस्तुभ्यता से	६७५ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७७ ३७७

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
भागान, इत्यादि वक्तव्यता एव कार्मण शरीर भी कहना नारकी को दोनो औदारिक शरीर है वस्तु भी मुक्त भी है	३९५ ३९५ ३६९ ३९७	रिक, एव चतुरिन्द्रिय पर्यंत कहा सर्व शरीर पंचेन्द्रिय तिर्यच भी इसी तरह कहना वैक्रिय में विज्ञोप है मनुष्य को दो औदारिक शरीर है, इत्यादि (१२ वा शरीर पद पूर्ण ज्ञाथा)	४०० ४०१ ४०५
एव वैक्रिय भी, आहारक शरीर भी कहना असुरकुमार शरीर वक्तव्यताधिकार, स्तनितकु- मार पर्यंत	३९८	कितने प्रकार परिणाम, दो जेद जीव परिणाम शरीर अर्जोव परिणाम	४०७
पृथिवीकाय को दो औदारिक शरीर, क्षेत्रकाल से निरूपण	३९८	जीव परिणाम, गति परिणाम आदि जेद से १० प्रकार है	४०७
पृथिवीकाय को दो वैक्रिय शरीर, एव शेष ज्ञा रीर भी कहना, अपूकाय तेजस्काय भी कहना, वायुको दो औदारिक शरीर, दो वैक्रिय, एव शेष शरीर भी कहना, द्वीन्द्रिय को दो औदा		गति परिणाम चार प्रकार है ४ गति जेद से, इन्द्रिय परिणाम ५ जेद है, कपायपरिणाम ४ जेद, लेज्या परिणाम ६ जेद	४०८

घोषता जीव आराधक है के विराधक है,
सत्यमासी मृपामापी आदि मापक अमापकजी
यो मे कौन किस्से घोडा घणा इत्यादि यक्त
व्यताधिकार

(११ मापा पद पूर्ण हुआ)

॥ १२ वा पद कहते हैं ॥

पाच शरीर कहे औदारिक वैक्रिय आहारक
तैजस कर्मण
नारकी को वैक्रिय तैजस कर्मण यह तीन शरीर हैं
एवं असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त कहा
पृथिवीकाय को औदारिक तैजस कर्मण तीन
शरीर, वायुको लोह औरिन्द्रो पर्यन्त सबकी

यही तीन शरीर है, वायु को ४ शरीर औ
दारिक वैक्रिय तैजस कर्मण है, पंचेन्द्रिय ति
यैच को भी चारही शरीर है
मनुष्य को पाचो शरीर होते हैं, यानव्यन्तर
जोतिषो वैमानिक को जैसे नारकी को कहा

औदारिक शरीर यद्य और मुक्त भेद से दो भेद
वैक्रिय भी यद्य मुक्त भेद से दो तरह है, क्षेत्र
आहारक भी दो भेद है

तैजस भी दो भेद है, क्षेत्र से अनत लोक द्रव्य
से सिद्धों स अमन्तगुण सब जीवों से अनत

विषय और प्रश्नादि	पन्नाक	विषय और प्रश्नादि	पन्नाक
॥ १४ पद कहते हैं ॥ क्रोधादि चार कपाय कहे एव वैमानिक पर्यन्त कतिप्रतिष्ठित क्रोध है एव नैरयिक यावद्वैमानिक कतिने तरह से क्रोध होता है ४ तरह कहा वैमा निक पर्यन्त अनन्तानुबन्धी आदि ४ प्रकार क्रोध कहा नार की यावद्वैमानिक पर्यन्त, एव मान माया लोन सेनी चारी दुरुक कहा आज्ञोग नियन्त्रित आदि चार भेदे क्रोध कहा एव मानादिनी जीव चार तरह से आठ कर्म चिर्ने हत्यादि आ	४१५ ४१६ ४१६ ४१७ ४१७	एव वैमानिक पर्यन्त जीव से लगाय १८ दुरुक कहना (१४ या कपाय पद पूर्ण ज्ञाया) ॥ १५ या पद कहते हैं ॥ सठाण बाहस हत्यादि गाया २ पाच इन्द्रिय कहो श्रोत्रेन्द्रिय कलम्बुका सस्यान सस्थित है चक्षु मसूरचन्द्रसस्यानसस्थित है, नासिका आतिमुक्तक सस्यान सस्थित है, जिह्वा तुरे के सस्यान है, स्पर्शनेन्द्रिय नानासस्यान सस्थित है श्रोत्रेन्द्रिय बाहल्य यावत् स्पर्शनेन्द्रिय बाहल्य	४१७ ४१९ ४२० ४२० ४२०

विषय और प्रज्ञादि विषय और प्रज्ञादि पत्राक

एव मृदुलघुगुण भी अनन्त है, और इनका अ स्पष्टहृत्वादि	४२६	अस्पष्ट रूप देखे, स्पष्ट गन्ध लेवे अस्पष्ट गन्ध लेवे, इत्यादि रस स्पर्श भी कहना जैसे पहले कहा तैसे कहना	४२९
एव अप् यावत् धनस्पतिकाय विशेष यह के बुद्धदे ऐसा है, तेजस्काय शूचीकलापसस्यान सस्थित है, वायु पताका सस्यान, धनस्पति नानासस्यान सस्थित है	४२६ ४२७	एव जैसे स्पष्ट तैसे प्रविष्ट, श्रोत्रेन्द्रिय का विषय अगुल के असस्यात भाग में उत्कृष्ट बारह यो जनसे किन्तु पुनः स्पष्ट शब्द सुने	४३०
वेरिन्द्रिय के दो इन्द्रिय सर्व अधिकार पूर्ववत् कहा श्रीन्द्रिय के प्राण स्तोक है, चतुरिन्द्रिय के चक्षु स्तोक	४२८ ४२८	प्राण उत्कृष्ट सातिरेक योजन सहस्र शृङ्खल पुनः स्पष्ट श्रमविष्ट रूप देखे	४३०
पंचेन्द्रिय तिर्यच और मनुष्य के जैसे नारकी कहा धानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे असुरकु- मार कहा	४२८	प्राणेन्द्रिय का जघन्य शृङ्गुल असस्यात नाग उ त्कृष्ट नव योजन से गन्ध ग्रहण करे, एव जि ज्ञानी कही, स्पर्शनेन्द्रिय भी इसीतरह है, अनगार जायितात्मा मारणातिक समुद्रात से सम	४३१

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

अगुलासंख्यातनाम
श्रोत्रेन्द्रिय अगुल के असंख्यात माग पुपु है, बहुत
प्राण मी ऐसे
जिह्वाअगुलपुष्क, स्पर्शनिन्द्रियशरीरप्रमाणमात्र है
श्रोत्रेन्द्रिय अनन्तप्रवेद्य, असंख्यात प्रवेशाथगाढ
एवं यावत्स्पर्श
इन श्रोत्र बहुत प्राण जिह्वा स्पर्शनिन्द्रिय में अ-
वगाहनार्थतासे प्रवेशार्थतासे अवगाहनप्रवेशा
र्थतासे कौन किस्से योना घणा इत्यादि
श्रोत्रेन्द्रिय में अनन्ता कर्कशगुणगुण कहा, एवं
वाक्स्पर्श, श्रोत्रेन्द्रिय में अनन्ता मृदुलधुगुण
कहा एवं वाक्स्पर्श
नारकी को पक्क इट्टी है, नारकी का श्रोत्रेन्द्रिय

कलयुकासंस्थान है
नारकीकास्पर्शनिन्द्रिय कौन संख्यात इत्यादि नि०
असुरकुमार के कितने इन्द्रिय जैसे औदारिक कहा
अरपयहुत्थ २ विज्ञाप
एव स्तनितकुमार पर्यन्त कहना, पुण्यिबीकाय को
१ स्पर्शनिन्द्रिय है और यह मसूरचन्द्रसंस्थान है,
पुण्यिबीकाय का स्पर्शन अगुल असंख्यात माग
वाहस्यपर्णे, पुपुपर्णे शरीरप्रमाण मात्र कहा,
और यह अनन्तप्रवेद्यिक है, पुण्यिबीकाय स्पर्शन
असंख्येयप्रदेशायगाढ है,
यह पुण्यिबीकायस्पर्शनिन्द्रिय अवगाहनार्थ प्रवे
शार्थ से कौन किस्से अस्पादि
पुण्यिबीकायस्पर्शन के कितने कर्कशगुणगुण है,

<p>उसके देश प्रदेश से नहीं है आकाशास्तिकाय से स्पष्ट नहीं है इसके देश और प्रदेश से स्पष्ट किये है, प्रसकाय से कदाचित् स्पष्ट स्पष्ट है, काल के देश से स्पष्ट किए है जगद्गोप नहीं धर्मास्तिकाय से इसके देश प्रदेश से स्पष्ट एव अधर्म और आकाशास्तिकाय से भी कहा, पृथिवी से यावत् वनस्पति से स्पष्ट किये है, प्रस काय से कदाचित् है एव लयण समुद्र, धातकी स्रक्त आदि भी कहा सो गाथा है</p>	<p>देश प्रदेश से स्पष्ट है, पृथिवी से स्पष्ट नहीं काल से स्पष्ट एक अजीय प्रदेश अगुरुलघु अन्त अगुरुलघुगुणसयुक्त सर्वाकाश से अनन्त जागी न है</p>	१३७	१४०
<p>॥ १५ वा पद का १ उद्देश पूर्ण ॥ इन्द्रिय उपधय इत्यादि अर्थ संग्रह गाथा २ कितने प्रकार इन्द्रियोपचय कहा, ५ तरह का इन्द्रिय जेद से</p>	<p>॥ १५ वा पद का १ उद्देश पूर्ण ॥ इन्द्रिय उपधय इत्यादि अर्थ संग्रह गाथा २ कितने प्रकार इन्द्रियोपचय कहा, ५ तरह का इन्द्रिय जेद से</p>	१३८	१४०
<p>लोफ किस्से व्याप्त है इत्यादि जैसे आकाशापि गल कहा, अलोक नहीं धर्म अधर्म और आकाशास्तिकाय से किन्तु आकाशास्तिकाय के</p>	<p>नारकी को पाचो इन्द्रिय का उपचय कहा, एव वैमानिक पर्यन्त सर्व दण्डक मे कहना जेद यही के जिसको जितनी इन्द्रिय उतनाही का उपचय कहना, एव इन्द्रिय की निर्धर्तना भी पाच तर ह की कही है, नारकी से वैमानिक पर्यन्त</p>	१३८	१४०

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
यहूत के जो चरम निर्जरा पुद्गल सो सृष्टुन है	४३१	आवर्त्तां (सीसे) को देखता मनुष्य क्या आवर्त्तां को देखै के स्थपने को देखै प्रतिभाग (लाया)	४३४
इत्यादि निर्णय		को देखे इत्यादि निर्णय	
तपस्व्य मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को स्थन्यत्व	४३२	एव आसि मणी आदि का नी धालावा कहा	४३५
नानात्व को जाणे देखे नहीं, दयता नी कीड		सूय गाढा लपेटा जाआ कम्भल जितने आकाश	४३६
उन निर्जरा पुद्गलों के स्थन्यत्व नानात्व को न देखे न जाणे		को रोक के रहे फैलाया जाआ नी उतने ही आकाश को रोकै	४३६
यह सृष्टुन निर्जरा पुद्गल सर्बलोक को स्थवगाह के रहते हैं, नारकी उन पुद्गलों को न जाणै म देखै	४३३	एवं स्थूणा सत्र भी कहा, आकाशपिगल काहे से व्याप्त है कितने काय से स्पृष्ट है, पयिबी	
एव पञ्चद्विय त्रिर्बन्ध पर्यन्त कहना, मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को कोई जाणे देखै कोई न जा		काय यावत् प्रसकाय काल से स्पृष्ट है ? धर्मा स्ति काय से स्पृष्ट है परं इस्के देश खीर प्रदे	
जे न देखै इत्यादि अधिकार		नासे नहीं है एव अधर्मास्ति काय से स्पृष्ट है पर	
वागव्यन्तर जोतिबी जैसे मारकी को कहा, वैमानिक जैसे मनुष्य को कहा, वैमानिक दो जेदें			

उसके देश प्रदेश से नहीं है आकाशास्तिकाय से स्पष्ट नहीं है इसके देश और प्रदेश से स्पष्ट किये है, असकाय से कदाचित् स्पष्ट स्पष्ट है, काल के देश से स्पर्श किए है

४३७

अम्बूद्वीप नहीं धर्मास्तिकाय से इसके देश प्रदेश से स्पष्ट एवं अधर्म और आकाशास्तिकाय से भी कहा, पृथिवी से यायत् घनस्पति से स्पर्श किये है, अस काय से कदाचित् है

४३८

एव छवण समुद्र, घातकी खन आदि भी कहा सो गाथा है

४३८

लोक किस्से व्याप्त है इत्यादि जैसे आकाशाधि गल कहा, अलोक नहीं धर्म अधर्म और आकाशास्ति काय से किन्तु आकाशास्तिकाय के

देश प्रदेश से स्पष्ट है, पृथिवी से स्पष्ट नहीं काल से स्पष्ट एक अजीव प्रदेश अगुरुलघु अ नन्त अगुरुलघुगुणसयुक्त सर्वाकाश से अनन्त जागो न है

४४०

॥ १५ वां पद का १ उद्देशा पूर्ण ॥

इन्द्रिय उपचय इत्यादि अर्थ संग्रह गाथा २ कितने प्रकार इन्द्रियोपचय कहा, ५ तरह का

४४०

इन्द्रिय चैद से

४४०

नारकी को पाचो इन्द्रिय का उपचय कहा, एवं वैमानिक पर्यन्त सर्व द्रव्य मे कहना चैद यही के जिस्को जितनी इन्द्रिय उतनाही का उपचय कहना, एवं इन्द्रिय की निर्वर्तना भी पाच तर ह की कही है, नारकी से वैमानिक पर्यन्त

विषय और प्रश्नादि पत्राक

यहत के जो चरम निर्जरा पुद्गल सो सूक्ष्म है

इत्यादि निर्णय

तद्वत्स्य मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को स्थूलत्व नानात्व को जाने देखे नहीं, द्रव्यता भी कीह उन निर्जरा पुद्गलों के स्थूलत्व नानात्व को न देखे न जाने

यह सूक्ष्म निर्जरा पुद्गल सर्वलोक को श्रवणादिके रहते हैं, नारकी उन पुद्गलों को न जाने न देखे एवं पर्षद्वय तिर्यक् पर्यन्त कहना, मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को कोई जाने देखे कोई न जा

जै न देखे इत्यादि अधिकार बानध्यन्तर जोतिषी जैसे मारकी को कहा, वैमानिक जैसे मनुष्य को कहा, वैमानिक दो जेदें

४३१

४३२

४३३

आदर्शों (सीसे) को देखता मनुष्य क्या आदर्श को देखे के श्रमने को देखे प्रतिभाग (ताया)

को देखे इत्यादि निर्णय एव श्रमि मणी आदि का भी श्रालाया कहा खूब गाढा लपेटा हुआ कमल जितने श्रालाया को रोक के रहे फैलाया हुआ नी उतने ही श्रालाया

काज को रोकै एव श्रालाया सत्र भी कहा, श्रालायापिगल काहे से व्याप्त है कितने काय से स्पृष्ट है, पापित्री काय यावत् त्रसकाय काल से स्पृष्ट है ? धर्मा स्ति काय से स्पृष्ट है पर इसके द्रव्य श्रालाया प्रदे जसे नहीं है एव अधर्मास्ति काय से स्पृष्ट है पर

४३४

४३५

४३६

४३६

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>एक नारकी के अनता द्रव्येन्द्रिय अतीत है । यह आठ है । पुरस्कृत ८ । १६ । १७ । सख्यात असख्यात और अनत भी होते हैं एक असुरकुमार के कितने द्रव्येन्द्रिय अतीत अनत । यह ८ । पुरस्कृत ८ । १ । सख्यात असख्यात अनत । एव स्तनितकुमार तक एव पृथिवीकाय अस्काय कहा , वनस्पतिकाय को यह एक स्पर्श द्रव्येन्द्रिय है , तेजो वायु भी ऐसे ही है मेद यह के पुरस्कृत १ । १० है , एव द्वीन्द्रिय भी मेद यह के यह दो है , त्रीन्द्रिय को यह चार , चौरिन्द्री को यह ६ है , पंचेन्द्रिय तिर्यच मनुष्य वानध्यन्तर जो तिथी सौधर्म इंसान देव जैसे असुरकुमार, मेद</p>	४४७	<p>ग्रह दो है , एव तेहदीय चौरिदीय में द्विद्रिय बढाय के कहना , चौरिदीय को व्यञ्जनावग्रह तीन अर्थावग्रह चार है , शेष जैसे नारकी को कहा तैसे वैमानिक तक द्रव्य और माव मेद से दो तरह की द्विद्रिय है , आठ द्रव्येन्द्रिय २ कान २ नेत्र २ नाक जीम स्पर्श ८ , नारकी को आठों है , एव असुर यावत् वैमानिक स्तनितकुमार तक । पृथिवी काय द्रव्ये १ स्पर्श यावद्वनस्पति पर्यंत । द्वी न्द्रिय को द्रव्ये स्पर्श १ जिह्वा २ दो है , ते रिन्द्री को दो नाक जीम और स्पर्श १ ४ हैं । चौरिन्द्री को द्रव्ये दो नेत्र दो नाक जीम ५ स्पर्श १ ६ हैं । शेष को जैसे नारकी को कहा</p>	४४६

विषय और प्रश्नादि

पन्नाक

पन्नाक

जिस्को जितनी इन्द्रिय है उतने की निर्वर्धना भी कहना, श्रोत्रेन्द्रिय निर्वर्धना का काल स्र सख्यात समय स्रन्तर्मुक्कह नी कहा, एव स्प शान तक, एव नारकी स वैमानिक पर्यन्त नि वर्तना काल कहा, पाच जेदे इन्द्रिय छव्वि क ही, एव २४ वरुक में जिस्को जितनी हो कहना, इन्द्रियोपयोग काल भी पाच प्रकार है नारकी

२४१

स वैमानिक पर्यन्त यथोचित कहना इन श्रोत्र आदि पाचो इन्द्रियों के उपयोग ३ अघन्य उत्कृष्ट स्रजघन्योत्कृष्ट में परस्पर कौन

२४२

किस्से थोडा घणा हस्यादि इन्द्रियावगाहना पाच प्रकार नारकी स वैमानिक पर्यंत जिस्को जितनी इन्द्रिय हो उड़ी की अ

यगाहना कहनी, पाच प्रकार का अपाय २४ वरुक में यथोचित कहा, ईहा पाच प्रकार की

२४३

चौथीस दढक में यथोचित कहना, अग्रग्रह व्यजन और अर्थ के भेद से दो प्रकार है, व्यजनावग्रह श्रोत्र घ्राण जिह्वा स्पर्श से चार भेद है, अर्थोवग्रह पाच इन्द्रियों का पाच और मन से छ प्रकार होता है उनमें से नार की को २ व्यजन और अर्थ का अवग्रह है

२४४

पृथिवीकाय को दो प्रकार अवग्रह, व्यञ्जनाव ग्रह स्पर्शनेन्द्रिय का एक ही है, अर्थोवग्रह भी एक स्पर्शनही का है, एव वनस्पति पर्यंत कहा, एव द्वीन्द्रिय को, जेद यह के व्यञ्जनाव

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
यदु नही पुरस्कृत कदाचित्, एव सर्वार्थसिद्धि देवत्व मे भी कहा, एकैक मनुष्य के नारकीपने में, यावत्सर्वेन्द्रिय तिर्यच पने मे मनुष्यपन में, वानव्यन्तर जो तिष्ठ यावत् श्रेयैक देवपने में, विजयवैजय न्तादि देवपने मे, सर्वार्थसिद्धदेवपने कितने द्रव्येन्द्रिय अतीत यद् पुरस्कृत इत्यादि वानव्यन्तर जातिपौ जैसे नारकी, सौधर्मद्वयभी जैसे नारकी सौधर्म देव को पचानुत्तर देवपने में, सर्वार्थसिद्धदेवत्वमे अतीतादि कहा, अनु अनुश्रदेव को सर्वार्थसिद्धदेवत्व मे। सर्वार्थसिद्ध देव को नारकीपने मे एव मनुष्यवर्ज सर्व मे	१५१	नारकी के नारकी पने में कितने द्रव्येन्द्रिय इत्यादि (द्वार पूर्ण हुआ) नारकी को कितने भावेन्द्रिय, पाच है, एव ये मानिक पर्यन्त यथोचित कहना, एकैक नार -की के कितने अतीत यद् पुरस्कृत इत्यादि यत्कव्यता एकैक नारकी के नारकीपने में कितने भावेन्द्रिय अतीत (१५ पद समाप्त हुआ) ॥ १६ वा पद कहते है ॥ पनरह प्रकार प्रयोग कहा ।	१५४ १५४ १५७ १५८ १५९

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>इतनाही के मनुष्य को पुरस्कृत हैं भी नहीं मी है, सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म छान्तक शुक्र सहस्रार छानतमाणत आरण अभ्युत श्रैवेयक देव को जैसे नारकी को, पञ्चानुसर देव को अतीत अनन्त यष्ट ८। १६। २४। संस्थांत, सर्वायंसिद्धदेव को अतीत अनन्त यष्ट ८। पुरस्कृत ८, नारकी को द्रव्येन्द्रिय अनन्त अतीत</p>	२१८	<p>कितने द्रव्येन्द्रिय अतीत, एव नारकी के असुरपणों में अतीत यष्ट पुरस्कृत द्रव्येन्द्रिय कहे एक नारकी को एकेन्द्रिय पने में कितने अतीत यष्ट पुरस्कृत हैं, द्वीन्द्रियपने में कितने हैं, त्रींदीय पने में कितने है इत्यादि निर्णय एव चौरिन्द्रिय भी पर पुरस्कृत ६। १२। १८</p>	२१९
<p>यष्ट असस्यात पुरस्कृत अनन्त एव श्रैवेयक देव पर्यंत मनुष्य को यष्ट कदाचित् सस्यात असस्यात मी है, पञ्चानुसर देव को अतीत अनन्त यष्ट और पुरस्कृत असस्य है, सर्वायंसिद्धदेव को अतीत अनन्त यष्ट पुरस्कृत सस्यात है, एकेक नारकी के नारकी पणों में</p>		<p>सस्यात असस्यात अनन्त है, पंचेदीय तिर्य चपने में जैसे असुरकुमार पने में कहा, एव मनुष्यपने में मी पर पुरस्कृत ८। १६। २४। सस्यात असस्यात अनन्त है, यानव्यन्तर जोतिषी सौधर्म देव श्रैवेयकदेवपने में अतीत अनन्त यष्ट नहीं पुरस्कृत कदाचित्, एकेक नारकी को पञ्चानुसर देवपने में अतीत नहीं</p>	२५०

कहा। पाच प्रकारे गतिप्रपात कहा प्रयोगगति।
 आदि के भेद से। प्रयोगगति १५ भेदें जैसे
 प्रयोग कहा जैसे यह भी कहनी। जीवो को
 प्रयोगगति पनरह भेद है। नारकी का ११
 प्रकार है एव वैमानिक पर्यन्त क्या
 जीवो को क्या सत्यमनप्रयोगगति यावत् क्या
 कार्मणशीरकायप्रयोगगति है यावद्वैमानिक
 पर्यन्त कहा। एव गति भेद वक्तव्यता
 (१६ वां प्रयोग पद कहा)

॥ १७ वा पद कहते हैं ॥

स्नाहारसमसरीरा यह छर्य सप्रह गाथा

नारकी सर्व समाहार समञ्जरीर समुत्खासनिष्वास

हैं इत्यादि

१८५

नारकी सर्व समकर्म हैं इति वक्तव्यता। नारकी
 सर्व समोपपन्नक हैं

१८६

नारकी सर्व समवर्ण हैं इत्यादि जैसे वर्णकहा जैसे
 लेखा, वेदना, समक्रिय हैं

१८७

नारकी सर्व समायु समोपपन्नक हैं इत्यादि निर्ण
 य श्वसुरकुमारतक

१८८

श्वसुरकुमार सर्व समकर्म इत्यादि एव स्तनित
 कुमार पर्यन्त कहा

१८९

पूयित्रीकाय स्नाहार वर्ण कर्म श्वीर लेखासे जैसे
 नारकी कहा

१९१

एव चौरिद्रिय, पंचेद्रिय त्रियेच जैसे नारकी

१८४

जीवका पनरह प्रकार उपयोग है । नारकी को ग्यारह भेद है । एवं असुरकुमार पर्यन्त कहना पृथिवीकाय को तीन उपयोग । एवं वनस्पति पर्यन्त कहा वायुकाय को ५ उपयोग । वेरिन्द्री को चार प्रकार एवं चौरिद्री पर्यन्त पञ्चद्वियातिर्यच को तेरह प्रकार है मनुष्य को पनरह उपयोग । वानध्यन्तर जीति पी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा । जीव का सत्यमनप्रयोगी यावत्का कर्मण शरीर कायप्रयोगी इत्यादि भागे ८ कहे नारकी का सत्यमनप्रयोगी इत्यादि । एवं असुरकुमार यावत्तन्निनितकुमार पर्यन्त कहा । पृ

१६१

१६२

१६३

थिवीकाय का औदारिकशरीरकायप्रयोगी- औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगी के कर्मणशरीरकायप्रयोगी एवं वनस्पतिकाय पर्यन्त प्रश्नोत्तर कहा । वायुको वैक्रियमिश्रशरीरकाय-

द्विन्द्रिय का औदारिकशरीरकायप्रयोगी यावत् का कर्मणशरीरकायप्रयोगी है । एवं चौरि

१६४

पञ्चैन्द्रिय तिर्यच जैसे नारकी भेद यह के औदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकमिश्रशरीरकाय प्रयोग भी है । मनुष्य को कायप्रयोग निर्णय भग २४ त्रिकयोगों ३२ चतु सयोगी १६ सर्व ८० वानध्यन्तर जीतिपी वैमानिक जैसे असुरकुमार

१६५

१६५

(२ उद्देशा पूर्ण ज्ञाया)

नारकी नारकी में उपजै के अनारकी नारकी में
उपजै एव वैमानिक पर्यंत कहा, नारकी नारकी
से निकले के अनारकी से, एव वैमानिक पर्यंत

जोतिषी वैमानिक से चर्यन्त ऐसा कहना
कृष्णलेखी नारकी कृष्णलेखी नारकी में उपजै इ
त्यादि निर्णय यावत् शुक्ललेखी शुक्ललेखी में
उपजै एव २४ वक्रक में यथोचित कहना

(३ उद्देशा पूर्ण ज्ञाया)

परिणाम गद्य इत्यादि गाया

तु लेख्या कही

कृष्णलेख्या नीललेख्या की पाके तद्वर्ण तद्वप तद्व
न्यादि पर्ण परिणामे

एवं अन्तिष्ठापे नीललेख्या कापोतलेख्या की पाके
कापोत तेजोलेख्या की पाके तेजोलेख्या पद्म
लेख्या की पाके पद्मलेख्या शुक्ललेख्या की पाके

तद्वपादिपर्णे परिणामे इत्यादि सद्वृत्तान्त
कृष्णलेख्या कैसी वर्ण से, जीमूत अजन खजन

नीललेख्या वर्ण निरूपण, कापोत लेख्यादि वर्ण
निरूपण

एव आस्वाद निरूपण तु लेख्या का

तीन लेख्या दुरन्तिगन्ध और तीन सुरन्ति गन्ध
है, एव शुद्धाच्युत, एव प्रज्ञास्ता प्रज्ञास्त, सक्ति
प्राप्तकृष्ट, और स्पष्ट, सुगति दुर्गतिगामी
कही है। कृष्णलेख्या ३। ९। २७। ८१। ४२।

मनुष्य सर्व समाहार है इत्यादि जैसे नारकी, फर्क क्रियामें है जेद क्रियासे तीन जेद है

यानध्यन्तर जैसे छसुरकुमार

एव जातिपा वैमानिक ज्ञी जेद यह के वेदना से द्विविध है

जैसे शैथिक गमा कहा तैसे सलेज्य का गमा

कहना वैमानिक पर्यन्त

पृथिवी छप्वनस्पति पर्चेद्रिय तिर्यच मनुष्य जैसे शैथिक गमा कहा जेद मनुष्य को क्रिया में

प्रमत्त छप्रमत्त कहा

(१ उद्देशा पूर्ण ज्ञाया)

कितनी लेख्या ल कही, नारकी को कितनी ले

४९२

४९३

४९४

४९५

४९६

४९७

प्र्या, तिर्यच योनिक को ल लेख्या, एकेद्रिय को चार लेख्या,

पृथिवीकाय को चार लेख्या, छप्वनस्पति ज्ञी छैनही है, तेजो वायु द्वीद्रिय त्रीद्रिय चतुरिद्रिय जैसे नारकी, पर्चेद्रिय तिर्यच को ल, समुत्तिम पर्चेद्रिय तिर्यच जैसे नारकी, गर्जज पर्चेद्रिय तिर्यच को ल एवं लेख्या वक्तव्यताधिकार गजजमनुष्य को ल, देव को ल, देवियों को चार,

एव जयनगासि देव देवी यानध्यन्तर देव देवी वैमानिक देव देवी लेख्याधिकार

यह जीव सलेजी कृच्छलेजी यायत् शुक्लेजी में कौन किस्से योना घणा इत्यादि अल्प बहुत्व वक्तव्यता उद्देश्य समाप्ति तक

४९८

४९९

५००

५०१

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
नारकी पर्याप्त नारकी पर्णें कितने काल तक रहे इत्यादि अधिकार	५४९	स्ययोगी श्रयोगीपर्णे, एव मन ध्वनकाय योगी	५५६
सद्द्रिय सद्द्रियपर्णे कालसे कथितक होय इत्यादि	५४९	सर्वेदक सर्वेदकर्ण इत्यादि निर्णय	५५७
एव पर्याप्त श्रपर्याप्त का श्रालावा कहा	५५०	एव स्त्री पुरुषवेद नपुसकवेद प्रश्न, श्रवेद प्रश्न, सकपाई प्रश्न, एव क्रोध माया मान लोभ कपायी	५५९
सकाय सकायपर्णे, पृथिवीकाय पृथिवीकायपर्णे, एवं अग्नेजवायु	५५१	श्रकपायी निर्णय	५६०
धनस्पतिकाय प्रश्न, व्रसकाय व्रसकायपर्णे, श्र काय श्रकायपर्णे, एव व्रसकाय पर्याप्त श्रपर्याप्त	५५२	सलेखी का प्रश्न एव त ले० श्रोका श्रालावा क हना श्रलेखी जी	५६१
सूक्ष्म पृथिवी श्रपूतेज वायु वनस्पति, एव वा दर जी	५५४	सम्यग्दृष्टि सम्यग्दृष्टिपर्णे इत्यादि निर्णय	५६२
यादर निगोद प्रश्न, स्योगी स्योगीपर्णे काल से कितने काल होय,	५५५	ज्ञानी ज्ञानीपर्णे कालसे कथितक इत्यादि प्रश्नोत्तर विजग ज्ञानी वस्तुदर्शनी श्रवस्तुदर्शनी श्रवधिद शंनी का प्रश्न	५६३
		सयत प्रसयत सयतासयत प्रश्न	५६५
			५६६

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>कृष्णलेत्र्या अनन्तप्रादेशिकी एव यावत् शुक्ले त्रया, कृष्णलेत्र्या असख्येयप्रदेशावगाढ एव यावत् शुक्लेत्र्या, कृष्णलेत्र्या की कितनी अ वगाहना एव शुक्लेत्रयावगाहना, स्यान् अस् स्वात् लेत्र्यास्यानी का, अल्पयहुत्व द्रव्यार्थ प्रवेशार्थ (चौथा उद्देशा पूर्ण हुआ) कृष्णलेत्र्या नीलेत्र्या को पाके जैसे चौथे उद्देश में कहा वैदूर्य मणि दृष्टान्त पर्यन्त कहना इत्यादि वक्तव्यता (पाचया उद्देशा पूर्ण हुआ)</p>	५३४	<p>कृष्णलेत्र्या कही, मनुष्य की कितनी लेत्र्या इ- त्यादि निर्णयाधिकार (लेत्र्या पद १७ वा पूर्ण) ॥ १८ वा पद कहते हैं ॥</p>	५४२
	५३५		५४५
	५३६	<p>जीवगृहद्विय काए यह समग्र गाथा २ जीव जीवपनें कालसे कयतक रहै, सर्वकाल नारकी नारकीपनें काल से कितने काल रहै, एव तिर्यंच क्षेत्र से काल से कहा, तिर्यचणी, मनुष्य मनुष्यणी देव देवीइनका प्रश्नोत्तर नारकी अपर्याप्त नारकी पने कालसे कय तक एव यावद्देवी पर्यन्त</p>	५४६
	५४०		५४८

द्वैमानिक भेद मनुष्य अन्तक्रियाकरै एव असुरकुमार यावद्द्वैमानिक एव २४ दण्डक, नारकी अनन्तरागत अन्तक्रिया करै परम्परागत अन्तक्रिया करै
तेज वायु द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय छान्त क्रिया प्रश्न अनन्तरागत नारकी एकसमय मै जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश अन्तक्रिया करै रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी तथा अनन्तरागत पङ्कप्रभादि पृथिवी का नारकी अन्तक्रिया एव असुरकुमार कुमारी प्रश्न
अनन्तरागत पृथिवीकायिक जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार एव अष्टकायिक भी वनस्पति का यिक छ पंचेन्द्रिय तीर्यञ्च दश तीर्यञ्चणी दश

५७५

५७५

मनुष्य दश मनुष्यणी धीश दानव्यतर दश व्यतरी पाच जोतिषी बीस इत्यादि नारकी नरक से निकल नरक में उपजै नहीं नारकी नरक से निकल असुरकुमार में उपजै नहीं नारकी नरक से निकल पञ्चेन्द्रिय तीर्यञ्च में उपजै इत्यादि नारकी नरक से निकल व्यतर जोतिषी वैमानिक में उपजै नहीं असुरकुमार से निकल नारकी में उपजै नहीं असुरकुमार मर कै असुरकुमार में उपजै नहीं एव यावत् असुरकुमार मरके पृथिवीकाय में उपजै कदाचित्

५७६

५७६

५७७

५७९

माकारोपयुक्त श्रुनाकारोपयुक्त श्री हसीतरह
 उन्नस्य आहारक प्रश्न, केवल श्वाहारक तथा
 अनाहारक काल
 ज्ञापक श्रुनापक प्रश्न, काय परिच श्वपरिच काल
 निर्णय
 पर्याप्त श्वपर्याप्त नो पर्याप्त नो श्वपर्याप्त सूक्ष्म
 यादर सज्ञो असज्ञो
 त्रवसिद्धिक श्वत्रवसिद्धिक वरम अवचरम काल
 निर्णय
 (१८ वा पद समाप्त हुआ)

॥ ११९ कहते हैं ॥

जीव सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि सम्यग्दृष्टिमिथ्यादृष्टि है,

एव नारकी श्वसुरकुमार याच तस्तनितकुमार
 पर्यन्त, पृथिवीकाय मिथ्यादृष्टि ही है, एव वन
 स्पातिकाय पर्यन्त कहना, द्वीन्द्रिय मिथ्यादृष्टि
 नहीं है एव घौरिन्द्रिय पर्यन्त कहा, पर्चेन्द्रिय
 सिर्यच जोतिषी मनुष्य वानव्यन्तर वैमानिक
 तीनों है, सिद्ध सम्यग्दृष्टि है
 (१९ वा सम्यक्त पद कहा)

॥ २० वा पद कहते हैं ॥

नेरडय श्रुतकिरिया यह द्वार गाया-जीव श्रुत
 क्रिया करे एव नारकी याचवैमानिक, नारकी
 नारकी में श्रुतक्रिया करे नहीं
 नारकी श्वसुरकुमार में अन्तक्रिया करे एव याच

देव भी भेद यह दो पृथिवी से वैमानिक से

होय शेष नहीं होय
महलीक सातमी से तेज वायु से नहीं, सेनापति

आदि भी एव
अश्वरत्न हस्तिरत्न रत्नप्रमा से निकल यावत् सह
स्वारदेव हो, चक्ररत्न चर्म दह उत्र मणि अंसि
काकिणिरत्न असुरकुमार से ईजान तक हो,
शेष नहीं, असयत भविकद्रव्य देव आधिरा
धितसयम, विराधित सयमा सयम से विराधि
त सयमा सयम असज्ञी तापस कादर्पिक चर
णपरिव्राजक किलिषापिक तिरश्चीन आजीविक
आभियौगिक सलिगी दर्शनव्यापन्नक यह देव
लोक में उपजै तो कहा कौन किस देवलोक

५८६

५८६

मे जाय उपजै एह निर्णय
चार प्रकार असज्ञि आयु कहा, असज्ञी जीव
क्या नैरयिकायु करै कि देवायु करै एव मनु
ष्यायु देवायु जैसे नारकायु, एह नारकी अस
ज्ञिआयु यावत् देव असज्ञि आयु मे कौन
किस्से थोड़ा घणा है एव अलपवज्रत्व
(२० वा अतक्रिया पद पूर्ण)

५९०

॥ २१ वा कहते हैं ॥

विहिसठाणपमाण यह द्वार गाथा
पाच औदारिकादि शरीर कहे
एकेद्रियादि ५ भेदस औदारिक पाच भेदेहे
पृथिवीकायादि ५ भेदस एकेद्रिय औदारिक ज्ञा

५९१

५९१

५९२

एव अप् वनस्पति में भी असुरकुमार मरके तेज वायु द्वौद्रिय द्वौद्रिय वतुरौद्रिय में न उपजै

शेष पाच में उपजै इत्यादि जैसे पृथिवीकाय कहा हैसे अप् वनस्पति भी कहना, तेजसकाय से निकल तेजसकाय में

उपजै यावत् स्तनितकुमार जैसे तेज तेसे वायु, बेरींद्री बेरींद्री से निकल नारकी में उपजै इत्यादि पञ्चोद्रिय तियच प बेंद्री तियच से निकल नारकी में उपजै इहा तक रत्नप्रभा पृथिवीका नारकी निकल तीर्थकर होय, कोड एक, एव यावत् बालुकाप्रभा पक्रममा पृथिवीका नारकी निकल तीर्थकर न होय

धूमप्रभा तमा यावत् सप्तमी

५८०

५८१

५८२

५८३

असुरकुमारचवके तीर्थकर पणा पावे नही, एव यावत् अप्, तेजस्काय तेजस्काय से निकल तीर्थकर होय नही धर्मसुने एव वायु मी, व नस्पतिकाय अतक्रिया करै तीर्थकर न हो, पञ्चोद्रिय तिर्यंठव मनुष्य वानव्यंतर जोतिपी

अतक्रिया ही करै

सौधर्म देव चवके तीर्थकर होय कोई एक जैसे

रत्नप्रभा नारकी एव यावत्सर्वार्थसिद्ध का देव रत्नप्रभा का नारकी चक्रवर्त्त होय, शर्कराप्रभा

का न होय एव यावत्सातमी का नारकी, तिर्यं च मनुष्य भी नही, भवनपति व्यंतर जोतिपी वैमानिक से होय, एव यलदेव भेद यह के शर्करापृथिवीका नारकी भी होय, एव वासु

५८५

५८५

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
सस्या० सम्मुखिर्द्धम मे सर्वत्र ऊकही है, मनुष्य मे ६ सस्यान सम्म० मे ऊकही है, श्रौ दारिक शरीर की कितनी बली अवगाहना है इत्यादि	५९८	धारह योजन इत्यादि, प्रान्द्र तीन कोस, चौरिंद्री चारकोस, पंचेद्रिय १००० योजन इत्यादि	६०१
पृथिवीकाय एकेद्रिय श्रौदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अंगुल असख्यात भाग एव अ पर्याप्त पर्याप्त, एवं सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त, वा दूर पर्याप्ता पर्याप्त मी, एव अपूकाय भी तंजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कही, वनस्पति मे जघन्य अंगुल असख्यात भाग उत्कृष्ट सा तिरैक हजार योजन एव पर्या० अंगुल अस ख्यात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा तैसे है	५९९	जोयणसहस्रच्छगा यह समग्रणि गाथा २ मनुष्यीदारिक शरीरावगाहनाधिकार	६०२
द्वीन्द्रिय जघन्य अंगुल असख्यात भाग उत्कृष्ट	६००	वैक्रिय शरीर द्वि जेद व्यक्तव्यताधिकार	६०३
		वैक्रिय शरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार	६०८
		नारकी छादि दडक मे वैक्रियशरीर सस्यान	६०८
		वैक्रिय शरीरावगाहना वक्तव्यताधिकार	६१०
		आहारक शरीर वक्तव्यताधिकार	६१६
		आहारकशरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार	६१९
		तैजसशरीर वक्तव्यता	६२०
		तैजसशरीर सस्यान निर्णय २४ दडक मे	६२१

रीर पाच प्रकार है

पृथिवीकाय एकैद्रिय औदारिक शरीर सूक्ष्म या दूर जेदसे दो जेद, सूक्ष्म तथा घादरजी पर्याप्त

अपर्याप्त जेदसे प्रत्येक दो दो जेदहै एव वनस्पतिकाय एकैद्रिय औदारिकजी कहा द्विप्रचतुराद्रिय औदारिकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त

जेदसे द्विधिय कहाहै पंचैद्रिय औदारिक शरीर तिर्यच मनुष्यसे दो जेद है, तिर्यच औदारिक तीन जेदहै एव जल

स्यल स्रवरादि जेदनिर्णय मनुष्य पंचैद्रियौदारिक शरीर दो जेद इत्यादि औदारिक शरीर नानासस्यान सस्थित है, एकैद्रिय का औदारिक नानासस्यानहै, पृथिवी

५९२

५९२

५९३

५९३

५९३

५९५

काय मसूरघट्ट सस्यान सस्थित, एव सूक्ष्म पृथिवीका

घिवीका घादर कान्नी कहा

अपूकाय स्तिवुकविटु सस्यान, सूक्ष्म घादरपर्याप्त

पर्याप्त जी, तेज सूचीकलाप सस्थित एव

सूक्ष्मघादर पर्याप्त पर्याप्त जी, वायु पताका

सस्यान सस्थित है, एव सूक्ष्मादि जीहै, वन

स्पति नानासस्यान सस्थितहै, एव सूक्ष्मादि

जीहै, पंचैद्रियौदारिक शरीर क्लृप्तसस्यान है,

एव तैरित्री चतुरित्री जी, पंचैद्रिय तिर्यचको

हू सस्यान है पर्याप्त अपर्याप्त कोन्नी

पर्याप्त अपर्याप्त सम्मुखिर्म पंचैद्रिय क्लृप्तहै,

पंचैद्रिय पंचैद्रिय तिर्यच नाना है,

एव तिर्यच के ९ अलावे है, जलधर में ६

५९६

सस्या० सम्मूर्च्छिम मे सर्वत्र ऊरुही है, मनुष्य मे ६ सस्यान सम्मू० मे ऊरुही है, स्त्री दारिक शरीर की कितनी बनी अवगाहना है इत्यादि	५१८	धारह योजन इत्यादि, त्रिन्दि तीन कोस, चौरिंदी चारकोस, पंचेद्रिय १००० योजन इत्यादि	६०१
पृथिवीकाय एकेद्रिय औदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अगुल असस्यात भाग एव अ पर्याप्त पर्याप्त, एवं सुदृढ पर्याप्ता पर्याप्त, वा दर पर्याप्ता पर्याप्त मी, एव अपूकाय भी तेजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कही, वनस्पति मे जघन्य अगुल असस्यात भाग उत्कृष्ट सा तिरिक हजार योजन एव पर्या० अगुल अस स्यात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा ऐसे है	५१९	जोयणमहस्सक्का यह सग्रहणि गाथा २ मनु औदारिक शरीरावगाहनाधिकार वैक्रिय शरीर द्वि जेद व्यक्तव्यताधिकार वैक्रिय शरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार नारकी छादि दढक मे वैक्रियशरीर सस्यान वैक्रिय शरीरावगाहना वक्तव्यताधिकार आहारक शरीर वक्तव्यताधिकार आहारक शरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार तेजसशरीर वक्तव्यता	६०२ ६०३ ६०८ ६०८ ६१० ६१६ ६१९ ६२०
द्विन्द्रिय जघन्य अगुल असस्यात भाग उत्कृष्ट	६००	तेजसशरीर सस्यान निर्णय २४ दढक मे	६२१

पृथिवीकाय एकैद्वय औदारिक शरीर सूक्ष्म वा

दर जेवसे दो जेद, सूक्ष्म तथा वादरजी पर्याप्त

अपर्याप्त जेवसे मत्स्येक दो दो जेदहे

एव वनस्पतिकाय एकैद्वय औदारिकजी कहा

द्विभिचतुरेद्वय औदारिकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त

जेवसे द्विविध कहाहे

पर्वेद्वय औदारिक शरीर तिर्यच मनुष्यसे दो

जेद हे, तिर्यच औदारिक तीन जेदहे एव जल

स्थल स्रवरादि जेदनिर्णय

मनुष्य पर्वेद्विधौदारिक शरीर दो जेद इत्यादि

औदारिक शरीर नानासंस्थान सस्यत हे, एकै

द्वय का औदारिक नानासंस्थानहे, पृथिवी

काय मसूरचद्र संस्थान सस्यत, एव सूक्ष्म पृ

थिवीका वादर काजी कहा

अपकाय स्तिवुकाविदु संस्थान, सूक्ष्म वादरपर्या

प्ता पर्याप्त जी, तेज सूचीकलाप सस्यत एव

सूक्ष्मवादर पर्याप्त पर्याप्त जी, वायु पताका

संस्थान सस्यत हे, एव सूक्ष्मादि जीहे, वन

स्पति नानासंस्थान सस्यतहे, एव सूक्ष्मादि

जीहे, द्वेद्विधौदारिक शरीर जलसंस्थान हे,

एव तैरिद्री चउरिद्री जी, पर्वेद्वय तिर्यचको

छ संस्थान हे पर्याप्त अपर्याप्त कोजी

पर्याप्त अपर्याप्त समुच्छिप्त पर्वेत् तिर्यच ऊरुहे,

पञ्च अपर्याप्त गर्जज पर्वेद्वय तिर्यच नाना हे,

एव तिर्यच के १ स्थलावे हे, जलचर में ६

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
संस्था० सम्मुखिर्म मे सर्वत्र जोरही है, मनुष्य मे ६ संस्थान सम्मू० मे जोरही है, स्त्री दारिक शरीर की कितनी बनी अवगाहना है इत्यादि	५९८	वारह योजन इत्यादि, त्रीन्द्र तीन कोस, चौरिद्री चारकोस, पंचेद्रिय १००० योजन इत्यादि	६०१
पुण्यश्रीकाय एकेद्रिय शौदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अंगुल असंख्यात भाग एव अ पर्याप्त पर्याप्त, एवं सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त, दूर पर्याप्ता पर्याप्त मी, एव अपूकाय भी तेजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कही, वनस्पति मे जघन्य अंगुल असंख्यात भाग उत्कृष्ट सा तिरक हजार योजन एव पर्याप्त ० अंगुल असंख्यात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा ऐसे है	५९९	जोयणसहस्रकुगा यह सग्रहाणि गाथा २ मनुष्यौदारिक शरीरावगाहनाधिकार वैक्रिय शरीर द्वि जेद व्यक्तव्यताधिकार वैक्रिय शरीर संस्थान व्यक्तव्यताधिकार नारकी आदि दृढक मे वैक्रियशरीर संस्थान वैक्रिय शरीरावगाहना व्यक्तव्यताधिकार आहारक शरीर व्यक्तव्यताधिकार आहारकशरीर संस्थान व्यक्तव्यताधिकार तैजसशरीर व्यक्तव्यता तैजमशरीर संस्थान निर्णय २४ दृढक मे	६०२ ६०३ ६०८ ६०८ ६१० ६१६ ६१९ ६२० ६२१
पुण्यश्रीकाय एकेद्रिय शौदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अंगुल असंख्यात भाग एव अ पर्याप्त पर्याप्त, एवं सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त, दूर पर्याप्ता पर्याप्त मी, एव अपूकाय भी तेजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कही, वनस्पति मे जघन्य अंगुल असंख्यात भाग उत्कृष्ट सा तिरक हजार योजन एव पर्याप्त ० अंगुल असंख्यात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा ऐसे है	६००		
पुण्यश्रीकाय एकेद्रिय शौदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अंगुल असंख्यात भाग एव अ पर्याप्त पर्याप्त, एवं सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त, दूर पर्याप्ता पर्याप्त मी, एव अपूकाय भी तेजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कही, वनस्पति मे जघन्य अंगुल असंख्यात भाग उत्कृष्ट सा तिरक हजार योजन एव पर्याप्त ० अंगुल असंख्यात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा ऐसे है	६००		

भारणातिक समुद्रघात समयहत जीव के तैजस शरीर की कितनी अवगाहना औधिक सूत्र, एव एकैद्रिय द्वीन्द्रियादि समयहत के तैजस

की अवगाहना कही एवं मरणसमुद्रघात समयहत नारकी के तैजस की, पंचेद्रिय तिर्यच मनुष्य असुरकुमारादि समयहत तैजसावगाहनाधिकार कर्मण शरीर पाच प्रकार एकैद्रियादि भेद से, तैजस शरीर समान वक्तव्यता सर्व कहना

अनुत्तरोपपातिकवेद्य पर्यंत औदारिक शरीर पुद्गल कितनी दिशि से विर्णे इत्यादि निर्णय, वैक्रिय पुद्गलादि भी कहा एव यावत्कर्मण शरीर पुद्गल भी, उपचिणे अ

६२३

६२४

६२७

६२८

पचिणे, जिस्को औदारिकशरीर तिस्को वैक्रिय जिस्को वैक्रिय तिस्को औदारिक शरीर इत्या

दि वक्तव्यता

यह औदारिक वैक्रिय आहारक तैजस कर्मण शरीरों में द्रव्यार्थ से प्रवेशार्थ से द्रव्यार्थ प्रवेशार्थ से कौन किस्से योडा घणा है इत्यादि निर्णय यह औदारिक वैक्रिय आहारक तैजस कर्मण शरीरों में जघन्यावगाहना उत्कृष्टावगाहना म

ध्यमावगाहना में कौन किस्से अलपयकत्व (२१ वा पद कहा)

॥ २२ वा कहते हैं ॥

कितनी क्रिया कही कायिकी आदि पाच क्रिया

६२९

६३०

६३१

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
कही, कायिकी २ जेदे, अधिकरणकी २ जेदे, प्राद्विपिकी ३ जेदे, पारितापनिकी ३ जेदे एव क्रिया निरूपणाधिकार	६३४	होय एव याथद्वैमानिक पर्यन्त कहना, एव ना रकी श्यादि के वध का निर्णय	६३८
जीव सक्रिय है के अक्रिय है इत्यादि औधिक जीव प्राणातिपात क्रिया करै, काहे स करै, एव नारकी श्यादि दुरुको मे जी कहा वैमानिक पर्यत एव मूपावाद अदृष्टावान मैयुन परिग्रह सूत्र जी	७३५	है एकवचन वज्रवचने वैमानिक तक एव श्याद कर्म के एकवचन वज्रवचन से १६ दुरुक कहना	६३९
एव क्रोध मान माया छोत्र प्रेम द्वेप कलह श्रम्या खान पैसून्य परनिदा श्रुतिरति मायामपा मिथ्यादर्शनशाल्य जी सर्व नारकी श्यादि वैमा	६३६	जीव को जीवों से कितनी क्रिया, कदाचित् ३। ४। ५। और कदाचित् अक्रिय, जीव को ना रकिश्यों से कितनी पूर्ववत्, स्तनितकुमार से पृथिवी से श्रुप् तेज वायु वनस्पति द्वित्रिचतु रिद्रिय पर्चेद्रिय मनुष्य से जैसे जीवों से, वान अन्तर जोतिपी वैमानिक से जैसे नारकी से	६४०
निक पर्यन्त मे जैसे पूर्व कहा कहना जीव प्राणातिपात से सप्तविध अष्टविध अधक	६३७	एकैक जोय पद मे चार २ दुरुक	६४१

कायिकी श्रादि पाच क्रिया कही, नारकी को पाचो क्रिया है, एव वैमानिक पर्यन्त, जिस जीव को कायिकी क्रिया है उसको अधिकरण की है जिस्का अधिकरण की तिसको कायिकी

है इत्यादि जिस समय में जीव को कायिकी क्रिया है उस समय में अधिकरण की जिस समय अधिकरण की तिस समय कायिकी एव पाचो क्रिया के

सूत्र कहे जिस देश में जीव को कायिकी तिस देश में स्थि करण की जिस्में अधिकरण की तिसमें कायिकी इत्यादि, प्रवेश में भी एव कहा, ५ क्रिया सांयोजिक कही २४ दृक्क में ए अधिकार

६४५

६४६

६४७

जीव जिस समय कायिकी आधिकरणकी प्राद्विपिकी क्रिया न स्पृष्ट उस समय प्राणातिपात से भी स्पृष्ट, इत्यादि पूर्वग्रत् १ वचन बहुग्र

चन से कहना

पाच क्रिया कही, आरम्भिकी पारिग्रही माया प्रत्यया अप्रत्यास्थान मिथ्यादर्शनप्रत्यया, आरम्भिकी आदि किस्को है, प्रमत्त सयत को, सयतासयत अप्रमत्तसयत अप्रत्यास्थानी

६४९

मिथ्यादृष्टी को क्रम से है नारकी को पाच क्रिया यावद्वैमानिक पर्यन्त, जिस्को आरम्भिकी तिसको पारिग्रहिकी हु-

६५०

त्यादि निर्णय है जीव को प्राणातिपात विरमण, काहे से जीव

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>प्राणातिपात विरमण करै इत्यादि अधिकार प्रतिपादन</p> <p>प्राणातिपातविरत जीव कितनी कर्म प्रकृति बाधै</p> <p>इत्यादि २७ भग निरूपण</p> <p>एव प्राणातिपातविरत जीव के २७ भागें एव भूपाशाद्विरत यावत् मायामृपाविरत जीव मनुष्य की कहा, मिथ्यादर्शनशून्यविरत का निरूपण, २७ भागें कहे एव क्रिया निर्णय पावो क्रियाओं का अल्पयहुत्व निरूपण</p> <p>(२२ क्रिया पद समाप्त)</p> <p>॥ ३२ वा पद कहते हैं ॥</p> <p>कतिपगद्दी कहि यधह इत्यादि द्वार गाथा</p>	<p>६५२</p> <p>६५३</p> <p>६५६</p> <p>६५९</p> <p>६६०</p>	<p>ज्ञानावरणी जादि ८ कर्मप्रकृति कही नारकी को कितनी कर्मप्रकृति, एव यावद्वैमानि क, कैसे जीव छाठ कर्मप्रकृति बाधै एव वै मानिक पर्यन्त</p> <p>ज्ञानावरणी कर्म जीव कैसे बाधै इत्यादि १६ ठढक अधिकार</p> <p>जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदै, नारकी ज्ञानावरणी कर्म वेदै एव वैमानिक पर्यन्त एव ज्ञाप कर्म प्रकृति ठढक भी कहना</p> <p>ज्ञानावरणी कर्म जीवने बाधा स्पृष्ट वस्त्रस्पृष्ट सख्या विना यावत् गति को पाक स्थिति को पाके पुद्गलपरिणाम को पाके कितने प्रकार अ नुभाग कहा इत्यादि</p>	<p>६६०</p> <p>६६१</p> <p>६६२</p> <p>६६३</p> <p>६६५</p>

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
एव सातवेदनी का ७ अनुभाग कहा, असातका मी ८ ही कहा मोहनीका अनुभाग १ तरह, आयुका १ एव सर्व कर्मका (१ उद्देशा पूरा कथा) छाठ कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी ५ जेद, दर्श नावरणी निद्रा ५ दर्शन १ एव नव, वेदनी १६ प्रकार सात ८ तरे सुसाता ८ तरह, मोहनी दो जेदें दर्शनमोहनी तीन चारिप्रमोहनी दो जेदें, कथाय वेदनी १६ जेदें हे नो कथायवेदनी १ प्रकार, आयु १, नाम १२ गति नाम १ जेदें, जातिनाम ५, शरीर नाम ५, निरूपण	६६८ ६६९ ६७५ ६७६	अगापाग ३, शरीरवधन ५, शरीरसघात ५, नाम छ जेदें सस्थान नाम ६, वर्ण ५, गध २, रस ५, स्पर्श ८, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, अानुपर्वी १, उत्स्थास १, शेष सर्व १, एक है यावन्तीर्यकर है, विहायोगति २ जेदें, गोत्र २ जेदें उच्चै ८, नीचै ८, अन्त राय ५ जेदें, ज्ञानावरणी आदि ८ कर्मस्थिति निरूपणाधिकार एकैद्रिय जीव ज्ञानावरणी को क्या याचै एव ८ कर्म कहना एव द्वित्रि चतुरिद्रिय को जी कहना एवं पञ्चैद्रिय ज्ञानावरणी का क्या वाचै इत्यादि	६७७ ६८२ ६९५ ६९९ ७००

विषय और प्रश्नादि	पन्नांक	विषय और प्रश्नादि	पन्नांक
ज्ञानावरणी कर्म का जघन्य स्थिति बन्धक कौन, मोहनीय को जघन्यस्थिति बन्धक कौन, आयु का जघन्य स्थिति बन्धक कौन इत्यादि उत्कृष्टस्थितिक ज्ञानावरणी कर्म क्या नारकी बाधे कि तिर्यच इत्यादि, कैसा नारकी उत्कृष्ट स्थितिक ज्ञानावरणी कर्म बाधे इत्यादि निरूपण एवं आयु को ठोस सातो कर्म के आकावे कहना, उत्कृष्टस्थितिक आयु कर्म क्या नारकी बाधे इत्यादि कैसा तिर्यच उत्कृष्टस्थितिक आयु कर्म बाधे	७०४	(२३ वां पद पूर्ण छात्रा) ॥ २४ वा पद कहते हैं ॥ अष्ट कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक की, जीव ज्ञानावरणी (छात्रादि) कर्म बाधता छात्रा कितनी कर्म प्रकृति बाधे इत्यादि निर्णय (२४ वां पद पूर्ण छात्रा)	७०८
कैसा मनुष्य तथा मानुषी उत्कृष्टस्थितिक आयु बाधे	७०६	॥ २५ कहते हैं ॥ छात्रा कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी कर्म बाधतो जीव कितनी प्रकृति वेदे, एवं नारकी यावद्वैमानिक, एवं पृथक् सेत्री, यावत् अतराय तक कहना, जीव वेदनी कर्म बाधता कितनी	७०८
	७०७		

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>कर्म प्रकृति वेदे, एव एकत्व पृथक् से स्यादो कर्म वेदे यावद्वैमानिक (२५ वा पद पूर्ण कहा)</p> <p>॥ २६ कहते हैं ॥</p> <p>आठ कर्म कहे नारकी को यावद्वैमानिक को, खोव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्र कृति बाधे, इत्यादि निर्णय (२६ वा पद कहा पूर्ण)</p>	७१२	<p>कर्मों के स्यालावे समाप्ति पर्यन्त (२७ वा पद कहा पूर्ण)</p> <p>सच्चिन्नाहारठी यह द्वार गाथा २, नारकी सच्चिन्नाहार के सच्चिन्नाहार मिश्राहार एव असुरकुमार यावद्वैमानिक, नारकी स्याहार का अर्थ है, कितने कालसे स्याहार की इच्छा होय इत्यादि</p> <p>नारकी क्या स्याहार करे इत्यादि निरूपणाधिकार असुरकुमार स्याहार का अर्थ है, एव जैसे नार की यावत् मपोभूय परिणमे पृथिवीकाय आहार का अर्थ है, निरंतर आ हारेच्छा होती है, क्या आहारे है जैसे नारकी</p>	७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२५

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>को कहा तैच इहा भी कहना सर्व वनस्पति काय पर्यन्त एवमेव द्वीन्द्रिय आहारार्थी है, एवं पूर्ववत् सर्व कहना यावत् अल्पयज्ञत्व पर्यन्त एव त्रिचतुरिन्द्रियाहारार्थ, आहार कालादि नि रूपणाधिकार मनुष्य आहारादि निर्णयाधिकार यावत् सर्वार्थ सिद्ध देव तक कहा नारकी क्या एकेन्द्रियशरीर आहार के यावत्पक्षे द्वियशरीर आहार, एव स्तनितकुमारपर्यन्त पृथिवीकाय प्रश्न, द्वीन्द्रिय एव यावच्चतुरि- न्द्रिय इत्यादि जिसके जितनी इन्द्रियशरीर उसकी उतनेही का आहार, नारकी लोमाहार</p>	<p>७२६ ७२८ ७२९ ७३०</p>	<p>है प्रक्षेपाहारी नहीं एव एकेन्द्रिय भी सर्व देश भी पूर्ववत् वैमानिक पर्यन्त, द्वीन्द्रिय से मनुष्य तक दोनु है, नारकी ओजाहारी है मनमदो नही, एव सर्व देश यावद्वैमानिक दोनु है इत्यादि निरूपणाधिकार (१ उद्देशा पूर्ण ज्ञात्रा) आहार मविय सबी यह गाया, जीव आहारक भी है अनाहारक भी है एव नारकी यावत् असुरकुमार यावद्वैमानिक सिद्ध अनाहारी है, एव यज्ञयचन से भी आ लाया कहना भवसिद्धि आहारक अनाहारक भी है, एव वैमा निक पर्यन्त एव अभवसिद्धिक नोभवसिद्धिक</p>	<p>७३४ ७३५ ७३६ ७३७</p>

विषय और प्रश्नावि	पत्राक	विषय और प्रश्नावि	पत्राक
नो अमवसिद्धि साहार अनाहार निर्णय (द्वार १)	७३८	दी प्रकार उपयोग कहा, साकारोपयोग आठ नेद, अनाकारोपयोग चार	७५०
सद्गी जीव आहारक अनाहारक मी है एव वैमा निक पर्यन्त एकैद्रिय विकर्तेद्रिय न पूछना एव असन्धी मी कहना स्तनितकुमार तक एव मनुष्य मी, सिद्ध अनाहारक, सलेयी जीव का प्रश्न एकस्वपृथक् से सम्पद्गुष्टि जीव आहारक प्रश्न, द्वित्रिचतुरिन्द्रिय छ मगा सयत आहारकानाहारक निर्णय, एकत्व पृथक् से सकपामी प्रश्न (२८ वा आहार पद कहा) ॥ २९ वा कहते है ॥	७३९ ७४० ७४२ ७४४	नारकी की कितने प्रकार उपयोग, साकारोपयोग ६, अनाकारोपयोग तीन प्रकार एव स्तनित कुमार पर्यन्त कहना पृथिवीकाय उपयोग प्रश्न यावद्भनस्पतिकाय, द्वी न्द्रिय प्रश्न पर्वेद्रिय तिर्येच जैसे नारकी, मनुष्य जैसे शौचिक उपयोग इत्यादि (२९ वा पद समाप्त आया) ॥ ३० कहते है ॥	७५१ ७५२ ७५३ ७५३

विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक	विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक
कितने प्रकार पञ्चज्ञा कही २, साकार पञ्चज्ञा ६ प्रकार, अनाकार पञ्चज्ञा तीन प्रकार है एव जीव को कहना नारकी को २ पञ्चज्ञा, साकार पञ्चज्ञा १ अनाकार २ एव स्तनितकुमार पर्यन्त पृथिवीकाय को १ साकारपञ्चज्ञा एव वनस्पति पर्यन्त द्विन्द्रिय को १ साकार पञ्चज्ञा सो २ तरहकी है एव त्रीन्द्रिय जी वक्षुरिन्द्रिय को २ साकार पञ्चज्ञा जैसे द्विन्द्रिय को अनाकारपञ्चज्ञा १ कही, मनुष्य को जैसे जीवो को शेष जैसे नारकी यावद्वैमानिक जीव साकारपञ्चयी है के अनाकार इत्यादि	७५६ ७५७ ७५७ ७५८	केवली इस रत्नप्रज्ञापृथिवी को अनाकार हेतु उ पमा द्रष्टान्त वर्ण सस्यान प्रमाण से जितसमय जाणै उससमय देखै इत्यादि प्रश्न (३० पद समाप्त अष्टा) ॥ ३१ कहते हैं ॥ जीव सज्ञी अज्ञी के नो सज्ञी नो अज्ञी इत्यादि पृथिवी काय प्रश्न, एव यावच्चतुरिन्द्रो मनुष्य जैसे जीव, पञ्चेन्द्रिय तिर्यच वानध्यन्तर जैसे नारकी जोतिषी वैमानिक सज्ञी, (३१ वा पद कहा)	७५८ ७६० ७६२ ७६३

॥ ३२ कहते हैं ॥

जीव सयत के असयत के सयतासयत, एव नारकी प्रश्न, यावच्चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय तिर्यक्ष

मनुष्य प्रश्न एवं चिह्नतक
(३२ वा पद कहा)

॥ ३३ कहते हैं ॥

नेद विषय सठार्जे यह गाया
दो प्रकार श्रुति कही जयप्रत्यय द्वायोपशमिक
नेद से, देव नारकी को जयप्रत्यय, मनुष्य

तिर्यक्ष को द्वायोपशमिक
नारकी जघन्य छठुं क्रोश उत्कृष्ट चार जार्जे श्रु
ति से, रत्नप्रज्ञा का नारकी छठार्जे जघन्य

७६४

७६५

७६७

७६८

उत्कृष्ट चार जार्जे, शक्रा का जघन्य तीन
उत्कृष्ट सार्द्ध, बालुका नारकी जघन्य छठ-
उत्कृष्ट तीन, पकप्रज्ञा नारकी जघन्य दो उत्कृष्ट
छठार्जे, धूमप्रज्ञा नारकी जघन्य छठ उ० दो
तमा का नारकी क्रोश जघन्य उत्कृष्ट छठ, नीचे
सातमी का जघन्य श्रद्धे क्रोश उत्कृष्ट क्रोश।
असुरकुमार जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट अस
ख्यात द्वीपसमुद्र, नाग जघन्य २५ उत्कृष्टग्रही,
एव स्तनितकुमार पर्यन्त, पंचेन्द्रिय तिर्यक्ष ज
घन्य श्रुगुल असख्यात प्राग उ० असख्यात
द्वीपसमुद्र, मनुष्य श्रुगुल असख्यात प्राग जघन्य
उत्कृष्ट असख्यात श्रुलोक में लोक प्रमाण स्वक,
वानस्पन्तर जैसे नाग, जोतिषी जघन्य उत्कृष्ट

सौधर्म देव जघन्य अगुल असख्यातभाग उ०—
नीचे रत्नप्रभा का नीचे का चरमान्त तिरछा
असख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर अपना विमान ।
एव इजानदशमी, सनत्कुमार भी ऐसे नीचे
शर्करा का नीचला चरमान्त, एव माहिन्द्रदेव
भी, ब्रह्म लान्तकदेव सिर्फ नीच तीसरी का
नीचेका चरमान्त, महाशुक्र सहस्त्रार धौधीके
नीचे का चरमान्त, आनतप्राणत आरण अ
च्युत देव नीचे पाचमी धूमप्रभा के नीचे का
चरमान्त, नीचे मध्यम ग्रैवेयकदेव नीचे लठी
के नीचे का चरमान्त, उपरिमग्रैवेयक देव
ज० अगुल असख्यात भाग उ० सातमी के

७६९

नीचे का चरमान्त, तिरछा असख्य द्वीपसमुद्र,
ऊपर स्थितिमान
अनुसरोपपातिक देव समिबलोक नाडी जाणे,
नारकी का अर्थाच क्षुराकार, असुरकुमार या
वत् स्तनितकुमार का पत्यक के आकार, प
चेद्विष तिर्यच का नानाकार है, मनुष्य का भी
एव, यानव्यन्तर का पटहाकार, जातिपी का
जालराकार । सौधर्म देव का ऊर्ध्वमृदगाकार
एव अच्युतदेव पर्यन्त है, ग्रैवेयकदेव का पुष्प
चगेरीसमान, अनुतरदेव का जयको नाली
के आकार

७७१

नारकी यावत् स्तनितकुमार अर्थाच के भीतर
है के बाहिर, भीतर है, पचेद्विष तिर्यच या

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
हिर, मनुष्य दोनू है, व्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी, नारकी देखावधि है, एव स्तनितकुमार पर्यन्त, पंचेन्द्रिय तिर्यच भी एव, मनुष्य दानू । व्यन्तर जातिपी वैमानिक जैसे नारकी । नारकी का अग्रधि आनुगामिक स प्रतिपाती अवस्थित है । एवं स्तनितकुमार पर्यन्त ।	७७२	अणतरागयाहारे डह गाया २ नारकी अणतराहार है इत्यादि वक्तव्यता याव त २१ दडक मे नारकी का आहार आभोगनिर्वर्त्तित है के अ- नाभोगनिर्वर्त्तित इत्यादि वक्तव्यता नारकी जिन पुद्गलो को आहारपर्णे छे उनको जार्णे देखे इत्यादि निर्णय नारकी को असख्यात अव्यवसान, प्रशस्त भी अप्रशस्त भी वैमानिक कोमीह नारकी सम्पत्ताभिगमी मिथ्यात्वाभिगमी सम्प- ह्मिथ्यात्वाभिगमी भी है, एव वैमानिक पर्यन्त एकैन्द्रिय चिकलेन्द्रिय मिथ्यात्वाभिगमी ही है देवता सदेवीक सपरिचार है इत्यादि ४ भग	७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७
पंचेन्द्रिय तिर्यच का आनुगामी भी यावत् अवस्थित भी है, एव मनुष्य भी, दानव्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी (३३ वा पद पूर्ण हुआ)	७७३		
॥ ३४ वा पद कहते हैं ॥			

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>प्रश्न निर्णय</p> <p>भयनपति ध्यन्तर जोतिषी सौधर्म ईशान के देव सदेवीक सपरिचार, सनत्कुमार से अच्युत तक अदेवीक सपरिचार हैं, त्रैवेयकानुत्तर देव अ देवीक अपरिचार हैं</p> <p>परिचारणा पाच प्रकार है कार्यादि भेदसे उसमें भयनपति आदि ईशानान्त कल्प से कायपरिचारणा है, शनत्कुमार माहेद्र से सर्वापरिचारणा है, ब्रह्मलातक से रूपपरिचारणा है, शुक्र सहस्रार में शब्दपरिचारणा है, अच्युतान्त ४ से मनपरिचारणा है, त्रैवेयकानुत्तर में परिचारणा नहीं है।</p> <p>इच्छामन समुत्पन्न होने का अधिकार</p>	७७८	<p>यह कायपरिचारक यावत् मनपरिचारक देवों में कौन किसे अल्पयज्ञत्व है</p> <p>(३४ वां पद पूर्ण ज्ञाया)</p> <p>॥ ३५ वा कहते हैं ॥</p> <p>सीयायदव्वसारीर यह सग्रह गाथा शीत उध्न मिश्र एव तीन प्रकार वेदना कही, नारकी को कौन वेदना द्रव्य क्षेत्र काल भाव से चारप्रकार वेदना, नारकी कौन वेदना वेदे एव वैमानिक पर्यन्त शरीर मानसी जगरीरी मानसी जगरीरमानसी भेदसे तीनप्रकार वेदना, नारकी कौन वेदना वेदे एव यावद्वैमानिक पर्यन्त</p>	७८४
	७७९		७८६
	७८०		७८७
	७८०		७८८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
एकैन्द्रिय द्वीन्द्रिय शारीरी वेदना वेदे और नही, साता असता सातासात एव तीन प्रकार वेद नाहै, नारकी को कौन वेदना है एव सब जीव यावद्द्वैमानिक पर्यन्त	७८९	यंच मनुष्य व्यन्तर जैसे नारकी कहा ज्योतिषी का प्रश्न, (३५ या पद कहा)	७९१ ७९२
दुख सुख मिश्र एव तीन प्रकार वेदना है, नारकी को कौन वेदना यावद्द्वैमानिक पर्यन्त आभ्युपगमिकी औपक्रमिकी एव २ प्रकार वेदना है नारकी से चौरिन्द्री तक औपक्रमिकी है, तिर्यंच मनुष्य में दो, व्यन्तर जातिषी वैमानिक को जैसे नारकी को कही तैसे कहा निदा अनिदा भेद च दो वेदना, नारकी को कौन वेदना है इत्यादि निर्णय, एव स्तनितकुमार पर्यन्त, पृथिवीकाय प्रश्न, एव चौरिन्द्री, ति	७९० ७९०	वेदन कपाय मरणे इह गाथा सग्रहणी, जितने समुद्घात कहे वेदना समुद्घात असख्य त सामयिक श्रान्तमूर्च्छ तिष्ठ, एव आहारक तरु, क्षेत्रलिनमृद्घात आठ सामयिक, नारकी को चार समुद्घात, असुरकुमार को पात्र समुद्घात, एव स्तनित कुमार तक, पृथिवीकाय को तीन तमु०, एव चौरिन्द्री पर्यन्त, वायुकाय को चार समु०	७९३ ७९४

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>पर्वेन्द्रिय तिर्यञ्च यावत् वैमानिक को पाच समु० मनुष्य को सात, एकैक नारकी को कितने स मु० अतीत अन्त पुरस्कृत इत्यादि एव असुरकुमार को जी वैमानिक पर्यंत, एव चौबीस दण्डक कहा, एकैक नारकी को कितने समु० अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यंत एकैक नारकी को कितने केगलिसमु० अतीत इत्यादि</p>	७९६	<p>है, एव वैमानिक जेद वनस्पतिकाय मनुष्य मे एकैक नारकी का नारकी पणे कितने वेदना स० अतीत इत्यादि एव असुरकुमार से वैमानिक पर्यंत, एकैक असुरकुमार को नारकीपणे कितने वेदनासमु० अतीत इत्यादि, एकैक असुरकुमार को असुरकुमार पणे कितने वेदना स० अतीत एव वैमानिक</p>	८००
<p>एव वैमानिक यावन्मनुष्य पर्यंत, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एव वैमानिक तक, एव तैजस जी एव पाच २४ दण्ड नारकी को कितने आहारक समु० अतीत एव वैमानिक तक विशेष वनस्पतिकाय मनुष्य मे</p>	७९७	<p>एव वैमानिक पर्यंत २४ चौबीस दण्डक होय, नारकी के नारकीपणे कितने कपायसमु० अतीत इत्यादि एव एकैक नारकी के असुरकुमार पणे कितना अतीत एव स्तनितकुमार तक मारणातिक समु० स्वस्थान मे एकोत्तरिका से जहा</p>	८०१
<p>एव वैमानिक यावन्मनुष्य पर्यंत, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एव वैमानिक तक, एव तैजस जी एव पाच २४ दण्ड नारकी को कितने आहारक समु० अतीत एव वैमानिक तक विशेष वनस्पतिकाय मनुष्य मे</p>	७९८		८०२
<p>एव वैमानिक यावन्मनुष्य पर्यंत, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एव वैमानिक तक, एव तैजस जी एव पाच २४ दण्ड नारकी को कितने आहारक समु० अतीत एव वैमानिक तक विशेष वनस्पतिकाय मनुष्य मे</p>	७९९		८०३

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
तक वैमानिक को वैमानिकपणे में, एष २१। २१ दहक, वैक्रिय जैसे कपाय, तैजस जैसे एकैक नारकी के नारकीपने कितने मारणातिक एकीत इत्यादि	८०७	यह असुरकुमार वेदन कपाय मरण वैक्रिय तैज स सम० निर्णय	८१४
एकैक नारकी के नारकीपने कितने केंद्रलि स० एकीत इत्यादि वैमानिक पर्यन्त मनुष्य में जेद है, एष तैजससमु० पर्यन्त कहा यह वेदनादि समु० यावत्केवल समु० समयहत असमयहत जीर्णों में कौन किस्से योना घणा	८०८	मनुष्य वेदनादि यावत्केवल समु० समयहता समयहतों में कौन किस्से	८१६
यह नारकी वेदना कपाय मरण वैक्रिय समवहत इत्यादि अधिकार	८०९	कपायसमु० चारप्रकार क्रोधादि के चार भेदसे, नारकी को ४ कपाय समु० एष यात्रद्वैमानिक एकैक नारकी को कितने क्रोधसमु० एष यात्र	८१७
यह नारकी वेदना कपाय मरण वैक्रिय समवहत इत्यादि निर्णय	८१२	तु अतीत इत्यादि	८१८
	८१३	एष लोभसमु० पर्यन्त ४ दहक एकत्व पृथक् से ४ दहक, एकैक नारकी के नारकीपने कितने	

विषय और प्रवृत्तादि	पत्राक	विषय और प्रवृत्तादि	पत्राक
<p>क्रोधसं अतीत इत्यादि अघिकार यह क्रोधसमुं यावत्तोमसमुं समवहतासमवहत मे कौन किस्से कितने अघास्यिक समुं ६ कहे वेदना याव दाहारक नारकी को ४ लाघास्यिक, असुर को ५, एक द्विय को तीन। वायुको चार। त्रियेच पचे— द्विय को पाच। मनुष्य को ६ वेदनी समग्रहत जीव जिन पुद्गलोको छोड़े उनसे कितना क्षेत्र पूर्ण, कितना स्पष्ट इत्यादि नि रूपणाधिकार केयलिसमुं समवहत अनगर भायितात्मा जो चरम निर्जरापुद्गल से सूक्ष्म है, सर्वलोक को</p>	<p>८१९ ८२३ ८२५ ८२६ ८२७</p>	<p>फरस के रहे इत्यादि अघर्यनिरूपण कृष्णस्य मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलो के वर्ण गन्धा दि जाणे नहीं काहे से केयली समुं को ४ कर्म द्वीण न होने से करे कोई केयली समुद्रघात करे कोई नहीं भी करे, डहा २ गाया है, आवर्जन कितने समय मे होता है, केयलिसमुं कितने समय मे होता है ८ मे इत्यादि तथा समुं गत जीव मनोयोगादि तीन योगमे से कौनसा योग करे तथा समुं गत जीव सीछे यक्षे मुक्त होय इत्यादि समुं प्रतिनिर्वर्तित जीव कौनसा योग करे</p>	<p>८३५ ८३६ ८३७ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४</p>

विषय और प्रस्तावि	पत्राक	विषय और प्रस्तावि	पत्राक
योग निरीध समय निरूपणाधिकार प्रौढाधिकारानिरूपणाधिकार चार कमप्रकृति युगपत् स्वपाय औदारिक तेजस कार्मण त्यजे ऋजुश्राणि पाके अस्पृशद्भति हो के मुक्त होय सिद्ध होय अचरीर जीवधन इत्यादि सिद्ध लक्षणनिरूपण निष्कियसहस्रुक्ता सिद्धत्य निरूपण लक्षण गाथा (समुद्घात पद ३६ पूर्ण कहा)	८४५ ८४६ ८४७ ८४७ ८४८		
॥ चतुर्थ उपाग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥			
॥ समाप्त है ॥			

ववगयजरमरणमए सिष्ठेक्षमिवदिज्जणतिविहेण । वदामिजणयारिद तेलोक्कगुरुमहावीरं ॥ १ ॥
सुयरयणनिहाणजिण वरेणमवियज्जणणिहुडकरेण । उवदसियामगयया पन्नयणासह्मभावाण ॥ २ ॥
वायगवरवसाढं तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुह्मसुयसमिच्छुद्योण ॥ ३ ॥ सुयसागराविए
ज्जण जेणसुयरयणमुत्तमदिक्ख । सीसगणस्समगवढं तस्सणमोच्छज्जसामस्स ॥ ४ ॥ छज्जयणमिणचित्त सुय
रयणदिठ्ठिवायणीसद । जहवस्सियमगयया अहमवितहवस्सइस्सामि ॥ ५ ॥ पक्खयणा १ ठाणाइ २, यज्जत्र
तह्म ३ ठिई ४ विसंसाय ५ । वक्कती ६ उस्सास, ७ सखा ८ जोणीय ९ धरिमाइ १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२
परिणा, म १३ कसाय १४ इदिय १५ प्पत्तगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अत्तकिरियाय २०
॥ २ ॥ तंगाहणसठाणा २१, किरिया २२ कम्मेय २३ कम्मस्स । यधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सवधए २६
वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारं २८ उवत्तगे २९, पासणया ३० सखि ३१ सज्जे ३२ चेव । छही ३३ पवियारण ३४

व्यपगतकरामरणयाम् सिद्धाभिविद्यन्निचयेन । वन्देक्षितवरेणैवैलोक्यगुरुमहावीरम् ॥ १ ॥ अतरत्तनिधानिज्जण वरेणपन्नव्यजननिवृत्तिकरे
य । उपदक्षितान्नगयता मद्यापनासुखप्राधानाम् ॥ २ ॥ वाक्कवरवशेन योविशतितमेनपीरुठवेव । दुद्धरधरेणमुनिना पूवसुतसमुद्युहिता ३ ॥
अतसागराद्रीनयित्वा येनअतरवमुत्तमदत्त । क्षिप्यगुहायन्नगवते तस्मैसमायद्रयामाय ॥ ४ ॥ अप्ययनमिदंस्थिअ अतरत्तदृष्टिवादनिरपम् । यथा
वचित्तंनगवता इमपितमावर्धयिष्यामि ॥ ५ ॥ मद्यापनास्यानानिबुद्धतत्त्वस्थितिविद्यापय । व्युत्क्रान्तियान्छुत्तः सञ्जायोनियवरमादि ॥ ६ ॥
प्रायाक्षरीरपरिच्छासाः कयायेन्नियेप्रयोग्य । लेख्याकायस्थितिर्वा सम्यग्ज्ञानयात्तक्षिणाचैव ॥ ७ ॥ अथगाहनास्थान क्षिपाक्षर्मायकमणः । वत्सकी
वेदकवेव वेदद्वयव्यत्यय ॥ ८ ॥ वेदवेदकजाहार धोपयोगीय दर्शनाम् । सत्त्वाधसप्रसद्यैवा मयियमविचारया ॥ ९ ॥ वदनाय सुमुत्तुष्ट पदत्रि

विषय और प्रवृत्तादि

पत्राक

पत्राक

योग निरोध समय निरूपणाधिकार

श्रीलेशिकाखानिरूपणाधिकार

चार कर्मप्रकृति युगपत् स्वपाय औदारिक सैजस
कार्मण त्यजे ऋजुश्रणि पाके असृष्टाद्विती हो

के मुक्त होय सिद्ध होय

अशरीर जीवघन इत्यादि सिद्ध लक्षणनिरूपण
निष्कृष्टसद्गुत्का सिद्धत्व निरूपण लक्षण गाथा
(समुद्घात पद ३६ पूर्ण कहा)

॥ चतुर्थ उपाग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥

॥ समाप्त आहे ॥

८४५

८४६

८४७

८४७

८४८

परिणया नीलवस्त्रपरिणया लोहिण्यवस्त्रपरिणया हालिद्वयपरिणया सुक्लिप्तवस्त्रपरिणया । जे गंधपरिणया ते दुविहा पसुता, तजहा-सुस्निग्धपरिणया दुस्निग्धपरिणया । जेरसपरिणया ते पचविहा पसुता तजहा तित्तरसपरिणया कद्रुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अथिलरसपरिणया मज्जरसपरिणया । जेफासपरिणया ते अथविहा पसुता, तजहा-कस्करुफासपरिणया मडयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लज्जयफासपरिणया सीयफासपरिणया उस्निग्धफासपरिणया णिरुफासपरिणया लुक्कफासपरिणया । जेसठाणपरिणया ते पचविहा पसुता, तजहा-परिमल्लसठाणपरिणया बट्टसठाणपरिणया तससठाणपरिणया घउरससठाणपरिणया आयतसठाणपरिणया ॥ जे द्यसुने कालवस्त्रपरिणया ते गधने सुस्निग्धपरिणयाचि दुस्निग्धपरिणयाचि, रसने तित्तरसपरिणयाचि कद्रुयरसपरिणयाचि कसायरसपरिणयाचि अथिलरसपरिणयाचि मज्जरसपरिणयाचि, फासने कस्करुफासपरिणयाचि मडयफासपरिणयाचि गरुयफासपरिणयाचि लज्जयफासपरिणयाचि

सद्यथा-सुरभिगन्धपरिणया दुरभिगन्धपरिणया । ये रसपरिणया ते पञ्चविधा प्रसूता सद्यथा-तिलरसपरिणया कटुकरसपरिणया कषायरसपरिणया आसुररसपरिणया मधुररसपरिणया । य रसज्ञपरिणया स्ते ऽष्टविधा प्रसूता सद्यथा-ककशरसपरिणया मृदुरसपरिणया शुक्ररसपरिणया क्षुद्ररसपरिणया । शीतरसपञ्चपरिणया शूलरसपञ्चपरिणया । ये सत्यानपारणता स्ते पञ्चविधा प्रसूता सद्यथा परिमल्लसस्यानपरिणया घट्टसस्यानपरिणया बट्टसस्यानपरिणया आयतसस्यानपरिणया । य वस्त्रः कालवस्त्रपरिणया स्ते गन्धः सुरभिगन्धपरिणया अपि दुरभिगन्धपरिणया अपि, रसः तिलरसपरिणया अपि कटुकरसपरिणया अपि क्षुद्ररसपरिणया अपि आसुररसपरिणया अपि मधुररसपरिणया अपि, रसज्ञः ककशरसपञ्चपरिणया मृदुरसपरिणया

परिणतावि कद्रुयस्परिणतावि कसायस्परिणतावि अम्रिलस्परिणतावि मञ्जरस्परिणतावि, फासने
 कस्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिण
 तावि उसिणफासपरिणतावि णिफासपरिणतावि लुक्फासपरिणतावि, संधाणने परिमल्लसंधाणपरिण
 तावि बहसंधाणपरिणतावि तससंधाणपरिणतावि चउरससंधाणपरिणतावि आयतसंधाणपरिणतावि ।
 जवखणने हालिद्वयपरिणता ते गधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तरसपरिणता
 वि कद्रुयस्परिणतावि कसायस्परिणतावि अम्रिलस्परिणतावि मञ्जरस्परिणतावि, फासने कस्कफ
 फासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिफास
 परि० लुक्फासपरिणतावि, संधाणने परिमल्लसंधाणपरि० बहसंधाणपरि० तससंधाणपरि० चउरसस
 णाणपरि० आयतसंधाणपरिणतावि । जेवखणने सुक्खिस्वयस्परिणता ते गधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्ध

न्यपरिणता अपि रसतांस्सत्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायस्परिणता अपि अम्रस्परिणता अपि मधुरस्परिणता
 अपि, रसगतः ककशस्परिणता अपि सुदुकरपक्षपरिणता अपि गुरुकरपक्षपरिणता अपि लघुकरपक्षपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि
 उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि, सत्यानताः परिमल्लसत्यानपरिणता अपि द्रुतसत्यानपरिणता
 अपि अल्लसत्यानपरिणता अपि बहुरल्लसत्यानपरिणता अपि आगत संस्थानपरिणता अपि । ये तर्कतः सुक्खस्पर्शपरिणता स्ते गन्धतः सुस्निग्ध
 परिणता अपि दुरभिमन्यपरिणता अपि रसतांस्सत्तरसपरिणता कटुकरसपरिणता कपायस्परिणता अम्रस्परिणता मधुरस्परिणता अपि ।
 रसगतः ककशस्पर्शपरिणता अपि सुदुकरपक्षपरिणता अपि गुरुकरपक्षपरिणता अपि लघुकरपक्षपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्ण

यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतायि उमिणफासपरिणतायि णिठफासपरिणतायि लुक्कफासपरिणतावि
 सठाणन् परिमळसठाणपरिणतायि वहसठाणपरिणतायि तससठाणपरिणतायि चउरससठाणपरिणतायि
 ह्यायतसठाणपरिणतायि । जेवखन् नीलवखपरिणता ते गधन् सुम्लिगधपरिणतायि दुम्लिगधपरिणतायि,
 रसन् वित्तरसपरिणतायि कहुपरसपरिणतायि कसायरसपरिणतायि आधिउरसपरिणतायि मज्जरसपरिण
 तायि, फासन् कक्कळफासपरिणतायि मउयफासपरिणतायि गरुयफासपरिणतायि लङ्कयफासपरिणतायि
 सीतफासपरिणतायि उमिणफासपरिणतायि णिठफासपरिणतायि लुक्कफासपरिणतायि, सठाणन् परिमळ
 सठाणपरिणतायि वहसठाणपरिणतायि तससठाणपरिणतायि चउरससठाणपरिणतायि ह्यायतसठाणपरि
 णसायि । जेवखन् छोहियवखपरिणता ते गधन् सुम्लिगधपरिणतायि दुम्लिगधपरिणतायि, रसन् वित्तरस

अवि भुण्णरूपपरिणता अपि लपुब्बमर्त्यपरिणता अपि म्मीतस्सपरिणता अपि चउरसपरिणता अपि णिठरूपपरिणता अपि लुक्करूपपरि
 परिणता अपि, बल्यानता परिमसफससल्यानपरिणता अपि वृत्तसंभ्यानपरिणता अपि इयस्ससंभ्यानपरिणता अपि चउरससंभ्यानपरिणता
 अपि आयतसंभ्यानपरिणता अपि । ये ववता लोहितवक्कपरिणता स्वे गयता सुरभिगम्यपरिणता अपि सुरभिगम्यपरिणता अपि, रसत स्ति
 चउरपरिणता अपि बटवरसपरिणता अपि वयायरसपरिणता अपि चाउरसपरिणता अपि मपुवरसपरिणता अपि, रपम्यंतः कक्कळरूपपरि
 णता अपि सुदुक्कपरिणता अपि नदुक्कपरिणता अपि लपुब्बमर्त्यपरिणता अपि म्मीतस्सपरिणता अपि चउरसपरिणता अपि णि
 थरूपपरिणता अपि कक्कळरूपपरिणता अपि लपुब्बमर्त्यपरिणता अपि म्मीतस्सपरिणता अपि चउरसपरिणता अपि णि
 थरूपपरिणता अपि कक्कळरूपपरिणता अपि लपुब्बमर्त्यपरिणता अपि म्मीतस्सपरिणता अपि चउरसपरिणता अपि णि
 थरूपपरिणता अपि कक्कळरूपपरिणता अपि लपुब्बमर्त्यपरिणता अपि म्मीतस्सपरिणता अपि चउरसपरिणता अपि णि

વ્યયપરિ० સુક્ષિપ્તચપરિણતાવિ, ગદ્યનું સુક્ષિપ્તચપરિણતાવિ, ફાસનું કરકઠ્ઠાસ
 પરિ० મડયફાસપરિ० ગરુયફાસપરિ० લઙ્ગયફાસપરિ० સીતફાસપરિ० ઉસિનફાસપરિ० ણિદ્ધફાસપરિ०
 લુક્કફાસપરિણતાવિ, સઠાણનું પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિ० વહસઠાણપરિ० તસસઠાણપ૦ વરસસઠાણપ૦
 આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે સરનું અધિભરસપરિણતા તે વચ્ચનું કાલચચપરિ० નીલચચપરિ० હોહિતવ
 ચપરિ० હાલિદ્વચપરિ० સુક્ષિપ્તચપરિણતાવિ, ગદ્યનું સુક્ષિપ્તચપરિણતાવિ, ફાસનું
 કરકઠ્ઠાસપરિ० મડયફાસપરિ० ગરુયફાસપરિ० લઙ્ગયફાસપરિ० સીયફાસપરિ० ઉસિનફાસપરિ०
 ણિદ્ધફાસપરિ० લુક્કફાસપરિણતાવિ । સઠાણનું પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિ० વહસઠાણપરિ० તસસઠાણપરિ०
 વરસસઠાણપરિ० આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે રસનું મઙ્ગરપરિણતા તે વચ્ચનું કાલચચપરિ० નીલચચ

દ્રવ્યપરિણતા અપિ બુદ્ધવચ્ચપરિણતા અપિ, ગમ્યત' સુરન્નિગમ્યપરિણતા અપિ દુરન્નિગમ્યપરિણતા અપિ, સ્પર્શતઃ કલ્પશરપદોપરિણતા અપિ સ્વદુ
 સ્વર્ગોપરિણતા અપિ ગુરુકરપદોપરિણતા અપિ ગુરુકરપદોપરિણતા અપિ શ્રીતરપદોપરિણતા અપિ ઉદ્ધરપદોપરિણતા અપિ ક્ષિપ્યરપદોપરિણતા અ
 પિ રુદ્ધરપદોપરિણતા અપિ, સંસ્થાનતઃ પરિમયલસંસ્થાનપરિણતા અપિ વૃત્તસંસ્થાનપરિણતા અપિ અસંસ્થાનપરિણતા અપિ ચતુરસ્રસંસ્થાન
 પરિણતા અપિ આયતસંસ્થાનપરિણતા અપિ । યે રસતોચ્ચરસપરિણતા સ્તે વચ્ચતઃ કલ્પશરપદોપરિણતા અપિ સોદિતવચ્ચપરિ
 ણતા અપિ હારિદ્વચપરિણતા અપિ બુદ્ધવચ્ચપરિણતા અપિ, ગમ્યત' સુરન્નિગમ્યપરિણતા અપિ દુરન્નિગમ્યપરિણતા અપિ, સ્પર્શતઃ કલ્પશરપદો
 પરિણતા અપિ સ્વદુરપદોપરિણતા અપિ ગુરુકરપદોપરિણતા અપિ ગુરુકરપદોપરિણતા અપિ શ્રીતરપદોપરિણતા અપિ ઉદ્ધરપદોપરિણતા અપિ ક્ષિ
 પ્યરપદોપરિણતા અપિ રુદ્ધરપદોપરિણતા અપિ, સંસ્થાનત' પરિમયલસંસ્થાનપરિણતા અપિ વૃત્તસંસ્થાનપરિણતા અપિ અસંસ્થાનપરિણતા

रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लङ्कायफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उंसिण
 फासपरिणतावि णिच्छफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, सठाणत्तं परिमळसठाणपरिणतावि यहसठा
 णपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि श्यायतसठाणपरिणतावि । जेरसत्तं कहुयरस
 परिणता ते वसुत्तं कालयसुपरिणतावि नीलवसुपरिणतावि लोहितवसुपरिणतावि हालिद्वयसुपरिणतावि
 सुक्खिलवसुपरिणतावि, गघत्तं सुस्मिगधपरिणतावि दुस्मिगधपरिणतावि, फासत्तं कक्कळफासप० मउयफा
 सपरि० गरुयफासपरि० लङ्कायफासपरि० सीयफासपरि० उंसिणफासपरि० णिच्छफासप० लुक्कफासपरिण
 तावि, सठाणत्तं परिमळसठाणपरि० यहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० श्यायतसठाणप
 रिणतावि । जे रसत्तं कसायरसपरिणता ते वसुत्तं कालयसुपरि० नीलवसुपरि० लोहितवसुपरि० हालि

सपुवरस्योपरिबता अपि श्रीतस्योपरिबता अपि उपरस्योपरिबता अपि त्रिगुणस्योपरिबता अपि रुचस्योपरिबता अपि, सुखान्तः परि
 मउयसंस्थानपरिबता अपि वृत्तसंस्थानपरिबता अपि अक्षरसंस्थानपरिबता अपि चतुरक्षसंस्थानपरिबता अपि आपतसंस्थानपरिबता अपि ।
 ये रवताः ऋतुवरसपरिबताको वर्यतः उपरस्योपरिबता अपि नीलवर्योपरिबता अपि लोहितवसुपरिबता अपि द्वारिवर्योपरिबता अपि सुल
 लपरिबता अपि ज्यताः सुरमित्यपरिबता अपि दुरन्ध्रित्यपरिबता अपि स्यताः कर्णशरपत्रपरिबता अपि सुतस्योपरिबता अपि नुरु
 वरस्योपरिबता अपि सपुवरस्योपरिबता अपि श्रीतस्योपरिबता अपि उपरस्योपरिबता अपि त्रिगुणस्योपरिबता अपि रुचस्योपरिबता
 अपि संस्थानत परिमळसंस्थानपरिबता अपि वृत्तसंस्थानपरिबता अपि अक्षरसंस्थानपरिबता अपि चतुरक्षसंस्थानपरिबता अपि आपत
 संस्थानपरिबता अपि । य रवताः कसायरसपरिबताको वर्यतः उपरस्योपरिबता अपि नीलवसुपरिबता अपि लोहितवसुपरिबता अपि द्वारि

ફાસપરિણતાવિ, સઠાણછે પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિં વઢસંઠાણપરિં તસસઠાણપરિં ચઢરસસઠાણપરિં
 આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે ફાસછે મઝયફાસપરિં તે વચ્છનં કાલઞ્ચપરિં નીલઞ્ચપરિં લોહિતવચ્છ
 પરિં ઢાલિદ્ધવચ્છપરિં સુક્કિલ્લઞ્ચપરિણતાવિ, ગધનં સુશ્ણિગધપરિં દુશ્ણિગધપરિણતાવિ, રસનં તિત્ત
 રસપરિં કઠુયરસપરિં કસાયરસપરિં અચ્ચિલરસપરિં મજ્જારસપરિણતાવિ, ફાસનં ગરુયફાસપરિં
 લજ્જયફાસપરિં સીતફાસપરિં ડસિગફાસપરિં ણિદ્ધફાસપરિં હુસ્કફાસપરિણતાવિ, સઠાણનં પરિ
 મઠ્ઠલસઠાણપરિં વઢસઠાણપરિં તસસઠાણપરિં આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે ફાસનં
 ગરુયફાસપરિણતા તે વચ્છનં કાલઞ્ચપરિં નીલઞ્ચપરિં લોહિતવચ્છપરિં ઢાલિદ્ધવચ્છપરિં સુક્કિલ્લ
 વચ્છપરિણતાવિ, ગધનં સુશ્ણિગધપરિં દુશ્ણિગધપરિણતાવિ, રસનં તિત્તરસપરિં કઠુયરસપરિં કસાયરસ

यता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । य स्पष्टतो मृदुस्पष्टपरिणतास्ते वणतः कृमयथोपरिणता अपि नीलवर्ण
 धारणता अपि लाङ्घितवर्णपरिणता अपि शरिद्रवणपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता
 आप, रसतः तिक्करसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि क्वायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पष्टत
 मृदुकरसपरिणता अपि सपुष्करसपरिणता अपि शीतस्पष्टपरिणता अपि उष्णस्पष्टपरिणता अपि स्निग्धस्पष्टपरिणता अपि कृशस्पष्टपरिण
 ता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि मृतसंस्थानपरिणता अपि व्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आय
 तसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पष्टतो मृदुकरसपरिणतास्ते वणतः कृमयथोपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि वा
 रिरद्रवणपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्करसपरिणता अपि कटु

लोहितवक्षुपरि० हालिद्वयुपरि० सुक्लिप्तवक्षुपरिणतायि, गधत्तं सुस्निगधपरिणतायि दुस्निगधपरिणता
 यि, फासत्तं कक्कळफासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिण
 फासपरि० णिच्छफासपरि० लुक्कफासपरिणतायि, संठाणत्तं परिमळसठाणपरि० यट्टसठाणपरि० तंसस
 ठाणपरि० चउरससठाणपरि० स्यायतसठाणपरिणतायि ॥ जे फासत्तं कक्कळफासपरि० ते वयुत्तं कालव
 युपरि० नीलवक्षुपरि० लोहितवक्षुपरि० हालिद्वयुपरि० सुक्लिप्तवक्षुपरिणतायि, गधत्तं सुस्निगधपरि०
 दुस्निगधपरिणतायि, रसत्तं तिसुरसपरि० कसायरसपरि० स्यायिलरसपरि० मज्जरसपरिण
 तायि, फासत्तं गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिच्छफासपरि० लुक्क

अपि चतुरस्रसंस्थानपरिबता अपि आयतसंस्थानपरिबता अपि । य रसतो मधुररसपरिबता स्ते वर्येत- आसवर्णपरिबता अपि नीलवक्षुपरिब
 ता अपि लोहितवर्णपरिबता अपि प्राग्विबर्णपरिबता अपि सुक्लवर्णपरिबता अपि, गम्यतः मुरजिन्यपरिबता अपि दुरभिगम्यपरिबता अपि,
 रसवर्ण- वक्षुपरिबता अपि चतुरस्रपरिबता अपि मधुरस्रपरिबता अपि सपुष्परस्रपरिबता अपि शीतरस्रपरिबता अपि उग्ररस्रपरिबता अपि
 परिबता अपि क्षिण्वरस्रपरिबता अपि रुद्रस्रपरिबता अपि संस्थान- परिमळसठाणपरिबता अपि वृत्तसंस्थानपरिबता अपि अस्त्र
 संस्थानपरिबता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिबता अपि आयतसंस्थानपरिबता अपि । ये रसवर्ण- वक्षुपरिबता अपि, गम्यतः मुरजिन्यपरिबता अपि
 अपि नीलवर्णपरिबता अपि लोहितवर्णपरिबता अपि प्राग्विबर्णपरिबता अपि सुक्लवर्णपरिबता अपि, वक्षुपरिबता अपि उग्ररस्रपरिबता
 अपि, रसतः तिसुरस्रपरिबता अपि मधुरस्रपरिबता अपि सपुष्परस्रपरिबता अपि शीतरस्रपरिबता अपि उग्ररस्रपरिबता अपि
 ता अपि, मधुरस्रपुष्पीवोष्ण क्षिण्वरस्रपरिबता अपि रुद्रस्रपरिबता अपि संस्थान- परिमळसठाणपरिबता अपि वृत्तसंस्थानपरिबता अपि अस्त्र
 परिबता अपि

लवणपरि० लोहितवणपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिप्तवणपरिणतावि, गघनं सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरि०
रिणतावि, रसन्ति तित्तरसपरि० कसायरसपरि० क्षुब्धिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि,
फासन्ति कक्कलफासपरि० मउयफासपरि० लज्जफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुरकफासप
रिणतावि, सठाणन्ति परिमलसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० श्यायत
सठाणपरिणतावि । जेफासन्ति उसिणफासपरि० ते वयन्ति कालवणपरि० नीलवणपरि० लोहितवणपरि०
हालिद्वयपरि० सुक्लिप्तवणपरिणतावि, गघनं सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसन्ति तित्तरसपरि०
ककुयरसपरि० कसायरसपरि० क्षुब्धिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासन्ति कक्कलफासपरि० मउयफा

अपि अलसस्थानपरिणता अपि मधुरसस्थानपरिणता अपि आयतसस्थानपरिणता अपि । ये स्पष्टतः क्षीतरपत्रपरिणतास्ते यथेष्टं कृष्णवण
परिणता अपि नीलवणपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि क्षुब्धवणपरिणता अपि 'गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता
अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतः तित्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुर
सपरिणता अपि स्पष्टतः कक्कलरसपरिणता अपि मधुरपत्रपरिणता अपि गुरुकरसपरिणता अपि लघुकरसपरिणता अपि स्निग्धरस
परिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि संस्थानतः परिस्रवसंस्थानपरिणता अपि दृढसंस्थानपरिणता अपि अलसस्थानपरिणता अपि म-
धुरसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । य स्पष्टतः सलसपरिणतास्ते वयन्ति कालवणपरिणता अपि नीलवणपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि क्षुब्धवर्णपरिणता अपि मञ्जरसपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि
पि, रसतः तित्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पष्टतः

પરિ० શ્રુચિલરસપરિ० મઝ્જરસપરિણતાયિ, ફાસઠે કસ્કઠફાસપરિણતાયિ મઝયફાસપરિણતાયિ સીય
 ફાસપરિણતાયિ ઉસિણફાસપરિ० ણિદ્ધફાસપરિ० લુસ્કફાસપરિણતાયિ, સઠાણઠે પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિ०
 ઘટ્ટસઠાણપરિ० તસસઠાણપરિ० ઘડરસસઠાણપ० શ્વાયતસઠાણપરિણતાયિ । જે ફાસઠે લઙ્કાયફાસપરિ
 ણતા તે ઘણું કાલઘણપરિ० નીલઘણપરિ० હોહિતઘણપરિ० હાલિદ્ધઘણપ० સુક્ષિણ્ણવઘણપરિણતાયિ,
 ગઘઠે સુશ્લિગધપરિ० દુશ્લિગધપરિણતાયિ, રસઠે તિસરસપરિ० કઠુયરસપરિ० કસાયરસપરિ० શ્રુચિલર
 સપરિ० સઝ્ઝરસપરિણતાયિ, ફાસઠે કસ્કઠફાસપરિ० મઝયફાસપરિ० સીતફાસપરિ० ઉસિણફાસપરિ०
 ણિદ્ધફાસપરિ० લુસ્કફાસપરિણતાયિ, સઠાણઠે પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિ० ઘટ્ટસઠાણપરિ० તસસઠાણપરિ०
 ઘડરસસઠાણપરિ० શ્વાયતસઠાણપરિણતાયિ । જે ફાસઠે સીતફાસપરિણતા તે ઘણું કાલઘણપરિ० ની

રસપરિણતા અપિ વપાયરસપરિણતા અપિ ઘટ્ટરસપરિણતા અપિ મપુરરસપરિણતા અપિ, સ્પક્ષતઃ કલ્પરસપરિણતા અપિ મુદુરસપરિ
 ણતા અપિ શ્રીતરસપરિણતા અપિ ઇન્દ્રસપરિણતા અપિ તિગ્ધસપરિણતા અપિ રુક્ષસપરિણતા અપિ, સત્યાનતઃ પરિમયઠ્ઠસસપ્પાન
 પરિણતા અપિ કુતર્થસ્થાનપરિણતા અપિ પ્રત્યક્ષસ્થાનપરિણતા અપિ મ્હુરસપ્પાનપરિણતા અપિ આપત્તસ્થાનપરિણતા અપિ । યે સ્પક્ષતો
 મપુરસપરિણતાસે વક્ષતઃ ઇન્દ્રવલેપરિણતા અપિ નીતર્થપરિણતા અપિ સોદિતર્થપરિણતા અપિ ફારિદ્ધવપરિણતા અપિ મુદ્ધવપરિ
 ણતા અપિ ગમ્મતઃ સુરોન્નિગ્ધપરિણતા અપિ મુરોન્નિગ્ધપરિણતા અપિ રસતોન્નિગ્ધવપરિણતા અપિ મ્હુરસપરિણતા અપિ કાવાચરસપરિ
 ણતા અપિ ઘટ્ટરસપરિણતા અપિ મપુરસપરિણતા અપિ સ્પક્ષતઃ કલ્પરસપરિણતા અપિ મુદુરસપરિણતા અપિ શ્રીતરસપરિણતા અપિ
 રુક્ષસપરિણતા અપિ તિગ્ધસપરિણતા અપિ કુલ્પસપરિણતા અપિ, સંજ્ઞાનતઃ પરિમયઠ્ઠલસપરિણતા અપિ મ્હુતર્થસ્થાનપરિણતા

दुष्प्रगधपरिणतायि, रसते तिस्रसपरि० कङ्कयसपरि० कसायसपरि० अविहसपरि० मञ्जरसपरि०
तायि, फासते कङ्कफासपरि० मउयफासपरि० गुरयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण
फासपरिणतायि, सठाणते परिमलसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि०
स्यायतसठाणप० । जे सठाणते परिमलसठाणपरिणता ते वणते कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहित
वखपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिप्तवखपरिणतायि, गधते सुस्निग्धपरिणतायि दुस्निग्धपरिणतायि, र
सते तिस्रसपरि० कङ्कयसपरि० कसायसपरि० अविहसपरि० मञ्जरसपरि० फासते कङ्क
फासपरि० मउयफासपरि० गुरयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्रफास
परि० लुरकफासपरिणतायि । जेसठाणते बहसठाणपरि० ते वणते कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि

रुसस्पद्यपरिणतास्ते वर्णतः कजवखपरिणताः अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि श्रुतवखपरिणता
अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तवखपरिणता अपि कटुवखपरिणता अपि कपायसपरिणता
अपि अमुरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पृशतः कङ्कस्पृशपरिणता अपि मुद्रस्पृशपरिणता अपि गुरुकस्पृशपरिणता अपि लघु
स्पृशपरिणता अपि स्त्रीतरुस्पृशपरिणता अपि उग्रतरुस्पृशपरिणता अपि, संस्थानतः परिमलसंस्थानपरिणता अपि धृतसंस्थानपरिणता अपि
अग्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये संस्थानतः परिमलसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कज
वखपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि श्रुतवखपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरि
णता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तवखपरिणता अपि कटुवखपरिणता अपि कपायसपरिणता अपि अमुरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता

दुष्प्रिगधपरिणतायि, रसते तित्तरसपरि० कङ्कयूरसपरि० क्षुधिलरसपरि० मञ्जरसपरिण
तायि, फासते कस्करुफासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिण
फासपरिणतायि, सठाणते परिमल्लसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि०
श्यायतसठाणप० । जे सठाणते परिमल्लसठाणपरिणता ते वसते कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहित
वसुपरि० हालिद्वयसुपरि० सुक्लिप्तवसुपरिणतायि, गधते सुप्रिगधपरिणतायि दुष्प्रिगधपरिणतायि, र
सते तित्तरसपरि० कङ्कयूरसपरि० क्षुधिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतायि, फासते कस्करु
फासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिठफास
परि० लुक्कफासपरिणतायि । जेसठाणते बहसठाणपरि० ते वसते कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहि

रसपरिणतायि वसेत कङ्कयूरसपरिणतायि नीलवसुपरिणतायि क्षुधिलरसपरिणतायि मञ्जरसपरिणता
यि, गत्यत सुरभिगन्धपरिणतायि दुरभिगन्धपरिणतायि, रसत तित्तरसपरिणतायि कटुकरसपरिणतायि कपायूरसपरिणता
यि अक्षरसपरिणतायि मधुरसपरिणतायि, इष्यत कक्करसपरिणतायि सुदुस्पर्शपरिणतायि गुरुकरसपरिणतायि लघुस
रसपरिणतायि क्षीतरसपरिणतायि लघुसपरिणतायि, संस्थानतः परिमल्लसंस्थानपरिणतायि वृत्तसंस्थानपरिणतायि
म्लसंस्थानपरिणतायि बभ्रुसंस्थानपरिणतायि कायतसंस्थानपरिणतायि । ये संस्थानतः परिमल्लसंस्थानपरिणतायि वसतः कृष्ण
वसुपरिणतायि नीलवसुपरिणतायि क्षुधिलरसपरिणतायि कटुकरसपरिणतायि, गत्यतः सुरभिगन्धपरि
णतायि दुरभिगन्धपरिणतायि, रसतः तित्तरसपरिणतायि कटुकरसपरिणतायि कपायूरसपरिणतायि अक्षरसपरिणतायि म

तत्रस्यपरि० हालिद्वयस्यपरि० सुक्लिप्तवस्यपरिणतावि, गधत्तं सुस्निग्धप० दुस्निग्धपरिणतावि, रसत्तं ति
 स्तरस्यपरि० कद्रुयस्यपरि० कसायस्यपरि० अथिलस्यपरि० मञ्जरस्यपरिणतावि, फासत्तं कस्करुफासप०
 मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उषिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्क
 फासपरिणतावि । जेसठाणत्तं तससठाणपरि० ते दखत्तं कालवस्यपरि० नीलवस्यपरि० लोहितवस्यपरि०
 हालिद्वयस्यपरि० सुक्लिप्तवस्यपरिणतावि, गधत्तं सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसत्तं तित्तर
 स्यपरि० कद्रुयस्यपरि० कसायस्यपरि० अथिलस्यपरि० मञ्जरस्यपरिणतावि, फासत्तं कस्करुफासपरि०

पुुरस्यपरिबता अपि, रसत्तं कद्रुयस्यपरिबता अपि गुरुयस्यपरिबता अपि सुक्लस्यपरिबता अपि शीतरस्य
 परिबता अपि लज्जयस्यपरिबता अपि क्लिप्तवस्यपरिबता अपि कद्रुयस्यपरिबता अपि ये सत्यानतो वृत्तसंस्थानपरिबतास्ते वयतः कद्रुयस्य
 परिबता भीतवर्धपरिबता सोहितवर्धपरिबता शारिद्रव्यपरिबता अथिलव्यपरिबता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिबता दुरभिगन्धपरिबता
 अपि, रसतल्लिखपरिबता अपि कद्रुयस्यपरिबता अपि कसायस्यपरिबता अपि मसुररस्यपरिबता अपि मसुररस्यपरिबता अपि रसत्तं कद्रु
 यस्यपरिबता अपि मसुररस्यपरिबता अपि गुरुयस्यपरिबता अपि सुक्लस्यपरिबता अपि शीतरस्यपरिबता अपि लज्जयस्यपरिबता
 अपि क्लिप्तवस्यपरिबता अपि कद्रुयस्यपरिबता अपि कद्रुयस्यपरिबता अपि ये सत्यानतः अथिलव्यपरिबतास्ते वयतः कद्रुयस्यपरिबता
 अपि सोहितवर्धपरिबता अपि शारिद्रव्यपरिबता अपि सुक्लवर्धपरिबता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिबता अपि दुरभिगन्धपरिबता अपि,
 रसतल्लिखपरिबता अपि कद्रुयस्यपरिबता अपि कसायस्यपरिबता अपि मसुररस्यपरिबता अपि मसुररस्यपरिबता अपि रसत्तं कद्रु
 यपरिबता अपि मसुररस्यपरिबता अपि गुरुयस्यपरिबता अपि सुक्लवर्धपरिबता अपि शीतरस्यपरिबता अपि लज्जयस्यपरिबता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिरुफासपरि० लु
 रकफासपरिणतात्रि । जे सठागले चउरससठाणपरिणता ते वखाने कालवखपरि० नीलवखपरि० ओहि
 यवखपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिषयपरिणतात्रि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतात्रि, रसने
 तित्तरसप० कन्दुरसप० कसायरसपरि० अ्यत्रिलरसपरि० मङ्गरसपरिणतात्रि, फासने कक्कफासपरि०
 मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिरुफासपरि० लु
 फासपरि० । जे सठागले आयतसंठाणपरिणता ते वखाने कालवखपरि० नीलवखपरि० ओहितवखपरि०
 हालिद्वयपरि० सुक्लिषयपरिणतात्रि, गधने सुस्निग्धपरिणतात्रि, रसने तित्तरस
 परि० कन्दुरसपरि० कसायरसपरि० अ्यत्रिलरसपरि० मङ्गरसपरिणतात्रि, फासने कक्कफासपरि०

दिग्गपस्पष्टपरिणता अपि कुरुस्पष्टपारखता अपि । ये सुस्थानतश्चतस्त्रस्यानयपरिणतास्त वष्टतः कासवसुपरिणता अपि नीलवखपारखता
 अपि लाहितवखपरिणता अपि हारिद्वयपरिणता अपि शुक्लवखपरिणता अपि गन्धत सुरनिगन्धपरिणता अपि दुरनिगन्धपरिणता अपि,
 रसतास्तिक्करसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पष्टतः कज्ज
 स्पष्टपरिणता अपि मृदुकरसपरिणता अपि गुरुकरसपष्टपारखता अपि लघुकरसपष्टपरिणता अपि श्रोतस्पष्टपरिणता अपि उग्रस्पष्टपरिणता अपि
 किमपस्पष्टपरिणता अपि सूतस्पष्टपारखता अपि । य संस्थानत आयतसंस्थानपरिणतास्ते वष्टत लज्जवर्णपरिणता अपि नीलवखपरिणता अपि
 लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्वयपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरनिगन्धपरिणता अपि दुरनिगन्धपरिणता अपि, रसत
 स्तिक्करसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पष्टतः कज्जदुरसप

तद्वक्ष्यपरि० ह्यालिद्वयस्यपरिणतावि, गधत्तं सुस्निग्धप० दुस्निग्धपरिणतावि, रसत्तं ति
 श्वरसपरि० कन्दुरसपरि० कसायरसपरि० अथिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासत्तं करकण्ठासप०
 मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उचिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुस्क
 फासपरिणतावि । जेसठाणत्तं तससठाणपरि० ते अणत्तं कालवक्ष्यपरि० नीलवक्ष्यपरि० लोहितवक्ष्यपरि०
 ह्यालिद्वयस्यपरि० सुक्लिप्तवक्ष्यपरिणतावि, गधत्तं सुस्निग्धपरिणतावि, रसत्तं तित्तर
 सपरि० कन्दुरसपरि० कसायरसपरि० अथिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासत्तं करकण्ठासपरि०

पुररसपरिबता अपि, स्पष्टतः ककण्ठरसपरिबता अपि सुदुस्पर्शपरिबता अपि मुकुटस्यपरिबता अपि लघुवस्त्रपरिबता अपि गीतरस्य
 परिबता अपि उज्जरस्यपरिबता अपि लिङ्गरसपरिबता अपि रूढरसपरिबता अपि ये सस्यामतो वृत्तस्यामपरिबतास्ते वयतः कण्ठवर्षे
 परिबता भीमवर्षपरिबता लोहितवर्षपरिबता शारिद्रवर्षपरिबता मुक्तावर्षपरिबता अपि, गत्यतः सुरभिन्त्यपरिबता दुरभिन्त्यपरिबता
 अपि, रत्नतन्त्रिपरिबता अपि कटुकरसपरिबता अपि कपायरसपरिबता अपि अक्षुरसपरिबता अपि मधुररसपरिबता अपि, स्पष्टतः कर्णे
 श्वरसपरिबता अपि सुदुस्पर्शपरिबता अपि मुकुटस्यपरिबता अपि लघुवस्त्रपरिबता अपि स्त्रीतरसपरिबता अपि उज्जरसपरिबता
 अपि लिङ्गरसपरिबता अपि रूढरसपरिबता अपि ये सस्यामतः अजसस्यामपरिबतास्ते वयतः कण्ठवर्षपरिबता अपि भीमवर्षपरिबता
 अपि लोहितवर्षपरिबता अपि शारिद्रवर्षपरिबता अपि मुक्तावर्षपरिबता अपि, गत्यतः सुरभिन्त्यपरिबता अपि दुरभिन्त्यपरिबता अपि
 रत्नतन्त्रिपरिबता अपि कटुकरसपरिबता अपि कपायरसपरिबता अपि अक्षुरसपरिबता अपि मधुररसपरिबता अपि स्पष्टतः कण्ठवर्ष
 श्वरपरिबता अपि सुदुस्पर्शपरिबता अपि मुकुटस्यपरिबता अपि लघुवस्त्रपरिबता अपि स्त्रीतरसपरिबता अपि उज्जरसपरिबता अपि

गिहिलिगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ छुणेगसिद्धा १५ । सेत छुणतरसिद्धश्रुससारसमावणजीवपणवणा । से
त परपरसिद्धश्रुससारसमावणजीवपणवणा १ परपरसिद्धश्रुससारसमावणजीवपणवणा शृणंगविहा ५०
तजहा-छुपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाय सखेजसमयसिद्धा श्रुसखेज
समयसिद्धा छुणतसमयसिद्धा, सेत परपरसिद्धश्रुससारसमावणजीवपणवणा । सेत श्रुससारसमावणजी
वपणवणा । से कित ससारसमावणजीवपणवणा १ ससारसमावणजीवपणवणा पचविहा पणत्ता, तजहा
एगिदियससारसमावणजीवपणवणा वेहदियससारसमावणजीवपणवणा तेहदियससारसमावणजीवपणव
णा चउरिदियससारसमावणजीवपणवणा पचिदियससारसमावणजीवपणवणा । से कित एगिदियससार
समावणजीवपणवणा १ एगिदियससारसमावणजीवपणवणा पचविहा पणत्ता, तजहा-पुढविहाइया

यनेकलिङ्ग सिद्धा १५ । सेया उल्लरसिद्धाससारसमावणजीवपणवणा । अय कतिविधा परपरसिद्धाससारसमावणजीवपणवणा १ । परपर
सिद्धाससारसमावणजीवपणवणा अमकविधा प्रपणा । तद्यथा अमपमसमयसिद्धा, द्विसमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, यावत्
सम्पदसमयसिद्धा, अस्म्येयसमयसिद्धा अमलसमयसिद्धा, सेया परपरसिद्धाससारसमावणजीवपणवणा । सेया उल्लरससारसमावणजीवपण
वणा । अय कतिविधा ससारसमावण जीवपणवणा १ । ससारसमावणजीवपणवणा पण्णावथा प्रपणा । तद्यथा-एकेन्द्रियससारसमावणजीव
पणवणा द्वीन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा त्रीन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा चतुरिन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा, पण्ण्डित्यससार
समावणजीवपणवणा । अय कतिविधा एकेन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा १ । एकेन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा पण्णविया प्रपणा । तद्य
था-पुण्यिबीकायिका, अप्कायिका, तेज कायिका, वायुकायिका, वनस्पतिकायिका, अय कतिविधा पुण्यिबीकायिकाः १ । पुरबीकायिकाः

मउयफासप० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासप० सीतफासप० उसिणफासप० णिष्ठफासप० लुरुकफासपरि
 णतात्रि ॥ सेत्त रुविश्रुजीवपसुत्रणा ॥ सेत्त श्रुजीवपसुत्रणा ॥ से कित जीवपसुत्रणा ? जीवपसुत्रणा दुविहा
 पयात्ता, तजहा-संसारसमावसुजीवपसुत्रणाय श्रुससारसमावसुजीवपसुत्रणाय । से कित श्रुससारसमा
 वसुजीवपसुत्रणा ? श्रुससारसमावसुजीवपसुत्रणा दुविहा पयात्ता, तजहा-श्रुणतरसिद्धश्रुससारसमाव
 राजीवपसुत्रणा परपरसिद्धश्रुससारसमावसुजीवपसुत्रणा । से कित श्रुणतरसिद्धश्रुससारसमावसुजीवपसु
 वणा ? श्रुणतरसिद्धश्रुससारसमावसुजीवपसुत्रणा पसरसविहा पसुत्ता, तजहा-तित्यसिद्धा १ श्रुतित्य
 सिद्धा २ तित्यगरसिद्धा ३ श्रुतित्यगरसिद्धा ४ सययुद्धसिद्धा ५ पत्तेययुद्धसिद्धा ६ युद्धयोहियसिद्धा ७
 इत्थीलिगसिद्धा ८ पुरिसलिगसिद्धा ९ नपुसकलिगसिद्धा १० सलिगसिद्धा ११ श्रुसलिगसिद्धा १२

परिहता अपि गुरुवस्यपरिहता अपि गुरुवस्यपरिहता अपि श्रुतस्यपरिहता अपि उप्परस्यपरिहता अपि
 उप्परस्यपरिहता अपि रुक्कस्यपरिहता अपि १ सेवा रुक्कस्यपरिहता अपि २ सेवा रुक्कस्यपरिहता अपि ३
 जीव मद्यापना द्विविधा प्रज्ञा १ । तद्या-ससारसमावसुजीवमद्यापना, ससारसमावसुजीवमद्यापना २ । सय कतिविधा प्रज्ञासारसमाप
 जीवमद्यापना १ । संसारसमावसुजीवमद्यापना द्विविधा प्रज्ञा १ । संसारसिद्धाससारसमावसुजीवमद्यापना परंपरसिद्धाससारसमाप
 मद्यापना २ । सय कतिविधानकारसिद्धाससारसमावसुजीवमद्यापना १ । संसारसिद्धाससारसमावसुजीवमद्यापना पञ्चदशविधा प्रज्ञा १ ।
 तद्या तीर्थसिद्धा १ अतीपसिद्धा २ तीर्थसिद्धा ३ अतीर्थसिद्धा ४ अतीर्थसिद्धा ५ अतीर्थसिद्धा ६ अतीर्थसिद्धा ७
 अतीर्थसिद्धा ८ अतीर्थसिद्धा ९ अतीर्थसिद्धा १० अतीर्थसिद्धा ११ अतीर्थसिद्धा १२ अतीर्थसिद्धा १३ अतीर्थसिद्धा १४ अतीर्थसिद्धा १५

गिहिलिगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणुतरसिद्धश्चससारसमावयुजीवपयुवणा । से
त परपरसिद्धश्चससारसमावयुजीवपयुवणा ? परपरसिद्धश्चससारसमावयुजीवपयुवणा अणुगयिहा ५०
तजहा-अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसयमसिद्धा जाय सखेजसमयसिद्धा अस्सखेज
समयसिद्धा अणुतसमयसिद्धा, सेत परपरसिद्धश्चससारसमावयुजीवपयुवणा । सेत अस्ससारसमावयुजी
वपयुवणा । से कित ससारसमावयुजीवपयुवणा ? ससारसमावयुजीवपयुवणा पचविहा पयुत्ता, तजहा
एगिदियससारसमावयुजीवपयुवणा वेइदियससारसमावयुजीवपयुवणा तेइदियससारसमावयुजीवपयुव
णा चउरिदियससारसमावयुजीवपयुवणा पचिदियससारसमावयुजीवपयुवणा । से कित एगिदियससार
समावयुजीवपयुवणा ? एगिदियससारसमावयुजीवपयुवणा पचविहा पयुत्ता, तजहा-पुठविकाइया

एनेकलिङ्ग सिद्धा, १५ । सेया उनत्तरसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा परपरसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? । परंपर
सिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अन्नकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा अग्रयमसमयसिद्धा द्विसमयसिद्धा त्रिसमयसिद्धा चतु समयसिद्धा, यावत्
सत्यपसमयसिद्धा, असत्येवसमयसिद्धा, अमलसमयसिद्धा, सेया परपरसिद्धाससारसमावयुजीवप्रज्ञापना । सेया अससारसमापन्नजीवप्रज्ञा
पना । अथ कतिविधा ससारसमापन्न जीवप्रज्ञापना ? । ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-एकेन्द्रियससारसमापन्नजीव
प्रज्ञापना द्वीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना त्रीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुर्दिन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, पञ्चन्द्रियससार
समापन्नजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा एकेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? । एकेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता । तद्य
था-पृथिवीवायिका, अप्क्वायिका, वेज्ज वायिका, वनरपटिवायिका । अथ कतिविधा पृथिवीवायिका ? । पृथिवीवायिका:

गजगणपयाले । अक्षपन्नलक्ष्म्यालुय वादरकाण्माणिग्रिहाणा ॥२॥ गीमेज्जाएयस्यए अक्केफालिहेयलोहिियस्केय ।
 मरगयमसारगह्वे नुयमीयगइदनीलिय ॥ ३ ॥ चठणगेरुयहसे पुलएसोगीधिएययोधे । चदप्पन्नवेरुलिए ज
 छकतेसूरकतेय ॥ ४ ॥ जेयायखेयतहप्पगारा ते समासनु दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय अ्पज्जत्त
 गाय, तत्यण जेते अ्पज्जत्तगा तेण अ्सपत्ता तत्यण जेते पज्जत्तगा एतेसि वणादेसेण गधादेसेण रसादे
 सेण फासादेसेण सहस्सगसाविहाणाइ सखिज्जाइ जीणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अ्पज्जत्तगाव
 क्कामति, जत्य एगो तत्य णियमा अ्सखेज्जा । सेत्त खरवाटरपुढाविकाइया । सेत्तनादरपुढाविकाइया ॥ सेत्तपु
 ढाविकाइया ॥ से कित अ्पाउकाइया ? अ्पाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-सुज्जमअ्पाउकाइयाय वादर
 अ्पाउकाइयाय । से कित सुज्जमअ्पाउकाइया ? सुज्जमअ्पाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तसुज्जल

एयकोऽङ्क स्फटिकतोदितारुहति ॥ मरचत्तमसारगह्वी नुप्रसोपकल्लभीती च ॥३॥ चत्तनगेरुक्कइसाः पुलकसो गन्धिकचयोद्वे ॥ चम्प्रमन्नवेदु
 यी जलकालः सुयकालय ॥ ४ ॥ ये चान्ते तथा प्रकारास्त समासतस्तथा मच्चत्ताः । तद्यथा-पर्याप्तका, अपयाप्तकाय, तत्र ये एते उपयाप्तकास्ते
 असमाप्ताः । तत्र ये एते पर्याप्तका एत वर्यादेशेन गत्यादेशेन रसादेशेन सखिग्रहो विधानाति सख्येयानि । योनिप्रमुत्तानि यत्तस
 इत्याद्य पर्याप्तियया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति, यत्रैकस्तत्र निवमः असख्येयाः । त एत खरयादरपुयायवीकायिका । त एते यादरपुयिबीकायि
 काः । त एत पुयिबीकायिकाः ॥ अथ कतिविधाः अप्कायिका ? । अप्कायिका द्विविधा मच्चत्ताः तद्यथा-सूत्ताप्कायिकाः यादराप्कायिका ।
 अथ कतिविधाः सूत्ताप्कायिका, ? । सूत्ताप्कायिका द्विविधाः मच्चत्ताः । तद्यथा-पर्याप्त सूत्ताप्कायिका, अपर्याप्तसूत्ताप्कायिका । एते
 सूत्ताप्कायिकाः ॥ अथ कतिविधा वादराप्कायिका ? । वादराप्कायिका अनेकविधाः मच्चत्ताः । तद्यथा-अवश्याय, विमं मदिक्कं, करको,

श्याउकाइयाय श्यपज्जप्तसुज्जमश्याउकाइयाय ॥ सेस सुज्जमश्याउकाइया ॥ से कित यादरश्याउकाइया ? यादर
 श्याउकाइया श्यणगविहा पयप्ता, तजहा ठसाहिमए मडिया करए हरतणए सुसोदए सीतोदए उस्सिणोदए
 खारोदए खंहोदए श्यविओदए छवणोदए यावणोदए खीरोदए खोवोदए रसोदए जेयावखेतहप्पगारा तेसमा
 सन दुयिहा पयप्ता, तजहा पज्जप्तगा श्यपज्जप्तगाय, श्यत्यण जेत श्यपज्जप्तगा तेण श्यसपप्ता, तत्यण जेत
 पज्जप्ता एएसिणयथादेसेण गथादेसेण रसादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ सखेज्जाह जोगिप्पम
 हसयसहस्साइ पज्जप्तगणिस्साए श्यपज्जप्तगा धक्कमति, तत्य एगो तत्यनियमा श्यसखेज्जा । सेस यादर
 श्याउकाइया ॥ सेस श्याउकाइया ॥ से कित तेउकाइया ? तेउकाइया दुयिहा पयप्ता, तजहा सुज्जमतेउ
 काइयाय यादरतेउकाइयाय, से कित सुज्जमतेउकाइया सुज्जमतेउकाइया दुयिहा पयप्ता, तजहा पज्जप्त

हरतनुः सुग्रीवकं क्षीतीदकम् सप्तोदक क्षीरोदकं क्षीरोदकं क्षीरोदकं क्षीरोदकं, रसोदकं, ये वाऽन्ये तथा प्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रकृताः, तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकास्ते उच्यन्ते । तत्र ये एते पर्याप्तास्त वक्रादेशेन गत्यादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन विधानानि सन्त्येयानि । योनिप्रमुखानि शतशतस्राणि पर्याप्तनिष्पन्ना अपर्याप्ता अप्रकृतामस्ति । यौक्तेस्तत्र नियमा अलङ्घ्येयः । त एते वादराष्ट्रक्यायिकाः । त एत अप्कायकाः न अप कतिविधास्तेनः कायिकाः ? । तेनः कायिका द्विविधाः प्रकृताः । तद्यथा सूक्ष्मतम कायिकाः । अथ कतिविधाः वादराष्ट्रक्यायिकाः ? । सूक्ष्मतम कायिकाः द्विविधाः प्रकृताः तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तका । तद्यथा सूक्ष्मतेनः कायिकाः । अथ कतिविधा वादराष्ट्रक्यायिकाः । वादराष्ट्रक्यायिकाः न नेवविधाः प्रकृताः । तद्यथा-चन्द्रार्दं, शबलो, मुनेय, अर्चिः, अन्नायं कुङ्कुमिकः, कर्का, विद्युत्, अश्विनि, मिषीयः, अर्चनेकमुत्थितः सुदे

गाय अपञ्जतगाय । सेत्त सुञ्जमतेउकाडया । से कित् वादरतेउकाडया ? छुणेगविहा पणत्ता, तजहा
 डुगालं जाला ममुरे अच्ची अछाए सुद्धागणी उक्ता विज्जू अस्सणी गिग्वाए सधरिससमुठिए सूरकतमणिणि
 रिसए, जेयावखु तहप्पगारा ते समासद्ये दुविहा पणत्ता, तजहा पञ्जतगाय अपञ्जतगाय, तत्यण जेते
 अपञ्जतगा तेण अस्सपत्ता, तत्यण जेते पञ्जतगा एएसि वखादेसेण गधादेसेण रसाएमण फासादेसेण सह
 स्सग्गमोयिहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्पमहसयसहस्साड पञ्जतगणिस्साए अपञ्जतगा वक्कमति, जत्य एगो
 तत्य णियमा अस्सज्जा ॥ सेत्त वादरतेउकाडया ॥ सेत्त तेउकाडया ? वाउकाडया ? वाउकाडया दुवि
 हा पणत्ता, तजहा सुञ्जमवाउकाडयाय यादरवाउकाडयाय, से कित् सुञ्जमवाउकाडया ? सुञ्जमवाउकाडया
 दुविहा पणत्ता, तजहा पञ्जतगसुञ्जमवाउकाडयाय अपञ्जतगसुञ्जमवाउकाडयाय । सत्त सुञ्जमवाउका
 डया । से कित् यादरवाउकाडया ? यादरवा० छुणेगविहा पणत्ता, तजहा पाईणयाए पटीणयाए दाहि

कात्तमखिपसूता, ये वाप्यम्य तथा प्रकारात्त समासतो द्विविधाः प्रचक्षताः । तथा-पयापका, अपयापकास्ते अथ
 प्राप्ताः । तत्र ये पयापकास्ते वखादक्षम भत्यादक्षन रखादेशेन स्वस्त्रापञ्चो विधानानि मध्येयानि । योनि प्रमुखास्ति ज्ञातमश्त्राणि
 पयोपकाणिप्राया अपयोपका ध्युग्यामन्ति । यत्रैकस्तत्र त्रयमपि असंख्येयम् । तस्य यादरेतेकापिका । तस्मै तेज-कापिका ॥ अथ कतिचिदा
 वायकापिकाः ? वायुकापिका द्विविधाः प्रचक्षताः । तथा-सूत्सत्रायुकापिका यादरवायुकापिकाय । अथ कतिचिदाः सूत्सत्रायुकापिका ? ।
 सूत्सत्रायुकापिका द्विविधाः प्रचक्षताः । तथा पयोपसूत्सत्रायुकापिका, अपयोपसूत्सत्रायुकापिका । तस्मै सूत्सत्रायुकापिका । अथ कात्त
 विधा यादरवायुकापिका । यादरवायुकापिका अनेकाविधाः प्रचक्षताः । तथा-प्राचीनकायु, दक्षिणकायु, उदीचीनकायु, क

नवाए उदीगवाए उहवाए अहोवाए तिरिवाए विदिसीवाए वाउज्जमेवा उक्कलिया वायमळलिया उ
 क्कलियावाए मळलियावाए गुजावाए फजावाए सयहवाए घणवाए तणवाए सुधवाए, जेयावन्ने तहप्यगा
 रा ते समासने दुविहा पखत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अणत्तगाय, तत्यण जेते अणत्तगा तेण अणप
 ता, तत्यण जेते पज्जत्तगा एणसिण यखादेसेण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ
 सखिज्जाइ जणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अणत्तगा यक्कमति, जत्य एगो तत्य नियमा अण
 र्केज्जा ॥ सेत्त यादरवाउकाइया ॥ सेत्त वाउकाइया ॥ से कित यणस्सहकाइया वणस्सहकाइया दुविहा प०,
 तजहा सुज्जमवणस्सहकाइयाय यादरवणस्सहकाइयाय, से कित सुज्जमवणस्सहकाइया २ दुविहा पखत्ता,
 त० पज्जत्तसुज्जमवणस्सहकाइयाय अणत्तसुहुमवणस्सहकाइयाय । सेत्त सुज्जमवणस्सहकाइया । से कित

प्यवायुः अपोवायुः तिर्यक्वायुः विदिक्वायुः, वातोद्गमैः, वातोत्कलिका, वातमरुत्सी, वरुत्कलिकावातो, मरुत्कलिकावातो गुल्जावा
 तो वरुत्कलिकावातो वरुत्कलिकावातो पनवातवनुवातः सुसुवातः ये वात्ये तथा प्रकारास्त सर्व द्विविधाः प्रज्ञाः । तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तका
 य । तत्र य एते अपर्याप्तकास्ते अचमत्ताः । तत्र य एते पर्याप्तकास्ते बर्त्ताव्येन गन्धादेयेन रसादेयेन स्पर्शादेयेन सङ्कापयो विधानानि संख्या
 तानि । योगिप्रमुक्ताणि शतशतशतानि अपर्याप्तका अपर्याप्तका व्युत्कामानि । यदेव सत्र नियमा अचमत्ताः । तस्य यादरवायुवायिकाः ।
 तस्य वायुवायिका ॥ अथ कतिविधा वनस्पतिवायिका द्विविधा प्रज्ञाः । तद्यथा वृक्षवनस्पतिवायिका वादरव
 स्पतिवायिका । अथ कतिविधा वृक्षवनस्पतिवायिका द्विविधा प्रज्ञाः । तद्यथा वृक्षवनस्पतिवायिका वादरव
 अपर्याप्तवृक्षवनस्पतिवायिका, यदेव वृक्षवनस्पतिवायिका । अथ कतिविधा वादरववनस्पतिवायिका द्विविधा प्रज्ञाः । तद्यथा वादरववनस्पतिवायिका
 वादरववनस्पतिवायिका, यदेव वृक्षवनस्पतिवायिका । अथ कतिविधा वादरववनस्पतिवायिका द्विविधा प्रज्ञाः । तद्यथा वादरववनस्पतिवायिका

यादरघणस्सङ्काइया २ दुयिहा पणुत्ता, तजहा पत्तेयसरीरयादरघणस्सङ्काइयाय साहारणसरीरवाटरव
णस्सङ्काइयाय, से कितं पत्तेयसरीरयादरघणस्सङ्काइया २ दुय्यालसविहा पणुत्ता, तजहा रुक्कागुच्छा
गुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणयलयहरियत्तेसहि जलरुदकुहणाययोधत्ता ॥ १ ॥ से कितं रुक्का २ दु
यिहा पणुत्ता, तजहा एगण्ठियाय वज्जवीयगाय, से कितं एगण्ठिया २ छ्यणेगविहा पणुत्ता, तजहा निय
वजवुकोस वसालच्छकोत्तेपेलुसेलूया । सत्तडमोयडमालुय वउलपलासेकरजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवच्छरिठे विन्नेल
एहरिणुयन्नत्ताए । उवेन्नरियास्वीरिणि योधव्वेधायडपियाले ॥ २ ॥ पूईयनिवकरए सएहातहसीसत्रायच्चस
णेय । पुग्गागनगरुक्के सिरिवल्लीतहच्छसोमेय ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एएसिणमूलाविच्चसस्विज्जजीवि
या कदावि स्वधावि तयावि सालावि पवालावि, पुष्का छ्यणेगजीवा, फला एगण्ठिया ॥

प्रश्नः । तद्यथा प्रत्येकशरीरयादरघणस्यपत्तिर्नायिका, साधारणशरीरयादरघणस्यपत्तिर्नायिका । अथ कतिविधा प्रत्येकशरीरयादरघणस्यपत्ति
र्नायिका ? । प्रत्येकशरीरयादरघणस्यपत्तिर्नायिका द्वादशविधा प्रचक्षता । तद्यथा यथा पुष्का गृहमालता वक्ष्यः पवगाधैव ॥ वृण्वलपपरितो
पविप्रसङ्गकुशाय योद्व्याः ॥ १ ॥ अथ कतिविधा वृक्षाः ? । द्वादश द्विविधाः प्रचक्षता । तद्यथा एकास्थिका यद्वीचकाय । अथ कतिविधाः
यकास्थिका ? । एकास्थिका अनेकविधाः प्रचक्षता । तद्यथा निम्बाम्यजम्यकोशम्य झालाङ्कोठपोलुखेशस्याः ॥ झमकमोचकमालकयकुल पला
शकरजनेदात् ॥ १ ॥ पुत्रजीवकारिणा । विन्नीतकद्वरीतकमल्लाताः ॥ उव्वेन्नरिकाक्षीरणी योद्व्योपातकोविपाली ॥ २ ॥ पत्तिर्नायिकाः प्रचक्षता । अत्र
साध्याभिज्ञापासमजवात ॥ पुभागमागवृक्षी श्रीपवीचतयाशोकाः ॥ ३ ॥ यपि चाम्ये तयाप्रकारा एतेषां मूलानि अस्ययजीवकानि । फन्दा अपि
रक्ष्या अपि त्वयोपि धारा अपि प्रवाला अपि, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि । पुण्यास्यनेकजीवकानि । फलाग्यकास्थिकानि । उत्तो एकास्थिकाः ।

नत्राए उदीणत्राए उहुत्राए छुहोत्राए तिरियत्राए विदिसीत्राए वाउज्जमेत्रा उक्कलिया वायमनलिया उ
 क्कलियात्राए मन्तलियात्राए गुजात्राए ऊजात्राए सयहत्राए घणवाए तणवाए सुठ्ठवाए, जेयावन्ते तहप्पगा
 सा, तत्थण जेत पज्जसगा एणसिण वयादेसेण गधादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ
 सखिज्जाइ जोगिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जसगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमत्ति, जत्थ एगो तत्थ नियमा स्यस
 रकेज्जा ॥ सेत्त यादरवाउकाइया ॥ सेत्त वाउकाइया ॥ से कित यणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०,
 तजहा सुज्जमवणस्सइकाइयाय यादरवणस्सइकाइयाय, से कित सुज्जमवणस्सइकाइयाय ॥ से कित
 त० पज्जत्तसुज्जमवणस्सइकाइयाय अपज्जससुहुमवणस्सइकाइयाय । सेत्त सुज्जमवणस्सइकाइया । से कित

र्विवाणु अपोवाणु, तिर्यक्वाणु विदिक्वाणु वातोद्गमे, वातोत्कलिका, वातमरकलो उत्तसिकावातो, मणसिकावातो; गुल्जावा
 तो वन्धावातो संघट्टिवातो, पनवाततमुवातो । सुट्ठवातो; ये वान्ते तथा प्रकारास्त सर्व द्विविधाः प्रज्जसाः । तथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तका
 य । तत्र य एते अपर्याप्तकास्ते असमाप्ता । तत्र य एते पर्याप्तकास्ते वक्कादेसेन रसादेसेन स्पष्टादेसेन सहस्राग्रहो विधानानि सख्या
 तानि । योनिप्रमुखानि सुतसङ्ख्यादि पर्याप्तकानि कथा अपर्याप्तका स्युत्कामन्ति । यत्रैव स्तत्र नियमा असम्भवाः । तएत वादरवायुकायिकाः ।
 नण्ते वायुकायिकाः ॥ अथ कतिविधा वनस्पतिकायिकाः ? । वनस्पतिकायिका द्विविधा प्रज्जसाः । तथा धूम्रवनस्पतिकायिका वादरवन
 स्पतिकायिका । अथ कतिविधा सुलवनस्पतिकायिकाः ? । सुलवनस्पतिकायिका द्विविधा प्रज्जसाः । तथा धूम्रवनस्पतिकायिका वादरवन
 अपर्याप्तवृक्षवनस्पतिकायिका, तएते धूम्रवनस्पतिकायिका । अथ कतिविधा वादरवनस्पतिकायिकाः ? वादरवनस्पतिकायिका द्विविधाः

ना ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्ग शृग्घाठगसामसिदुवारेय । करमद्दृष्टहसग करीरपुरावणमहस्ये ॥ ४ ॥
जाउलतमालपिरिडी गयमारिणिकृष्कारियानेही । जावडकेयडतहग जपाछलाडासिश्यकोसि ॥ ५ ॥ जेया
वखे तहप्पगारा सेत गुच्छा ॥ से कित गुम्मा २ शृणगविहा पणत्ता, तजहा सेरियणोमालिय कोरिटय
यत्युजीवगमणोज्जे । पीईयपाणकणडर कुज्जयतहसिदुवारेय ॥ १ ॥ जाईमोगरतहजू हियायतहमसियायवायु
ती । वत्युछकच्छुलसेवा लगठिमगदतियाचेय ॥ २ ॥ चपगजाडणवणी डयायकुदेतहामहाजाई । एवमणगगारा
हवतिगुम्मा मुणयहा ॥ ३ ॥ सेंह गुम्मा ॥ से कितं लयाने लयाने शृणगविहाने पणत्ताउ, तजहा-पउमल
यानागलया आसागचपयलययचूतलता । धणलतवासतिलता शृडमुत्तयकुदसामलता ॥ ४ ॥ जेयावखेत
हप्पगारा सेत लयाने ॥ से कित वल्ली २ शृणगविहाने पणत्ताउ, तजहा-पूसफडीकालिगी तुरीतपुसीय

वीईसाक्या ॥ करवीररावचमहास्या ॥ ४ ॥ जाउलतमापिरिणीमज मारचकुसवारिकात्रिही ॥ यायककतकियुकी गयपालोप्यपाकुल ॥ ५ ॥ ये
वाश्य तथाप्रकारासे गुच्छाः । अय कलिावया गुम्माः १ । गुम्मा अयनेत्रविचा प्रसहा । तद्यथा सरिसनामानवमालिका कारपटक्यः पुजीवकमनो
य ॥ २ ॥ अय बजालीमारङ्गा मुपुपुपुलसयामहाकायः ॥ एवमनेकाकारा जवलिगुम्माकनेकविचाः ॥ ३ ॥ तयने गुम्मा ॥ अय कास्ता लताः ल
ता अनेकविचाः प्रसहास्तयथा पटलताभागलता अशीकवम्यकलतायचूनलता । वनवासलीलतल अतिमुक्ककुसुडयामलता ॥ ४ ॥ यायात्या
सायाप्रकारास्ता लताः । अय कास्ता वल्ली, वल्लीयोनकविचाः प्रसहास्तयथा-पुंसबलीकालिणी तुम्बीपुसीनयेनानादी । योपातकीपटोली
पञ्जाङ्गुलसकाववासीय ॥ १ ॥ अद्गुलताचकुटुबी ककाटकीकारियल्लोसुमगा । मुपवाचवल्गुलीया त्यापावल्लीपदेवदार्दीका ॥ २ ॥ आस्तोटावा

सेत एगठिया ॥ से कित यज्जयीयगा २ स्थणेगविहा ५०, त० स्थलियतेदुक्रात्रिठे स्थवाकगमाउलिगविह्वेय
 स्थामलगफगसदालिम स्थसोत्येउवरयन्नेय ॥ १ ॥ गगोहणदिरुके पिप्परिसयरीपिलुक्करकेय । काउत्ररि
 कुत्युन्नरि वोधहादेयदासीय ॥ २ ॥ तिलएलउएक्कहो हसिरीसेसववसादहित्रने । लोउधवचदणज्जुण णीमेक
 णकययेय ॥ ३ ॥ जेयावखे तहप्यगारा एएसिण मूलावि स्थसिखज्जजीविया, कडावि खधावि तयावि सालावि
 पयालावि, पत्ता पसेयजीविया, पुप्फायस्थणेगजीविया, फला यज्जयीया, सेत यज्जयीयगा ॥ सेत रुस्का ॥
 से कित गुक्का २ स्थणेगविहा पससा, तज्जहा—वाइगिणेअल्लहपुण हयतहक्करीयजासुमगा । रुवीअुठ
 इणीली तुलसीतहमाउलिगाय ॥ १ ॥ कुत्युन्नरिपिप्पालिया अतसीविह्वीयकायमाईय । चुसपफोलाऊदलि
 धाउहावत्युलेवदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयोधवे । णिगुणिअक्कतूत्रि स्थाठईचेवतलुने

यय कतिविधा वडुवीयकाः १ । वडुवीयका अनेकविधाः प्रष्टाः । तथा अस्ति कतिपुक्कपित्या आम्बाटकमातुसिक्कियसत्राय ५ आमसवपन
 सदादिम मयसोदुम्बरबटाय ॥ १ ५ स्वघापनन्दिवद्री पिप्पलीयानाबरीसका ५ काटुम्बारिजुसुम्भरी कोट्टपादवदारुय ॥ २ ५ तिलकालायुक्कपा
 कोपशिरियसमपर्वदचिपकाः ५ साप्रपववम्भार्त्तुन नीपकुठउकटम्भाय ॥ ३ ५ यकाये तथाप्रकारा पतपा मूमाणि असवयपजीवकानि । कन्दा
 अपि रक्त्या अपि लवोपि छाका आप प्रवासा अपि पत्रास्यपि मत्सेलीवकानि, पुप्फास्यप्यनकावकानि फलास्यपि वडुवात्राणि । कन्दा
 वडुवीयका । कन्दा वृक्षाः ५ यय कतिविधा गुल्फाः १ । मुक्का अप्यनकविधाः प्रष्टाः । तथा वृत्ताकसङ्गकोवा एवं मुक्काभ्यन्तरिजुसुमम् ५
 रुवी कादि कनीली तुलसातथावित्रीराल्या ५ १ ॥ कुसुम्भरिपिप्पालिकाः अतसीविलीयकास्यामादि ५ चूदेदपकीकल्पयिका काशालकाववरवृक्षी ॥
 २ ५ पववुक्कोरुम्भराः प्रवतितथायकाश्च ५ निर्भुवहाकनूबारिकाः काठकिडिबतकोडा ५ ३ ५ खकपालकावमदका पाठकविजुवारकाः ५ करव

री हियसिमुयवेयखीरनुसे ॥ १ ॥ एरुकेकुहविदे करकस्सुठेतहाविजगय । मञ्जरतणुदुरयसिप्पिय धोयध्वे
सुकलितणय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त तणा ॥ से कित वलया २ अण्णेगविहा पक्खत्ता, तजहा-ताले
तमालेतक्काणि, तेयालीसालिसारकक्काणे । सरलेजायतिकेयड, कदलितहपउमरुक्केय ॥ १ ॥ नुयरुक्काहे
गुरुक्के, लवगरुक्केयडोडयोध्वे । पूयफलीखज्जुरी, धोयध्वानालिऐरीय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त
वलया । से कित हरिया ? हरिया अण्णेगविहा पक्खत्ता, तजहा-अज्जोरुहवोदाणी, हरितगतहत्तदुल्ल
गतणेय । वत्तुलपोरगमज्जा, रपोडवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहंवमहुक्की ।
मूलगसरिसवअग्गिह, साएयजियतएवेव ॥ २ ॥ तुलसीकरहत्तराले फणज्जुएअज्जाएयनूयणए । चोरगदमण
गमरुयग सत्तपुप्फिदीवरैयतहा ॥ ३ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त हरिया । से कित ठसहीने ? ठसहीने
अण्णेगविहात्त पक्खत्तात्त, तजहा-सालीवीहीगोज्जम जयकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्पायकुल्लय अलिंसि
दसत्तीणएलिथा ॥ १ ॥ अयसीकुसुनकोद्वय कगरालगवरहकोट्टसा । सणसरिसमूलवीया जेयावखे तहप्प

तिथोद्वयः ॥ पूगफलसुर्गुरः धोहव्वीनारिकेलय ॥ २ ॥ येवाग्ने तथाप्रकारास्ते वलयाः ॥ अय कतिविधा हरितकाः । हरितका अप्यमक
विधाः । तथाया अप्याकडोवोडा हरिततगुलोवलगततेकः ॥ वत्तुलपोरगमज्जार पौडवल्लीवपालिका ॥ दकपोपतिजादवी अलिंकाशा
कलपेवमरुक्की ॥ १ ॥ मूलकसरसवास्विल झाकडअयत्तकट्टेय ॥ तुलसीरुज्जोराली कजुननूयमेदेन ॥ चोरवक्कमनकडवक्क यत्तपुप्पीन्नीत्रवत्तया ॥
यवाग्ने तथाप्रकाराली डारताः ॥ अय कास्ता चोपयय । चोपययो उनकविधाः प्रक्खत्ताः । सालीवीहीगोचूसा यवकलमसूरतिलमुग्गा ॥ मास
निप्पायकुल्लयः वत्तसीवदानीयकालिङ्गः ॥ १ ॥ अपसीकुसुमकोद्वय कडगुरालमासकोद्वयकाः ॥ अणवसरिसवमूलवीयाः येवाग्ने तथाप्रकारास्ताभी

एउयालुकी । घोसातईपकोला पचगुलिछायनालीय ॥ १ ॥ कगुलयाकदुइया ककोरुइकारियईसुन्नगा ।
 कुयवाययागलीपा वायवहीतहदेवदालीय ॥ २ ॥ अफ्फोअाअइमसय नागलयाकरहसूरयवहीय सचहसुमिण
 सगिय जासुमणकुविदवहीया ॥ ३ ॥ मुदियअथायवही वीरविराडीजियतिगोयाली । पाणीसामावही गुजा
 यहीययत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोसुसिया गिरिकखइमालुयायअजई । वहफुल्लयकीगलिमा गलीयतह
 अक्खोदीया ॥ ५ ॥ जेयायसे तहप्यगारा सेत यहीत ॥ से कित पव्वा २ अणगयिहा पयत्ता, तजहा
 इस्कूपाइस्कुयऊये वीरणातहइक्खेनयमासेय । सुठेसरयेवत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कका
 यसेययवसेय । उदएकुणएधिमए ककावेलूयकहाणे ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्यगारा सेत पव्वा ॥ से कित
 सणा ? तणा अणगयिहा पयत्ता, तजहा-संनियगतियहोसिय दप्पकुसेपव्वाएयपोरुइडा । अण्णअण्णसाठए

तिमुच्च नामततेकपमूरवस्थौ च । कपयेसुमसोपिच मातसुमताःकुविन्दवहीबाः ॥ ३ ॥ मुदियास्यावही वीरविराडीजियतीमीपाली । पाणी
 इपामावही गुजावहीपयत्याली ॥ ४ ॥ सेयवतीचद्विगोत्रा पुरहीनिरिवाकिसालुकाण्णकी । द्विपुव्वकागबिमोरोरी तयेववाप्याहुयोदीबाः ॥ ५ ॥
 सरेयवेत्ता तिमिरावतपोरगपासाय ॥ १ ॥ वंदोवेलूककाः ककायजलायेयववसः ॥ उदकुठकविमुकाः ककावेलूककासाय ॥ मुव्ठी
 यामकासे पर्यंगाः ॥ कच कानि वुक्कानि कमेवविषानि प्रज्जसाणि । सपाचा-एरवटः कुहुविण्णः करकपवुवठोत्तपाविमकुव ॥ अचुरवववु
 रकण्णय भेदातवोप्यचक्रववन् ॥ १ ॥ यानिवाप्यानि तथा प्रकाराणि सानि वुक्कानि । कच कतिविषा यत्तवाः ? । यत्तवा कनेकविषाः प्रज्जसाः ।
 तदया तात्तवासायव्वन्तो उत्तावित्तवारिकावारत्तवाका ॥ करकवाविन्हीसेली कककासायवववव ॥ १ ॥ वुल्लवठोविद्ववठो जव्ववववववव

रो हियसिसुयेयखीरनुसे ॥ १ ॥ एरुकेरुविदे करकस्सुठेतहाविन्नगय । मज्जरतण्णुरयसिप्पिय योधधे
सुकलितणय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त तणा ॥ से कित वलया २ छ्णेगविहा पख्खा, तजहा-ताले
तमालेतक्कालि, तेयालीसालिसारकह्माणे । सरलेजायतिकेयड, कवलितहपउमरुकेय ॥ १ ॥ नुयसरुकाहिं
गरुक्के, लयगरुकेयहोडधोधे । पूयफलीखज्जरी, योधध्णानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त
वलया । से कित हरिया ? हरिया छ्णेगविहा पख्खा, तजहा-छ्णज्जोरुहवोदाणो, हरितगतहत्तदुल्ल
गतणेय । वल्लुलपोरगमज्जा, रपोडवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदध्दी सोलियसाएतहं वमन्नुक्की ।
मूलगसरिसवस्थिचि, साएयजियतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकरहनेराले फणज्जुएछ्णज्जएयन्नयणए । चोरगदमण
गमरुयग सत्तपुप्फिनीवरेयतहा ॥ ३ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त हरिया । से कित सेसहीने ? सेसहीने
छ्णेगविहात्त पख्खात्त, तजहा-सालीवीहीगोक्कम जयकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्फाचकुल्लय स्थलिसि
दसत्तीणएलिधा ॥ १ ॥ स्थयसीकुसुजकोद्व कगूरालगयट्टकोहुसा । सणसरिसमूलवीया जेयावखे तहप्प

तिवोद्वः ॥ पूगफसंसर्जुरः योद्वोत्तारिकेल्लय ॥ २ ॥ येवाम्ये तथाप्रकारास्ते वलयाः ॥ अथ कतिविधा हरितकाः । हरितका अप्यनेक
विधाः । तद्यथा अप्यारुखोवोडा हरिततण्डुलोच्चततानेक ॥ वल्लुलपोरगमज्जार पौडवल्लीयपालक्का ॥ द्रुकोपलिजादधी स्थितिक्काश्चा
बलायेवमन्नुको ॥ १ ॥ मूलकसरसवात्स्यल छाकद्यन्नपल्लवयैव ॥ तुलसीकफोरातो भजुननुर्वमेदेन ॥ चोरदबमनकसचक्क शतपुष्पीन्दीवरेवतथा ॥
यवाम्ये तथाप्रकारास्ते द्वारताः ॥ अथ कास्ता चोपपय । चोपपयो उन्नविधाः प्रचष्टाः । क्षालोद्रीहीगोपूमा यवकलमसूरतिलमुग्गाः ॥ मास
निप्फावज्जुसत्याः बलसीदशवीणकालिङ्गाः ॥ १ ॥ अथसीकुसुजकोद्व कगूरालमासकोद्वकाः ॥ क्षणवरेसयमूलवीयाः येवाम्ये तथाप्रकारास्तास्ते

एलयालुकी । घोसातर्दपक्रोला पवंगुलिध्यायनालीय ॥ १ ॥ कगूलयाकदुडया कक्कोरुडकारियवइसुजगा ।
 कुयवाययागलीपा थायव्हीतहदेयदालीय ॥ २ ॥ अण्कोथाअशुमन्नय नागलयाकहसूरयव्हीय सघहसुमिग
 सायिय जासुमणकुयिंदयव्हीया ॥ ३ ॥ सुव्हियअंथायव्ही धीरयिरालीजियतिगीयाकी । पाणीमामायव्ही गुजा
 वव्हीययत्याणी ॥ ४ ॥ ससयिदुगोसुफुसिया गिरिकणाइमालुयायअजणइ । दहफुत्तयकोगलिमा गलीयतह
 अक्कोर्योव्हीया ॥ ५ ॥ जेयाययो तहप्पगारा सेत्तं यव्हीउ ॥ से कित पव्वा २ अणगयिहा पयत्ता, तजहा
 हक्खुयाडरुयुत्तये थीरणातहहक्कोनेयमासेय । सुठेसरंययेत्ते तिमिरंसेतपोरगणले ॥ १ ॥ यसेयेलकणए फका
 वसेययवसेय । उवएकुणएयिमए फकायेलूयकव्वाणे ॥ २ ॥ जेयाययो तहप्पगारा सेत्त पव्वा ॥ से कित
 तणा ? तणा अणंगयिहा पयत्ता, तजहा-संजियगंतियहोसिय दसुक्कसेपव्वाएयपोरुडला । अणुणअथसावए

तिसुक्क भावततेरुजमूरवरस्यो ॥ १ ॥ उपपेसुमनसोपिच जातमुमम । दुविन्दव्हीकाः ॥ २ ॥ सुत्रिवास्यावक्को धीरवरानीपयव्हीनीपासी । पावी
 इयामाव्ही भुआवव्हीवत्याकी ॥ ४ ॥ सेयववीचद्विगेत्रा पुरमीगिरिकविमामुकाणत्रको । द्विपुप्पकागकिमोगरो तयेववाप्पाइवोरीकाः ॥ ५ ॥
 या थाप्पाकया प्रकारासा वस्यः । अय मे ते पवनाः पवना अनेकविधाः प्रसालादया-इत्तयाइत्तयाटिका बोडकोतयाइकानामव ॥ इव्ही
 धरेयवेत्रा तिमिरावतपोरपलास ॥ १ ॥ वंछोवेसुक्ककाः अकार्थत्रलयेमयवशः ॥ उदकफुटवविमुकाः कड्ठावेसुक्ककाको ॥ २ ॥ येवाले म
 याप्रकासे पवनाः ५ अथ कानि यवानि यवानि अनेकविधानि प्रवृत्तानि । तदया-वरवट्ठ कुमविन्दः करवववुवट्ठोत्तयाविमज्ज ॥ अणुरयववु
 रववव्य वेदात्तमेवमसुक्कवक् ॥ १ ॥ यानिवात्तानि तत्त प्रकाराणि ताभि तुवानि । अथ कतिविधाः अजवाः १ । अजवा अनेकविधाः अजवाः १ ।
 तदया दासकाभासवक्को वत्तात्तितवारिकारककाका ॥ करवकानिबीसेको करवककापववव ॥ १ ॥ वृत्तवकोविमज्जको अणुरववववव

साधारणसरीरधादरयणस्सहकाइया ? २ अणुगविहा पसुता, तजहा-अथए पणए सेवाले लोहिणी निह्ल
 त्यिन्नगा अस्सकस्सी सिहकस्सी सिउठातस्सीमुसदीय ॥ १ ॥ रुक्कुरहरियाजारु, ठीरयिरालीतहेवकिहीया
 हलिहासिगवेरेय, थ्यालुगमूलएड यकटूय कणकठुमज्जपोगलइतहेव मज्जासिगी विरुहा सप्पसुगधा ति
 वरुहा चेय थायरुहा पाढामियवालुकी मज्जरसा चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दति वणिक्किहाति
 यावरा मासपस्सी मुग्गपस्सि जीवियरिसिके य रेणुया चेव कानुली खीरकानुली तथा जगीणहाईयाकिमिरा
 सिन्नहमुल्याणगलइपेलुगाईय किरुहं पउले य हठेहरतणुया चेव लोयाणी करुहकदेवज्जे सूरणक तहेउ
 खसूरे एए अणतजीवा जेयावखे तहात्रिहा ॥ तणमूलकदमूलो वसीमूलित्तियायेर । सखेज्ज मसखिज्जा बोध
 हाअणतजीवाय ॥ १ ॥ सिधाऊगस्सुगुच्छो अणुगजीवोउ होति णायव्वो । पत्ता पत्तयजिया दोखियजीवाउ फले

वपया-अनन्ध, पनक सेवाल, लोही बीडू, सिमका । अथबली विरुको सउविट ततो, मुसुवठो ॥ १ ॥ तसकन्दकुन्वरिखिहवीरविरालो त
 यावात्ता । वारिद्वयधुवेर थासुमनीकत्तु ऊपकन्दमपुपोलेव ॥ २ ॥ मपुसुद्धीविरुठी सधसुमन्विच्छिक्कटा । अरमसुद्धावातालो मपुसरसाचराज
 सता ॥ ३ पट्यागान्धारिवात्तो वरहीकियातिवावरामासपबी । मुद्गपबीजीवरसिक्का रुक्काकाकोलोलीरीकाकोली ॥ ४ ॥ वृद्धाफमराविमाया गु
 ळागुल्लयवात्तुका ॥ ५ । ऊपपीसइयकन्वी तथाउरतल्लोपाबी ॥ ५ ॥ ऊपकन्दवज्जकन्वी सूरणकन्दःखसूकः । एते अनन्धजीवा ये थाप्यन्ते सथा
 प्रूताः ॥ ६ ॥ वज्जमूलकन्वमूला वसीमूलासायावपरे । सक्केया असक्केया योदुब्बायतथापरे ॥ १ ॥ सुङ्गाटकस्सुगुच्छोप्य नेज्जीवोप्रवतिविधेय ।
 पथाः प्रत्येकबीवा हीहीजीवोपलविधेयो ॥ २ ॥ यस्यमूलस्यप्रमस्य समोभङ्गसुदुषयते ॥ अनन्धजीवास्तम्भे येवाप्यन्तेतथाविधा ॥ १ ॥ यस्य
 कन्दस्य प्रमस्य समो भङ्गसु दुषयते ॥ अनन्ध बीवास्तम्भे येवाप्यन्ते तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य कन्दस्य प्रमस्य समो भङ्गसु दुषयते ॥ अनन्ध बीवा

गारा सेत ढसहीत । से कित जलरुहा २ ध्युनेगविहा पण्ठा, तजहा-उदए श्रत्रए पणए सेवाले कल हवे कसेरुया कच्छनाणी उप्ले पउमे कमदे गालिने सुनए सोगधिए पोन्नीए महापोन्नीए सययत्ते नद ससयत्ते कलहारे कोकणदे श्ररविदे तामरस त्रिस त्रिसमुणाले पोस्कुले पोस्कुलच्छिउए जेयावणे तहप्य गारा सेत जलरुहा । से कित कुहणा ? ध्युनेगविहा पण्ठा, तजहा-श्राए काए कुहणे कुणक्की दद्वहलिया श्रफाए सज्जाए ठसोए वसीणहिंया करए १ जेयावणे तहप्यगारा सेत कुहणा । पाणाविहस ठाणा रुस्काणएगजीवियापन्ठा । सद्योविएगजीयो तालसरउनालिपूरीण ॥ १ ॥ जहमगलसरिसयाण सिउेस मिस्साणयाहिंयावहा । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसधाया ॥ २ ॥ जहयातिलपप्यन्धिया यज्जपहितिलेहि सहतासती । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसधाया ॥ ३ ॥ सेत पत्तेयसरीरयादरयणप्फडकाडया । से कित

[illegible]

हीरोन्नगेपदीसई । परिभ्रजजीवेउसेखधे जेयावखेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नगाए हीरोन्नगेपदीसई । परि
 भ्रजजीवातयासाउ जेयावखातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिभ्रजजीवेउसेसाले
 जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपघालस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिभ्रजजीवेउसेपत्ते जेयावखेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुष्फस्सन्नग
 ६ ॥ जस्सपत्तस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिभ्रजजीवेउसेपुष्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीस
 स्स हीरोन्नगेपदीसई । परिभ्रजजीवेउसेपुष्फे जेयावखेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिभ्रजजीवेउसे
 ई । परिभ्रजजीवेउसेउ जेयावखेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठारं लक्ष्मीग्रहलतरीन्नवे । स्युणतजीवाउसाळक्षी जायाव
 खीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठारं लक्ष्मीग्रहलतरीन्नवे । स्युणतजीवाउसाळक्षी जायाव

स्य हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तमूले ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य रक्तस्य जगस्य हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवा स्तारब्धे
 ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य जगस्य हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्त रश्मि य वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य त्वक्स्थु ज
 माया हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य जगस्य हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्त
 प्छाते ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ५ ॥ यश्रप्रवासस्य जगस्य हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तस्य ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य ज
 गस्य हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवा स्तस्य ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य जगस्य हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवा स्तपु
 ष्य य वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ८ ॥ यत्फलस्य तु जगस्य हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तु फल य वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य ज
 गस्य हीरोन्नगस्सु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तद्वीज ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य कन्धस्य काष्ठेभ्यामस्तस्य यजुस्ता भवेत् ॥ अमलजीवास्त
 त्वचि या वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य रक्तस्य काष्ठेभ्यो लस्यकु यजुस्ता भवेत् ॥ अमलजीवास्तस्य ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य श्या

ननिधा ॥ २ ॥ जस्समूलस्सजगस्स समोन्नगोपदीसए । अणतजीवेउसेमूले जेयात्रयेतहायिहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्स
 जगस्स समोन्नगायदीसह । अणतजीवेउसेकदे जेयायन्तेतहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखघस्सजगस्स समोन्नगीय
 दीसई । अणतजीवेउमखघे जेयायन्तेतहायिहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएजगाए समोन्नगीयदीमड । अणतजीया
 तयासाउ जेयायन्तातहायिहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सजगस्स समोन्नगोपदीसई अणतजीवेउसेसाले जेयायन्ते
 तहायिहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सजगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेपयालेसे जेयायन्तातहायिहा ६ ॥
 जस्सपधस्सजगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेउसेपधे जेयायन्तेतहायिहा ॥ ७ ॥ जस्सपुष्पस्सजगस्स
 समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेउसेपुष्पे जेयायन्तेतहायिहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सजगस्स समोन्नगोपदीसई ।
 अणतजीवेउसेउ जेयायन्तेतहायिहा ॥ ९ ॥ जस्सधीयस्सजगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेउसेनयी
 जेयायन्तेतहायिहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सजगस्स हीरोन्नगोपदीसई । परिस्त जीवेउसेमूले जेयायन्तेतहायिहा १
 जस्सकंदस्सजगस्स हीरोन्नगोपदीसई । परिस्त जीवेउसेकदे जेयायन्तेतहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखघस्सजगस्स

सामूय यवाप्यग्य तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य द्वावा मज्जमा च समो जङ्गलु दूषयते ॥ अजल जीवाल्लब्धाः ॥ ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य म्ब
 कुप्रभायाः समो जङ्गलु दूषयते ॥ अजल जीवा लाल्लु ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ५ ॥ परप्रवासस्य जगत्स समो जङ्गलु दूषयत ॥ प्रभाः लेनल जीवाः
 सु र्वे वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य जगत्स समो जङ्गलु दूषयते ॥ अजल जीवा लाल्लु ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य ज
 गत्स समो जङ्गलु दूषयते ॥ अजल जीवा लाल्लु ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ८ ॥ यत्फलस्य च जगत्स समो जङ्गलु दूषयते ॥ अजल जीवाल्लु कले
 ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य धीमल जगत्स समो जङ्गलु दूषयत ॥ अजल जीवा लाल्लु ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य मूलस्य जगत्स

हीरोन्नगेपदीसई । परिहृज्जीविउसेखधे जेयायखेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नग्गाए हीरोन्नगेपदीसई । परिहृज्जीविउसेखधे जेयायखातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिहृज्जीविउसेखधे जेयायखेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिहृज्जीविउसेपत्ते जेयायखेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिहृज्जीविउसेपुप्फे जेयायखेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिहृज्जीविउसे फले जेयायखेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिहृज्जीविउसे वीए जेयायखेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठाटं तस्सीवहलतर्रीजवे । अणतजीवाउसान्तस्सी जायाव

स्य हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तमूले ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवा स्तरकन्धे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्त रश्मिष्य ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य स्वचक्षु न भाषा हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तु श्वात्से ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ५ ॥ यत्प्रकाशस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येक जीवास्तु ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येक जीवा स्तरकन्धे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवा स्तरपुष्प ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ८ ॥ यत्प्रकाशस्य तु जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तु फल ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य धीजस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु वृक्षयते ॥ प्रत्येकजीवास्तु हृदीये ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेऽप्यान्तरस्त्वङ् यदुत्ता भवेत् ॥ अन्तरजीवास्तु त्वचि या वाप्यन्या तथाविधाः ॥ ११ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेऽप्योन्तरस्त्वङ् यदुत्ता भवेत् ॥ अन्तरजीवास्तु त्वचि ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १२ ॥ यस्य श्वा

स्थातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठानं वल्लीयहलतरीनवे । झणतजीवाउसाठल्ली जायायणातहाविहा २ ॥
 जस्सखघस्सकठानं वल्लीयहलतरीनवे । झणतजीवाउसाठल्ली जायायणातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससाळाहक
 ठानं वल्लीयहलतरीनवे झणतजीवाउसाठल्ली जायायणातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठानं वल्लीतणु
 यरीनवे । परित्तजीवाउसाठल्ली जायायणातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठानं वल्लीतणुयरीनवे । परित्त
 जीवाउसाठल्ली जायायणातहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखघस्सकठानं वल्लीतणुयरीनवे । परित्तजीवाउसाठल्ली
 जायावखातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससाळाहकठानं वल्लीतणुयरीनवे । परित्तजीवाउसाठल्ली जायायणातहावि
 हा ॥ ४ ॥ वल्लगज्जमाणस्स गठीचुखघगोनवे । पुठयीसरिसण्णेदेण झणतजीवायियागाहि ॥ १ ॥
 गूढसिरागपत्त सच्छीरजंघहोइनिच्छीरं । जपियपण्ठसंधि झणतजीवायियाणाणि ॥ २ ॥ पुप्फाजलयायलया

तस्य काष्ठेभ्य श्वसीतु बहुला प्रवेत् ॥ कमलबीवाकात्तपि या वाप्यन्या साधाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य मूलस्य काष्ठेभ्यो लसत्स्व तनुतरीमता ॥ प्रत्येक
 बीवारत्नचित्तु या वाप्यन्या साधाविधाः ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यो लसत्स्व तनुतरीमता ॥ प्रत्येकबीवारत्नचित्तु या वाप्यन्या साधाविधाः ॥ २ ॥
 यस्य स्वयस्य काष्ठेभ्यो लसत्स्व तनुतरीमता ॥ प्रत्येकबीवासु स्वधि या वाप्यन्या साधाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य शातस्य काष्ठेभ्यो लसत्स्व तनुतरीम
 ता ॥ प्रत्येक बीवासु स्वधि या वाप्यन्या साधाविधाः ॥ ४ ॥ कलाद्रुर्ध्वमानस्य यन्त्रिबुद्धीकृताप्रवेत् ॥ पृथिवी सदृश प्रदेशा मूल बीब विजा
 नीयात् ॥ गूढ विराज पत्रं सक्षीरं यत् निःक्षीरम् ॥ यदपि ममहन्त्रि चमलबीवं विजानीयात् ॥ पुष्पं प्रलज्जस्वजं मूल बहुलमासवदुष्प ॥ बहुय
 मबहुय बोहुयममलबीबम् ॥ ३ ॥ येक्षेचिकालवद्वाः पुष्पाः सन्धेयत्रीविधाबस्युः । प्रविताद्यमलबीबा येवाप्यन्धेयकाविधाबस्युः ॥ ४ ॥ पट्टय
 लतिकन्दो कण्ठरत्नसायैककिञ्ची च । एतेस्मन्मत्रीवा एकोबीनोविषयकाले ॥ ५ ॥ फलायमूलमूलकन्दरी कण्ठुबहुलुभ्यकोचकोचुलो । इत्येवमेव

धिठयथासणालिद्यथाय । सखिज्जमसखेज्जा योधव्वाणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेडनालियायथा पुण्फासखेज्जजी
 विठयथासणतजीवा जयायणेनहायिहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलि भिकइ अरकडनहेवज्जिही य । एते
 यिया । णिज्जयासणतजीवा कटलीयन्नुयण । एणपरित्तजीवा जेयाउन्नेत ॥ ७ ॥
 छुणतजीवा एगेजीवोचिसमुणाले ॥ ५ ॥ पल्लूहसुणकटय कटलीयन्नुयण सतयत्तनहस्सपप्ताण ॥ ७ ॥
 हायिहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणालिणण सुन्नगभोगधियागय । अरविडुकुक्काण सतयत्तनहस्सपप्ताण ॥ ८ ॥ वगुनलडस्कुयाक्रिय
 थिठयाहिरपत्ता यकसियाचैयएजीयत्तम । अश्रितरगपप्ता पत्तयकंसरमिजा ॥ ९ ॥ अक्खिभस्सुपलिमा कट्टेयएगन्सहो
 तमासडस्कुयडक्केरुत्ते । करकरसु ठयिहगु तणागतहपप्तागणच ॥ १० ॥ पुस्समफलफालिग तुत्ततडनलुयलुक्क । घोसात्तय
 तिजीयस्स । पत्तेयपप्ताइ पुण्फाडछुणगजायाड ॥ ११ ॥ वटममककाह एयाडहत्तणगजीवस्स । पत्तयपप्ताइ सुकसरमंसरमिजा
 पप्ताल तिट्ठयंचेवतिट्ठस्स ॥ १२ ॥ वटममककाह एयाडहत्तणगजीवस्स । पत्तयपप्ताइ सुकसरमंसरमिजा
 पप्ताल तिट्ठयंचेवतिट्ठस्स ॥ १३ ॥ जोणिश्रूवीए

१२ ॥ सप्फाएसज्जाए उव्वेहालियायकुहणकुडुक्के । एणछुणतजीवा कुडुक्केहोडनयणाउ ॥ १३ ॥ जोणिश्रूवीए
 लीवा येवाएय्येत्थामबारगस्युः ॥ ६ ॥ पट्ठास्यल्लतल्लनामा सुन्नगसीनत्थिज्जाना प पाटुक्कम् । अरविस्सकोत्तवासा धातपयसइस्रयथासाम् ॥ ७ ॥
 यल्लयथास्यपययिवा सैकजीवाणि । याल्लयत्तयय कसरपैगमज्जाप ॥ ८ ॥ वेवणकगुगटिक्कममाससुक्कनेरक्का । अरजरसुत्थिनिट्ठइग
 स्सुवातिक्कपयगानिस्सः ॥ ९ ॥ अवाएय्येत्थाल्लो एक्कपेत्तवक्कायाणि । पथाक्खिचैक्कजीवास्स मेक्कजीवाणिपुप्पाणि ॥ १० ॥ पुप्पक्कसकालिङ्ग नुप्प
 नपयमसिक्केत्तेव । पोयातक्कपटोल लल्लुक्कपेत्तल्लुक्कम् ॥ ११ ॥ वल्लसुत्तनवट्ट ए नगानिज्जयान्नेपेक्कजीयस्स । प्रयक्कवथाक्क सुकसरकसर
 निज्जा ॥ १२ ॥ सप्फाएसज्जाए वव्वेहालियायकुहणकुडुक्क । एतेस्समकजीवा कट्टुक्कनयानल्लकता च ॥ १३ ॥ योजययानल्ल लीवाल्लयत्तामत्तिस
 वालो वा । यापयव्वसजीवा सोविदिपययमत्तयेत्त ॥ १४ ॥ यथोपपिक्कसल्लयएतु मोद्धयत्ता

जीयोवक्त्रमद्वसीवथ्युसीवा । जीविथ्यमूलेजीयो सोधिज्जपत्तेपठमयाए ॥ ११ ॥ सर्वोविकिसलनुसलु उगम
 माणोश्चणततर्त्तन्नणिठ । सोधेवविथ्यहुतो होठपरिघोश्चणतोवा ॥ १५ ॥ समयवक्त्रताण समयतेसिसरीरणि
 द्दुत्ती । समयश्चणग्गहण समयउत्सासनीसासी ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजगहण द्दह्णसाहारणाणतचव । जवज्ज
 याणग्गहण समासठत्तपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहुरो साहारणमाणपाणग्गहणच । साहारणजीयाण सा
 हारणउरकणएय ॥ १८ ॥ जहथ्ययगोलीधतो जाततत्तयणिज्जसकात्तो । सर्वोश्चगणिपरिणत्तु णिनुयजीने
 तद्दाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदीयहत्तिरहव सखेज्जाणवपासिउसक्का । ठोसत्तिसरीराहुं णिनुयजीनाणणताण २०
 लोगागासपएस णिनुयजीवठवेहिएक्केक्के । एवमविज्जमाणा हवतिओयाश्चणतात्तु ॥ २१ ॥ लोगागासपदेवे
 परित्तजीवठविमुएक्केक्के । एवमविज्जमाणा हवतिओगाथ्यसखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयस्सश्चसुर
 न्नागमित्तात्तु । लोगाथ्यसखाथ्यपज्जत्तयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एएहिंसरीरोह पच्चरुक्कनेपरुचियाजीया

वा ॥ १५ ॥ समव्युत्पत्त्यात्ताता समवतेपांछरीरेनिर्वृत्तिः । समसमाख्यापान ग्रहणवोच्छ्रावनिद्यासो ॥ १६ ॥ एकस्यचपद्वहं लक्षद्वानासापारखा
 नाच । यद्वद्वानांपद्व समावतल्लदपिद्वेकस्य ॥ १७ ॥ साधारयमाहारः प्रावापानादिकभवेत् स्वम् साधारखत्रीवाना साधारखलपुद्वेतत् ॥ १८ ॥
 पथायोबोसोत्तातो जातकसतपनीयसुद्धाक्षः । सर्वान्निपरिखतःखुनु जानीद्विनिगोद्वीवागत्वम् ॥ १९ ॥ एकस्यद्वयोखयाखं संत्येयामांनवोपन
 प्पानि । गावास्सपद्वृपत्ते ठनत्तानांनिमोद्वीवानाम् ॥ २० ॥ लोकाकागप्रदेसे निगोद्वीवत्त्वापयेद्वेकम् । एवमुमीपमाना प्रवन्ति लोकाचनत्ता
 सु ॥ २१ ॥ लोकाकागप्रदेसे मत्त्येकत्रीवत्त्वापयेद्वेकम् । एवमुमीपमाना प्रवन्ति लोकाचनत्ता ॥ २२ ॥ पयोसप्रत्येकत्रीवाः प्रतरस्यासुद्धामभि
 ता । एवमुमीकाचपयोसा साधारकाचनत्ता ॥ २३ ॥ यन्निःखुसुरीरो मत्त्येकवेप्रकृतिपिताजीवाः । नूत्नाकाद्यायाद्या यशुस्यमेनसयान्ति ॥ २४ ॥

सुक्रमास्थाणागिज्जा चस्कुप्फासनतेइति ॥ २१ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा ते समासत्तं दुजिहा पणुत्ता, त०
 पज्जात्तगा य अणुपज्जात्तगाय, तत्थण जे ते अणुपज्जात्तगा तेण अणुसपत्ता, तत्थण जेते पज्जात्तगा तेसिण वन्ना
 देसण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसो विहाणाइ सखेज्जाइ जोगिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जा
 त्तगणिस्साए अणुपज्जात्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सिय सखिज्जा सिय अणुसखिज्जा सिय अणुणता एणसिण
 इमात्तं गाहात्तं अणुणगतत्तत्तं तजहा—कदायकदमूलाय रक्कमूलाडयाये । गुच्छायगुम्भत्रत्तीय वेतुयाणित्ता
 णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिघात्ते ह्देषसवालकिहएणए । अणुएयकच्छन्नाणी कटुक्कोकगवीसड्ढे ॥ २ ॥
 तयत्तत्तिपत्तालेसुय पत्तपुप्फफलेसुय । मूलगमज्जवीएसु जोगीकस्सइकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त साहारणसरीर
 वादरयणस्सइकाडया । सेत्तयादरयणस्सइकाडया ॥ सेत्त एगिदिया ॥ से कित वेइदिया ? वेइदिया अणुणेग
 विहा पणुत्ता, तजहा—पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गणूयलगा गोलोमा गेउरा सोमगलगा वसीमुहा सू

येपिचाम्हे तयाप्रकारास्ते समासतोद्विषाः प्रचतासाधया-पर्याप्तकायापर्याप्तकाय, तत्र यद्यपर्याप्तकासो ऽसम्प्राप्ताः, तत्र ये पर्याप्तका स्तेषा
 वर्णोद्दान गत्यादौरेण रसादेक्षेण स्पृक्षादेक्षेण सङ्ख्यायञ्चो विचानानि (नेदाः) सस्येयानि योनिप्रमुखासवस्त्राणि पर्याप्तकमिश्रया अपर्याप्तका
 व्युत्पन्नन्ते यत्रैकस्य स्यात्सस्येयाः स्यादसस्येयाः स्यादसस्येयाः । एतेयानिमा गाथा अनुगमन्त्या साधया-कम्पायकम्भमूलानि यद्दमूलानिचाप
 रे । गुच्छागुन्माद्यप्रसव वेत्तुकाभिवृत्तानिच ॥ १ ॥ पटोत्पत्तयद्गुहाटकान इदसवालकप्रपत्तकाय । अवनकायकच्छन्नाणिः कटुक्कोकनिययत्तिकः
 ॥ २ ॥ ल्यक्खिपत्तालेसु पत्तपुप्फफलेसु । मूलगमज्जवीएसु योनिःकस्यापिकापिण ॥ ३ ॥ सत्ताः साधारणसरीरयादरवत्तस्यपिकायिका । च
 ता यादरवत्तस्यपिकायिका । समाप्तानि एकेन्द्रियाणि । अप के ते द्वौन्द्रिया हौन्द्रिया अनेकावियाः प्रचतासाधया पूति लापिकाः शुद्धिहापि

ईमं हा गोजलीया जलीया जालाउया सखा मखगगा धुवा खुवा संधा वराहा सौत्तिया सौत्तिया कहुया
 थासा एगहवसा दुहर्नयसा णदियायसा सयुक्ता माडवाहा सिप्पि सपुना चंदणा समुहलिरका, जयाययो
 तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपमगा त समामनं दुयिहा प०, त०-पज्जसगाय अणज्जत्तगाय तणनिण
 एयमादियाण येइदियाण पज्जत्त पज्जसाण सत्तजाहुलकोही जाणिप्पमुहसयसहस्सा जयतीति मरकाय ॥
 सेत्त यइदियससारसमाययुजीयपसुवणा ॥ से क्कित तहदियससारसमाययुजीयपसुवणा २० अणगगयिहा
 पखसा, तजहा-उवाइया रोहिणिआ कुय् पिपीलिया उहेमगा उहुहिआ उक्कलिया उप्पाया उप्पका तण
 हारा कठहारा पसहारा मालुया तणयिटिया पसयिटिया फलवटिया यीययिटिया तेपुरु
 णमिजिया तउसिमिजिया कप्पासठिमिजिया हिस्सिया ज्जिस्सिया किगिरा किगिरिआ वाक्कया लज्जया सु

का: कवधुपणा गोतोमा लुक्का समकुलणा वकीमया: सुबोमुखा पाजकीका: वकीका वमूया: मोरा शास्त्रका मया स्वया: राहा करुा यो
 णक्क मोक्खिं कुसापवाया पक्कीपयुत्ता इयोपयुत्ता: नय्यावता: ययुका मयाहा शास्त्रका चल्मा: मममूनीगा: यथाप्यय तथासकारा
 सर्व ते समान्णमा मपुसकाल समावसा दिवावपा: प्रसमः । तद्यथा पर्वातका यवयामकाय । एतय मत्रमाग्ना भांन्त्रिययास्याभां पयासायया
 मकादीनां सर्वजातिभुमकोटीना याभिप्रसयादि दानमदस्साय भवन्ति दानधात्यातम् । तवत् हीन्त्रियममापयत्रीयप्रपायता: व यय सातगिया
 लोअप्रयसमापयत्रीयप्रपायता । बीन्त्रियममापयत्रीयप्रपायता यमकावपा: प्रसमः । तद्यथा इत्यातिका रोहिणिआ वन्नुभा विपातका
 उहुवा नदीव उरकासिता पत्पता सरपहा वृकाकारा व द्वाकारा: मुनाकारा: यकाधारा: सुवयेगी पुनवटी पुप्पवटी पनवटी च उज्जली मूरगमव
 जिता: वकासमज्जिता: वयोका: कालिन्किनी वज्जिका वज्जिका भिगुरिया भिगुरिया काहुका लपुका सुवया: वीवाकाका: सुयट्टि: इअजति

नगा सीवत्यियां सुयवेष्टा इदकाडया ईदगीत्रया तुरतुत्रगा कील्यलवाहगा जूया हालाहलां पिसुया सत
वाहया गीम्ही हल्यिसीका जैयात्रयो त० सहे ते समुच्छिमनपसगा त समासहे दुविहा पयान्ना, तजहा—
पञ्जत्तगाय अ्यपञ्जत्तगाय । एएसिण एउमाडयाण तडदियाण पञ्जत्तापञ्जान्ना अण्ठाहुकुलकोफिजोणि
प्यमुहसयसहस्सा हवतीति मस्काय । सत्त तेइदियससा० । से कित चउरिदियससारसमाचयाजीवपयान्
णा २ ? अण्णेगविहा पयान्ना, तजहा—अ्यधिय पाप्पिय मेच्छिय, मगसिरकीरु तहा पयग य । ठक्कग कु
कुरुकुहुह, नदावसेय सिगिरिणे । किरुहपत्ता नीलपत्ता छालिदुपत्ता सुक्किपत्ता चित्तपरका
व्याचसपस्का ठहजलिआ जलचारिया गजीरा णीणिया ततवा अत्यिरोक्का अत्यिवेहा सारगा नेउरा डोला
न्नमरा नरिली जरुला तोम्मा विञ्जुया पप्पविञ्जुया क्खणविञ्जुया जलविञ्जुया पिग्गला कणगा गोमयक्कीका
जैयावन्न तहप्यगारा सहे ते समुच्छिमा नपुन्नगा त समासहे दुविहा पयान्ना, तजहा—पञ्जत्तगाय अ्यप

का इन्द्रगीपाः तुरतुम्यगाः कुलत्यवाहगा यूका इहाइहाः पिग्गला सववावकाः कयोक्का इल्लिअयका ये वाप्यय तयात्रियासो सने समुच्छि
मा नपुसकविङ्गाः त समासतो द्विविधा प्रपत्ताः । तयाया पर्योमकापपर्योमकाय । यत्तयायममविज्ञाना त्रान्द्रियाणा पर्योमापपर्योमकासट
जातिभुल्लकाटपोनिप्रसृत्यतसइल्लायि मवलि इत्याख्यातम् ॥ तयते श्रीन्द्रयाह्या ॥ अथ कलिविवाद्यतर्दिन्द्रियससारसमापल्लज्जपयानाः
१ । अतुर्दिन्द्रियससारसमापल्लज्जपयाना मन्नजिधाः प्रपत्ताः । तयाया अापवपुच्छिक्कमासक मज्जकटिः ललापतङ्काय ॥ मत्तुण्णकुल्लककु
इन्द्र्याः बत्तोयमुद्धिरकाय ॥ १ ॥ कलपत्ता नीलपत्ता सारितपत्ता इमारुपत्ताः सुद्धवशायायनपत्ता चवित्रपत्ता उपजलिका जलचारया गजीरा
निपतासल्लवोक्काया चासवेयाः सारङ्गा मज्जला वल्ला म्ममरा म्ममर्यो जल्लइहाः वाहा यायका पययायकाः गामययुधिकाः जलसुधिकाः जलसुधिकाः

छत्तगाय । एतसि एयमाद्वयाण चउरिदियाण पज्जतापज्जत्ताण नयजाडुकुउक्रोमि जीणिप्पमुहसयसह
 रसाइ नवतीति मत्काय । सेस चउरिदियससारसमावणजीवपणवणा । से कित पचिदियससारसमावण
 जीवपणवणा ? पचिदियससारसमावणजीवपणवणा चउविहा पणत्ता, तजहा-नेरइयपचिदियससारस
 मावणजीवपणवणा तिरिक्कजीणियपचिदियससारसमावणजीवपणवणा मणुस्सपचिदियससारसमावण
 जीवपणवणा देवपचिदियससारसमावणजीवपणवणा । से कित नेरइया ? सत्तविहा पणत्ता, तजहा
 रयणप्पन्ना पुढवीनेरइया सक्करप्पन्नापुढविनेरइया वालुयप्पन्नापुढविनेरइया धूमप्पन्नापुढविनेरइया तम
 प्पन्नापुढविनेरइया तमतमप्पन्नापुढविनेरइया । ते समासठे दुविहा पणत्ता, तजहा-पज्जतगा अण्णत्त
 गाय । सेत्त षेरइया । से कित पचिदियतिरिक्कजीणिया ? तिविहा पणत्ता, तजहा-जलयरपचिदि

रियपणत्ताः कथमाः भोमयवीटाः ये वाप्यग्ये तथाप्रकारास्ते समूचेमा नपुसकास्ते समासठो द्विविधाः प्रपत्ताः । पर्याप्तका अपयाप्तकाश्च ॥ एते
 पासेवमादीना चतुरिन्द्रिययाद्यानां पर्याप्तापयोक्ताना नवसप्तसुसुखोत्तगतसद्वावि भवन्ति इति साध्यातम् ॥ तस्ये चतुरिन्द्रियसमापक ओ
 वप्रज्ञापनाः ॥ अथ कतिविधाः पण्चेन्द्रियसंसारसमापकत्रीवप्रज्ञापनाः । पण्चेन्द्रियससारसमापकत्रीवप्रज्ञापनादुविधा प्रपत्ताः ॥ तद्यथा ने
 रयिकपण्चेन्द्रियससारसमापकत्रीवप्रज्ञापनाः तिर्यग्भूयोक्तपण्चेन्द्रियससारसमापकत्रीवप्रज्ञापनाः मनुष्यपण्चेन्द्रियससारसमापकत्रीवप्रज्ञापनाः दे
 वपण्चेन्द्रियससारसमापकत्रीवप्रज्ञापनाः । ते कतिविधा नैरयिकाः ? नैरयिकाः सप्तविधाः प्रपत्ताः । तद्यथा-रत्नप्रज्ञा पचिदो नैरयिका शर्कर
 प्रज्ञा पचिदो नैरयिका वासुकप्रज्ञापचिदो नैरयिका धूमप्रज्ञापचिदो नैरयिका तमप्रज्ञा पचिदो नैरयिका तमप्रज्ञा प्रज्ञा पचिदो नैरयिका ते कथा
 सोत द्विविधाः प्रपत्ताः तद्यथा पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च । तस्ये नैरयिकाः । अथ कतिविधाः पण्चेन्द्रियपतियपानिकाः ? । पण्चेन्द्रियपतियपानिका

यतिरिक्कजोगिया थलयरपचिदियतिरिक्कजोगिया खहयरपचिठियतिरिक्कजोगिया । से कित जलयरप
चिदियतिरिक्कजोगिया २ ? पचविहा पन्तत्ता, तजहा मच्छा कच्छहा गाहा नगरा सुसुमारा । सेकि त
मच्छा २ १ थ्थणगविहा पखत्ता, तजहा सरहमच्छा खवत्तमच्छा जुगमच्छा विज्जिणियमच्छा हलिदमच्छा क
मगरिमच्छा रोहियमच्छा हलोसागरा गागरा वत्ता तिमिगिला पक्का तदुलमच्छा । सेत्त
णिक्का मच्छा सालिसच्छियामच्छा लन्नणमच्छा पक्का पक्कागहपक्का । जेयावत्ते तहप्यगारा । सेत्त कच्छत्ता ।
मच्छा । से कित कच्छत्ता २ दुविहा पखत्ता, तजहा थ्थठकच्छत्ता य मसकच्छत्ता य । सेत्त कच्छत्ता ॥ से
से कित गाहा २ ? पचविहा पखत्ता, तजहा देलीवठगा मुदया पुलगा सीमागरा । सेत्त गाहा ॥ से
कित मगरा २ १ दुविहा पखत्ता, तजहा-सीठमगरा मच्छमगराय । सेत्त मगरा । से कित सुसुमारा २

कतिविधा प्रश्नताः तद्यथा पलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्काः खलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्काः सुथरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्काः । अथ कतिविधा
जलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्काः १ । पलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्काः पञ्चविधा प्रश्नताः । तद्यथा-मरस्या कच्छपा याथा मकराः जिञ्जुमा
राः । अथ कतिविधा मरस्याः १ । मरस्या धनकविधा प्रश्नताः तद्यथा-सङ्गमरस्या सुतलमरस्या युगमरस्या चिन्नमरस्या इतिदमरस्या मस
रमरस्या रोपितमरस्या इलीमरस्या सागरमरस्या गगरमरस्या बङ्गमरस्या तिनिमरस्या तिनिमरस्या मरुमरस्या तदु
लमरस्या कनकमरस्या मालिमरस्या मासिकमरस्या सप्तममरस्या पलाकमरस्या पलाकपताकमरस्या ये यापये तथाप्रकारास्त मरस्याः ।
अथ कतिविधा कच्छप १ । कच्छपा द्विविधा प्रश्नताः । तद्यथा-स्थिककच्छपा मासिककच्छपा । अथ कतिविधा ग्रहा १ । मकरा द्विविधा प्रश्नताः सु
याथा पञ्चविधा प्रश्नताः विष्णुया वठगा सुदुना पुनक्का सीमाकाराः तयते याथाः । अथ कतिविधा मकरा १ । मकरा द्विविधा प्रश्नताः सु

एगामारा प०, सेस सुसुमारा । जेयायन्ते तहप्यगारा ते समासन्तं दुविहा पयसा, तजहा--समुच्छिमा य
 गम्भवक्कतिया य तत्यण ज ते समुच्छिमा ते सहे नपुसका, तत्यण जे ते गम्भवक्कतिया ते तियिहा प०,
 तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा । एतसिण एवमाइयाण जलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पज्जसापज्जत्ताण
 छुत्तरसजाइकुलकोण्णिजोण्णियमसुहसयसहस्सा नवतीति मरकाय । सेस जलयरपचिदिय० । से कित यल
 यरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ ? दुविहा पयसा, तजहा चउप्ययल्लयल्लयरपचिदियतिरिस्कजोणिया परि
 सव्वयल्लयरपचिदियतिरिस्कजोणिया य । से कित चउप्ययल्लयरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ ? चउत्तिहा
 पयसा, तजहा एगसुरा दुसुरा गळीपया सणफया । से कित एगसुरा २ ? अणुगेविहा पयसा, त०
 अस्सा अस्सतरा घोळगा गह्ना गौरकरा कदलगा चिरिकदलगा आयत्ता । जेयायन्ते तहप्यगारा । सेस

यथासकराः नरसमवराय । सपते मकराः । अथ कतिविधाः सिंघुमाराः १ । सिंघुमारा यथाकाराः प्रज्जसाकपते सिंघुमारा । ये वाप्यस्ये त
 थाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्जसाः । समुच्छिमाय गन्धुत्थान्नित्राय । तत्र यस्ते समुच्छिमास्ते समासत नर्बे नपुसकाः । तत्र यस्ते गन्ने
 नपुसकास्ते त्रिविधाः प्रज्जसाः । खिय पुत्थाः नपुसक । यत्तादृशानामवमादीनां जलसरपण्णेत्रियांतय्योनिनामा यवांसपयोनामपय
 यतियकपोनिनाः १ । त्वत्तरपण्णेत्रियतियेकपोनिका प्रवत्तीति आत्थातम् ॥ तयत्त जलसरपण्णेत्रियांतय्योनिनाः । अथ कतिविधाः त्वत्तरपण्णेत्रि
 पण्णेत्रियतियकपोनिनाः । अथ कतिविधास्तत्त्वत्तरपण्णेत्रियतियेकपोनिका द्विविधाः प्रज्जसाः । तद्यथा वतुप्यदत्तजलसरपण्णेत्रिकतियकपोनिनाः । चरित्तरेत्त्वत्तर
 साः । तद्यथा-एकसुरा द्विसुरा चकोपदाः समासपदाः । अथ कतिविधाः एकसुराः १ । एकसुरा जलसरपण्णेत्रिः प्रज्जसाः । तद्यथा-अथा चकोपरा

एगसुरा । से कित दुसुरा २ ? अणेगविहा पसुता, तजहा-उहा गोणा गवया रोज्जा समया महिसा सधरा वराहा अया एलगा रुव सरन चमर कुरग गोकुसमाई सेत दुसुरा । से कित गळीपया २ ? अणे गविहा पसुता, तजहा हत्यो हत्योयणा मकुणहत्यो स्वगा गळा । जेयावये तहप्यगारा । सेत गळीपया । से कित सणप्फया २ ? अणेगविहा पसुता, तजहा सीहा वग्वा दीथिया अच्चा तरच्चा परस्पर सिया ला सुणगा कीलयणगा (ग्रया ५००) कोकतिया ससगा चित्तगा विहलगा । जेयावये तहप्यगारा । सेत सणप्फया । तसमासत दुविहा पसुता तजहा समुच्छिमाय गप्पवक्तियाय । तत्यण जे ते समुच्छि मा ते सवे णपुसगा, तत्यण जे ते गप्पवक्तिया ते तिविहा पसुता, तजहा हत्यो पुरिसा नपुसगा । एएसिण एवमादियाण थलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पज्जहापज्जत्ताण वसजाइकुलकोफिजोणियमुह

पोटका गवना गौरसुराः कन्दसकाः श्रीकन्वलकाः चावतांय । ये वाप्यन्ते तथाप्रकारः । तयते एकसुरा । अय कतिविधाः द्विसुराः ? । द्विसुरा रा अनेकविधाः प्रसता । तद्यथा-सप्ता गोका गवया रोक्काः अशका मयियाः धाम्यरा वराहा अत्रा यलका रुव धारजायमरा कुरङ्गा गोकर्को टिका सयते सप्ता द्विसुराः । अय कतिविधा गवहीपदा ? । गवहीपदा अयनेकविधाः प्रसताः । तद्यथा-इस्ती गयइइ मूअनइस्ती उङ्गा गयहाः यवाप्यन्ते तथाप्रकारः सप्ता गवहीपदाः । अय कतिविधा सनसुपदाः ? । सनसुपदा अनेकविधा प्रसताः तद्यथा विहा व्याघ्रा द्वीपिनो अद्या नरसजः परशराः इयाहा विरासाः दाम कोला कोअतय सप्ताका विग्रकाः यिहाहाः येवाप्यन्ते तथाप्रकारास्सर्वे समसाः । ते समासतो द्विविधा प्रसताः । तद्यथा-समुब्धिमाद्य गजकुशकान्तिकाद्य । तत्र ये समुब्धिमास्ते सर्वे नपुसकाः । तत्र यएते नर्जशुश्रान्तिकास्ते त्रिविधा प्रसताः । तद्यथा लिङ्ग एरुया नपुसकाः । एतेपामेनमादीनां स्वतन्त्रपण्येगप्रपतियक्योनिनानां पर्योहापर्योहाना इयत्राविकुलकोटियोभिप्रमु

सयसहस्सा हवतीति मस्काय । सेत चउप्ययलयरपचिद्वियतिरिक्कजोणिया । से कित परिसप्ययलयर
 पचिद्वियतिरिक्कजोणिया २ ? दुविहा पखुत्ता, तजहा उरपरिसप्ययलयरपाचिद्वियतिरिक्कजोणिया जुय
 परिसप्ययलयरपचिद्वियतिरिक्कजोणिया य । से कित उरपरिसप्ययलयरपचिद्वियतिरिक्कजोणिया २ ? च
 उस्सिहा पखुत्ता, तजहा सुही अयगरा छासाळिया महोरगा । से कित शुही २ दुविहा पखुत्ता, तजहा
 दस्सीकरा य मउलिणो य । से कित दस्सीकरा २ ? शुगगविहा पखुत्ता, तजहा आसीविसा दिठोविसा
 उगगविसा जोगविसा तथाविसा लालाविसा उस्सासयिसा गिस्सासविसा करहसप्पा सेठसप्पा कउदरा दप्प
 पुप्फा कीलाहा मेलिमिदा ससिदा जेयाघणे तहप्पगारा । सेत दस्सीकरा । से कित मउलिणो २ ? शुणेग
 विहा पखुत्ता, तजहा दिव्वागा गणसा कसाहीया वउला चित्तुणिणो मरुलिणो शुही शुहिसिलागा वाय

सयसहस्सावि सवलीत सास्यातमुत्तायतुप्यइस्सतवरपप्पेन्द्रियतियक्कपोनिक्का । अय कतिविधाः परिसपरस्सतवरपप्पेन्द्रियतियक्कपोनि-
 का । १ । पारसपरस्सतवरपप्पेन्द्रियतियक्कपोनिक्का द्विविधाः प्रपत्ता । तद्यथा उर परिसपरस्सतवरपप्पेन्द्रियतियक्कपोनिक्काः पुत्रपरिसपरस्सत
 वरपप्पेन्द्रियतियक्कपोनिक्काय । अय कतिविधाः उर परिसपरस्सतवरपप्पेन्द्रियतियक्कपोनिक्काः १ । उरपरिसपरस्सतवरपप्पेन्द्रियतियक्कपोनि
 कायतविधाः प्रपत्ताः । तद्यथा चइय' चअनराः आसासिगा' महोरगाः । अय कतिविधा चइय १ । चइयो द्विविधाः प्रपत्ताः । तद्यथा दवीकरा
 य मुकुलिनय । अय कतिविधा दवीकराः १ । दवीकरा अनेकविधाः प्रपत्ताः । तद्यथा आओविपा' दग्गाविधाः उपविधा' ओनविधा त्वचाविधाः
 सामाविधाः उप्पुसाविधाः नि'द्यावविधाः कप्पसर्प' स्वजसर्प' कादुम्भराः वज्रपुप्यः कोसाइ' मेलिमिदा' सविन्ना ये चाप्यन्य तथाप्रकारा
 लयत दवीकरा । अय कतिविधा मुकुलिनः १ । मुकुलिनो उजकविधाः प्रपत्ता । तद्यथा दिव्याः मानसाः कसाहीका' ककुताः विधासिक्काः अरल

ऋगा । जेयावच्छे तहप्यगारा । सेत्त यउलिया । सेत्त छुही । से कित् अयगरा ? एगागारा पयुत्ता,
 सेत्त अयगरा । से कित् आसालिया समुच्छति ? गोयमा ! अतीमणस्सखे
 हे अह्माडजेसु दीवेषु णिअधाएण पयसरसु कम्मन्नमीसु वाधात पढुच्च पचसु महाविदेहेसु चक्रवहीखधावा
 रेसु वासुदेवखधावारेसु यलदेवखधावारेसु मरुलियखधावारेसु महामरुलियखधावारेसु गामनिवेसेसु नगर
 निवेसेसु निगमनिवेसेसु खेरुनिवेसेसु कल्लरुनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पहरुनिवेसेसु अग
 रनिवेसेसु आसमनिवेसेसु सवाहनियेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसिण चैय त्रिणासेसु । एत्थण आसालिया
 समुच्छति । जहन्नेण अगुलस्स असखिज्जहागमितीए तंगाहणाए, उक्कोसेण वारसजीयणाइ । तहाणुरु
 व च ण विस्कज्जवाहसेण न्नीमिदालिप्पण समुठति । असन्नी मिच्छविठी अन्नाणी अतीमुज्जतथाउया

सितः अह्यः अद्विभुगाशाः वायुकुहागाः । येवाप्यन्ये तथाप्रकाराः । तएते मुकुसितः । उक्ता अह्यः । अथ कतिविधा अजगरा ? । अजगरा
 एकाकारः प्रचक्षः । तएते अजगराः । अथ कस्यासासिगाः ? । कथं जदन्त । आसासिगाः समुदन्ति । गीतम । अन्तमध्ये मनुयसेप्रस्थाहुवतीये
 पु द्वीपेषु निज्वायित पम्बवच्छसु क्षमन्नमिषु पुनय पम्बसु मद्गविदेसेषु चक्रवत्तिरकन्यावारेषु वासुदेवकन्यावारेषु यलदेवकन्यावारेषु माणकलि
 कन्यावारेषु मरुनायकलिकन्यावारेषु ग्रामानवेषेषु नगरनिवेशेषु निगमनिवेशेषु खेटनिवेशेषु कयटनिवेशेषु मरुस्यनिवेशेषु द्वीपमुखानि
 वेशेषु पत्तमनिवेशेषु आकारनिवेशेषु आश्रमनिवेशेषु सवापनिवेशेषु राजधानीनिवेशेषु मतेपामेव विनाशेषु । एतेषु आशासिगा समुदन्ति । ज
 पयनाकुलस्या सत्येयनागमात्रपा उवगाहमया । एत्थप्येवो हादशपोजमानि तथाभूषणं च विष्णुस्यलस्याप्या (विष्णुस्यलस्याप्या) न्नीमिं दलियत्वा
 समुविष्ठते । अथचित्तिमिध्यादृष्टिः अन्नामी अन्तमुदुत्तापुरेव कालं करोति । तएते आसासिगाः । अथ कतिविधा मदीरगा ? । मदीरगा अनेक

अत्र काठ करेड । सेस आसाडिया । से कित महोरगा २ ? छुर्नेगाविहा पखसा , तजहा अत्येगहया
 अंगुल पि छुगुलपुहसिया वि वियच्छि वि यियच्छिपुहस्त पि रपणी पि रपणीपुहसिया पि कुच्छ पि कुच्छ
 पुहसिया वि धण पि धणपुहसिया वि गाउय पि गाउयपुहसिया वि जोयण पि जोयणपुहसिया वि
 जोयणमय पि जायणसयपुहसिया वि जोयणसहस्स पि तण थले जाता जले विचरति थले विचरति ते
 गल्लि ठह आहिरणसु दीयसमुद्देसु हयंति जेयायन्ते तहप्पगारा संत्त मन्नेरगा । ते समामत्तं दुयिहा ५०,
 १००—मम्मच्छिमाय गम्भयक्कातिया य । तत्यण जेते समुच्छिमा ते मन्ने गपुमगा, तत्यण जेते गम्भयक्कतिया
 ण तियिहा ५०, त०—इत्थी पुरिसा नपसगा, एएसिण एयमाहयाण यज्जसा २ ण उरपरिसप्पाजं दसजा
 इकुलकोनीजोणिप्पमुहसयसदस्सा हयती ति मरकाय । सेस उरपरिसप्पा । से कितं नुयपरिसप्पा २ अज्जेग

विपाः प्रप्रसा । सदाया-सत्येवे वेचन यहुतमपि यहुतपुण्यकामपि वितस्तिमपि वितस्तिमपि करविमपि करविपणकामपि कुविमपि
 कुसुपपणं यमरपि यमु पयसं गच्छतिमपि गच्छतिपणं योजनमपि योजनपयस योजनपयसपणं योजनपयसपणं योजनपयसपणं योजनपयसपणं
 स्यसजाता जलेविचरन्ति समद आद्येपु हीपणमुपेपु सवन्ति ये वाप्ये ते सदाप्रकाराः । सत्ये अछोरगाः । ते सदाप्रतो द्विबिधाः प्रप्रसाः सदा
 या-संमूर्च्छिमाय मरकसकान्तिनाम् । तत्र ये संमूर्च्छिमास्ते सर्वे मर्त्यकाः । तत्र ये मर्त्यकानिनास्ते द्विबिधाः सदाया की पुण्या मनुसकाल
 इ । एतेवामममादीनां यर्वासायर्वासापुण्यपरिणामा इज्जज्जतिमुत्तमोदितो निप्रमुत्तमपण्यकामपि मरकान्ति जयाकाल । यज्ज उरपरि
 पां । यत्र कतिबिधा पुण्यपरिणामीः १ मुजपरिणामीः प्रप्रसाः । सदाया-मनुसा केवः । सदायाः सदायाः सदायाः सदायाः सदायाः सदायाः
 विचरन्तः यथा । मनुसाः यथा इहा । वीरविहारविहाः आद्याः यमुणादिकाः य वाप्ये सदाप्रकाराः । ये सदाप्रतो द्विबिधाः प्रप्रसाः । ये

विहा पयसा, तजहा-णउला सेहा सरा सहा सरठा सारा खारा घरोडला विस्सजरा मूसा मगसा पड
 घडप्याडया जे यावदे तहप्यगारा । ते समासने दुविहा ५०, त०-समुच्छि
 लाडया त्यीरविरालिया जाहा तत्यण जेते समुच्छिमा ते सहे नपुसगा, तत्यण जेते गप्पयक्कतिय तेण तिविहा
 मा य गप्पयक्कतियाय, तत्यण जेते समुच्छिमा ते सहे नपुसगा, एएसिण एवमाडयाण पज्झा २ ण न्यपरिसप्याण नवजाडकुल
 पयसा, तजहा-डुत्या पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाडयाण पज्झा २ ण न्यपरिसप्याण नवजाडकुल
 कोफिजोणिप्यमुहसयसहसाड हवतीति मरकाय । सेत न्यपरिसप्यलयरपचेदियतिरिक्कजोणिया । सेत
 परिसप्यलयरपचेदियतिरिक्कजोणिया । से कित खहरपचेदियतिरिक्कजोणिया २ चडयिहा पयसा,
 तजहा-चम्मपस्की लोमपस्की समगपस्की वियतपस्की । से कित चम्मपस्की २ श्रुणगविहा ५०, त०
 वगुली जलोया श्रुफिहा नाररपस्की जीवजीवा समुदुवायसा कखसिया परिकेवराली जेयायसे तहप्यगा
 रा ॥ सेत चम्मपस्की ॥ से कित लोमपस्की २ श्रुणगविहा ५०, त० ठका कका कुरला वायसा चक्का

मूर्धमाव गर्भेष्टकात्मिकाय । तत्र ये समुच्छिमास्ते सर्वे नपुसका । तत्र ये गतदूरकात्मिकास्ते त्रिविधा प्रपन्नाः । तद्यथा स्त्रिय पुंस्य नपुस
 काः । एतेषामवमादीना पयोषापयोषाणा पुत्रपरिसर्षाणा मज्जातिज्जलकाटिपानिप्रमुखातसस्त्राणि भवन्तीति यास्यात् । उक्ता पुत्रपरिसर्ष
 रस्यस्वरूपेन्द्रियतियन् योनिः । उक्ताः परिसपरस्यस्वरूपेन्द्रियतियक्यात्मिकाः । अथ कतिविधा स्वरूपेन्द्रियतियकपोत्मिका ? । स
 चरपप्यन्द्रियतियकपोनिः । तद्यथा चतुर्विधाः प्रपन्नाः । तद्यथा चमपली सोमपली समुद्रकपली विततपली । अथ कतिविधाचमपनिः, चमपनि
 मेकविधा प्रपन्नाः । तद्यथा यजुसा जलोकाः कविल्लाः नाररपली लीधभीवाः समुद्रायायसा कखतिया पतिविराली य वाप्यये तथाप्रकाराः ।
 तएत चमपनिः ॥ अथ कतिविधा लोमपनिः ? । लोमपनिषोनेकविधाः प्रपन्नाः तद्यथा उड्डा कट्टा कुरला वायसा चक्काङ्गा इमा कल

चेव कालं करेइ । सेत्त स्यासालिया । से कित महोरगा २ ? छणेगेविहा पखत्ता, तजहा अत्येगड्या
अगुल पि अगुलपुहसिया वि वियाच्छिवि वियच्छिपुहत्त पि रयणी पि रयणीपुहसिया पि कुच्छपि कुच्छ
पुहत्तिया वि धण पि धणपुहसिया वि गाउय पि गाउयपुहसिया वि जीयण पि जीयणपुहसिया वि
जीयणसय पि जायणसयपुहसिया वि जीयणसहत्त पि तंण थले जाता जले विचरति थले विचरति ते
णत्थि इहं वाहिरएसु दीयसमुदेसु हवति जेयायने तहप्यगारा संत्त महोरगा । ते समासठ बुधिहा प०,
त०-सम्मच्छिमाय गल्लत्रक्कतिया य । तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे णपुसगा, तत्थण जेते गल्लत्रक्कतिया
तेण तिथिहा प०, त०-इत्थी पुरिसा नपुसगा, एसिण एवमाढयाण यज्झात्ता २ ण उरपरिसव्व्याण दसजा
इकुलकीनीजाणिप्पमुहसयसहत्ता हवती ति मस्काय । सेत्त उरपरिसव्व्या । से कित नुयपरिसव्व्या २ छणेग

[illegible]

जाडुकुलकोटिक्कतिनप्रश्नद्वेतरसाइव । वसदसयहोतिणवगा तहवारसचेप्रयोधव्वा ॥१॥ सेत्त खहयरपाचिदिय
तिरिस्कजोणिया ॥ सेत्त पचिदियतिरिस्कजोणिया ॥ सेत्त तिरिस्कजोणिया ॥ से कित मणुस्सा २ दुविहा प०,
त० समुच्छिममणुस्सा य गप्पवक्कतियमणुस्सा य । स कित समुच्छिममणुस्सा, कहिण न्न । समुच्छिम
मणुस्सा समुच्छति ? गोयमा । अतो मणुस्सवेत्त पणयालीसाए जोयणसयसहसेसु अह डजेसु दीवसमुहेसु
पयारससु कम्मन्नीसु तोसाए अकम्मन्नीसु षप्पन्नाए अतरदीयसु गप्पवक्कतियमणुस्साण चेत्त उच्चारसु
या पासयणेसु या खलसु वा सिंघाणसु या वत्तसु वा पिप्पेसु वा पूएसु वा सुक्कोसु वा सुक्कोपोगलपरिसाहेसु
वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपरिससजोएसु वा नगरनिष्ठमणसु वा सहेसु चेत्त असुडएसु ठाणेसु एत्थण समु
च्छिममणुस्सा समुच्छति, र्थगलस्स असिज्जागाग्मिणीए रोगाहणाए असन्ती मिच्छदिठी अन्नाणी
सद्वाहि पज्जाहीहि अपज्जाहगा अतोमुज्जाहाउया चेत्त काल करति । से कित गप्पवक्कतियमणुस्सा २

दक्ष चैव प्राहुः ॥ १ ॥ तत एव पञ्चनिमित्तक्यानिहाः । तयते पञ्चनिमित्तक्यानिहाः ॥ अथ क्रान्तियिषा मनु
याः । मनुया अप्यनक्रियिषाः प्रज्ञा । तद्यथा-समूहिसमनुयाः । अथ क्रान्तियिषाः समूहिसमनुयाः । कस्मिन्नु जद
न । समूहिसमनुया समूहानि । गीतमालमनुयाश्च पञ्चपञ्चारिणाम योजनगतसदस्तेषु सार्वदीयेषु द्वोपसमुद्रेषु पञ्चदशसु समूहमिषु स
यैत्राकर्मन्मिषु पदपञ्चादशान्नदीयेषु गजध्वरकालिकमनुयाया चैत्र सप्तरेषु वा समीपेषु या अस्स वा शिवाय केपु (नासामलेषु) वा यान्त
पु पितृषु वा पूर्वेषु वा सुष्ठेषु वा अक्षपुद्गतपरिसावेषु वा विगतकसधरेषु वा स्त्रीपुरुषसंयोगेषु वा नगरनिद्रमनषु या सर्वेषु चैवाश्विषु
स्थानेषु एतषु समूहिसमनुया समूहानि । अद्भुतस अपत्ययनागमात्रया अयगावनाया अथन्निष्यादृष्टिरचामी सर्वोदि यथासमपर्याप्तका अन्त

गा हसा कलहसा पायहसा रायहसा छाना सेनीवगा वलागा पारिप्यवा कुचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ
रा सतयच्छा गहरा पोछरीया कागा कामियुगा वजुलगा तित्तिरा बहमा लावगा कवीया कविजला पारे
यया चिह्नगा चासा कुकुना सुगा बरहिणा मदनसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमाटी । सेत छीमपस्की । से
कित समुमपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्य डह थाहिरएसु दीयसमुद्धेसु नयति । सेत समुगपस्की । से
कित विततपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्य डह थाहिरएसु दीयसमुद्धेसु हवति । सेत विततपस्की । तेस
मासठे दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गझयक्कतिया य । तत्यण जेते समुच्छिमा तेसव नपुसगा तत्यण
जेते गझयक्कतिया तेण तिविहा प०, त० हल्यो पुरिसा नपुसगा । एएसिण एयमाडयाण खहरपचिदि
यतिरिस्सजोणियाण पज्झापज्झाण वारसजाइकुलकोणिजोणियपमहसयसहम्सा हवतीतिमस्काय, चत्तठ

ईसः रात्रइसाः चडाः सेनीयगाः बहुलाः पारिप्यवाः कुन्धाः सारसाः मसूराः मसूराः दातवसाः गहराः पोचरीयाः छागाः कामियु
गा बल्लसवा तित्तिराः वतकाः लावकाः कपाताः बपिण्डलाः परिककाः चटकाः बासाः कुकुटाः श्रुकाः बरिण मदनसलाः काकितः सयहा
वरल्लगा एवमाद्य तयते सोमपादकः । अय कतिविधाः समुद्रपादकाः । समुद्रपक्षि यथाकारा प्रचसतः । तेन याधेय होपसमुद्धेसु भवन्ति । त
पते समुद्रपादकः । अय कतिविधा वियतपक्षि यथाकाराः प्रचसतः । तेन याधेय होपसमुद्धेसु भवन्ति । तयत विततपक्षि
कः । ते समासतो द्विविधा प्रचसतः समुद्रिमाद्य गर्जयुरकान्तिकाद्य । तत्र यणते समुद्रिमास्ते सर्वे नपुसकाः । तत्र यणते गमज्जरकान्तिकास्त
त्रिविधा प्रचसतः तदाया स्त्रियः पुरुषाः नपुसकाः । एतेवामबमारीनां खबरपण्णेन्द्रियतिबेधोनिदानापर्याप्तार्थोपाना द्वावशात्रानिबुल को-
टिपीमप्रमुखवसइकादि व्यवस्थाति चाख्यातम् ॥ अत्राति कुलकोटयो भवन्ति नवार्थवपादकानि चेव ॥ इत्येव न भवन्ति नवकाकाया हर

कित मिलस्कू ? २ अणुगविहा पखत्ता, तजहा सगा जवण चिलाय सयर वहर काय मुरुओइ नऊग णि
 खग पक्कल णीय कुलस्क गोणहा सीहला पारस गोघअध दमिल चिहल पुलिद हारीस दोवयोक्काण गध
 हारग वहालिय अज्जल रोम पास वउसा मलयाय यधुयाय सूर्याल कुकुणगमेअ पयहव मालय मगर
 अण्णासिय कण वीरण गहासीस खसखासिय नेदूर मठ ओविलग लउस खउस कोक्काया अरयागा ह्ण
 रोमग नमर विलाय वासीय एवमादी ॥ सेत्तमिलस्कू से कित अयायिया ? अयायिया दुविहा पखत्ता,
 तजहा इहिपत्तारिया य । से कित इहिपत्तारिया ? २ ठविहा पखत्ता, तजहा—
 अरहता चक्कावही यलदेवा यासुदेवा चारणा यिज्जाहरा ॥ सेत्त इहिपत्तारिया ॥ से कित अण्हिपत्तारि
 या ? २ नवविहा पखत्ता, तजहा खेत्तारिया जानिअारिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया नासारिया
 णाणारिया दसणारिया चरित्तारिया । से कित खेत्तारिया ? २ अठठवीसतिविहा पखत्ता, तजहा राय

बा: यवना: विताया: अघरा: ववरा: काया: अरुवहा प्रदगा तीवगा: पक्का: नीपा: कुलणा गोवहा सीहला: पारसा: गोचअन्था: धमिला: पि
 ज्जा: पुत्तिव्वा: शरीसा: दोवववाणा: गन्धारका वहालिया: छायासा: रोमा: पासा: वउसा मलवाया यग्गुवाया: सउसा: सउसा केअया: अ
 रवाणा इवा: रोमना: जमसा: विताया: वासीया: एवमादय । तयते सेव्हा । अय कतिविचा: आयेका दुविचा प्रचसा । अदिमन्त:
 अदुदिमन्त । अय कतिविचा अदिमन्त अदिमन्त: पदुविचा प्रचसा । तद्या चार्हता चकावर्त्ता यलदेवा यासुदेवा: चारणा: विद्यापरा:
 तयते अदिमन्त: । अय कतिविचा अदुदिमन्त: ? । अदुदिमन्तो नवविचा: प्रचसा: तद्या चेत्रायो: कात्यायो: कुलायो: कर्मायो: शिल्पायो जा
 पायो नामायो वुखनायो: चरिआयो: । अय कतिविचा: चेत्रायो चत्रायो साहपन्थियश्रुतिविचा: प्रचसा: तद्या-राजपुण्णगरवस्याणामएता

सेत कुलारिया ॥ से कित कम्मोरिया ? २ छुणेगविहा पणुहा, तजहा-दीस्सिया सुत्तिया कप्पासिया
 मुत्तावेया जीया जेन्नेयलिया कोलालिया नेरयाङ्गिया जेयायणे तेहप्यगारा । सेत कम्मोरियो ॥ स कित
 सिप्पारिया १ २ छुणेगविहा पणुहा, तजहा-तुणांग ततुयाया पहांगारा देयना वरुना कठपाउयारा
 मजपाउयारा लतारा यन्नारा पप्पारा पोल्यारो लप्पारा चित्तारा सखरा दतारा नन्नारा जिप्पगारा सेत्ता
 रा कोङ्गिगारा जेयावन्ते तेहप्यगारा ॥ सेत सिप्पारिया ॥ से कित नासारिया २ जेण अण्णमागहाए न्ना
 साए नासति, जत्ययिय ण वन्नालिधी पवत्तड वन्नीएण लिवीए छठारसयिहे लेकविहाणं पणत्ते, तजहा
 यन्नीअयणागिया दासापरिसा खरुही पुक्कस्सारिया नोगयडया पहराडया अतरेकरिया अरकरपुठिया
 वेणडया निरेहडया अङ्कलिधी गणियलिधी श्यायासलिधी माहेसरी दोमिली पोलिदी ॥ १८ ॥
 सेत नासारिया ॥ से कित नाणोरिया १ २ पचविहा पणुहा, तजहा-अन्निणिचोहियनाणारिया सुयना

याः ये वाप्यन्व तथाप्रकाराः । अथ कतिविधाः शिल्पायाः । तन्नागाः तत्तुवायाः पहकारा दधला वरुहाः काष्ठपादुकाकरा मल्लपादुकाकराः ।
 तत्रकारा यन्त्रकाराः प्रभाकराः पोत्याराः लथाराः खिचरो श्युकरा दलकराः बरबाराः त्रिदमकारा (कटकराः) सेलारा कोटिकराः ।
 य वाप्यन्व तथाप्रकारा । तप्ले शिल्पोयाः । अथ कतिविधाः ज्ञापयाः १ । ज्ञापया ये ऋद्धमागधीनापो ज्ञापन्ते यत्रेय प्राप्सलीलियः प्रवसते
 तस्यां प्राप्सरा लिप्पामण्डोवविष सेय्यविधिमे प्रवसते । तस्या ग्रन्थी यवमानी दासपुरुषाया रसेही पुप्परसारिका नोगवती अत्तरिक्का
 चरपरविहा वेशकीया निष्ठिका चकुत्तियि गावतन्निवि गन्धवत्तिवि चाद्वेषालियि माइसरी दोमिलीलियि पोलिन्दीलियिः तयत भाषायाः ।
 अथ कतिविधाः ज्ञानापीः १ । ज्ञानापी धन्विषीः प्रज्ञाः । तस्या अभिनियाचक्षाभायाः सुतज्ञाभायाः अथचक्षाभायाः मन पयलक्षाभाया

गिहमगहचपा शृगामहतामलित्तिर्गगा य । कंचणपुरकलिगा वाणारसिं चैत्र कासीय ॥ १ ॥ साएयकोस
 लागय पुरधकुसोरियकुसहा य । कपिल पचाला शृहिठत्ताजगलाचैय ॥ २ ॥ दारजतीयसुरठा मिहिलि
 देहायधच्छकोसधी । नदिपुरसन्निहा नदिपुसमेवमलया य ॥ ३ ॥ बहुराजच्छुरणा शृच्छातहमसिंयाव
 इवसखा । सोसियमहयाखेदी वीहजयसिधुसोवीरा ॥ ४ ॥ मज्जरायसूसेणा पावाजगोयमासपुरिचहा ।
 साधय्यीयकुलाणा कीलीधरिसचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयत्रियाधियनगरी केयइच्छुचशूरियन्नणिय । एत्युप्प
 सिजिजाण चक्कीणरामकस्सहाण ॥ ६ ॥ सेत्तखेत्तारिया ॥ से कित जाइश्यापरिया ? २ ठसिहा पयासा,
 तजहा-श्रवठायकलिडा त्रिवेहावेदगाइय । हरियाचुचुणाचेत्र कएयाइसुजाइउ ॥ ७ ॥ सेत्त जाइश्यारि
 याय ॥ से कित कुलारिया ? २ ठसिहा पयात्ता, तजहा-उग्गा जोगा राइया इस्कागा नात्ता कोरहा ।

नसितिवद्वाय । काण्यमपुरकलिगा धारासवीचैवकाशीच ॥ १ ॥ साकताकोससकाःपुरचकुलः सीरिबजुयायतः । काम्पित्यपाभ्याताः यद्विज्जाज्जा
 कुसदिन ॥ २ ॥ दारावतीबहुरायाः मिमिपताविदेहावरसकीश्याम्यो ॥ मन्त्रीपुरंगारितस्य प्रद्वितपुरमेवमप्रपाय ॥ ३ ॥ यैराटमरस्सपरया यच्छा
 तयानुत्तिकादद्याको ॥ द्योत्तिकावतीचवेदी वीतजयासिपुसीवीराः ॥ ४ ॥ मयुराचमूरसेना पायामन्त्रीबमासपुरवहो ॥ प्रोवस्त्रीचकुमाता कोटोव
 बीचसाटा ॥ ५ ॥ युताम्बिकाचनगरी कवयसार्द्धमार्येमिचितम् ॥ यस्तादृतयुत्रिनाभा बलाकारामकुलानाम् ॥ ६ ॥ ते यत्त जेनायाः ॥ यच्च कति
 विवा तास्यायोः । तास्यायो यद्विवा प्रज्जसाः यथा धाम्महाः कासन्दाः वेदहा वेदङ्गाः हरिताः पुपुकाः कठता इत्यत्रातयः । तयते तास्या
 यो । कय कतिविवाः कुलायो । कुलायो यद्विवाः प्रज्जसाः । यथा जोगा राजाभाः इस्काकाः ज्ञाताः कोरबाः । मत्त कुलायोः । कय कतिवि
 वाः कर्मायो । कर्मायो यमेकविवात प्रज्जहाः यथा-दोषिवाः बोहिवाः काप्यविवाः सुत्तिवेकविवाः अरुदेवाकियाः कोकाकिया मरनाइवि

वद्वानससृज्जायाः ससृपमानेहि जससउयल्लदा । ससृाहेणयविहीहि वित्थारुहसिनायद्यो ॥ ९ ॥ दसणनान्णस
 रिस्ते तयविणएसससमिहगुणीसु जोकिरियान्नावरुहसो खलुकिरियावरुहमा ॥ १० ॥ अणनिगगेहियकुदिठी
 सखेवरुहसिहोडनायद्यो । अणिसारसुपयरणं अणनिगगेहिउयसेसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायकम्म सुयधम्मखलु
 चरिसुधम्मच सदुहहोअणानिहियं सोधम्मरुहसिनायद्यो ॥ १२ ॥ परमत्थसयवोया सुदिठपरमत्थसेवणावा
 वि । वावन्नकुदसणयज्जाणाय सम्मत्तसदुहणा ॥ १३ ॥ निसकियनिक्कखिय णिच्चित्तिगिच्छाअमूढदिठीय उवयू
 हयिरीकरण यच्छसपजावणेअठ ॥ १४ ॥ ससृ सरागदसणारिया । से कित वीयरागदसणारिया ? २ दु
 यिह पयुत्तम , तजह उससत्तकसायवीयरामदसणारिया खीणकसायवीतस्समादसणारियाय । से कित
 उयसत्तकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविह पयुत्तम, तजह पढमसमयउयसत्तकसायवीतरागदसणारि

रुचिरितिज्ञातव्यः ॥ ५ ॥ समवत्यजिममरुचिः अतश्चान्नमवतिपस्य । अयतोवृष्टमेकादशाङ्गानि प्रकीर्णकादिदृष्टिवाद्यस्य ॥ ८ ॥ द्रव्याणां, स्वप्नाणां
 सयप्रमाद्येयस्यउपसङ्गा ॥ सर्वेद्याभयविधिपत्रिः विस्ताररुचिरसविम्रेयः ॥ ६ ॥ दशानन्नाभचरित्रे तपोविमयस्यसर्वमितिगुप्तमुद्र ॥ यःकुर्याद्भाव
 हाचः सगुप्तुक्रियाःरुचिर्मासा ॥ १० ॥ अन्नप्रियुहीतकुदृष्टिः सर्वेपक्षिप्रवतिज्ञातव्यः ॥ अन्निसारमवचने अन्नजगुहीतयज्ञोपयु ॥ ११ ॥ योस्तिक्कायब
 न अतश्चपक्षचरित्रपक्षे च अक्षुष्यातिविर्भावमपित सधर्मरुचिर्ज्ञातव्यः ॥ १२ ॥ परमाद्यसंज्ञावोवा सुवृष्टपरमाद्यसंबन्धोवापि ॥ व्यापककुदर्थनवव नाः
 चसम्पन्नवज्जनाव ॥ १३ ॥ तयते सरागदर्शनायते । अय कतिविषया वीतरागदर्शनायोः ? वीतरागदर्शनायां द्विविधा प्रवृत्ताः । तद्व्या- उपसङ्गा
 कवापवीतरागदर्शनायोः क्षीयकवापवीतरागदर्शनायोः । अय कतिविषय उपसङ्गात्तकवापवीतरागदर्शनायते ? । उपसङ्गात्तकवापवीतरागदर्श
 नायो द्विविधः प्रवृत्तः । तद्व्या- प्रथमसमयोपसङ्गात्तकवापवीतरागदर्शनायोः । अय तद्व्या- पवीतरागदर्शनायोः । अय तद्व्या-

णारिया ठहिनाणारियो मणपल्लयनोणारिया केअलनाणारिया ॥ सेत्त नाणारिया ॥ से कित दसणारिया ? २
 दुविहा पयसो, तजहा—सरागदसणारिया ये वोयरागदसणा ० । से कित सरागदसणारिया य ? २ दस
 विहा पयसो, तजहा—निस्सगुअदेसरुई स्थोणोरुईसुत्तयोयरुइचेव । स्थजिगमविथ्यारुइ किरियासत्तेय
 म्मरुई ॥ १॥ नूयत्येणाह्विगया जीवाजीयायेपुखोपावेव । संहस्समुहयासवस यरोयवेयइएसणिस्सगो २ ॥
 जोजिणदिठेनावे अउविहेसइहाइसयमेय । एमेवणयाहसिय णिसगरुइत्तिणाइयो ॥ ३ ॥ एएचेव उच्चाये,
 उवविठेजोपरेणसइहइ । लउमत्येणजिणेणव उवएसरुइत्तिणाययो ॥ ४ ॥ जोसुत्तमहिजातो सुएणउगाहइउसम्मत्त । स्थुणएरोयएपअ
 यंजंतु । एमेवणखइहसिय एसीथाखारुइनामा ॥ ५ ॥ एंगपएणेगाइ पवाइजोपसरइउसम्मत्त । उदइवत्तिन्नयिदू सोयीयरुइ
 दिरेणव सोसुत्तंरुइत्तिनाययो ॥ ६ ॥ एंगपएणेगाइ पवाइजोपसरइउसम्मत्त । उदइवत्तिन्नयिदू सोयीयरुइ
 त्तिनाययो ॥ ७ ॥ सोहोइस्थजिगमरुई सुयनाजजस्स । स्थुयतंदिठ एकारसस्थंणाइ पइखगादिठियानय ॥ ८ ॥

बससाणारयो ॥ तण्ठे ज्ञानारयो ॥ अब कतिविधा दइनायो दइनायो द्विविधा ॥ प्रश्न ॥ तट्ठा सरागदसणारयो बीतरागदसणारयो ॥ अब
 कतिविधा ॥ सरागदसणारयो ? सरागदसणारयो दइविधा ॥ प्रश्न ॥ तट्ठा निबर्गेपदेइकविधाआठेविबुधकविधोअपय ॥ अजिजमदवि वि
 बारोवि विध्याअपयमरुइका ॥ १ ॥ मूतार्थेनाविमत्ता जीवार्थेनाविमत्ता एतनिमर्गेविधेका ॥ २ ॥ योजिजइहा
 प्रार्थेना विधान् अइवातिकयमेव ॥ यववेअनुवालाइ निवेअइविदित्तंविधं ॥ ३ ॥ एतामंअवेजोवाइ उविदित्तंअपरउविदित्तं ॥ अज्जले
 मज्जेन एवेदिठमसिस्सिवादिअ ॥ ४ ॥ योपेअममन्वाअवा रोपवेसेअवचंतु ॥ अवेअमन्वाअवा अवेअमन्वाअवा ॥ ५ ॥ योपेअममन्वाअवा
 अवेअममन्वाअवेअमन्वाअवा ॥ ६ ॥ अज्जलेअमन्वाअवा ॥ ७ ॥ अज्जलेअमन्वाअवा ॥ ८ ॥ अज्जलेअमन्वाअवा ॥ ९ ॥ अज्जलेअमन्वाअवा ॥ १० ॥

दृष्टाणसंज्ञावा सप्तपमानेहि जससउयलठ्ठा । सत्ताहेणयविहीहि वित्यारुहसिनायवो ॥ ९ ॥ दसणनाणव
 रिस्ते तवविणएससमिहगुप्तीसु ओकिरियानावसुहसो खलुकिरियारुहनामा ॥ १० ॥ स्थणजिगगेहियकुदिठी
 सखेवसुहसिहोहनायवो । स्थविसारउपवयणं स्थणजिगगेहियसेसेसु ॥ ११ ॥ ओस्थलिकायकम्म सुयधम्मखलु
 वरिस्सधम्मव सवुहसिहोहनायवो ॥ १२ ॥ परमत्थसयवोधा सुदिठपरमत्थसेवणावा
 त्ति । वावन्नकुदसणवज्जणाय सम्मससहहणा ॥ १३ ॥ निसकियनिक्कस्विय णिस्सित्तिगिच्छाश्चमूढदिठीय उववू
 ह्ययिरीकरणे यच्छसपज्ञावणेअठ्ठा ॥ १४ ॥ संस्र सरागदसणारिया । से कित्थीयरागदसणारिया ? २ दु
 विह्मा पसस्मा, तज्जह उस्ससत्तकसाम्ययीपरामदसणारिया स्त्रीणकसायवोत्तरागदसणारियाय । से कित्
 उयसत्तकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविह्मा पसस्मा, तज्जह पढमसमयउवसत्तकसायवीतरागदसणारि

हाविरित्तत्तात्तव्यः ॥ ७ ॥ समवत्त्यज्जिमसहावि- भुत्तञ्चान्नमवतिपत्त्य । अयतोवृष्टमेकादशान्नानि प्रकीर्त्तवादिदृष्टिवादयः ॥ ८ ॥ द्रव्याद्या, सर्वज्ञावाः
 सवप्रमायेयस्यउपसम्भाः ॥ सर्वेद्यायनयदिअचि विस्ताररुचिरसविद्यय ॥ ९ ॥ दशान्नञ्चान्नपरिचे तपोविनयसवसमित्तुमित्तुय ॥ यःकुर्वान्नाव
 शाचः सखसुज्जियारुचिर्मासा ॥ १० ॥ अन्नजिगगीतकुदृष्टिः सर्वेष्वर्चिर्भवतिष्ठातव्यः ॥ अन्निसारप्रवचने अन्नजिगगीतद्योगेयु ॥ ११ ॥ योस्तिक्कायव
 स भुत्तवर्मेवचरिषमेव ॥ सवुपातिकित्तार्भाहित सधर्मरुचिर्चातव्य ॥ १२ ॥ परमार्यसंज्ञावोधा सुदुपरमायसेवोवापि ॥ व्यापकजुदर्थानवर्जं माः
 वसम्पन्नजानाव ॥ १३ ॥ तएते सरागदर्शनायोः । अथ कतिविधा वीतरागदर्शनायोः ? वीतरागदर्शनायोः द्विविधाः प्रपञ्चा । पञ्चा-उपपञ्चा
 कयाववीतरागदर्शनायोः चास्तिक्कायवीतरागदर्शनायोः । अथ कतिविध उपपञ्चाक्कायवीतरागदर्शनायोः ? । उपपञ्चाक्कायवीतरागदर्श
 नायो द्विविधाः प्रपञ्चः । उभयप-प्रपञ्चसमूहेवद्वान्नञ्चान्नपयोवीतरागदर्शनायोः । अथ एतदुपपञ्चावोवीतरागदर्शनायोः । अथ एतदुपपञ्चावोवीतरागदर्शनायोः ।

या अथपठमसमयउधसतकसायवीतरागदसगारिया, अथवा चरिमसमयउधसतकसायवीतरागदसगारिया
य अथचरिमसमयउधसतकसायवीतरागदसगारिया य । से कित खीणकसायवीतरागदसगारिया ? २ दु
विहा पक्षात्ता, तजहा लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया केवलस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया य ।
से किते लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया ? २ दुविहा पक्षात्ता, तजहा सययुधुलउमत्यस्त्रीणकसाय
वीतरागदसगारिया युधुयोहिंयलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया । से कित सययुधुलउमत्यस्त्रीणक
सायवीतरागदसगारिया सययुधुलउमत्यस्त्रीण० दुविहा पक्षात्ता, तजहा पठमसमयसययुधुलउमत्यस्त्रीणक
सायवीतरागदसगारियाय अथपठमसमयसययुधुलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया, अथवा चरिमसमय
सययुधुलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगा० अथचरिमसमयसययुधुलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया

योपद्यानकपायवीतरागदसगार्या अथरमजनयोपद्यान कपायवीतरागदसगार्या । अथ कतिविधा स्त्रीण कपायवीतरागदसगार्या १ । स्त्रीणकपाय
पवीतरागदसगार्या द्विविधाः प्रथमा । तद्यथा-द्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्याः केवलस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्या । अथ कतिविधा
द्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्या ? । द्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्या द्विविधाः प्रथमाः स्वयंभुद्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्याः
मुद्रुवापितद्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्या । अथ कतिविधाः स्वयंभुद्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्याः प्रथमाः ? । स्वयंभुद्वयत्नस्त्रीण
कपायवीतरागदसगार्या द्विविधाः प्रथमाः । तद्यथा-प्रथमसमयस्वयंभुद्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्या अथजनसमयस्वयंभुद्वयत्नस्त्रीणकपाय
वीतरागदसगार्या । अथवा प्रथमजनसमयस्वयंभुद्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्या अथजनसमयस्वयंभुद्वयत्नस्त्रीणकपाय
येते स्वयंभुद्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्या । अथ कतिविधा मुद्रुवापितद्वयत्नस्त्रीणकपायवीतरागदसगार्या । मुद्रुवापितद्वयत्नस्त्रीणकपाय

[illegible][illegible]

ढमसमयसञ्जोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागद्वसणारियाय । अथवा चरिमसमयसञ्जोगिकेवल्लिखीणकसायवी
 तरागद्वसणारियाय अथचरिमसमयसञ्जोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागद्वसणारियाय । सेत सञ्जोगिकेवल्लिखीण
 कसायवीतरागद्वसणारिया । से किंते अञ्जोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागद्वसणारिया ? २ दुविहा पख्खा,
 सजहा पढमसमयअञ्जोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागद्वसणारिया अथपढमसमयअञ्जोगिकेवल्लिखीणकसायवी
 तरागद्वसणारियाय, अथवा चरिमसमयअञ्जोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागद्वसणारिया अथचरिमसमयअञ्जो
 गिकेवल्लिखीणकसायवीतरागद्वसणारिया य । सेत अञ्जोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागद्वसणारिया । सेत
 केवल्लिखीणकसायवीतरागद्वसणारिया । सेत स्त्रीणकसायवीतरागद्वसणारिया । सेत धीतरागद्वसणारिया ।
 सेत द्वसणारिया । से किंत चरिस्सारिया ? २ दुविहा पख्खा, तजहा-सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्त
 रिया । से किंत सरागचरिस्सारिया ? २ दुविहा पख्खा, तजहा-सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय याय

वीतरागद्वसणारियाय द्विविधाः प्रथमाः सद्या-प्रथमसमयावधिनिवेसनीयकसायवीतरागद्वसणारियाय
 नादीह । अथवा परमसमयावधिनिवेसनीयकसायवीतरागद्वसणारियाय अथपरमसमयावधिनिवेसनीयकसायवीतरागद्वसणारियाय
 वीतरागद्वसणारियाय । सते केवल्लिखीणकसायवीतरागद्वसणारिया । सते वीतरागद्वसणारिया । सते वीतरागद्वसणारिया । सते
 वीतरागद्वसणारिया । चरिस्सारियाय द्विविधाः प्रथमाः सद्या-सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय । सते वीतरागद्वसणारियाय
 सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय । सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय । सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय । सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय
 सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय । सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय । सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय । सुद्धमसपरामसरगधरिस्सारियाय

रसपरायसरागचरित्तारिया । से कित सुज्जमसपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुग्धिहा पणत्ता, तज्जहा-
 पठमसमयसुज्जमसपरायसरागचरित्तारिया अण्पठमसमयसुज्जमसपरायसरागचरित्तारिया य, अण्वा चरिम
 समयसुहुमसपरायसरागचरित्तारिया अण्चरिमसमयसुज्जमसपरायसरागचरित्तारियाय । अण्वा सुज्जमसपरा
 यसरागचरित्तारिया दुग्धिहा पणत्ता, तज्जहा सकलिससमागाय त्रिसुज्जमागाय सेत्त सुज्जमसपरायसरा
 गचरित्तारिया । से कित वायरसपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुग्धिहा पणत्ता, तज्जहा पठमसमयत्रायर
 सपरायसरागचरित्तारिया अण्पठमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया य अण्वा चरिमसमयवायरसपरा
 यसरागचरित्तारिया अण्चरिमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया सेत्त वायरसपरायचरित्तारिया सेत्त सरागचरि
 ताारिया । स कित वीतरागचरित्तारिया ? २ दुग्धिहा पणत्ता, तज्जहा उवसतकसायवीतरागचरित्तारिग
 स्त्री गकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित उवसतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुग्धिहा प०, तज्जहा

मूलमपरायसरागचरित्तारिया । अय कतिविधा वादरसपरायसरागचरित्तारिया द्विविधाः प्रसन्नाः । तद्यथा प्रथमसमय
 वादरसपरायसरागचरित्तारियाः अथवा प्रथमसमयवादरसपरायसरागचरित्तारियाः । अथवा प्रथमसमयवादरसपरायसरागचरित्तारियाः
 सपरायसरागचरित्तारिया । अथवा वादरसपरायसरागचरित्तारिया द्विविधाः प्रसन्नाः । तद्यथा-प्रतिज्ञातिका । तद्यथा-वादरसपरा
 यसरागचरित्तारियाः तद्यथा-वादरसपरायसरागचरित्तारिया । वादरसपरायसरागचरित्तारिया द्विविधा प्रसन्ना । तद्यथा-उपज्ञानक
 पापवीतरागचरित्तारियाः सीबकपापवीतरागचरित्तारिया । अय कतिविधा उपज्ञानकपापवीतरागचरित्तारियाः ? । उपज्ञानकपापवीतरागचरित्तारिया

पठमसमयउद्यसतकसायवीतरागचरित्तारिया अण्ठमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य अण्ठया चरिम
समयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया अण्ठमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्त उवसतक
सायवीतरागचरित्तारिया । से कित स्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुयिहा पण्त्ता, तज्जहा उउमत्य
स्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवल्लिस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित उउमत्यस्त्रीणकसायवी
तरागचरित्तारिया ? २ दुयिहा पण्त्ता, तज्जहा सययुद्धउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया युरुओ
हियउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित सययुद्धउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया २
दुयिहा प०, तज्जहा पठमसमयसययुद्धस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया अण्ठमसमयसययुद्धउउमत्यस्त्री
णकसायवीतरागचरित्तारिया य, अण्ठया चरिमसमयसययुद्धउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया अण्ठम
समयसययुद्धउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । सेत्त सययुद्धउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया

द्विविधा प्रश्नाः । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकथायवीतरागचरित्तार्योः प्रथमसमयोपशान्तकथायवीतरागचरित्तार्योः । अथवा प्रथमसमयोप
शान्तकथायवीतरागचरित्तार्योः अथप्रथमसमयोपशान्तकथायवीतरागचरित्तार्योः । तद्यत्त उपशान्तकथायवीतरागचरित्तार्याः । अथ कतिविधाः स्त्री
कथायवीतरागचरित्तार्योः । स्त्रीकथायवीतरागचरित्तार्यो द्विविधा । तद्यथा-व्यत्यस्त्रीकथायवीतरागचरित्तार्योः केवल्लिस्त्रीकथायवीतरा
गचरित्तार्योः । अथ कतिविधाः व्यत्यस्त्रीकथायवीतरागचरित्तार्योः व्यत्यस्त्रीकथायवीतरागचरित्तार्यो द्विविधाः प्रश्नाः । तद्यथा सययुद्धउउ
मत्यस्त्रीकथायवीतरागचरित्तार्योः सययुद्धउउमत्यस्त्रीकथायवीतरागचरित्तार्योः । अथ कतिविधाः सययुद्धउउमत्यस्त्रीकथायवीतरागचरित्तार्योः
द्विविधाः प्रश्नाः । तद्यथा प्रथमसमयसययुद्धस्त्रीकथायवीतरागचरित्तार्योः प्रथमसमयसययुद्धस्त्रीकथायवीतरागचरित्तार्योः । अथवा प्रथमसमय

रिया । से कित धृष्टयो द्वियत्त उमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणुत्ता, तजहा पठम समयधृष्टयो द्वियत्त उमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया शुपठमसमयधृष्टयो द्वियत्त उमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया शुचरिमसमयधृष्टयो द्वियत्त उमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, शुहया चरिमसमयधृष्टयो द्वियत्त उमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ गवचरित्तारिया य, शुहया चरिमसमयधृष्टयो द्वियत्त उमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से कित केवलस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत उमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया शुजोगिकेवलस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया पणुत्ता तजहा सजोगिकेवलस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणुत्ता, तजहा दुविहा पणुत्ता तजहा सजोगिकेवलस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । से कित सजोगिकेवलस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया । सपणे समयधृष्टयो द्वियत्त उमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया ।

[illegible]

पठमसमयसजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया शुपठमसमयसजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतराग
चरित्तारिया य, शुह्वा चरिमसमयसजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य शुचरिमसमयसजो
गिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य। सेत सजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया। से कित
शुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया ? २ दुव्रिहा पयज्ञा, तजहा—पठमसमयशुजोगिकेवल्लि
खीगकसायधीतरागचरित्तारिया य शुपठमसमयशुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य, शुह्वा
चरिमसमयशुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य शुचरिमसमयशुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीत
रागचरित्तारिया य सेत शुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया। सेत केवल्लिखीगकसायधीतराग
चरित्तारिया। सेत स्त्रीगकसायधीतरागचरित्तारिया सेत वीतरागचरित्तारिया। शुह्वा चरित्तारिया पचयि
हा पयज्ञा, तजहा—सामाहयचरित्तारिया लेनुव्रथायणीयचरित्तारिया परिहारश्रिसुद्विचरित्तारिया सुह्म
सपरायचरित्तारिया शुह्वायचरित्तारिया य। से कित सामाहयचरित्तारिया २ दुव्रिहा पयज्ञा, तजहा

[illegible]

आयरिया सेत कम्मजूमिगा सेत गप्पयक्कतिया सेत मणस्सा से कित देवा २ चउच्चिहा ५०, तजहा न्न
 णव्वासी आणमतरा जोहसिया वेमाणिया से कितं जयणवासी २ जयणवासी दसयिहा पयसहा, तजहा अउ
 रकुमारा नागकुमारा सुवणकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीयकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ
 कुमारा यणियकुमारा तेसमासठ्ठयिहा पयसहा, तजहा—पज्जत्तगाय अउपज्जत्तगाय सेत न्नवणवासी से
 कित वाणमतरा २ अउच्चिहा ५०, तजहा किन्नरा किपरिसा महोरगा गधह्वा जस्का रस्कासा नूया पिसा
 या ते समासठ्ठयिहा पयसहा, तजहा पज्जत्तगाय अउपज्जत्तगाय सेत वाणमतरा। से कित जोहसिया २
 पययिहा पयसहा, तजहा वदासूरागहनरक्त्तातारा तेसमासठ्ठयिहा पयसहा, तजहा पज्जत्तगाय अउ
 ज्जत्तगाय। से कित जोहसिया से कित वेमाणिया २ दुयिहा पयसहा, तजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय से कित

तएते वमजूमणा। तएत एउउत्तान्निहा। तएते मनुष्याः ५ एय कतिविधा देवाः १ देवायुतुविधाः प्रज्जताः तएया-प्रज्जतासुविनः वानव्यन्त
 रम स्यातावका वेमन्निहा। एय कतिविधा प्रज्जतासुविनः १ प्रज्जतासुविनो दयविधाः प्रज्जता तएया-असुरकुमारा भागकुमारा सुवणकुमारा
 विद्युत्कुमारा चम्पिकुमारा हीपकुमाराः उदधिकुमाराः विज्जुकुमारा वायुकुमाराः क्षान्तिकुमारा। त समासतो द्विविधा प्रज्जताः पर्याप्तगा
 द्यापर्याप्तगाय। तएत प्रज्जतासुविनः। एय कतिवका वानव्यन्तरा १ वानव्यन्तरा अउविधा प्रज्जताः। तएया—किन्नराः किपुडवाः महोरगाः
 नय्यही वका रकाः जूलाः पिक्कावाः तएते समासतो द्विविधाः प्रज्जताः तएया पर्याप्तगाय अउविधाः कप्पोवग्गाकप्पाईयाय से कित
 वा स्मृतिविधाः स्मृतिविधा पय्यविधाः प्रज्जताः तएया वमजूपयपहनवत्ताराः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्जताः तएया-पर्याप्तगायपर्याप्त
 गा। तएते स्मृतिविधाः। एय कतिविधा वेमन्निहा १ वेमन्निहा द्विविधाः प्रज्जताः तएया कप्पोवग्गाकप्पाईयाय से कित

कप्पोवगा२ आरसविहा पयस्ता, तजहा सोहम्मा ईसाणा सणकुमारा माहिदा वज्रलोया छंतया महासुक्का
 सहस्सारा स्याणया पाणया स्याणया सञ्जुया तसमासत्तं दुयिहा पयस्ता, तजहा पज्जत्तगाय स्यपज्जत्तगाय
 सेत्त कप्पोवगा से कित कप्पाईया २ दुयिहा पयस्ता, तजहा गोयिज्जगाय स्युणत्तरोववाडयाय त कित
 गोयिज्जगा २ नयविहा पयस्ता, तजहा हिठिमहिठिमगोयिज्जगा हिठिमहिठिमगोयिज्जगा हिठिमउयरिम
 गोयिज्जगा मज्जिमहिठिमगोयिज्जगा मज्जिम२ गोयिज्जगा मज्जिमउयरिमगोयिज्जगा उवरिमहिठिमगोयिज्ज
 गा उयरिममज्जिमगोयिज्जगा उयरिम२ गोयिज्जगा तेसमासत्तं दुयिहा पयस्ता, तजहा पज्जत्तगाय स्यपज्ज
 त्तगाय सेत्त गोयिज्जगा । से कित स्युणत्तरोववाडया२ पचयिहा पयस्ता, तजहा विजया वजयता जयता
 स्यपराजिया सव्वठसिद्धा तेसमासत्तं दुयिहा पयस्ता, तजहा पज्जत्तगाय स्यपज्जत्तगाय सेत्त स्युणत्तरोववा

स्पोपगाः ? कल्पोपगा द्वादशविधा प्रचक्षताः । तद्यथा सौपमी ईशानाः समस्तकुमारा माहेन्द्रा ब्रह्मलोका सातकाः मन्नासुकाः सङ्क्राराः आ
 नताः प्राचक्षताः स्यान्ताः । ते समासतो द्विविधाः प्रचक्षताः तद्यथा पर्वोत्तगाद्यापर्वोत्तगाद्या । तद्यत कल्पोपगाः । अथ कतिविधाः कल्पा
 नीता ? कल्पातीताः द्विविधाः प्रचक्षताः तद्यथा--यैवयकाः अनुत्तरवैमानिकाः यः । अथ कतिविधा येवयकाः येवयका नवविधाः प्रचक्षताः तद्यथा-
 यथाचायैवयकाः, अथोन्मथ्यमयैवयकाः, अथउपरितनयैवयकाः, मध्यमाया यैवयका, मध्यममध्यमयैवयकाः मध्यमोपरितनयैवयका, उप
 रितनाचोयैवयका उपरितनमध्यमयैवयका उपरितनोपरितनयैवयकाः ते समासता द्विविधाः प्रचक्षताः पर्वोत्तगाद्यापर्वोत्तगाद्या । तद्यत येवयकाः ।
 अप्य कतिविधा अनुत्तरवैमानिकाः ? अनुत्तरवैमानिकाः पञ्चविधाः प्रचक्षताः । तद्यथा-विजयाः वैद्ययन्ताः जयन्ताः अपराजिताः सवाद्यासिद्धाः ।
 ते समासतो द्विविधाः प्रचक्षताः तद्यथा--पर्वोत्तगाद्यापर्वोत्तगाद्या । तद्यते अनुत्तरवैमानिकाः । तद्यते वैमानिकाः । तद्यते दवाः ।

लीयस्स अस्सखेज्जइजागे । कहिण जते । बादरपुढाविकाइयाण अण्णत्तगाण ठाणा पक्खत्ता ? गोयमा !
 जत्थेय बादरपुढाविकाइयाण पण्णत्तगाण ठाणा पक्खत्ता, तत्थेय बादरपुढाविकाइयाण अण्णत्तगाण ठाणा
 पक्खत्ता, उववाएण सव्वलीए समुग्घाएण सव्वलीए सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जइजागे । कहिण जते ! सुज्जम
 पुढाविकाइयाण पण्णत्तगाण अण्णत्तगाणयठाणा पक्खत्ता ? गोयमा ! सुज्जमपुढाविकाइया जेपण्णत्तगा जे
 अण्णत्तगा ते सव्वे एगविहा अण्णत्तगा सव्वलीयपरियायन्नगा पक्खत्ता समणाउत्तो । कहिण
 जते । बादरअण्णत्तगाण पण्णत्तगाण ठाणा पक्खत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सप्पसु धर्णावधीसु सप्पसु ध
 णोदधिवलएसु अहोलीए पायालेसु नवणेसु नवणपत्थेसु उहल्लोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावल्लियासु
 विमाणपत्थेसु तिरियलीए अगळेसु तलाएसु सरंसु नदीसु दहंसु वायीसु पुक्करिणीसु दीहिंयासु गुजालि
 यासु सरंसु सरपतियासु सरसरपतियासु त्रिलपतियासु उज्जरेसु णिज्जरेसु चिन्नलेसु पत्तलेसु वण्णिसु दी
 वेसु समुद्दसु सव्वेसु चव जलसएसु जलठाणेसु जलन्तूमिअसु एत्थण बादरअण्णत्तगाण पण्णत्तगाण

संख्ययत्नागे । कास्मन् महन्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाणा पर्याप्तानामपर्याप्तकाना स्यान्नाति प्रशस्तानि गीतम् सूक्ष्मपृथिवीकायिकायं पर्याप्तगा य
अपर्याप्तगान्ते सर्वे एकविंशः अविशेषा समाश्नाता सर्वलोकपर्यायकगाः प्रशस्ताः भस्मायुषान् कास्मिन् जदन्त यादरापृथ्यायिकाना पर्याप्तका
ना स्यान्नाति प्रशस्तानि । गीतम् सूक्ष्मनेव सप्तसु धनोद्विष्यु सप्तसु धनोद्विष्यलयेषु अचिलोके पातासपु प्रवर्तन्ते भवनप्रक्षरेषु ऊर्ध्वलोके क्षरेषु
यु विमानेषु विभाषावलिङ्गासु विमानप्रक्षरेषु तिर्यङ्मूलोके अचटपु तद्वागपु सररसु नष्टीषु इदेषु वापीय पुष्करवोषु दीपिकासु गुह्यामिकासु स
ररसु सरासरपंक्तिषु विनयक्तिषु त्रिभ्रंरपु विषवरेषु पश्यलपु वाम्रेषु क्षीपपु समुद्रपु सर्वेषु चैव असाद्यपु अलस्यानेषु एतेषु वादरापृथ्यायिकाना

इया सेत कप्याईया सेत वेमाणिया सेत देवा सेत पचिदिया सेत ससारसमावयुजीवपन्तवणा सेत जीव
 पक्षवणा सेत पन्तवणा ॥ पन्तवणाए पढम पय समस्त ॥ १ ॥ कहिण जते ! यादरपुढिय
 काडयाण पज्जत्तगाण ठाणा पक्खप्ता ? गोयमा ! सठाणण झुठसु पुढवीसु तजहा—रयणप्यन्नाए सक्करप्प
 न्नाए दालुयप्यन्नाए पक्कप्पन्नाए धूमप्यन्नाए तमप्यन्नाए तमतमप्यन्नाए झुहेसत्तमाए झुहेसत्तमाए झुहोलीए
 पायालेसु नवणंसु नवणपत्थेसु निरएसु निरयाथलियासु निरयपत्थेसु उहुलीए कप्पेसु विमाणेसु त्रि
 माणाथलियासु विमाणपत्थेसु तिरियलीए टकेसु कूरेसु सेलेसु सिहरीसु पज्जारसु यिजएसु वस्करेसु
 वासेसु वासहरपत्थएसु या वेलासु वेडयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्धेसु एत्थण यादरपुढीकाडयाण
 पज्जत्तगाण ठाणा पक्खप्ता, उववाएण लोयस्स झुसखेज्जाणेण लोयस्स झुसखेज्जा० सठाणेण

१)

सपते पम्भन्धियाः । सपते संसारवसापकबीवमज्जापमाः । सपते जीवमज्जापमाः । सपते मज्जापमाः ॥ इति श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्र नाथि शिष्य
 भागवतम् विरचिते श्रीवमज्जापमा स्वयमयमपदानुवादः ॥ ६ ॥

कल्लिण् मयत्त । वादरपचिबीकायिकानां ययीसानां क्वाभाणि मज्जासन्नि । गीतम् । कल्पादेनाहासु पांचवीसु सपथा--रवमभायां झक्करमवा
 पां कासवमभायां पङ्कमभायां पूममभायां तममभायां तमकानः मज्जायान्दुसुतमायामीधरमज्जायान्दुसुतमायामीधरमभायां झक्करमवा
 मरवेय मरकावांसिकासु मिरयमल्लरेसु ऊप्लोच कवपसु विमानेसु विमानावलिङ्गासु विमानमल्लरेसु तिरेवलोके टङ्गेन कट्टेसु मज्जारसु
 विज्जेय मज्जारसु मज्जसु वासहरपत्थसु या मज्जासु वेदिकासु दारसु तोरणेसु दीपेसु वज्जेसु यमसु वादरपचिबीकायिकानां ययीसानां क्वाभा
 नि ययीसानि । सर्वेव वादरपचिबीकायिकानावययीसानां क्वाभाणि ययीसानि । कल्पादेनापि क्वलोके वज्जेसुतेन क्वलोके वज्जेसुतेन क्वलोके

लीयस्स अस्सखेज्झन्नागे । कहिण न्ते । आदरपढविकाइयाण अणपज्जत्तगाण ठाणा पयत्ता ? गोयमा !
 जल्येअ आदरपढविकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पयत्ता, तल्येअ आदरपढविकाइयाण अणपज्जत्तगाण ठाणा
 पयत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्झन्नागे । कहिण न्ते । सुज्झम
 पुढविकाइयाण पज्जत्तगाण अणपज्जत्तगाणयठाणा पयत्ता ? गोयमा ! सुज्झमपुढविकाइया जेपज्जत्तगा जे
 अणपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणानत्ता सव्वलोयपरियावन्तगा पयत्ता समणाउसी । कहिण
 न्ते । आदरअणउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पयत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घ
 णोदधिवल्लसु अहोलीए पायालेसु नयणेसु नयणपत्यन्तेसु उह्लोयकप्पेसु विमाणेसु विमानावल्लियासु
 विमाणपत्यन्तेसु तिरियलीए अगन्तेसु तलाएसु सरंसु नदीसु ठहेसु वायीसु पुस्करिणीसु दीह्वियासु गुजालि
 यासु सरंसु सरपतियासु सरसरपतियासु धिलपतियासु उज्जरेसु णिज्जरेसु चिसलेसु पल्लेसु वीप्पणंसु दी
 वेसु समुद्धसु सव्वेसु चैव जलासएसु जलठाणेसु जलनूमिअसु एत्यण आदरअणउकाइयाण पज्जत्तगाण

सव्वपत्तागे । आस्सम् भदन्त सूस्सपुचियीकायिकाना पयोत्तानामपयोत्तकाना स्थानानि प्रसप्तानि । गीतम सूस्सपुचियीकायिकाय पयोत्तगा य
 अणयोत्तगास्ते सर्वे एकाविहाः अविशोया अनाद्याताः सर्वलोकपयोत्तगाः प्रसप्ताः समन्थापुप्फन्तु आस्सिन् भदन्त आदरापढविकाना पयोत्तका
 ना स्थानानि प्रसप्तानि । गीतम सव्वानेन सत्तसु पनोदधिअसयेसु सत्तसु पनोदधिअसयेसु पातासपु नयनेसु भवनप्रक्षरेसु अर्च्यलोके कस्ये
 पु विमानेसु विमानावल्लियासु विमानप्रक्षरेसु तिर्यक्ल्लोके अवटपु तट्ठागपु सरंसु मदीपु प्रदेशेसु वापीपु पुष्करणीपु दीपिकासु गुह्मालिकासु स
 रंसु सरसरपत्तिषु विसपत्तिषु निष्करपु विषवरेसु पशवलपु वमेसु दीपपु समुद्रपु सर्वेषु चैव असाध्यपु असाधनेषु मतेषु वादरापढविकाना

ठाणा पयसा, उवघाएण लीयस्स अस्सखेज्झनाने । कहिण जते ! यादरथाउकाइयाणं अयपज्जसगाण ठा
 णा पयसा ? गोयमा ! जत्येव यादरथाउकाइयाण पज्जसगाण ठाणा तत्येव वादरथाउकाइयाण अय
 ज्झसगाण ठाणा पयसा, उवघाएण सव्वलोए समग्घाएण सव्वलोए सठाणण लीयस्स अस्सखिज्झनाने ।
 कहिण सुज्झमथाउकाइयाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पयसा ? गोयमा ! सुज्झमथाउकाइया जेय पज्जसगा
 जे अयपज्जसगा ते सव्वे एगविवहा अविसेसा अनाणसा सव्वलोए परियावन्तगा प०, समणाउसो ! कहिण
 जते ! यादरतेउकाइयाण पज्जसगाण ठाणा पयसा ? गोयमा ! सठाणेण अतोमगुस्सखेते अट्ठाइज्जेसु
 दीवसमुद्देसु निव्वाघाए पन्नरससु कम्मजमीसु वाघाय पनुच्च पचसु महाविदेहेसु एत्यण यादरतेउकाइयाण
 पज्जसगाण ठाणा पयसा, उवघाएण लीयस्स अस्सखेज्झनाने समग्घाएण लीयस्स अस्सखेज्झनाने,
 सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्झनाने । कहिण जते ! यादरतेउकाइयाण अयपज्जसगाण ठाणा पयसा ? गो
 यमा ! जत्येव यादरतउकाइयाण पज्जसगाण ठाणा तत्येव वादरतेउकाइयाण अयपज्जसगाण ठाणा प०,

पर्याप्तकामा स्थानानि प्रशंसानि । उपपातन लोकास्व सवस्वोपपत्तये । अस्मिन् भवन्त वादरापूजायिकामाभयपर्याप्तमा स्थानानि प्रशंसानि । उप
 पातन सवस्वोके समुदागत सवस्वाह सत्त्वानेन सावस्वाहस्वोपपत्तये । अस्मिन् ५० सुस्वाप्यायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां स्थानानि प्रशंसानि पर्याप्त
 मूलाप्यायिका ये च पर्याप्ताना ये उपपातनगाल सव्वे पयसिवा यजिस्वेवा यजिस्वाताः सवस्वोके पयापकाना प्रशंसः अमवावृत्तम् कालिन् प्रदत्त ।
 वादरतज्जायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रशंसानि । नीतम । अस्मानेन अमममुपपत्तये यदनुनीयपु होवसमुद्देसु निज्जीवाते पयसदत्तसु कस
 म्निमु व्यापात प्रतीय पयसु महाविदेहेसु एतेषु वादरतज्जायिकानां पयासकाना स्थानानि प्रशंसानि । उपपातेन लोकास्व सवस्वोपपत्तये

उवयाएण लीयस्स दीसु उहुकवाळेसु तिरियलीयतहेसमुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जइ
 नागे। कहिण भत्ते ! सुज्जमततेउकाइयाण पज्जप्तगाण अण्णसगाणय ठाणा पणत्ता ? गोयमा । सुज्जमततेउ
 काइयाण जे पज्जप्तगा अण्णसगा ते सव्वे एगयिहा अण्णससा अण्णससा सव्वलोयपरियावन्नगा पणत्ता
 समणाउसो ! कहिण भत्ते । यादखाउकाइयाण पज्जप्तगाण ठाणा पणत्ता ? गोयमा । सठाणेण सत्तसु
 घणवाएसु सत्तसु घणवाययलएसु सत्तसु तणवाएसु सत्तसु तणवायवलएसु अण्णोलीए पायालेसु जयणेसु
 भवनपत्यहेसु जयणविहेसु जयणनिरुहेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्यहेसु निरयविहेसु निरयनि
 रकुहेसु उहुलीयकपेसु विमाणसु विमाणायलियासु विमाणपत्यहेसु विमाणविहेसु विमाणनिरुहेसु तिरि
 यलीएसु पाइणदाहिणउदीणसव्वेसु चेय लोगागासविहेसु लीगनिरुहेसुय एत्थण यादखाउकाइयाण प
 ज्जप्तगाण ठाणा पणत्ता , उवयाएण लीयस्स अस्सखेज्जोसु नागेसु समुग्घाएण लीयस्स अस्सखेज्जनागेसु

समुद्धानेन लोकास्वास्थ्यमाग स्वस्थानेन लोकस्वास्थ्यमाग । कस्मिन् मदल । यादरतेआयिकामपयोसकामा स्थानानि प्रपशानि । गो
 तम । यत्र यादरतत्रआयिकानां पर्याप्तकामा स्थानानि प्रपशानि तत्र यादरतेत्र आयिकामपयोसकामां स्थानानि प्रपशानि । उपपातेन
 सबलोके समुद्धानेन स्वास्थ्येन लोकस्वास्थ्यमागे । कस्मिन् मदल । सूत्राणां आयिकामा पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रपशानि ?
 गो० । सूत्राणां आयिका य व पर्याप्ता ये वापर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविद्या अनाद्यानाः सर्वलोके पर्याप्ताः प्रपशानः अमयायुषन् कस्मिन्
 भवन् । यादरतेत्रआयिकानां पर्याप्तकामां स्थानानि प्रपशानि, गोतम । स्वस्थानेन अलममुप्यहेये अहृतनीयपु द्वीपसमद्रेषु निव्यापते प
 न्दशसु कमजूमिषु व्यापात महीत्य पञ्चसु महाविदशेषु यादरतेत्रआयिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रपशानि । उपपातेन लोकस्वास्थ्यमाग

સઠાણેણ હોયસ્સ ઇસસેજ્જેસુ નાગેસુ । કહિણ નતે । અપજ્જાસવાદરયાકાહયાણ ઠાણા પમસા ? ગોય
 મા । જત્યેવ યાદરવાકાહયાણ પજ્જાસગાણ તત્યેવ યાદરયાકાહયાણ અપજ્જાસગાણ ઠાણા પમસા ।
 હવથાણ સહ્લોણ સમુઘાણ સહ્લોણ । સઠાણેણ હોયસ્સ ઇસસેજ્જેસુ નાગેસુ । કહિણ નતે । સુક્કમ
 વાકાહયાણ પજ્જાપજ્જાસા ઠાણા પમસા ? ગોયમા । સુક્કમવાકાહયાણ જે પજ્જાપજ્જાસાણ તે
 સહે એગિવિહા અવિસેસા અનાણસા સહ્લોયપરિયાવન્તગા પમસા સમનાઉસો ! કહિણ નતે યાદરયા
 સ્સહ્કાહયાણ પજ્જાસગાણ ઠાણા પ૦ ? ગોયમા ! સઠાણેણ સપ્પસ ઘગોદહોસુ સપ્પસ ઘગોદહિત્તલણસુ અહો
 હોણ પાયાલેસુ નવખેસુ નવખપત્યકેસુ ઉહ્લોણ કપ્પેસુ વિમાણેસુ વિમાણાવહિયાસુ વિમાણપત્યકેસુ તિરિય
 હોણ અગગ્ગસુ તલાગેસુ નદીસુ વાવીસુ પુસ્કરિણીસુ દીહિયાસુ ગજાલિયાસુ સરેસુ સરસરપતિયાસુ સરપ
 તિયાસુ યિલપતિયાસુ ઉજ્જરેસુ ચિલ્લેસુ પલ્લેસુ વપ્પિણંસુ દીઘેસુ સમ્મેસુ સહેસુચેત્ર જલાસ
 ણસુ જલઠાણેસુ ણત્યણ યાદરવણસ્સહ્કાહયાણ પજ્જાસગાણ ઠાણા પમસા । ઉયથાણ સહ્લોણ, સમુઘા

ને શમુદ્ધતેન લોકસ્યાસ્યયેયમાને સ્વાભાવેન લોકસ્યાસ્યયેયમાને । અસ્મિન્ પ્રદત્ત । યાદરતેત્ર કાવિકાનામપપાત્તાનાં સ્વાભાવિ પ્રજ્ઞાતાનિ ?
 નોતત્ત । યથેવ યાદરતેત્ર કાવિકાના પર્વોપ્તાનાં સ્વાભાવિ તથેવ યાદરતેત્ર કાવિકાનામપર્વોપ્તાનાં સ્વાભાવિ પ્રજ્ઞાતાનિ । અપપાતેન લોકસ્ય
 દ્યોત્તર્યકપાઠયોઃ તિર્થજ્ઞોક્તદેકશમુદ્ધતેન સર્વોક્તો સ્વાભાવ લોકસ્યાસ્યયેયમાને । અસ્મિન્ પ્રદત્ત । મુક્તત્ત કાવિકાના પર્વોપ્તાનામ
 પર્વોપ્તાનામ ચ સ્વાભાવિ પ્રજ્ઞાતાનિ । નોતત્ત મુક્તત્ત કાવિકાનાં ને પર્વોપ્તાનામ અપર્વોપ્તાનામ સર્વે પર્વોપ્તાનામ અપર્વોપ્તાનામ
 પર્વોપ્તાનામ પ્રજ્ઞાતાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ । યાદરવાપુર્વાકિકાના પર્વોપ્તાનામ પ્રજ્ઞાતાનિ ? ની૦ અસ્મિન્ પ્રજ્ઞાતાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ

एण सव्वलीए सठाणेण लीगस्स अस्सखेज्झइजागे । कहिण जते । दादरवणस्सइकाइयाण अण्डासगण
 ठाणा पसुसा ? गोयमा । जल्येअ दादरवणस्सइकाइयाण पज्जासगण ठाणा तल्येअ दादरवणस्सइकाइ
 याण अण्डासगण ठाणा पसुसा । उअत्रएण सव्वलीए समुग्घएण सव्वलीए सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जा

वातवत्तयेयु सत्तसु पमवातेयु सत्तसु पमवातवत्तयेयु अपीलोअ पातासेयु जवमप्रस्तट्टु मवमन्निफुटेयु निरयपु निरयावत्तिबासु
 निरयप्रस्तट्टु भिरयन्निफुटेयु निरयन्निफुटेयु कथ्यलोअकथयेयु विमानपु विमानावत्तिबासु विमानप्रस्तट्टु विमाननिफुटेयु तियक्खलो
 केयु प्राचीनदक्षिणोदीचीनेयु सर्वेयु चैअ लोअकाशावत्तयेयु लोअनिफुटेयु अ एतादृश्यादरवायुआयिबानो पर्याप्तकामा स्थानानि प्रपत्तानि । अप
 यात्तन लोअस्वाअयेयु ज्ञागयु समुद्घातन लाकस्याअयेयुज्जागयु स्वस्थानेन लोअस्याअयेयु मागीयु । आस्सलु मवत्त । अपयोअवादर
 वायुआयिबाना स्थानानि प्रपत्तानि । । नीतम । पत्रेअ दादरवायुआयिबाना पर्याप्तगानां तत्रेअ दादरवायुआयिबानामपर्याप्तगाना स्थानानि
 प्रपत्तानि । अपयातेन सबलोअ समुद्घातेन अवलोके । स्वस्थानेन लोअस्या अयेयु ज्ञागयु । कस्सिअ जवत्त । सूत्तवायुआयिबाना पर्याप्तपयो
 ज्ञाना स्थानानि प्रपत्तानि । । नीतम सूत्तवायुआयिबाना पर्याप्तपयोसा येगते सर्वे एकविधा अविज्ञेया अनाच्छाताः सबलोअपर्याप्तका प्रप
 ताः प्रमकायुज्जम् । कस्सिन जवत्त आदरवमरपत्तिआयिबानो पर्याप्तगानां स्थानानि प्रपत्तानि । नीतम स्वस्थानेन सप्तसु पमोदीपियु सप्तसुपमो
 दक्षिणयेयु अपीलोअ पातासपु जवमपु जवमप्रस्तट्टु कथ्यलोअ अयेयु विमानपु विमानावत्तिबासु विमानप्रस्तट्टु तियक्खलोअ अठटेअ तज्जागेयु
 मदीयु इदेयु बापीयु पुअरसीयु दीपिआसु गुण्णालिकासु सरररुसर पङ्कत्तिकेयु सर पङ्कत्तिकेयु विलपङ्कत्तिकपु वत्तमरेयु निर्भरेयु चिखवत्तेयु परव
 तेयु अयिअयु द्वीपेयु समुद्रयु सर्वेयु चैअ जलाअयेयु जलस्थानेयु यत्तपु दादरवमरपत्तिआयिबानो पर्याप्तकाना स्थानानि प्रपत्तानि । अपयातेन स
 वलोअ । समुद्घातन सर्वलोके स्वस्थानेन लोअस्याअयेयुज्जाग । कस्सिअ जवत्त । आदरवमरपत्तिआयिबानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रपत्तानि ।

क्षन्तागे । कहिण नते । सुज्झमयणस्सड्ढकाठयाण पज्जत्तगाण अण्णत्तगाणय ठाणा प० १ गो० । सुज्झमयण
 स्सड्ढकाठया जे पज्जसगा जे अण्णत्तगा ते सव्व एगविहा अविमसा अण्णत्तगा सव्वलोयपरियायसगा
 पण्णत्ता, समाणाउसी । कहिण नत ! वेड्ढदियाण पज्जत्ता पज्जसगाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उहुळोए
 तदेकडेसज्जाग, अण्णोळोए तदेकदेसज्जागे, तिरियोए अण्णत्तगा तलाएसु नदीसु वावीसु पुस्करणीसु दीहियासु
 गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिसलसु पव्वलेसु वण्णिणेसु दीयेसु स
 मुद्दसु सव्वेसुवेय जलासएसु जलठाणिसु एत्थण वेड्ढदियाण पज्जत्तापज्जसगाण ठाणा पण्णत्ता । उववाएण
 लागस्स अण्णत्तगाउसीगे, समुग्घाएण लीयस्स अण्णत्तगाउसीगे सठाणेण लीयस्स अण्णत्तगाउसीगे । कहिण
 नत । तदेदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उहुळोए तदेकदेसज्जाए अण्णोळोए तदेक

गोतम । अ वरवमवपत्तिक्कापिक्काना पर्याप्तकाणां स्वानानि तत्रैव वाहरवमवपत्तिक्कापिक्कानामपर्याप्ता स्वानानि प्रकृतानि । उपपातेन सवलोके व
 नुद्धान्तन सवलोके सत्त्वानेन लोकस्यावश्येयभावे । कस्मिन्नु भवन्त । पर्याप्तकाणामपर्याप्तकाणां च स्वानानि प्रकृतानि । गोतम । नूनमवमवपत्ति
 क्कापिक्का ये पर्याप्ता ये अपर्याप्तगास्ते सर्वे एकविधा वदितव्याः यन्मात्रात् सवलोकापर्याप्तकाणाः प्रकृताः अमहा यमन् । कस्मिन्नु वदन्त हीन्नि
 बायीपु पुच्छरीनु दीपिकासु नुक्कालिकासु वरस्व घर पङ्कालिकासु वरस्व घर पङ्कालिकासु उतभरेषु निभरेषु चिचवमसु परवमसु पण्णत्तगा हीयसु व
 मुद्दसु सर्वेषु चैव कलाकयेषु कलात्त्वानसु एतेषा हीन्निक्काणां पर्याप्तपर्याप्तानां स्वानानि प्रकृतानि । उपपातन लोकस्यावश्येयभावे अनुद्धानेन
 लोकस्यावश्येयभावे सत्त्वानेन लोकस्यावश्येयभावे । कस्मिन्नु वदन्त हीन्निक्काणां पर्याप्तपर्याप्तानां स्वानानि प्रकृतानि । गोतम कण्ठकोव

टेसन्नागे, तिरियलोए अगंसेसु तलाएसु यात्रीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु
 सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिखलेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीव्रेसु समुद्देसु सव्वेसुचेय जला
 सएसु जलठाणसु एत्यण तेइदियाण पज्झापाज्झाण ठाणा पखाहा, उवयाएण लोयस्स अस्सखेज्झाङ्गागे
 समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्झाङ्गागे सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्झाङ्गागे । कहिण भत्ते । चउरिदियाण
 पज्झापाज्झाण ठाणा पखाहा २ गोयमा । उहुलोए तदेकदेसन्नागे, अहोलोए तदेकदेसन्नागे, तिरियलोए
 अगंसेसु तलाएसु यात्रीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु गिज्ज
 रेसु उज्जरेसु चिखलेसु पल्ललेसु वप्पिणसु दीव्रेसु समुद्देसु सव्वेसुचेय जलासएसु जलठाणेसु एत्यण चउरि
 दियाण पज्झापाज्झाण ठाणा पखाहा । उवयाएण लोयस्स अस्सखेज्झाङ्गागे समुग्घाएण लोयस्स अस्स
 खेज्झाङ्गागे, सठाणण लोयस्स अस्सखेज्झाङ्गागे । कहिण भत्त ! पचिदियाण पज्झापाज्झाण ठाणा प०

तदेकदेसन्नागे अचोसोके तदकदवाज्जागे तिरियलोए अगंसेसु तलाएसु यात्रीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सर पङ्किकासु सरस्सर
 पङ्किकासु विलपङ्किकासु उतम्भरेसु निम्भरेसु चिखलेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीव्रेसु समुद्देसु सव्वेसुचेय जलासएसु जलठाणेसु एत्यण चउरिदियाण
 पचोप्तापर्याप्ताना स्यान्नागे प्रप्यन्तामि । उपपत्तम लोकास्यासव्वययमाग समुत्तातेन लोकस्यासव्वययमाग । सस्यानेन लोकस्यासव्वययमाग । कस्मि
 न्नु प्रदत्त । चतुरिन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्यान्नागे प्रप्यन्तामि । गीतम । अप्यलाक तदेकदवाज्जागे अचोसोके तदकदवाज्जागे तिरियलोए
 अगंसेसु तलाएसु यात्रीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सर पङ्किकासु सरस्सर पङ्किकासु विलपङ्किकासु उतम्भरेसु निम्भरेसु चिखलेसु पल्ललेसु व
 प्यिणेसु दीव्रेसु समुद्देसु सव्वेसुचेय जलासएसु जलठाणेसु एत्यण चउरिदियाण पज्झापाज्झाण ठाणा पखाहा । उवयाएण लोयस्स अस्सखेज्झाङ्गागे समुग्घाएण लोयस्स अस्स

इन्नागे । कहिण जते । सुज्जमयणस्सहकाहयाण पज्जत्तगाण पज्जत्तगाण छपज्जत्तगाणय ठाणा प० १ गो० । सुज्जमयण
स्सहकाहया जे पज्जत्तगा जे छपज्जत्तगा ते सहे एगविहा छविससा अनाणत्ता सव्वलोयपरियात्रयगा
पयत्ता, समाणाउत्तो । कहिण जत । येहदियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पयत्ता ? गोयमा । उहुलोए
तदेकदेसनाग, अहोलोए तदेकदेसनागे, तिरियलोए अगंरुसु तलाएसु नदीसु धात्रीसु पुस्करणीसु दीहिंयासु
गुजाछियासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिस्सलसु पल्लेसु धप्पिणेसु टीवेसु स
मुद्दसु सहेसुवेय जलासएसु जलठाणेसु एत्यम येहदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पयत्ता । उववाएणे
लागस्स अस्सखेज्जइन्नीगे, समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण
जत । तेहदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पयत्ता ? गोयमा । उहुलोए तदेकदेसनाए अहोलोए तदेक

भौतम । ब हरबनरपत्तिपाणिनां पर्याप्तबानां स्वानानि तत्रैव वाहरवन्नरपत्तिपाणिकामामपर्यानां स्वानानां प्रप्राप्तानि । उपपातेन स्वलोके तु
मुद्रातन स्वलोके सत्त्वामेन लोचक्यासंरपयमाने । कांसिभु भवन् । पर्याप्तबानामपर्याप्तबानां च स्वानानि प्रप्राप्तानि । भौतम । मूलमन्नरपत्ति
पाणिनां ये पर्याप्तानां य पर्याप्तानां सर्वे यद्विचारा कश्चिन्नयः । अनाच्छाताः स्वलोचकपर्याप्तबानाः प्रप्राप्ताः अमहा सुखम् । कस्मिन्नु जदन्न हीन्नि
पाणां पर्याप्तपर्याप्तबानां स्वानानि प्रप्राप्तानि । भौतम । उपलोचक तद्वेदबानां यद्वेदलोके तदेकद्वार्काम तियकलोके अट्टन्नु मज्जानेसु मदीसु
बापीसु पुच्छरीसु दीपिकासु मुष्कासिकासु वरत्त सर पङ्कासकाव शरासरपङ्कसिकासु सतत्तरेसु निक्करेसु चिक्कलसु परवत्तसु पय्यिक्कसु हीपसु च
मुद्दसु सर्वेसु येन जलाक्षयेसु जलत्वामेसु एतेषां हीन्निपाणां पर्याप्तपर्याप्तबानां स्वानानि प्रप्राप्तानि । उपपातन लोचक्यासंरपयमाने अनुद्रातेन
लोचक्यासंरपयमाने स्वानामेन लोचक्यासंरपयमाने । कस्मिन्नु जदन्न हीन्निपाणां पर्याप्तपर्याप्तबानां स्वानानि प्रप्राप्तानि । भौतम । अन्तर्लोच

तमसा धयगयगहचदसूरनस्कत्तजोडसपहा मेदवसापूयरुहिरमसुचिस्कसलित्ताणल्लेयणतला अ्सुईवीसा परम
दुस्सिगधा काऊयगणिधन्ताना कककफासा दुरहिवासा अ्सुना नरगा अ्सुना नरएसु वेयणात्त एत्यण
नरइयाण पज्झापाज्जत्ताण ठाणा पयप्ता, उववाएण लोयस्स अ्सखेज्जडजागे, समुग्घाएण लोलस्स अ्स
सखेज्जडजागे, सठाणेण लोयस्स अ्सखेज्जडजागे, एत्यण यद्वे नेरइया परिवसति काला कालाजासा ग
नीरलोमहरिसा नीमा उप्पासणगा परमकरह। यस्सेण पयप्ता, तेण तल्य णिच्च नीया णिच्च तल्य णिच्च
तसिया णिच्च उप्पिग्गा णिच्च परममसुत्तसयत्तनरगज्जय पच्चणुप्पयमाणा विहरति। कहिण जत्ते! रयणप्पज्जा
पुठवीनेरइयाण पज्झा पज्झाण ठाणा प०? कहिण जत्त! रयणप्पज्जापुठवीनेरइया परिवसति? गो०!
इमीस रयणप्पज्जाए पुठवीए अ्ससीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहसाए उयिरि एग जोयणसहस्समोगाहिहा

दुरप्रसंख्यामसत्थिता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतपइत्तसूयनसत्तस्योतिपप्रजा मेदवसापूयसुपरिमासकदंभसिप्तानुसपमतसा। अमुना विखा
(बाममन्विक्काः) परमदुरद्विगत्था अपोताग्निवर्बाजा (लोइपस्यमान यादुओने; कओवकल्लददना ययामेव जूताः) ककयस्पर्शाः दुर
प्रासा अमुना नरका अमुनाय नरक वदना। एतेपु नेरयिक्का पयोप्तापयोप्तामा स्थानानि प्रचप्तानि। उवपातेन लोवस्य अ्सखेय
भागे समुद्भुपातम लोवस्यासखेयप्राग सत्त्वामेन लोवस्यासखेयप्राग, एतेपु इइया नेरयिक्काः परिवसन्ति कासाः कासाजासाः गम्भीरत्तामइ
वी उत्ताशननाः परमरुप्राः वल्लेन प्रचप्ताः। तम तत्र नित्यवीता नित्यत्रस्ता नित्यमुद्दिग्गा नित्यपरमाजुभसवत्तनरकजयं पयनु
जुयमाना विहरन्ति। कस्सिज्जु प्रवत्त रवप्रजापुचिवीनेरयिक्का पयोप्तापयोप्तामा स्थानानि प्रचप्तानि। कस्सिज्जु प्रवत्त रवप्रजापुचिवी
नेरयिक्काः परिवसन्ति?। नीतम। एतस्या रवप्रजायां पयिक्क्यामशीत्युत्तरसत्तयोजनयवसइत्तवाहुत्वाभोपर्येक योजनसइत्तमवमासापयेक योज

१ गीयमा । उहोलीए तदेकदेसनागे छहोलीए तदेकदेसनागे तिरियलीए छगळेसु तलाएसु नदीसु ठहेसु
 घाघीसु पुस्कुरिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरसु
 गिज्जरसु विल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीघेसु समुहेसु सखेसु जलासएसु जलठाणेसु एत्यण पचिदियाण
 पज्जसापज्जसाण ठाणा पखसा , उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जङ्गागे , समुवाएण लीयस्स अस्सखेज्जङ्ग
 नाग , सठाणण लीयस्स अस्सखेज्जङ्गाग । कहिण नत ! नेरहयाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पखसा ?
 कहिण नत ! नेरहया परिवसति ? गीयमा । सठाणेण सप्तसु पुढवीसु तजहा-रयणप्पन्नाए सक्करप्पन्नाए
 वालुयप्पन्नाए पक्कप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए एत्यण नेरहयाण चउरासि निरयावास
 सयहस्साइ नवतीति अस्काय , तेज णरगा अतोवहा याहिचउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निज्जघयार

इत्येवमाने समुद्रपातेन लोबत्वाद्यवयवाने सत्यानेन लोबत्वाद्यवयवाने । अस्मिन् सत्यम् । पण्येन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्र
 ताणि । नैतम अथलोके तद्वद्वज्जाने अथोसोके तदेकदेसनागे तिरियलीए छगळेसु तलाएसु नदीसु ठहेसु
 घाघीसु पुस्कुरिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरसु
 गिज्जरसु विल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीघेसु समुहेसु सखेसु जलासएसु जलठाणेसु एत्यण पचिदियाण
 पज्जसापज्जसाण ठाणा पखसा , उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जङ्गागे , समुवाएण लीयस्स अस्सखेज्जङ्ग
 नाग , सठाणण लीयस्स अस्सखेज्जङ्गाग । कहिण नत ! नेरहयाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पखसा ?
 कहिण नत ! नेरहया परिवसति ? गीयमा । सठाणेण सप्तसु पुढवीसु तजहा-रयणप्पन्नाए सक्करप्पन्नाए
 वालुयप्पन्नाए पक्कप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए एत्यण नेरहयाण चउरासि निरयावास
 सयहस्साइ नवतीति अस्काय , तेज णरगा अतोवहा याहिचउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निज्जघयार

तमसा धत्रगयगहचदसूरनरकतेजोऽंसपहा मेदवसापयकहिरमसुचिकक्षालिहानुलेयणतला अमुद्वीसा परम
दुष्पिगंधा काऊयगणिवन्ताना कस्कफासा दुरहियासा असुना नरगा असुना नरएसु वेयणात् एत्यण
नरइयाण पज्जहापज्जताण ठाणा पखत्ता, उत्रयाएण लोयस्स अस्खेज्जइजागे, समुघाएण लोलस्स अ
सस्खेज्जइजागे, सठाणेण लोयस्स अस्खेज्जइजागे, एत्यण बह्वेनेरइया परिवसति काला कालात्तासा ग
नीरलोमहरिसा नीमा उत्तासणगा परमकरहा यखेण पखत्ता, तेण तत्य गिञ्च नीया गिञ्च तत्या गिञ्च
तत्तिया गिञ्च उच्चिग्गा गिञ्च परममसुजसथछनरगज्जय पच्चणुप्पयमाणा विहरति। कहिण ज्जेते। रयणप्पन्ता
पुढवीनेरइयाण पज्जहा पज्जहाण ठाणा प०? कहिण ज्जेत। रयणप्पन्तापुढवियेनेरइया परिवसति? गो०।
इमीस रयणप्पन्ताए पुढवीए असीउत्तरजीयणसयसहस्सवाहत्ताए उयिरे एग जीयणसहस्समीगाहिहा

दुरप्रसंस्थानस्थिता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतपदसंभूयंनसंन्योतिथमना मेदवसापूयशपिरभासकदंभसिपूतानुत्तपमतसा। अमुना विस्वा
(वामगन्धिकाः) परमदुररिगन्धाः अपोतान्निवर्णनाः (सोदेषममान यादृशोन्नेः कृजोवसक्तवृदाना ययामेव वृताः) ककयस्पर्शाः दुर
व्यासा अमुना नरका अमुनाय नरक वदनाः। एतेषु नेरियकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रच्युतानि। उपपातेन लोकस्य असह्येय
भाग समुद्रपातन लोकस्यासह्येयभाग स्थानेन लोकस्यासह्येयभाग, एतेषु बहवो नेरियकाः परिवसन्ति काशा काशावासाः यन्मीरलामह
यी उत्त्रासभगाः परमकृपाः वर्द्धन प्रच्युताः। तन तत्र नित्यवीता नित्यवृता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभसंबुद्धनरकप्रय पपमु
नूपमाना विहरन्ति। कस्मिन्नु प्रदन्त रत्नप्रजापुषिणीनेरियकाणे पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रच्युतानि। कस्मिन्नु प्रदन्त रत्नप्रजापुषिणी
नेरियकाः परिवसन्ति?। गीतम। एतस्मां रत्नप्रजायां पुषिष्यामशीत्युत्तरस्तथाजनशतसहस्रबाहुस्थामोपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्यापर्येकं योजन

१ गोयमा ! उहलोए तदेकडेसन्नागे छहोलोए तदेकडेसन्नागे तिरियलोए श्मशानेसु तलाएसु नदीसु ठहेसु
 बायीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गजालियासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरसु
 गिज्जरसु विल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीविसु समुहेसु सहेसुचेत्र जलासएसु जलठाणेसु एत्यण पचिदिद्याण
 पज्झाप्पज्झाण ठाणा पयसा, उववाएण लोयस्स अस्सखेज्झहन्नागे, समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्झह
 न्नाग, सन्नाणण लोयस्स अस्सखेज्झहन्नाग । कहिण जत ! नेरुयाण पज्झाप्पज्झाण ठाणा पयसा ?
 कहिण जत ! नेरुया पारिवसति ? गोयमा ! सन्नाणेण सप्तसु पुढीसु तज्झा-रयणप्पन्नाए सक्करप्पन्नाए
 वाटुप्पन्नाए पक्कप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए एत्यण नेरुयाण चउरासि निरयावास
 सयहस्साइ जयतीति अस्काय, तेण गरगा अतोवहा याहिचउरसा अहे सुवप्पसन्नाणसठिया निज्झधयार

संशयमाने समुहपातेन लोबत्वासरूपयमाने सत्त्वानेन लोबत्वासरूपयमाने । कस्सिमु भदन्त । पब्बेन्धियाका पयोप्तापर्याप्तानां स्वानानि प्रप
 मानि । नौतम रूप्यलोके तदेकडेसन्नागे अथोलोके तदेकडेसन्नागे तियक्लोके सबटु ठहानु नदीसु इदेव बायीसु पुस्करणीसु दीपिकासु गुल्का
 सिकानु सरस्सु सरपत्तिकासु सरसरप्पत्तिकासु विलपत्तिकासु उज्जरसु निक्करसु चिककलेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीविसु समुहसु सहेसु चे
 वलाजयेसु वल्ललेसु एतया पब्बेन्धियाका पयोप्तापर्याप्तानां स्वानानि प्रपयमानि । उपवातेन लोबत्वासरूपयमाने समुहपातेन लोबत्वा
 सरूपयमाने लोबत्वासरूपयमाने । कस्सिमु भदन्त । नेरयिकाकां पयोप्तापर्याप्तानां स्वानानि प्रपयमानि । कस्सिमु भदन्त । ने
 रयिकाः चरिचरन्ति । नौतम लोबत्वासरूपयमाने । तत्तया-रजप्रकाशं प्रकरप्रकाशं पट्टप्रकाशं पट्टप्रकाशं तत्तया
 प्राया तज्झाकप्रकाशान् एतेका नेरयिकाकां चतुरस्सीविभरकावाचसवक्कादि भवन्तीत्याकाशम् । तत्र भूत्वा चतुर्भुजा चरिचतुरका चत्वा

तमसा धवगयगहचदसूरनस्कृत्तजोडंसपहा मेदवसापूयकाहिरमसुचिस्कृत्तलिह्वाणुलेधगतला अ्यसुईधीसा परम
दुष्प्रिगघा काजयगणिवन्ताजा कस्कृत्तफासा दुरहिधासा अ्यसुजा नरगा अ्यसुजा नरएसु वेयणात् एत्यण
नरइयाण पज्जसापज्जत्ताण ठाणा पक्खत्ता, उवयाएण लोयस्स अ्यसखेज्जडजागे, समुग्घाएण लोलस्स अ्य
सखेज्जडजागे, सठाणेण लोयस्स अ्यसखेज्जडजागे, एत्यण बढ्वेनेरइया परिवसति काला कालाजासा ग
जीरलोमहारिसा जीमा उत्तासणगा परमकरहा यथेण पक्खत्ता, तेण तस्य णिच्च जीया णिच्च तत्या णिच्च
तसिया णिच्च उद्धिग्गा णिच्च परममसुजसयत्तनरगजय पच्चणप्पयमाणा यिहरति। कहिण जते! रयणप्पन्ना
पुढ्वीनेरइयाण पज्जसा पज्जसाण ठाणा प०? कहिण जत। रयणप्पन्नापुढ्वीनेरइया परिवसति? गो०।
इमीस रयणप्पन्नाए पुढ्वीए अ्यसीउत्तरजीयणसयसहस्सवाहसाए उयिरि एग जीयणसहस्समोगाहिह्वा

पुरप्रसत्तानसत्थिता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतयइच्चसूयनसत्तन्मोतिपप्रता मेदवसापूयकधिरमासकदमसिप्तानुलपनतला अशुजा विद्या
(सामगन्विद्याः) परमदुराप्तिगन्त्याः अपोताग्निवर्त्ताना (लोहपस्यमान यादृशोम्भे, लघोवयस्तद्वदना ययामेव प्रुता) ककसस्पर्शाः दुर
व्यासा अशुजा भरका अशुजाद्य मरक वदनाः। एतेषु नेरयिकाया पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रसप्तानि। उपयातेन लोकास्य असखेय
भाग समुद्रुपतेन लोकासासखेयभाग सत्यानेन लोकासासखेयभाग, एतेषु यइवो नेरयिकाः परिवसन्ति कासाः कासाप्रासाः गम्भीरलोभाइ
पौ शत्रुवाहनयाः परमकृप्याः वर्द्धन प्रसप्तानाः। तेन तत्र नित्यव्रीता नित्यवृत्ता नित्यमुद्धिग्गा नित्यपरमाशुभसयत्तनरकजय पयमु
द्रुयमाना विहरन्ति। अस्मिन्नु जदन् रजप्रजापृथिवीनेरयिकाया पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रसप्तानि। अस्मिन्नु जदन् रजप्रजापृथिवी
नेरयिका परिवसन्ति?। गौतम। एतस्या रजप्रजाया पृथिव्यामशीत्युत्तरश्चतयोक्तनयत्तसइत्तवाहुत्यभोपर्येकं योक्तमसइत्तमवगाइत्तापयेकं योक्त

हेठाचिंगं लोयणसहस्स धज्जिन्ना मज्जे अण्हत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण रयणप्पज्जापुढविनेरइयाण तीस
निरयाथाससयसहस्सा नवतीति मस्काय, तेण नरगा अतो वहा थाहि चउरसा अहे खुपप्पसठाणसठिया
निच्चघयारतमसा ववगयगहंखंदसूरनस्सज्जोइसपहा मेदयसापूइयपळउरुहिरमसच्चिस्सलित्ताणुलेवणतला
असुईवीसा परमदुस्सिगघा काकअग्गिणवस्साजा कस्सकफासा दुरहियासा असुजा णरगा असुजा नरगेसु वे
दणाह एत्थण रयणप्पज्जापुढविनेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा पस्सा, उववाएण लोयस्स असस्वेज्जा
इज्जागे, समुग्घाएण लोयस्स असस्वेज्जाइज्जागे, सठाणण लोयस्स असस्वेज्जाइज्जागे। तत्थण वइवे रयणप्प
जापुढविनेरइया परिवसति। काळा कालाज्जासा गजीरलोमहरिसा जीमा उप्पासणगा परमकिण्हा वन्नेण
पस्सत्ता, समणाउसो ! तेण णिस्स जीया निस्स तत्या णिस्स तसिया णिस्स उहिग्गा निस्स परममसुन्नसयठ

मवइलं ववयित्ता मप्पेउहसपत्तति योजनसत्तसइले एतत्तु रजमणापुचिबीनेरियाळा चिञ्चाकिरयावासासत्तसइळाहि जवलीत्याख्यातम् । तेन
नरका चकटंता बाधे चतुरस्रा यथः सुसप्तस्थानतत्त्विता नित्याभ्यकारतमका अयगतयइवन्नसूयमसत्तज्योतिषमया मेदवसापुपपटसठ
पिरर्नसइमसिप्पानुसवमतत्ता यमुमा विस्वाः परमदुराधिगम्याः कपोताग्निवर्जोनाः ककडस्पष्टो दुरप्यासा यज्जुजा नरका नरकत्तु वेदना
व । एतेषा रजमणापुचिबीनेरियाळा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपत्तानि । उपयातेन लोकास्वाहंययमाव वसुदुपातेन लोकस्यावश्येय
प्राप्ते स्वस्थानेन लोकस्यावश्येयभाग । तत्तन्नु वइवो रजमणाः पुचिबीनेरियाळाः परिवसन्ति । कासाः कासावासाः नन्दीरसाभर्वा जीना कल्पा
वनकाः परमकप्पाः बर्बेन प्रपत्तानाः अनवा युजन् । तेन नित्य जीता नित्य वक्ता नित्य वक्ता नित्यपुट्टिना भित्ति परमासुमंभुनरकधं
पयमुनूवमाना विहरन्ति । कल्लिज्जु वइव ववमणापुचिबीनेरियाळा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपत्तानि । कल्लिज्जु वइव ववमणा

नरगन्धय पञ्चगुण्यमाणा विहरति । कहिण ज्ञते ! सक्करप्पन्नापुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा
 पणत्ता ? कहिण ज्ञते, सक्करप्पन्नापुढविनेरइया परिचसति ? गोयमा ! सक्करप्पन्नापुढविणु यत्तीसुत्तर
 जोयणसयसहस्सवाहसाए, उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिन्ता हेठा वेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे
 तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्यण सक्करप्पन्नापुढवीणेरइयाण पणवीस निरयाथासहस्सा हवतीतिमस्कायम्
 तेण नरगा अत्तो यहा वाहि चउरसा अहे खुप्पसठाणसठिया णिच्चयारतमसा वयगयगहचउसुरणस्स
 त्तजोइसपहा मेयसापूयपफुल्लहिरमसच्चिस्सिल्लित्ताणलेयणतला अ्सुइवीसा परमदुस्सिगघा काऊअग्गणि
 वय्यान्ना करकफासा दुरद्वियासा अ्सुन्ना नरगा अ्सुन्ना नरगेसु वेयणाठे एत्यण सक्करप्पन्नापुढविनेरइ
 याण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । उववाएण लोयस्स अ्सखेज्जाइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अ्सखे
 ज्जाइन्नागे सठाणण लोयस्स अ्सखज्जाइन्नागे । तत्यण बहेने सक्करप्पन्नापुढविनेरइया परिवसति । काला

याकनसखसमुदुपाध्याय एक योजन
 पाणिनीनिर्यिकाः परिवसन्ति ? गीतम अकरमन्नापपिक्कां द्वाविगुत्तरयोजनशतसहस्रवलायामुपरियेक याकनसखसमुदुपाध्याय एक योजन
 सखं वज्जित्ता मय्य त्रिंशदुत्तरयोजनशतसहस्से यत्तेयु अकरमन्नापपिक्कां निरयाथासशतसहस्साणि प्रवत्तीत्याख्यातम् ।
 तत्र नरका बलवृत्ता वचिचनुरत्ता अय शुरप्रवस्थानसंस्थाना नित्यान्वकारतमसा व्यपगतप्रहवष्टसूयनक्षत्र ज्वातिपत्रा मेदवसापूयपटलसुपरि
 मासकदमलित्तानुसपत्तला अस्सुन्ना विक्काः परमदुरभिगन्ता कापूपागिन्नवत्ताः कक्कावपशा दुरप्प्यासा अस्सुन्ना नरका अस्सुन्ना मरकेपु यदना
 य । यत्तेयु अकरमन्नापपिक्काया पर्याप्तापर्याप्ताना ल्यामान प्रपत्तानि । उपवातेन लोकास्यासत्येयानागे समुद्वातेन लोकस्यासत्येयानागे
 सस्यानन लोकस्यासत्ययानागे । तस्मिन्नु वदवः अकरमन्नापपिक्कां निर्यिकाः पारवसन्ति । कासाः कासज्जावाः गम्भीरोलोमहणो श्रीमा उच्चासनका

सखेज्जडन्नागे । सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्जडन्नागे । तत्थण बह्वे वालुयप्पन्नापुढयीणेरडया परिवससति
 काला कालान्नासा गन्तीरलोमहरिसा जीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वग्गेण प० समणाउम्मा । तेण निञ्च
 नीया निञ्च तत्था निञ्च तसिया निञ्च उद्धिगा निञ्च परममसुन्नसयद्ध णरगन्नय पच्चणुन्नवमाणा विहरति ।
 कहिण ञ्ते । पक्कप्पन्नापुढविणरडयाण पज्जाप्तापज्जाप्ताण ठाणा पणत्ता ? गोयमा । पक्कप्पन्नापुढयीए वी
 सुत्तरजीयणसयसहस्सयाहप्ताए उवरि एग जीयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जीयणससस्स वज्जिप्ता
 मज्जे अठारसुत्तरे जीयणसयसहस्से एत्थण पक्कप्पन्नापुढविनेरडयाण दस निरयावाससयसहस्सा ञ्चवतीति
 मस्काय । तण णरगा अतो बह्वे याहि चउरसा अहे खुरुप्पसठाणसठिया निञ्चवयारतमसा ववगयगह
 चदसूरनस्कत्तजोइसपहा मेयवसापूपपळउरविहिरमसचिक्खिलिप्ताणुलेयणतला अस्सुंदवीसा परमदुस्सिगधा

ना स्थानानि प्रपन्नानि । उपवातन लोकास्यासस्येयभागे समुत्तातेन लोकस्यासस्येयभागे । तस्मिन् बहवः काल
 अप्रमपयिषीर्येयका परिवसन्ति । कासाः कासाभासाः नमीरलोमहर्षो जीमा उत्तासणगाः परमकणाः वग्गेण प्रपन्नाः श्रमणायुषन् । तेन
 नित्यतीता नित्यवन्ता नित्य वसिता नित्यमुद्दिमा नित्यं परमाक्षुन्नसवद्ध नरकत्रयं पयन्नुपमाना विहरन्ति । कस्मिन् जदन्त । पङ्कप्रजपुण्यि
 वीर्भर्यिकाणा पर्याप्तापर्याप्तासा स्थानानि प्रपन्नानि ? । गीतम् । पङ्कप्रजपुण्यि विद्युत्पुत्तरयोऽजमलतसदृशयदुलायामुपरि यक्षं योऽनसइत्त
 मुद्र्यान्नाप एक योऽनसइत्त वज्रियत्था मध्ये बट्टादक्षोत्तरे योऽजमलतसदृशे एतपु पङ्कप्रजपुण्यिक्कावो दधानिरयावास ज्ञातसइत्थावि जय
 लीत्यास्यातम् । तेन नरका चत्तुर्दशा वसिष्ठसुरक्षा अथः सुरप्रसस्थानसास्थता नित्यान्वाकारतमसा व्यपगतयइचन्द्रसूयनद्वत्योतिपप्रकाशा मे
 दधसापूपपटलदधिरमासकदमलिमामुलपनतता अमुन्ना विक्षाः परमसुरजिगत्वा कापूयान्निवर्णोना ककमरुपर्णा दुरत्यया अमुन्ना नरका अमु

काज्यगणियगुणानां कककफासा दुरहियासा अमुना नरगा अमुना नरगोसुवेयणात् एत्यण प्यकप्पनापुठयि
णेरइयाण पज्झापाज्जाताण ठाणा पसुत्ता । उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जहन्नागे, समुग्घाएण लीयस्स
अस्सखेज्जहन्नागे, सठाणंण लीयस्स अस्सखेज्जहन्नागे तत्यण यद्दं पकप्पनापुठयिणेरइया परिवसति, काला
कालाजासा गजीरलोमहरिसा नीमा उप्पासणा परमकिण्हा वय्सेण पसुत्ता समणाउसो । तेण निच्च नीया
निच्च तत्या निच्च तसिया निच्च उद्धिगा निच्च परममसुन्नसयद्द नरगन्नय पच्चुणवमाणा विहरति । कहि
णं जत ! धूमप्पनापुठयिनेरइयाण पज्झापाज्जाताण ठाणा पसुत्ता ? गोयमा । धूमप्पनापुठवीए अठ्ठा
रसुत्तरजोयणसयसहस्सयाहस्साए उव्वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिप्पा हेठा वेग जोयणसहस्स वज्जिप्पा मज्जे
सोउसुत्तेर जोयणसयसहस्स एत्यण धूमप्पनापुठवीणेरइयाण तियि निरयावाससयसहस्सा हवतीतिमस्काय
तण नरगा अतो वट्ठ । धाहि अउरसा अहे खुप्पसठाणसठिया निच्चवयारतमसा ववगयगहचदसूरनस्क

भा तरक्यु वदना एतेषु पङ्कमसा पृथिवीनैरियिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्वाभानि प्रकृतानि । उपवासेन लोकास्याख्येयप्रागे समुदात्तन लोकस्या
ख्येयमाने सत्यामन लोकस्यासंख्ययमाने । तत्रनु यद्यपि पङ्कमप्रपृथिवीनैरियिकाः परिदृश्यन्ति । कासा कासाज्जासाः गल्लीरलोनइयो ज्योना स
रत्तासुनकाः परमरुप्याः बबन प्रकृतः अमकायुक्तन् । तेन नित्यं व्रीता नित्यवृत्ता नित्य वसिता नित्यबुद्धिमा भिरयं परमाग्रजनकबहुनरकप्र
य पर्यनुपमानाः विहरन्ति । कास्सिक्क प्रदत्त । पूमप्रप्रपृथिवीनैरियिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्वानानि प्रकृतानि ? नीतन । पूमप्रकृतो पृथि
व्यामष्टादशोत्तरयोजनकतसहस्रकपुतायामुपरि एवं योजनसहस्रमुद्गृहीत्वा एक योजनसहस्रं अजयित्वा नन्दे कोटिमुत्तरे योजनकतसहस्रे य
तयु पूमप्रभपृथिवीनैरियिकाणां व्रीति । तरयबासवतसहस्राणि अजक्तीत्याख्यायन् । तन नरकाच्छ्रेता वसिष्ठपुरणा अज कुरमकल्याणवर्त्तिक

त्वजोहसपद्मा मेयवसापूपपल्लुराहिरमसचिस्त्वलिङ्गाणलेघणतला अशुईयीसा परमदुस्मिगधा काजश्चर्गाणि
 ययाज्ञा कक्कफासा दुरहिंयासा अशुजा नरगा अशुजा नरगेसु वेयणाउ एत्यण धूमप्यजापुढविणेरडयाण
 पज्जात्तापज्जात्ताण ठाणा पखुप्पा । उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे, समुग्घाएण लीयस्स अस्सखेज्जइ
 न्नागे, सठाणंण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे तत्थण वहवे धूमप्यजापुढविणेरडया परिवसति काला कालाज्जासा
 गन्तीरलीमहरिसा नीमा उत्तासणगा परमकिण्णहा वयुण पखुप्पा समणाउसो । तेण णिच्च नीया निच्च तत्था
 निच्च तसिया निच्च उद्धिग्गा निच्च परममसुजसयठनरगजय पच्चणुप्पवमाणा विहरति । कहिण ज्ञते । तमा
 पुढविनेरइयाण पज्जात्तापज्जात्ताण ठाणा पखुप्पा ? गोयमा । तमापुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सवाह
 स्साए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिन्ना हेठावेग जोयणसहस्स थज्जिन्ना मज्जे चोद्वसुत्तरे जोयणसहस्से

ता नित्यात्थकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूयसकथज्योतिपद्मा मदवसापूपपटलसुरिपरमांसकदमलित्तानुलेपनतला चशुजा विस्वा । परमदुरभिगत्थाः
 कापूयागिनिवर्षासाः कक्कफपत्तो चशुजा नरका चशुजा नरकेषु वेदनाय । एतपु धूमप्रजपूयिबीनिरियिकाणा पयासापयासाना स्थानानि प्रज्जासा
 नि । उपकातन लोकस्यासयेयनागे समुत्तागेन लोकस्यासयेयनागे सत्यामन लोकस्यासयेयनागे । तन्ननु यद्द्वो धूमप्रजपूयिबीनिरियिका परिव
 सन्ति । कासाः कासाज्जासाः गंभीरलाभयो प्रीमा उरत्थासमका परमरुद्रा वयुन प्रज्जासा यमकायप्पम् । तेन नित्यं नीता निरयंत्रस्ता निरय
 वसिता नित्यमुद्धिग्गा नित्यपरमाशुलसवदुनरकजय पयनुजयमासा विहरन्ति । अस्मिन्नु मदल । तमःप्रजपूयिबीनिरियिकाणा पयासापयासाना
 स्थानानि प्रज्जासाणि । गीतम् । तमःपूयिष्वा योळुत्तरयोअनसुतसइयधुलायामुपरि एक योजनसइस्समुग्घीत्वाय एक योजनसइल वज्जपि
 स्था मय्य चतुदशोत्तर योजनसइस्से एतेषु तमःप्रजपूयिबीनिरियिकाणानेअस्मिन्यस्थान नरकावासगतसइस्से नवन्तीत्यास्यावम् । तेन नरका अन्त

एत्यण तमप्यनापुढधिणेरहयाण एण पच्चुणे नरगाथाससयसहस्रे हवतीति मरकाय, तेण नरगा श्रुतो बहा
 धाहि घउरसा श्रुहे खुरप्यसठाणसठिया निच्चधयारतमसा यवगयगहचटसूरनस्कहुजोडसपहा मेदउसापू
 पढउरठिरेमसचिस्किह्लिह्लानुलेयणतला श्रुहुवीसा परमठुस्मिगधा कककफासा दुरहियासा श्रुसुजा न
 रगा श्रुसुजा नरगेसु वेयणात्त एत्यण तमापुढधिणेरहयाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पयसा, उवधाएण
 लोयस्स श्रुसखेज्जहनागे समुग्घाएण लोयस्स श्रुसखेज्जहनागे सठाणेण लोयस्स श्रुसखेज्जहनागे, तत्यण
 यहवे तमप्यनापुढीणेरहया परियसति काला कालाजासा गजीरलोमहरिसा जीमा उहासणगा परमकिग्हा
 वणेण पयसा समणाउसी। तेण निच्च जीया निच्च तत्या निच्च तसिया निच्च उस्मिगा निच्च परममसुजसवहु
 नरगजय पच्चुणम्मयमाणा विहरति। कहिण जते ! तमतमापुढधिणेरहयाण पज्जसापज्जसाण ठाणा प०,
 ? गोयमा। तमतमापुढधीए श्रुत्तरजीयणसयसहस्रथाहसाए उवरि श्रुत्तवसुजीयणसहस्रसाइ उग्गाहिता

दता यद्विदुरत्वा अथ दुरप्रसस्यानसंस्थिता नित्यान्वहारतमसा अपगतप्रवृत्तमूलनसन्नस्योतिप्रभा मेदवसा पूयपटसकधिरमोसकदमलिसा
 नृत्तपनतता अशुजा विद्याः परमदुरभिमत्या कककशरणो दुरस्यया अशुजा नरका अशुजा नरकपु वेदनाः एतेषु तमःप्रपप्रपिधितिरियिकाया पयो
 तापर्याप्तानां स्थानानि प्रकृतानि। उपपातन सावस्यासवयेयमाने समुत्पत्तेन लोकासावसथयजाने सत्वानेन लोकासासंबययमाने तत्रानु बहवस्त
 म प्रपप्रपिधोमैरयिका परिवसन्ति काला जानातासाः गम्भीरलोमहर्वा जीमा उरत्तासमकाः परमकजा वर्येन प्रकृताः समकावुसन्। तेन नि
 रयजीता नित्ययस्ता नित्ययस्त्रिता नित्यमुद्रिता नित्यं परमाशुवसका नरकजय पयमुद्रपमाना विहरन्ति। कस्मिन् मदन्। तमकानः पृथिवी
 नैरयिकायो पर्याप्तपर्याप्ताना जानानि प्रकृतानि ?। गीतम। तमस्ताना एपिज्जामठोदरपोवनववववज्जनुतायायानुपरि अद्विपव्याघोवन

हेठावि अथ तेवणजीयणसहस्र वज्जिप्ता मज्जे तिण्णिजीयणसहस्रेषु एत्यण तमतमापुठवीनेरडयाण पज्जा
 तापज्जाताण पचविंसि पच अणुत्तरा महम्महालगा मङ्गानिरया पसुत्ता, तज्जा—काले महाकाले रोरुए म
 हारोरुए अपडठाने, तण नरगा अत्तो वहा याहि वउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च धयारतमसा
 ववगयगहचदसूरनस्कत्तजोडसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपठाचिस्कसल्लिप्ताणुलेवणतला असुईयीसा परमदु
 स्मिगधा करकठफासा दुराहियासा असुत्ता नरगा असुत्ता नरगेसु वेदनाउ एत्यण तमतमापुठविनेरडयाण
 ठाणा पन्नप्ता, उवयाएण लोयस्स असुखेज्जहन्नाए समग्घाएण लोयस्स असुखेज्जहन्नाए सठाणेण लोयस्स
 असुखेज्जहन्नाए तत्यण बह्वे तमतमापुठविनेरडया परिवसति काला कालाजासा गन्तीरलोमहारिसा जीमा
 उतासणया परमकिण्हा वन्नेण पन्नत्ता समणाउसो । तण निच्च नीया णिच्च तया निच्च उद्धिग्गा निच्च
 परममसुजसवद्धं नगरज्जय पच्चणुप्पवमाणा विहरति ॥ असीतयत्तीस अठावीसचहोद्वीसच । अठारससो

सहस्राणुदुग्घीत्वापोपि अदात्रपच्चाद्यद्योअनसहस्राणि वज्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु यत्तपु तमस्तमः पृथिवीनिरयिकाया पर्याप्तापर्या
 ताना पचदत्तापच्यगानुत्तरा मङ्गामहासया मङ्गानिरया प्रपत्ता तद्यथा—काले महाकाले रोरवे मद्दारोरवे अमतिष्ठाम तेन नरका अन्तद्वृत्ता य
 दित्तुरक्षा अथ शुरमसस्यानसत्थिता नित्याव्यकारतमसा व्यपगतशब्दस्वरूपमन्त्रस्योतिपप्रता मदपूयवसारुहिरमांसपलज्जदमल्लिप्ताणुलेपमत
 ला अशुजा विद्या परमदुरभ्रिगत्वाः कल्लारपशी दुरत्यया अशुजा नरका अशुजा नरकपु वदनाद्य, एतपु तमस्तमपृथिवीनिरयिकायां स्यामानि
 प्रपत्तामि । उपपातेन तावत्स्यासस्येयप्राने समुदातेन लोकस्यासंख्येयमाग सस्यानन लोकस्यासंख्येयजाग तच्चतु यद्भवस्तमस्तम पृथिवीनिरयिका
 परिवसति काला कालाजासा गन्तीरलोमइया जीमा तद्यथासवकाः परमरुक्ता वद्धेन प्रपत्ताः समणापुसन् । तेन नित्यमीता नित्यं व्रक्षा नि

एत्यण तमप्यन्नापुढविणेरडयाण एग पचूणे नरगायाससयसहस्रे हवतीति मरकाय, तेण नरगा झुतो यहा
 याहि चउरसा अहे खुप्यसठाणसठिया निचधयारतमसा यवगयगहचंदसूरनरुक्षजोडसपहा मेदत्रसापूय
 पळउरुहिरमसचिस्किखलिताणलेयणतळा असुडवीसा परमदुस्मिगधा कस्करुफासा दुरहियात्ता असुन्ना न
 रगा असुन्ना नरगेसु वेयणाठ एत्यण तमापुढविणेरडयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयात्ता, उयत्ताएण
 लोयस्स असुखेज्जज्जागे समुग्घाएण लोयस्स असुखेज्जज्जागे सठाणेण लोयस्स असुखेज्जज्जागे, तत्यण
 घहवे तमप्यन्नापुढीणेरडया परिघसति काला कालाज्जासा गभीरलोमहरिसा नीमा उप्पासणगा परमकिरहा
 घखेण पयुत्ता समणाउसी। तेण निज्ज नीया निज्ज तया निज्ज तसिया निज्ज उद्धिगा निज्ज परममसुन्नसयदु
 नरगज्जय पच्चुणुस्रथमाणा ग्रिहरति। कहिण जंते। तमतमापुढविणेरडयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०,
 ? गोयमा। तमतमापुढवीए सुठुत्तरजोयणसयसहस्रयाहसाए उवरि सुठुत्तेनयाजोयणसहस्रसाइ उग्गाहिता

यत्ता वदिवतुरत्ता अप हुरमसत्याजसत्थिता नित्यान्वकारतमसा अपगतघइचअमूयनसत्रन्योतिपमसा मेदवसा पूयपटसठिपरिमासवदमसिता
 नृसेपनतसा अमुन्ना विस्वाः परमदुरधिगम्याः कससुस्पशी दुरत्तया अमुन्ना मरका अमुन्ना मरकपु वेदमाः एतेषु तमाप्रपृचिबोत्तरियिवाको पया
 सापयोसाणा स्वाभानि प्रज्ञप्तानि। उपपातन लोबस्यासवयेयमाने समुत्तान लोबस्यासवयेयमाने सत्यानेन लोबस्यासवयेयमाने सत्रनु बइवसा
 म प्रमपृचिबोत्तरियिवा परिवन्नि कासा कामानासाः मन्नीरलोमसवर्वा वीमा उरत्तासमकाः परनकप्पा बर्देन प्रज्ञप्ताः समकापुज्जन्। तेन नि
 त्यवीता नित्यवत्ता नित्यवत्तिता नित्यमुद्धिगा नित्यं परमाज्जुप्रसंवा मरकज्जय परमज्जुयमाना विहरति। कलिज्जु प्रवत्त। तमकाज्जः पृथिवी
 नेरियिवाको पयोसापयोसाणा स्वाभानि प्रज्ञप्तानि ?। नीतव। तमकाज्जः पृथिव्यामटोहरयोबनवत्तवइकज्जुसायाकुपरि कइविपव्याकयोजन।

हेठावि अश्वत्थेवगुजोयणसहस्रस धज्जिआ मज्जे तिण्णिजोयणसहस्रसेसु एत्थण तमतमापुठवीणेरडयाण पज्जा
 तापज्जात्ताण पचदिदि पच अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पण्णप्पा, तजहा—काले महाकाले रोअए म
 हारोअए अपडठाने, तेण नरगा अंतो वहा याहि वउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च घयारतमसा
 ववगयगहचदसूरनरकत्तजोडसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपलचिरकल्ललित्ताणुलेयणतला अश्वत्थेवीसा परमटु
 स्मिग्धा कक्कळफासा दुरहिंयासा अश्वत्था नरगा अश्वत्था नरगेसु वेदनाठ एत्थण तमतमापुठविनेरडयाण
 ठाणा पन्नासा, उवयाएण लोयस्स अश्वत्थेज्जइजाए समुग्घाएण लोयस्स अश्वत्थेज्जइजाए सठाणेण लोयस्स
 अश्वत्थेज्जइजाए तत्थण बहये तमतमापुठविनेरडया परिवसति काला कालाजासा गजीरलोमहरिसा जीमा
 उत्तासणया परमकिरहा वन्तेण पक्कत्ता समणाउसो । तण निच्च जीया णिच्च तया निच्च उअिग्गा निच्च
 परममसुन्नसयद्ध नगरत्तय पच्चणुअवमाणा विहरति ॥ असीतवतीस अठावीसचहोइवीसच । अठारससो

सखासुदुग्घीत्वापोपि अद्यात्रपण्णाशशोद्धतसहस्राणि वक्षयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु यत्तपु तसक्तमः पृथिवीनैरियिकाणा पयोपापयो
 सानो पण्डितपण्णानुत्तरा महासहासया महानिरयाः प्रज्ज्ञाः तदया-काले महाकाले रोरये महारौरये अमणिष्ठाने, तेन नरका अमलवृत्ता य
 विद्यतुरसा अच खुरप्रसस्यानसस्थिता नित्यात्वकारतमसा व्यपगतपद्मचन्द्रसूयमसधन्मोतिप्रप्ता मदपूयवसारुहिरमासपल्लवर्द्धमलिप्तानुलेपनत
 ता अशुजा विद्या परमदुरधिगम्याः ककशास्वक्षो दुरत्यया अशुजा नरका अशुजा भरकपु वदनाय, एतपु तमस्तमपृथिवीनैरियिकाणा स्यामामि
 प्रज्ज्ञामि । उपपातेन साक्षस्यासक्येयप्रागे समुत्तातेन लोकास्यासक्येयभागे सत्त्वानन लोकास्यासक्येयप्रागे तत्रपु यद्वस्तमस्तम पृथिवीनैरियिकाः
 परियसन्ति कासाः कालाजासा गम्भीरलोमहर्षो जीना उन्नासनकाः परमरुद्राः वर्धन प्रज्ज्ञाः अमणापुसन् । तेन नित्य सीता मित्य प्रका नि

लसग अथुप्तमेवहेठिमया ॥ १ ॥ अथुत्तरचयहीस लखीसचेवयसहस्सतु अठारससोलसग चोदससहिय
 तुळठीए । अथुत्तेवन्वसहस्सा उवरिमहोवज्जितोन्नणिय । मज्जेउतिसुसहस्से सुहोतिनरगतमतमाए । तीसा
 यपन्नयीसा पन्नरसदंसेवयसहस्साह । तिन्निपपचूणेग पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण जंते । पचि
 दियतिरिस्कजोणियाण पज्झप्तापज्झाण ठाणा प० ? गो० । उहुळीए तटेकदेसजाए अहोळीए तदेकदेस
 जाए तिरियळीएसु अगळेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेंसु स
 रपतियासु सरसरपतियासु थिलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्धेसु स
 हेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एल्यण पचिदियतिरिस्कजोणियाण पज्झप्तापज्झाण ठाणा प० । उअवा
 एण लोगरस अस्सखेज्झइन्नागे । समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्झइन्नागे ।

त्थमुद्धिक्का नित्यं परमाशुप्रसंगं नरकमयं पपमुपपमाना विहरन्ति । अशीविद्वांश्चिदात् अष्टाविंशतिविंशतीच । अष्टादश योहस्यमहोत्तरमेवा
 बोचिमया ॥ १ ॥ बढोत्तरं हाशिक्षत् बह्विंशतियस्यतसहस्रं ॥ अष्टादश योहस्य बतुदंशसहितं तु बह्विंशत् । अष्टविंशत्पञ्चाशत्सहस्रं भूपरि
 मशोवन्ति एते मन्त्रितम् । मध्येतुत्तियुसहस्रे पुन्रवन्तिनरकास्समस्तमसः ॥ त्रिंशत्पञ्चविंशत् पञ्चदशैवस्यतसहस्राणि । शीविपञ्चोर्मेकं पञ्चेवा
 नुत्तरानरकाः ॥ ४ ॥ कस्मिन् प्रदन्त । पञ्चम्रियतिबन्धुयोगिकानो पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? योतय । कप्यलोके तदेकदेकाने
 बधोसोके तदेकदेकाने तियबन्धोबन्धु बन्धुनु तदनेनु नदीनु त्रदेनु वापीनु पुनरसीनु शीपिकासु पुनरालिकासु बरसु बराःपञ्चिकासु बरा
 बरापञ्चिकासु विलपञ्चिकासु उपकरसु निकरसु विल्लेसु प्पल्लसु शीपसु बतुद्रसु बन्धुनु चैव जलासयेसु जलत्वाप्तसु यतेसु पञ्चान्त्रियतिबन्धुयो
 गिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, उपकातेन लोकसाधंसेवप्राने समुद्रकातेन लोकसाधंसेवप्राने संज्जायेन लोकसाधंसेवप्राने ।

कहिण जते ! मणुस्साण पज्झत्तापज्झत्ताण ठाणा प० । अतो मणुस्सस्वित्ते पणयालीसाए जोयणसयसह
स्सेसु अह्माईज्जेसु दीयसमुद्देसु पन्नरस्ससु कम्मन्नमीसु तीसाए अकम्मन्नमीसु तप्पन्ताए अतरदीवेसु एत्थण
मणुस्साण पज्झत्तापज्झत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जाइज्जागे समुग्घाएण सच्चोए सठाणे
ण लोयस्स अस्सखेज्जाइज्जागे ! कहिण जते ! नवणवासीण देवाण पज्झत्तापज्झत्ताण ठाणा प० ? कहिण
नवणवासीदेवा परिवसति ? गो० ! इमीव रयणप्पन्ताएपुठवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उ
वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठाचेग जोयणसहस्स वज्झत्ता मज्जे अटुत्तरिजोयणसयसहस्सा हवतीति
त्यण नवणवासीदेवाण पज्झत्तापज्झत्ताण सत्तन्नवणकीणींउ वायत्तरिच नवणवाससयसहस्सा हवतीति
मस्कायं, तेण नवणा थाहि वह। अतो समचउरसा अहे पुस्सरकन्नियासठाणसठिया उकिण्णतरिचिउलग

कस्मिन् जदन्त । मनुयाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपञ्चानि । अन्तर्मेनुप्यन्ने पञ्चसत्त्वारिंशत्तर्मेण योजनशतसहस्रेण साहेदयेण द्वीपसमुद्रेण
पचदशशु कम्मन्नमिणु त्रिचदकम्मन्नमिणु पट्पञ्चाशदन्नरहीदिणु पतेणु मनुयाणां पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपञ्चानि । उपवातेन लोकस्यासम्बन्धेय
प्राग समुद्रातेन लोकस्यासम्बन्धेयप्रमाने सत्त्वानेन लोकस्यासम्बन्धेयमागे । कस्मिन् जदन्त । नवमवाचिनां देवाना पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रपञ्चानि
कस्मिन् जदन्त । नवमवाचिनी देवाः परिवसन्ति ? धीतम । यतस्या रक्षप्रपञ्चप्रथियामन्त्रीत्पुत्तरयोजमशतसहस्रयद्गुत्तायायुपर्यकं योजनसहस्रमुद्ग
हीत्याचक्षादेकं योजनसहस्रं यजयित्वा मध्येऽष्टवसति योजनशतसहस्रजततेण पर्याप्तापर्याप्ताना सप्तन्नवनकोट्या द्विसप्ततिनय
नवासशतसहस्राणि नवकोट्याख्यातम् । तेन नवमानि धास्यन्ती वृत्तानि सन्तः समचउरस्साणि सप्तः पुक्करवाचिकासत्त्वानसत्त्वानि उरकीर्वाण
रविपुत्तगम्भीरयातपरिणानि प्राकाराहासकपाठोत्तरप्रविश्वारदेयमागानि यन्त्रप्रवर्तनीनुमुदयोपरिवारिणानि आयोप्यानि सदानानि तानि

नीरस्वातफलिढा पागारहालयकथाम्नोरणपक्रिदुवारदेसन्नागा जतसयग्धिमुसठिपरिवारिया अ्यउज्जा सयाज
 या सया अ्यजेया सदा गुप्ता अ्यन्यालकोठरइया अ्यन्यालकवयणमाळा खेमा सिवा फिकरा मरफ्फावररिक्
 या लाउझोठयमहिंया गोसीससरससचवनदद्वरदिन्नपचगुलितला उवचियचदणकलसा चदणघरुसुकयतो
 रणपक्रिदुवारदेसन्नागा अ्यसत्तोसत्तयिउलयहवग्वारियमस्रदामकळायापचयन्नसरससुरात्रिमक्कुपुफ्फुपुजोयया
 रकलिया (ग्र११००) कालागुरुपवरकुदुरुक्कुतुरुक्कुधूमत्रमर्धतगधुठुत्तात्रिरामा सुगधयरगधगंधिया गधय
 हीन्नया अ्यच्छरगणसधसकिन्ना दिव्वतुक्रयसव्वसपन्तदित्ता सव्वरयणमया अ्यच्छा सयहा लयहा घठा मठा
 जीरया निम्मला निप्पका निक्कककच्छाया सप्पन्ना ससिरिया सउज्जोया पासादीया वरिसणिज्जा अ्यज्जिरू
 या पक्रिक्का एत्थण नवणवासीण देवाण यज्जस्रापज्जत्ताण ठाणा प० । उवयाएण लोगस्स अ्यसखेज्जाइ

सदात्रेयानि सहा गुप्ताम अष्टवत्थारिद्वत्तोष्टवरिपत्तानि अष्टवत्थारिद्वदशयमासानि सेमादि दिवानि किङ्करामरदरवठतोपरिवितानि साठ
 जोइय (वेटिबायोमयादिभिस्सेपेनसंघीवरर) मरितानि भोगीपसरसररुक्कन्नदरदत्तपम्माङ्गुलित्तानि उपपित्तबन्धनसप्तानि बन्धनच
 दसुन्नतवारप्रतिहारदेवजायानि कासकोत्सवविपुसवृत्तमावासिय (प्रकम्पित) मात्स्यदामकसापानि पम्बवत्सरसहुरात्रिमक्कुपुफ्फुपुजोपचारक
 सितानि कासानुरप्रवरकुन्दरुक्कुतुरुक्कुपुमपमपायमामय्योद्गुत्तात्रिरामादि सुगधयरगधगंधियानि मन्थवोत्तप्तानि अप्वरागवर्धपवकोर्वाणि
 दिक्कुटितस्रश्चस्मबादितानि सर्वरजमपानि जम्बानि सत्त्वानि पूष्टानि सृष्टानि नीरजानि निर्जपानि निक्कवटवज्जावानि सप्तकादि सवरीषी
 नि सोद्योतानि प्रशारीयानि रघोनीयानि अभिक्कपादि प्रतिक्कपादि यत्तेषु प्रजनवादिना देवानां पर्वाज्ञापवीक्षानां ज्ञानानि ब्रह्मज्ञानि । अप
 ज्ञातन लोक्कत्तावदेयप्राये समुद्गातेन लोक्कत्तावदेयप्राये चज्जनेन लोक्कत्तावदेयप्राये तत्रसु ब्रह्मो प्रकम्पवादिदेवाः परिचरन्ति । तत्तत्तत्ता-

ज्ञागे समुष्ठाएण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे सठाणेण लीगस्स अस्सखेज्जइन्नागे तत्थण बहवे जघणवासीदि
 वा परिवसति त-असुरानागसुवन्ता विज्जुअग्गीयवीयउहीय । दिसिपयणथिणियणामा वसहाएएन्नवण
 वासी ॥ चूळामणिमउरयणजूसणा फणिगरुलयइरपुअकलसकिउफेसा सीहमगरमयकअस्सवरयउमानि
 ज्जुअचिअचिधगता सुरूवा महिहिया महज्जुतिया महायसा महावला महाणन्नाया महासीरका हारायिराइ
 यवत्या कळगतुफ्रिययजियनुया अगदकुळलमठगळतलकणपीळघारी विचित्तहत्याज्जरणा विचित्तमालामउ
 लिमउळा कळ्हाणगपवरवत्यपरिहिया कळ्हाणगपवरमळ्हाणलेवणघरा ज्ञासुरवीदी पलववणमालघरा दिव्वेण
 यस्सेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सधयणेण दिव्वेण सठाणेण दिव्वाए इहीए दिव्वाए जुहीए
 दिव्वाए पन्नाए दिव्वाए च्छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाने उज्जीवमाणा

असुरमागसुपणं विद्युदग्निहीपोदचयस । विधापवमलानिदास्या दशेतेमवमवासिमोघेया ॥ १ ॥ धूळामासिसुखुटरदद्रूपणा फणागरुवज्जपूये
 कसत्ताङ्कितमुज्जुताः । सिद्धाद्यगववरमादिकस्य धर्मेमानियुक्तादिवचकपरः ॥ २ ॥ सुरूपासर्चिका महायज्ञा महायसा महासुजावा
 मवेधरा हारायिरावितवससः कठकद्रुतितस्तस्मितनुजा अङ्गदकुबलसमुगयहतलक्षणपीठचारिणो विचित्रमालामोस्तिमबहलाः कल्याणप्रवरवत्परि
 वृताः कल्याणप्रवरमात्सामुलेपमधरा ज्ञासुरयोन्व (क्षरीर) यो प्रलम्बममाक्षधराः दिव्येन वस्त्रेण दिव्येन गन्धेन दिव्येन सपथेन दिव्येन सङ्गमेन
 दिव्येन सल्यानम दिव्यया दृष्ट्या दिव्यया युक्ता दिव्यया प्रमया दिव्यया आया दिव्यया युत्या दिव्येन तेजसा दिव्यया क्षेत्रपया (देशयसुमुन्दरत
 या) दक्षदिव्यासूयोतमायाः प्रकाशमानाः तेन तत्र साव २ (वाक्पालङ्कारे) भवनवाविद्युतसङ्ख्यायां साव २ सामानिकसङ्ख्याणां साव २ त्रय
 त्रिशतां साव २ सौखयालामा साव २ अयमहिपीणां साव परियदा साव अधिकारिणां अधिकारिणीनां साव आपररुदेवसङ्ख्याणां सन्त्ये

नीरक्षातफलिहा पागारहालयकथामृतीरणपक्रिदुवारवेसनागा अतसयगिधमुसठिपरिवारिया अउज्जा सयाज
 या सया अजेया सदा गुप्ता अक्रयालकोठरइया अक्रयालकवयणमाला खेमा सिधा किकरा मरुकोवरस्कि
 या लाउसोइयमहिंया गोसीससरसरससचदनदहरदिन्नपचगुलितला उयचियचदणकउसा चदणघरुसुकयतो
 रणपक्रिदुवारवेसनागा असासतोसत्तियिउलत्रहवगधारियमस्रवामकलायापचयन्नसरससुरनिमुक्तापुफपुजोयया
 रकोडिया (अ ११००) कालागुरुपवरकुदुरुक्तातुरुक्ताधूममधंतगधुहुताजिरामा सुगधनरगधगंधिया गधय
 हीनूया अच्छरगणसधसकिन्ना विधुतुक्रियसहसपन्तदिता सवरयणमया अच्छा सगहा लरहा घठा मठा
 नीरया निमला निम्पका निक्ककच्छाया सप्पना ससिरिया सउज्जीया पासादीया वरिसणिज्जा अन्निरु
 धा पक्रिरुया पुत्यण नवणवासीण देवाण पज्जाप्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उवयाएण लीगरस्स अ्सखेज्जाइ

सदावेयानि वहा गुप्तानि अष्टपत्तादिंइत्तकोसुरोचिंतानि अष्टपत्तादिदादसयमास्तानि सेमादि विवानि किङ्करामरदयकठतोपरिचितानि साठ
 मोइय (सेटिकागोसपादिमिहमेपनसुहीकरव) मरितानि मोशीपसरसरससचददनदहरदिन्नपचगुलितला उयचियचदणकउसा चदणघरुसुकयतो
 रणपक्रिदुवारवेसनागा असासतोसत्तियिउलत्रहवगधारियमस्रवामकलायापचयन्नसरससुरनिमुक्तापुफपुजोयया
 रकोडिया (अ ११००) कालागुरुपवरकुदुरुक्तातुरुक्ताधूममधंतगधुहुताजिरामा सुगधनरगधगंधिया गधय
 हीनूया अच्छरगणसधसकिन्ना विधुतुक्रियसहसपन्तदिता सवरयणमया अच्छा सगहा लरहा घठा मठा
 नीरया निमला निम्पका निक्ककच्छाया सप्पना ससिरिया सउज्जीया पासादीया वरिसणिज्जा अन्निरु
 धा पक्रिरुया पुत्यण नवणवासीण देवाण पज्जाप्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उवयाएण लीगरस्स अ्सखेज्जाइ

लमुसन्तिपरिथारिया अउज्जा सदा सया घलया सदा गुप्ता अरुयाला कीठगरहया अरुयालकयवन्तमाला
खेमा सिवा किकरामरुओवरिकिया लाउखोइयमहिंया गोसीसरसरस्रधंदणदहरदिन्नपचगुलितला उव
चियधंदणकलसा चदणघरुसुकवतोरणपफिदुवारदेसनागा आससोसस्रविउलथहयग्वारियमस्रदामकलाया
पचवन्नसरससुरनिमुक्कपुप्फपुजोययारकलिया कालागुरुपवरकुदुरुक्कतुरुक्कतुक्कतधवमधमधंतगधुधुस्त्रान्निरा
मा सुगधवरगधिया गधवाहिन्नुया अचरगणसवसकिष्ठा विस्वतुक्रियसद्वसपन्तदिया सधरयणामिया अ
च्छा सरहा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककरुच्छाया सप्पना ससिरिया सउज्जीया पासाइया
वरिसणिज्जा अन्निरूवा पफिरूवा एत्थण असुरकुमाराण देवाण पज्जाप्तापज्जाप्ताण ठाणा पस्सत्ता । उववा
एण लोयस्स असस्विज्जाइन्नागे समुग्घाएण लोगस्स असस्वेज्जाइन्नागे सठाणंण लोगस्स असस्वेज्जाइन्नागे त

नि वल्हीर्णात्तरिपुत्तगम्भीरसावत्थिकानि माबारह्वालबबपातोरणप्रतिद्वारदेसनागानि यन्ममलप्रीमुसलज्जसुखिपरिवारितानि प्रायोपनानि
सदावेयानि वदवत्तयानि सदागुप्तानि अट्टचत्वारिंशत्कोट्टवरचितानि अट्टचत्वारिंशत्तुल्यमाप्तानि श्रियाणि किङ्कुरामरववधोपरचितानि
साह वल्लोइय मरितानि गोष्ठीपसरचचन्दनदंदरत्तपन्नाकुलितानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनपटसुलततोरणप्रतिद्वारवक्षणागानि प्रास
कोत्सचविपुत्तवत्तमाधा तिममास्यदामकलापानि पम्बवत्तसरससुरनिमुक्कपुप्फपुष्पोपचारकलितानि कालागुरुप्रवरकुम्बसुकुत्तसूयमयमघाय
मानगम्भोद्भूताभिरामाणि धुगम्बवरगम्भयन्त्रितानि गत्यवर्तन्तुतानि अम्भरोगणसपसकीर्णानि दिव्यद्रुटितगज्जस्रमद्यादितानि सवरत्तमया
नि अम्भानि शस्त्रानि पृष्ठानि सृष्टानि धीरर्जांसि भिप्पङ्गानि निम्फरत्तवक्ष्यायानि समन्नासि समरीचीनि सोद्योतानि प्रसादनीयानि दक्षनीयानि
अन्निद्वयाणि प्रतिद्वयाणि एतंयु असुरकुमाराणां देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना त्यामानि प्रक्षप्तानि । उपपत्तेन लोक्कस्यासख्येप्राने समुदात्तेन लोक

पन्नासेमाणा तेणं तल्य सार्णं २ नत्रगवाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तोयत्तीसाण
 साण २ छोगवालाण साण २ अगमहीसीण साण २ परियाण साण २ अणीयाण साण २ अणियाहियईण
 साण २ आयरकदेवसाहस्सीण अन्नेसिच यत्तण नवणवासीण देवाणय देवीणय अहिेवच्च परेवच्च सा
 मिस न्हिस्स महस्सरगण्ण आणार्हसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहनहगीयवाइयततीतलतालतुत्ति
 यचणमुइगपण्णुपवाइयरवेण विस्साइ नोगनोगाइ नुजमाणा विहरति । कहिण ज्ञते ! असुरकुमाराण दे
 व्वाण पज्जात्तापज्जात्ताण ठाणा पक्खप्ता २ कहिण ज्ञते ! असुरकुमारादेवा परिवसति २ गोयमा । इमीसे
 रयणप्यजाए पुढवीए असीउत्तरजीयणसयसहस्सयाहप्पाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिप्ता हेठावेग
 जीयणसहस्स यज्जिप्ता मज्जे अठ्ठहस्सरे जीयणसयसहस्से याहप्पाए एत्थण असुरकुमाराण देवाण बोवाठि
 नत्रणावाससयसहस्सा नवतोति मस्काय, तेण नवणा याहि यहा अतो चउरसा अहे पुस्करकणियासठा
 णसठिया किअतरविउलगजीरस्कायफलिहा पागारहालयकवाफ्तोरणपण्डिद्वारदेसनागा जतसयग्निधम्मस

वां न बहूना अवलंबासिनां देवानां देवीनामाधिपत्य स्थासित्य मूर्तेषु महत्तराङ्गत्वमाद्येष्टवेनापत्यं कारयमाणाः पासयमाणाः ब्रह्माह्वयत
 नीतवादिशततीततासत्ताउपपन्नसुदृक्पटुप्रबादित रवेर्बादेभ्यानि प्रोन्नजोभानि प्रुन्ननाना विहरन्ति । कस्मिन् प्रदन्त । अशुरकुमाराणां देवानां
 पयोतापर्याप्ताना स्त्रानानि प्रच्छसन्ति २ कस्मिन् प्रदन्त । अशुरकुमारादेवा परिवसन्ति नीतम् । एतन्नां रत्नप्रजायां पूर्वव्याजघ्नीस्तुत्तरबोवनह
 तवहज्जकुतायामुपर्यर्द्धयोवनवहज्जमुदुवशीत्वा उपल्लादेवं पीजनवहर्कं वनयित्वा मध्ये उहवसतियोवनवहत्तवहज्जकुतायाम् एतत्तु अशुरकुमारा
 णां देवानां अतुर्बेहविज्जवनावावहणादि अवस्थीत्वाकायम् । तेन नवनानि बहिरेव सानि अवस्थशुरकादि मध्ये पुस्करकणिनांलानवक्लिवा

सामान्यसाहस्रीण साण २ तावहीसाण साण २ लीगपाळाण साण २ अगमहिंसीण साण २ परिसाण
 साण २ अणियाण साण २ अणियाहिंवईण साण २ आयरकदेवसाहस्रीण अवेसि च यत्तण नवणवा
 सीण देवाणय देवीणय अहेवच्च पोरेवच्च सामित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च कारेमाणा पा
 लेमाणा महयाहयनहगीयवाडयततीतलतालतुक्रियघणमुइपपुप्पवाडयरवेण विच्चाइ जोगजोगाइ जुजमा
 णा विहरति, चमरयालिणो इत्य दुये असुरकुमारिदा असुरकुमारारायाणो परियसति काला महानीलस
 रिखा नीलगुलियगयलयसिकुसुमप्यगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्ततनयणा गरुडाययउज्जत्तग
 नासा उयचियसिलप्यवालवियफलसन्निहाहरोठा पनुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसखगोखीरकुदद
 गरयमुणालिया धयलदतसेठी हुयवहणिद्धतधीयतत्ततवाणज्जरत्तलतालुजीहा अजणघणकसिणरुयगरमण
 ज्ञानिच्छकेसा वामेयकुळधरा अद्वचदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिधपुष्पगगासाइ असकिलिठाइ सुजमाइ व

स्वाप्त दिव्यया अय्या दिव्यया युत्तया दिव्यया प्रपया दिव्यया छायाया दिव्येन अर्चिषा एतेन दिव्येन क्षेत्रेन दशदिशासूतोतमाना प्रप्राप्ती
 मानः तेन तत्र स्त्रीषां २ जवमावास्यत्तसदस्याणा सामानिबसइत्याणा प्रयत्तिवत्ता लोकपालानां अग्रमहिषीषां परिपदामधिकारिणा अधिकारि
 यतीनामायरत्तदसदस्याणामप्येषा च यजुना देवाना दवीनामाधिपस्य पौरपस्य स्वामित्य प्रत्यूत्त मत्तरकस्यमःपेशरसेनापायन कारयमाणा
 पालयमाना महताऽऽइतत्तुत्यागीतवाविद्यतग्वीतलतालसुहियपनयदमुपदुप्रयादितरवेख दिव्यानि जोगजोगानि पुज्जाना विहरन्ति । चमरयासि
 नीचत्रोले असुरकुमाररेप्पी असुरकुमारराजानो परिवसतः काला मरानीलशोपो नीलगुटिका गवतातसीकुसुमप्रकाशाः विकसितशतपत्रनिर्मल
 श्रीतरच्छवाचमयमा गरुडायतयजुजुहमासा उपपिबन्धितामयासयित्वसज्जिमाघरोषाः पाशुरश्वाशसज्जलविमलमिसलदोषघनछरुगोरीरकुन्दी

त्यण वहवे असुरकुमारादेवा परियसति काला लोहितस्का विवीठा धयलपुष्पदता अस्त्रियकेसा धामेयकु
 ऋलधरा अहचवणाणलिप्तगता ईसीसिलिधपुष्पगसाह सुक्कमाइ वत्याइ पयरपरिहिया
 वय च पढम समहङ्गता विहय च असपप्पा नदे जोह्णे वहमाणा तलनगयतुत्तियवरजूसणनिम्मलानिर
 यमाणिरयणमन्नियनुया दसमुद्दामन्नियग्गहत्या चूळामणिविचित्रचिधगता सुरूवा महिद्धीया महज्जुडया म
 मायसा महव्वला महाणुजागा महासोस्का हारविराडयवत्या कवळयतुत्तिययन्नियनुया अगयकुळलमहगळ
 यलकसुपीढघारी विचित्रहत्यान्नरणा विचित्रमालामडलिमडला कल्लाणगपवरयत्तपरिहिया कल्लाणगपवर
 मल्लाणुलवणधरा नासरवोदी पलववनमालधरा दिव्हेण वयेण दिव्हेण गधेण दिव्हेण फासेण दिव्हेण सधय
 जेण दिव्हेण सठाणेण दिव्हाए इहोए विव्हाए जुहए विव्हाए पत्ताए दिव्हाए तायाए अस्त्रोए दिव्हेण एएण
 दिव्हाए लेसाए वसविसाठ उज्जीवेमाणा पत्तासेमाणा तेण तत्य साण २ नयणावाससयसस्साण साण २

स्वावक्ष्येपनाम शस्त्रानेन लोकास्वावक्ष्येपनामे । तत्रानु बहवा असुरकुमारा देवाः परित्वसन्ति । कासा लोहिताका विम्बोष्ठा पद्मसुप्यदस्ता च
 वित्तोष्ठा कामय (एकवर्कोबल्ल) कुवत्तपरा अद्वयनानुलिप्तमात्रा इवत्तिसप्रप्यप्रकाशानि अलङ्कितानि सुस्मानि ब्रह्माणि प्रवरपरिचामा
 बबह प्रयत्नं समतिष्ठाता द्वितीय वासमासा मध्ये यौवने वसमासा वसन्तश्रुतितवरनूषका निमलमर्दिरजमरिहतनुवा दसमुद्दामपरिहतायइत्याः
 पूजामविचित्रचिद्रुतताः सुकृपा महर्षिवाः महदुयुधाः महाबलाः महापुत्रावाः महापुत्राः हारविराडयवत्याः कवळयुतितस्तान्मितपु
 त्रा अहचवणमन्त्रसकालकवपीठधारिणो विचित्रहत्यान्नरणा निचिन्मालामोक्षिभक्तताः कल्लाणगपवरयत्तपरिहिताः कल्लाणगपवरमा
 लामुलोपमपरा प्रापुरवोदय (भापुरवरीराः) प्रलम्बवमवासापरत दिव्येन वर्त्तेन दिव्येन वर्त्तेन दिव्येन वर्त्तयत्येव दिव्येन च

परिसाण स्राण २ अणियाण स्राण २ अणियाहिर्वर्ण स्राण २ आयरस्कदेवसाहस्सीण अन्नेसि च वट्ठण
 जवणवासीण देवाणय देवीणय अणेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं जहिंत्त महत्तरंगत्त आहारिसरसेणावच्च कारे
 माणे पाळेमाणे महायाहनट्ठीयवाइयततीतलतुळियघणमुहगपठुप्पयाइयरवेण विट्ठाइ जोगजोगाइ नु
 जेमाणा विहरति । कहिण नत्ते ! दाहिणिस्सणाण अंसुरकुमारदेवाण पज्झापज्झत्ताण ठाणा पक्खत्ता ? कहिण
 नत्ते ! दाहिणिस्सणाण अंसुरकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! जवुदीवे २ मदरस्स पच्चयस्स दाहिणेण इमी
 सेरयणप्पज्जाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सयाहत्ताए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिंत्ता हेठावेग
 जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अठ्ठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिस्सणाण अंसुरकुमाराण देवाण देवी
 णय चोत्तीस जवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय तेण जवणा याहिं वहा अतो चउरसा सोचेव वण्ण
 जाव पळिरुवा एत्थण दाहिणिस्सणाण अंसुरकुमारदेवाण पज्झापज्झत्ताण ठाणा पक्खत्ता । तिसुवि लोगस्स

सामानिजसइखावां साव २ अयत्तिजत्तानां साव २ सोळपासामां साव २ अयमहिपीवा साव २ परिपदा साव २ अचिक्कारि
 यवीमामास्सरकदेवसइखावामन्थेपां च वट्ठना भवमवासिनां देवाना देवीना च अचिपयसं पुरपतित्वं खामित्वं जनेत्थ महत्तरकत्वमासेयसेनाप
 त्य च कारयमानाः पासयमाना महत्ताइतवृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतासत्तुळियपनसुदङ्गपटुप्रवादित्रवेण विव्वानि भोगमोमानि जुळ्ळामा विहर
 ति । कस्सिन् प्रवत्त । दाहिंविद्यासुरकुमारावा देवाना खानानि प्रज्जमानि, कस्सिन् प्रवत्त । दाहिंविद्यासुरकुमारादेवाः परिवसन्ति । गी
 तम । जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेतिहाः रवमन्नाया पृथिव्यामग्नीत्युत्तरयोजनत्रयतसइखल्लायामुपयेत्त योजनसइखल्लमुद्वीरोत्वाचस्ता
 देवं योजनसइखं वज्रयित्वा भण्ये अष्टसप्ततिभोजनसप्तसइखे एतेषु दाहिंवात्यानामसुरकुमारावां देवानां देवीनां च चतुर्लिंगं जवनावासयतसइ

स्याद्द्वै पवरपरिहिता वय च पठम समहृक्ताता विहयंच स्यसपक्षा नद्वै जीवणे वहमाणा तलन्नगयतुक्तिवप
 वरनूसणनिम्मलमणिरयणमक्रियन्तुया वसमुद्वामक्रियगहत्या चूळामणिविचिचिचवगता सुरुवा माहिहीया
 महज्जुया महायसा महसुल्ल महाजुजागा महासोस्का हारविराइयवत्या कळयतुक्रिययजियन्तुया स्यगदकुळ
 लमठगळतलकस्यपीठघारी विचिप्तहस्यान्नरणा विचिप्तमालामळिमळठा कक्षणगपधरवत्यपरिहिता कक्षा
 णगपवरमक्षानुलवणा ज्ञासुरयोदी पलवयणमालधरा दिव्वेण वस्येण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण
 सठाणेण दिव्वाए इहीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए ज्ञासाए दिव्वाए पहाए दिव्वाए अच्चीए
 दिव्वेण एएण दिव्वाए लेसाए वसविंसाए उज्जोयमाणा पन्नासेमाणा तेण तस्य साण २ नवणावाससयसहरसा
 ण साण २ सामाजियसाइस्सीण साण २ तावप्पीसाण साण २ लोगपालाण साण २ स्यगमाहिंसीण साण २

इ वरवद्वकालिवाचस्सदेवयो पुतवज्जिम्मोत्तरीतवसतपनीयरत्ततसतामुज्झा कळ्ळनपनअठ्ठाविकरमखिळिण्यवेद्याः वामेयज्जुवठकपराः
 अईवप्पनस्सिपणाः ईवदीवप्पीलग्नपुप्यप्रकाशानि चरंकिटानि सूस्मादि बळादि प्रवरपरिहिता बवव प्रववं ववविकाता द्वितीय चारंवासा
 अद्वैपीवने चरंमाणा तलजङ्गपतुडिपवरपूवचनिर्मसमिदिरवमकिंतपुसा एवमुद्गानविहतापइत्ताः पूठानिखिचिचिचिपुनताः सुकपा महिचिवा
 महपुद्गा महायसा महाबला नङ्गानुमावा महासुका हारोवराजितववः कळयतुडिपवप्पितपुसाः कङ्करजुवतवहनकतलवर्षीठवारिवो
 विचिप्तइकाप्ररकाः विचिप्तमालामौलिमुकुटाः कल्पाकप्रवरवक्कपरिहिताः कल्पाकप्रवरवासाभुसेयनाः ज्ञासुरयोप्यः प्रकळ्ळमल्लकाचराः
 दिव्वेण वर्येण दिव्वेण वण्वन दिव्वेण चरंजीन दिव्वेण कल्पाजल दिव्वेण ज्ञाया दिव्वेण ज्ञाया दिव्वेण ज्ञाया दिव्वेण ज्ञाया दिव्वेण ज्ञाया
 दिव्वेणानिवा दिव्वेण सयेव दिव्वेण कववया दव्वरिवापूछोत्तमानाः प्रकावववाणा येन तव चारं २ (ज्याने २) जळ्ळावाचवतवठककावे चारं २

जीयणसयसहस्रमाहसाए उवारि एग जीयणसहस्र उग्गाहिता हेठावेग जीयणसहस्र यज्जिज्ञा मज्जे
 अण्हस्ररिजीयणसयसहस्रे एत्यण उप्परिस्साण असुरकुमाराण देवाण देवीणय तीस जत्रणायाससयसहस्रा
 जवतीति मरुकाय तेण जवणा याहि वहा अतो चउरसा सेस जहा दाहिणिस्साण जाय विहरति, यली इत्य
 वइरोयणिदे वइरोयणराया परिवसह, कालि महानीलसरिसे जाय पनासेमाणे सेण तत्य तीसाए जवणा
 वाससयसहससाण सठीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपालाणं पचरह
 अगमहिंसीण सुपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिंवरह चउरह सठीण
 आयररुदेवसाहस्सीण अयंसि च यल्लण उत्तरिस्साण देवाणय देवीणय अण्हिवस्स पोरिवस्स
 जाय कुल्लमाणे विहरति । कहिण जेत ! नागकुमाराण देवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पससा, कहिण

पवतस्य सत्तरण एतस्य रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रवाहत्या । उपर्येक योजनसहस्रगवगाद्यापयक योजनसहस्र पजयित्वा
 मय्य ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अथ भीतराणामसुरकुमाराणा देवाना देवीना च त्रिशङ्खनावासशतसहस्राणि प्रवर्त्तन्तीति मयास्यातम् । तानि
 प्रवर्त्तानि अद्विर्भूतानि अन्तश्चतुराक्षि तप यथा दाकिणात्यवद्विहरन्ति । यली अत्र वइरोचनन्दो वइरोचमराजा परिवसति कालो महाभील
 सर्वज्ञो यावत्प्रकाशमान सत्र त्रिंशत् जवनावासशतसहस्रावि पष्ठिषय्याकसामानिकसहस्राणा त्रयस्त्रिंशत्ताया त्रयस्त्रिंशत्ताया चतुसा लोकपाला
 ना पञ्चानामयमहिंपीडा उपरिवाराणां तिसुषा परिपवा सप्तानामनीकाना सप्तानामनीकापिपलीना चतु पष्ठिकात्तररुदकदेवमसहस्राणामन्वेया
 च वइना भीतरिकाशामसुरकुमाराणां देवाना च देवीना चापिपस्य पुरोजातस्य यावत्तुर्वाणा विहरन्ति । क्षु भदन्त ! नागकुमाराणा देवाना
 पर्याप्तापपाशाना स्थानानि प्रवसन्ति, क्षु भदन्त । नागकुमारा देवाः परिवसन्ति । गीवम । एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशत

अस्मत्सर्वेन्द्रजागे, तस्यैव ग्रहवे दाहिणिष्ठा असुरकुमारदेवा देवीन् परिचसति काला लोहितरक्ता तहेव जाय
 भ्रजेमाणे विहरति, एव सस्य नाणियसु नवणवासीण, वमरे इत्य असुरकुमारिदे असुरकुमारराया प
 रियसङ्ग काले मद्दानीलसरिसे जाव पहासेमाणे सेण तस्य चउत्तीसाए नवणवाससयसहस्साण चउसठीए
 सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तावत्तीसगाण चउत्तह लोगपालाण पचत्तह अगमहिंसीण सपरिवाण
 तिउत्तह परिवाण सत्तह अणियाण सत्तह अणियाहिंवईण चउत्तह च चउसठीण आयरकदेवसाहस्सीण
 अन्नेसिं च यत्तण दाहिणिष्ठाण देवाण पञ्जापज्जाण ठाणा पयससा । कहिण जत्ते ! उत्तरि
 ह्याण असुरकुमाराण देवाण पञ्जापज्जाण देवाण पयसस उत्तरेण इमीसे रयणप्पजाए पुठवीए असीउत्तर
 परिवसति ? गोयमा ! जयुद्धीवे दीवे मवरस्स पयसस उत्तरेण इमीसे रयणप्पजाए पुठवीए असीउत्तर

आदि प्रवचोत्तरावत् । एतानि प्रवचानि वार्त्तुमानि अन्तश्चतुराक्षि सोच्येव अथतो यावत्प्रतिष्ठाया एतेषु दाहिण्यात्यानामसुरकुमारदेवानां
 पयोस्तापयोस्तानां स्वानानि प्रज्ज्ञानि । त्रिषोपि लोकास्वाकस्म्यजाने तत्रानु ग्रहो दाहिण्याया असुरकुमारदेवा देवस्य परिवसन्ति काला लोहित
 रक्तासदृशो यावत्प्रज्ज्ञाना विहरन्ति । एव सर्वत्र प्रावर्तीय प्रज्ज्ञानासिनां वमरो ऽत्र असुरकुमारेश्वरो असुरकुमारराजा परिवसति काले मद्द
 पास्तानां पञ्चानागपमहिंसीका सपरिवाराणां तिसृणां परिवर्तनं सामान्यवसिष्ठाकां अयस्मिन्ने त्रयलिंगद्वारा अतुका लोहित
 रक्तावामयेवा च अद्भुता दाहिण्यात्यानां तिसृणां परिवर्तनं सामान्यवसिष्ठाकां अतुका च अतुकासिष्ठाका लोहितरक्तावामयेव
 देवानां पयोस्तापयोस्तानां स्वानानि प्रज्ज्ञानि । अस्मिन्नु मद्दत्त । औत्तरा असुरकुमारा देवाः परिवसन्ति ? नीतम् । अन्तर्हीये द्वीये नन्वरक्त

जिज्ञा मज्जे अउठहत्तरिजीयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण देवाण चोयालीसं न्नवणावा
 ससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेण नवणा याहि वट्ठा जात्र पक्खिवा एत्थण दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण
 पज्झापाज्झाणा ठाणा पयस्सा, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्झाहत्तागे एत्थण बहवे दाहिणिस्त्राण नागकुमारा
 देवा परिवसति महिहिया जात्र विहरति । धरणे एत्थ नागकुमारिदे नागकुमाराया परिवसति महिहिए
 जाव पन्नासेमाणे सेण तत्थ चोयालीसाए न्नवणावाससयसहस्साण ढण्ह सामाणियसाहस्सीण तावन्नीसाए
 तावन्नीसगाण चउरह् लोगपालाण ढण्ह अगमहिसीण सपरिधाराण तिरह् परिसाण सत्तरह् अणियाण
 सत्तरह् अणियायाहिइण चउवीसाए आयरक्कदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च यत्तणं दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण
 देवाणय देवीणय अणेवच्च पोरयच्च जाय कुट्टमाणे विहरति । कहिण जंते ! उत्तरिस्त्राण नागकुमाराण दे

ववपित्था मय्येद्वससत्तियोजमशतसहस्से अत्र दाहिणात्यामां नागकुमाराणां देवानां चतुदात्वारिंशद्भवनावासेसतसहस्साणि प्रवन्तीत्याख्यातम् ।
 तानि प्रवन्तानि यच्चिदृशानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र दाहिणात्यामा नागकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रवृत्तानि । त्रिधापि लोकस्यासंख्ये
 यत्तानां अत्र यच्चो दाहिणात्या नागकुमारदवाः परिवसन्ति महाधिवा यावद्विहरन्ति । परथ यात्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमाराणां परिवसति
 महाधिबो यावत्प्रमत्ताशमान तत्र चतुदात्वारिंशद्भवनावाससतसहस्साणां पक्षां सामानिकसहस्साणां त्रयस्त्रिंशत् प्राप्यत्रिंशत्तमां चतुर्णां लोकपाशानां
 पक्षाभग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसुवा परिपदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकापिपतीनां चतुर्विंशत्यास्मरकदेवसहस्त्राणां मध्येषां च य
 दूनां दाहिणात्यामां नागकुमाराणां देवानां देवीनां च चापिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं यावत्पुर्वोणां विहरन्ति । कु नदन्त । कीत्तरिकाणां नागकुमाराणां
 देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रवृत्तानि । कु नदन्त । नागकुमारा कीत्तरिका देवाः परिवसन्ति । गौतम । अस्यद्वीपे द्वीपे मन्वरस्य पर्वत

ज्ञते । नागकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्यन्नाए पुठवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स
 याहह्माए उवरि एग जोयणसहस्सं वज्जिज्जण मज्जे अठह्मरिजोयणसयसहस्से एत्थण नागकुमाराण देवाण
 पज्जसापज्जसाण चुलसीडन्नयणावाससयसहस्सा हवतीति मरुकाय , सेण नवणा वाहि वहा अतो चउर
 सा जाव पन्निक्का तत्थण नागकुमाराण पज्जसापज्जसाण ठाणा पयससा । तिसुवि लोगस्स अयसखेज्जाइ
 ज्ञागे तत्थण यहंवे नागकुमारा देवा परिवसति, महिहिंया महज्जुइया सेस जहा ठिहिंयाण जाय विहरति
 धरणजूयाणदा एत्थ दुवे नागकुमारयाणो परिवसति महिहिंया सेस जहा ठिहिंयाण जाव विहरति । कहिण
 ज्ञते ! दाहिणिंसाणनागकुमाराण देवाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पयससा । कहिण ज्ञते ! दाहिणिंसा
 नागकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! जम्बूद्वीवे २ मंदरस्स पद्दयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्यन्नाए पुठ
 वीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सयाहह्माए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिंसा हेठावेग जोयणसहस्स व

बरलं बाहलावाउपरि एवं योजनसहस्रं वज्रयित्वा पुननये बहुसंति योजनसहस्रं तत्र नागकुमाराणा देवाना यथाप्रापयोसानो बभूवुर्द्वी
 ति यवनावाक्यतवह्मादि प्रवन्तीत्याख्यातम्, तानि प्रवन्तानि निर्दिष्टानि कालबभूवुर्द्वीति यावत्प्रतिक्रियादि तत्र नागकुमाराणा यथाप्रापयो
 साना खानानि प्रपन्नानि । त्रिद्विपि लोकलोकावसेयानां तत्र बभूवो नागकुमारदेवाः परिवसन्ति, महिंइका महापुतिवाः क्वं पचीचिकाना
 यावद्बिहरन्ति । परकमुतावन्ता वच इो नागकुमारराजानी पारवसतिः महिंइको प्रेव यचौपिकाना योवद्बिहरन्ति । इ वदन्त । दाहिंकात्वं
 नागकुमाराणां देवानां यथाप्रापयोसानां खानानि प्रपन्नानि इ वदन्ते । दाहिंकात्वं नागकुमारदेवाः परिवसन्ति । नतिन । जम्बूद्वीचद्वीप
 मन्दरस्य यन्तल दाहिंकात्वं एतन्ना एवप्रवपुचिन्ता जम्बूद्वीचद्वीपस्य मन्दरस्य योजनसहस्रं योजनसहस्रं योजनसहस्रं योजनसहस्रं

पञ्जाज्ञाण ठाणा पयस्य । तिस्रवि लोगस्स अस्सखेज्जहन्तागे, तत्थण बह्वे सुवन्नकुमारा देवा परिवसति
महिद्धिया सेस जहा ण्हियाण जाव विहरति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थं दुवे सुवन्नकुमारिदा सुवन्नकुमार
रायाणे परिवसति महिद्धिया जाव विहरति । कहिण भते ! दाहिणिज्ञाण सुवन्नकुमाराण पञ्जाज्ञापञ्जाज्ञा
ण ठाणा पयस्य । कहिण भते ! दाहिणिज्ञा सुवन्नकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा । इमीसे जाव मज्जे
अच्छहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणज्ञाण सुवन्नकुमाराण अछत्तीस भवणायाससहस्सा हवतीति
मस्काय, तेण नयणा याहि बहा जाव पठ्ठिवा, तत्थण दाहिणिज्ञाण सुवन्नकुमाराण पञ्जाज्ञापञ्जाज्ञाण
ठाणा पयस्य, तिस्रवि लोगस्स अस्सखेज्जहन्तागे, एत्थण बह्वे सुवन्नकुमारा देवा परिवसति । वेणुदेवे
इत्थं सुवन्निदे सुवन्नकुमारराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण । कहिण भते ! उत्तरिज्ञाण सुवन्नकु
माराण देवाण पञ्जाज्ञापञ्जाज्ञाण ! ठाणा पयस्य । कहिण भते ! उत्तरिज्ञा सुवन्नकुमारा परिवसति ? गोय

अस्सखेयप्रागमय बह्वः सुपर्णकुमारा देवाः परिवसन्ति मरुधिषाः श्रेय यथोपिषानां यावद्विहरन्ति वेणुदेवो वेणुदासीष अत्र ही सुपर्णकुमा
रेन्द्री सुवन्नकुमाररात्रानीं यावत्परिवसत मरुधिषो यावद्विहरति । ह प्रदन्त । दाक्षिणास्थाना सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्या
नानि प्रदन्तानि । ह प्रदन्त । दाक्षिणात्याः सुपर्णकुमारदेवाः परिवसन्ति ? गोतम । मतस्या यावन्मध्य ऽपसमतिर्योजनक्षतसहस्र मत्र दाक्षिणा
त्यानां सुपर्णकुमाराणामष्टत्रिंशद्भवनावासघातसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि प्रवर्तानि दाक्षिणात्यानि यावत्प्रतिकूपादि तत्र दाक्षिणात्यानां सु
पर्णकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रदन्तानि त्रिष्वपि लोकास्सर्वस्यैव जगं अत्र यद्भवः सुपर्णकुमारदेवाः परिवसन्ति । वेणुदेवोऽत्र सुपर्णकु
सुपर्णकुमारराणां परिवसति । श्रेय यथा नामकुमाराणां । ह प्रदन्त । भीतरिणाणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रद

याण पञ्जस्रपञ्जस्राणं ठाणा पञ्जस्रा, कंहिण नते ! उत्तरिस्त्रा नागकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा !
 जषूदीवे ? मवरस्स पव्वमस्स उप्परेण इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए स्यसीउप्परजोयणसयसहस्सयाहस्साए उ
 वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिस्त्रा हेठावेग जोयणसहस्स वज्जिस्त्रा मज्जे स्यठहप्परिजोयणसयसहस्से एत्यण
 उप्परिस्त्राण नागकुमाराण देवाण चप्पलीस नवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्कायं, तेण नयणा याहि
 यहा सेस जहा दाहिणिस्त्राण जाव विहरति, नूयाणठे इत्य नागकुमारिदे नागकुमारराया परिवसड महि
 हिण जाव पन्नासेमाणं सेण तस्य चत्तालीसाए नयणायाससयसहस्साण स्योदेवप्प जाव विहरड । कंहिण
 नते ! सुवस्सकुमाराण देवाण पञ्जस्रापञ्जस्राण ठाणा पञ्जस्रा । कंहिण नते ! सुवस्सकुमारा देवा परिवस
 ति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए जाव एत्यण सुवस्सकुमाराण देवाण वायप्परिजयणायाससय
 सहस्सा हवतीति मस्काय, तेण नयणा याहि यहा जाव पण्डिता तस्यण सुवस्सकुमाराण देवाण पञ्जस्रा

न पत्तरेव एतस्मा रजप्रभायाः पृथिव्या यक्षीस्तुतरयोऽननस्रतस्रस्त्राया उपर्येवं योऽननस्रस्त्राया पञ्जस्रा योऽननस्रस्त्रं वक्ष्यित्वा
 ब्रह्मेहसप्ततियोगनस्रतस्रस्त्रे च त्रीतिरिकाणां नामकुमाराणां देवानां चतुष्टयादिभिर्यवनाबाधयतश्चक्षुषि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि प्रब्रूया
 नि ब्रूयित्तानि शेषं यथा ब्रूयित्वात्यानां यावद्ब्रूयन्ति । नूबानन्तोत्र नागकुमारान्तोत्रो नामकुमारराया परिवसति । अर्द्धदेवो यावत् प्रकाशयन्
 न च तत्र चतुष्टयादिभिर्यवनाबाधयतश्चक्षुषां यावद्ब्रूयन्ति । न मदन । सुपवस्सकुमाराणां पर्वोपाययोऽनामो स्त्वानां प्रब्रूयानि च प्रब्रूयन् ।
 सुवस्सकुमारा देवाः परिवसन्ति ? नोतव । एतस्मा रजप्रभायाः पृथिव्या यावद्न सुपवस्सकुमाराणां देवानो द्विवसन्ति ब्रह्मनाबाधयतश्चक्षुषि अन्य
 नोतीत्याख्यातम् । तानि प्रब्रूयानि ब्रूयित्तानि द्वावदशतिस्रस्त्राणि च चतुष्टयकुमाराणां देवानां चतुष्टयादिभिर्यवनाबाधयतश्चक्षुषि । निब्रूयानि की

त्रेष्टुमियथाहणे पन्नजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उन्नरिस्त्राण जाव विहरति, कालाश्चसुरकुमारा नागाउद्वहीय
 द्रुतादोवि । वरकणगणिहसगौरा होतिसुवस्त्रादिसार्थणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ता विज्जुश्चगीयहोति
 दीवाय । सामापियगुवस्त्रा वाउकुमारामुणेयस्त्रा ॥ २ ॥ च्चसुरेसुहोतिरत्ता चिलिद्धुप्फप्पजातहाउद्वही । स्या
 सासयधसणघरा होतिसुवस्त्रादिसार्थणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जुश्चगीयहोतिदीवाय । सज्जाणु
 रागवसणा वाउकुमारामुणेयस्त्रा ॥ ४ ॥ कहिण जते ! वाणमतराण देवाण पज्जाप्तापज्जात्ताण ठाणा
 पप्पत्ता, कहिण जते ! वाणमतरा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पजाए पुढवीए रयणमयस्स
 कळस्स जीयणसहस्सवाहस्स उवरि एग जीयणसय उग्गाहिता हिठावि एग जीयणसय वज्जिप्ता मज्जे
 च्छठसु जीयणसएसु एत्थण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जाते नोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति
 मस्काय तेण नोमेज्जा नगरा वाहि बहा च्छतो चउरसा च्छहे पुस्करकब्बियासठाणसंठिया उक्किन्नतरयि

रिवा यावद्विहरन्ति । कासाचसुरकुमाराः नामोदधीपाबदुरौदरीस्तः । वरकणमणिक्कसगौराः भवन्ति सुपणविकस्सनिता ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ता यि
 दुरङ्गनीचनन्तिहीपाद्य ॥ इयामाः प्रियङ्गुवर्णाः वायुकुमाराराधकातव्याः ॥ २ ॥ च्चसुराजवन्तिरक्काः विस्तीर्णप्रपुप्यप्रमास्तथोदपयः ॥ आशाश्चवसम
 पराः भवन्ति सुपणविकस्सनिता ॥ ३ ॥ नीलानुरागवसना विद्युदरङ्गीवज्रवत्सिद्धोपाद्य ॥ सग्यासुरागवसना वायुकुभाराधनुमातव्या ॥ ४ ॥ क
 मदन्त । वाणव्यन्तराणा देवाना स्यान्नामि प्रज्जासन्ति, ज्ञ जदन्त । वाणव्यन्तरा देवाः परिवसन्ति ? गोतम । एतस्या रत्नप्रमायाः पुण्यव्या रत्नमय
 स्य कारवत्स्य पोन्नशतसहस्रयाधत्तस्य उपपर्येकं पोन्नसहस्रं वज्रयित्वा मज्जे उच्चसु योन्नसहस्रेषु च यत्र यामव्य
 न्तराणां देवाना विद्यमसदपयानि नोमेष्टमगरावाशद्यतसहस्रसूचि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नोमिया मगरा वद्विन्तीता अस्सद्यतुरया अथ पुस्करकणिका

मा ! इमीसे रयणप्यन्नाए आखं एत्थण उप्परिखोण सुवसंकुमारोणं यत्तद्धयां ज्ञाणिया तथा संसाणयि चोद
सरह इदवाणं ज्ञाणियथा नवर नवणनाणत्तं इदोणनाणत्तं यत्थेण नाणत्तं परिहाणनाणत्त च इमाहि गाहाहि
अणुगतत्तं—बोवठीअसुराण बुलसीतीबैवहोडनागाण । यावत्तरिसुवस्से वाउकुमाराणत्तअउई ॥ १ ॥
दीयदिसाउदहीण विज्जुकुमारिदयणियमग्गीण । त्तरहपिजुवलयण तावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ बोप्पी
सावोयाला अठप्पीसचहाइसयसहस्साइ । पसाचत्तालीसा दाहिणत्तहोतिनवणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा
बोप्पीसबेवसयसहस्साइ । तायालाठप्पीसा उत्तरत्तहोतिनवणाइ ॥ ४ ॥ चउसठ्ठीसठ्ठीसत्तु त्त्वसहस्सात्त
अत्तुरवजाण । सामाणियाउएए चउग्गणाआयारत्तकात्त ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहवे पुंदवहरिकत्तअग्गिसोहेय ।
पुत्तेजलक्केय अमिययेलबेयघोसेय ॥ ६ ॥ बालिन्नुयाणदेवे पुदालीहारिस्सहेअग्गिमाणाणययिसिठे । जलप्प

सावि, ॥ प्रवृत्त । शीतरीकाः सुपुष्पदुन्दुभाराः पारिवर्तन्ति १ भीतम् । एतस्या रजप्रप्राया यावत् यत्र शीतरीकायाः सुपुष्पदुन्दुभाराणां वसन्ति ता न विता तथा जवाकासपि बहुदैवाना मित्राकासपि प्रवृत्तत्वा बहव प्रजनमानास्त्वन्निष्प्राया भानात्वं जवाकासात् पारिवानभाभात् जैताप्रिनीचा निरनुमन्यन्तम् । यतः बहिरवसुराणां चतुरङ्गीतिरेव प्रवर्तितानामागाम् । द्विसप्ततिः सुपुष्पं बायुदुन्दुभारेण यजमानं ॥ १ ॥ द्विपारिदुन्दुभीर्मां विपुल्युन्दारे न्न शीतिलमग्निमान् यजामपिपुल्लकाणां बद्धसप्ततितमबतवश्चक्षुम् ॥ २ ॥ चतुर्लङ्घयत्तुल्यत्वारिकात् बह्वङ्गिजबलवसिज्जतवश्चक्षुम् । पञ्चाङ्गवत्तुल्यत्वारिकात् शक्तिवतो जवाकासप्रवमानि ॥ ३ ॥ चिद्विचत्वारिकात् चतुर्लङ्घयत्तुल्यत्वारिकात् । यद्वत्वारिचरवद्वाच्यं दुग्धरत्नोन्मत्तिभयवामि ॥ ४ ॥ चतुः सताष्टोत्तमं बद्धं सहस्राक्षचतुरङ्गमीशान् । शानाभिषाजुंयुतं चतुर्मुखाशालरकाजुं ॥ ५ ॥ यमरचरकीतया वेपुदेववदिकात्वाग्निशिव्याः । पुत्रीकं तवाप्योता मिमैकस्यचरोपमा ॥ ६ ॥ अक्षिपूयामैमैकेपुत्राकि हरिकेशेन्मिषाक्यविविधं ॥ अज्यमयीः अभिषाजकः सप्तलङ्घयत्तुल्यत्वारिकात् ॥ ७ ॥ अथ

खेज्जहन्तागे तस्यण बह्वे वाणमतरा देया परिवसन्ति तज्जहा—पिसाया नूया जस्का रक्कसा किन्नरा किंपुरि
 सा नूयगवतिणोय महाकाया गधहृगणा य निउणगधहृगीतरहणो शृणवणियपणयन्नियइसियाइयन्नूयवा
 इय कट्टीय महाकदीय कीहणपयगदेया ॥१॥ ववलचवलचित्तकीलणदयप्पिया गहिरहसियपिया गीयणि
 च्चरती यणमालमेलमउलकुलसच्छदयिउच्चियान्नरणच्चानूसनधरा सद्योयसुरन्निकुसुमसुरइयपलवसोहत
 कतवियसितचित्तवलमालरइयवच्छा कामकामा कामकयदेहधरा नाणाधिहयन्नरागवरयत्यललतचित्तचित्त
 गणिवसणा विधिहवेसीणेयत्यगहिंयवेसा समुइयकउप्पकलहकेलिकीलाहलप्पिया हासयोलवज्जला श्यसि
 मीगसरसत्तिकुतहत्या शृणगमणिरयणविधिहनिजुत्तविचित्तचिधगयासुकथा महिहिया महज्जतिया महायसा
 मन्नायला मन्नाणुज्जागा महासोरका हारविराइययच्छा कण्ठगतुक्रिययन्नूया मगयकुल्लमठगजुयलक
 शपीठधारी विचित्तहत्यान्नरणा विचित्तमालामउल्लक्षणगपवरवत्यपरिहिया क्ल्वाणगपवरमक्ष्माणुलेवणध

राचसा किन्नराः किम्पुहपा पुल्लमपतयय महाकाया नन्धवंपसाद्य निपुणगन्धगीतरतयाः, बलपलीयल्लयन्त्री श्रयिवादीवेवज्जन्तवादी च । कम्पदीप
 पयवन्दी बोएणनीचेवपतकय ॥ १ ॥ यतेष्टी देवतिष्ठायाः, चतचपसाचित्तकीलमन्त्रवाययाः गम्भीरइसितप्रियाः गीतनुत्तरतयो यममासापीठमज्जु
 टकुल्लसल्लच्छन्दयिजुवितान्नरकचानूयपपराः सर्वपुनसुरन्निपुमसुरचित्तप्रसव्यस्त्रीतमामक्काकविशतविद्ययममासराचितवससः कामकामाः
 कामकपदसरा नामाविचयववरागवरवच्छविन्नविज्ञा (ददीप्पमान इत्यर्थः) निवसमा विविपदेगीनेपय्यगृहीतयेयाः समुदितबन्धपकसद्वेलेकी
 साइलप्रिया वासवोत्तयुत्ता चासिमुट्टराक्किज्जुल्लसल्लता यमकमखिरत्तावतिथयिपुक्कविचित्तचिपुगताः सुकपा मच्चिक्का मच्चामुत्तिका गधदाशयो
 महत्ता मच्चानुभावा महाकास्या हारविराजितवससः कटकुट्टाटवलाम्मिमतज्जाः बह्वेदेकुल्लससुगल्लदुगल्लकवपीठपारिबो विविचइसात्ररणा

उलगनीरस्वायफलिहा पागारहालयकत्राऊत्तीरणपणिदुवारदेसनागा जतसयगिघमुसलनुसठिपरिवारिया अ
 उज्जा सया जया सया गुप्ता अऊयालकुठरइयअऊयालकयवसुमाला खेमा सिवा किकरामरठओवरस्कि
 या लाउझोइयमहिया गोसीससरसरसचवणदधुरदिसुपचगुलितला उवाचियचवणकलसा चवणघनसुकयती
 रणपणिदुवारदेसनागा असासोसप्तविउलयहयगवारियमस्रदामकलाया पचवन्नसरससरनिमुक्तापुष्पपुजोव
 यारकलिया कालागुरुपवरकदुरुक्कतुरुक्कधूमधमथतगधुधुयानिरामा सुगधयराधिया गधवाहिनुया अच्छ
 रगणसघयिकिआ दिव्वतुनियसद्वसपन्नादिया पऊगमालाउलाजिरामा सधुरयणमया अच्छा सरहा लठा
 घठा मठा नीरया निम्मला निपका निक्ककऊया सप्यना ससिरीया सउज्जीया पासादीया वरिसणिज्जा
 अजिरया पणिदुवा एत्थण याणमताराण देयाण पज्झापाज्झाण ठाणा पसुत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्स

ईत्यानचलिता शरबीवीरविपुसनन्नीरवातकलिकाः आकाराहासकपाटोरबप्रतिगुरदेसमानाः यचस्रतमिमुससनुअरिहपरिवारिता आयोष्याः
 उदावयाः वडागुमाः अष्टवत्वारिष्टरकोष्टकरिचिताहचत्वारिष्टरकतवडालाः चेनाः शिवाः किङ्कुरामरदवकापरावताः साउझोइयमहिताः गोभी
 ववरवरचकवन्गरदरदणपन्नाकूलितता उपचितचन्मनकलसाः चन्मनपटदुजततोरबप्रतिगुरदेसनागा आबकोत्तुअविपुलवृत्तअप्यारियमास्वदा
 नकसायाः पन्मवसरवरुजिमुक्कपुष्पकोपचारकलितः कासागुदप्रवरकवन्नुहनुहनुहपमपायनामन्मभूमजिराभाः सुमन्मवरनन्मिताः नन्म
 वतिनुता अण्ठोमकककुविबीबी दिव्वतुहितमिनादवप्यकलितः पमाकनासाकुसाविराभाः चर्वरजमया कच्छाः स्रहा स्रहा बीरवको
 निवता विप्यदुना निक्ककऊयायाः सप्रसाः वकीकाः सोपोताः आवादीया दज्जनीया चानिकयाः अतिकया चच चानन्मकराकी देवानी यवीला
 यपीसुमानी आनामि मचहावि । विववि (कावेनु) कोऊकाचहुपुआधं सच चरको चानन्मन्तर देवाः परिववविचि कयथा-विवाचा-भूला वडा

स्वेज्जहन्नागे तत्त्यण अहंवे वाणमतरा देवा परिवसति तज्जहा—पिसाया नूया जस्का रक्कसा किंकरा किंपुरि
 सा नुयगवतिणोय महाकाया गघह्वणा य निउणगधह्वगीतरडणो झणवस्सियपणधन्मियइसियाइयन्नूयवा
 इय कट्ठीय महाकट्ठीय कोहकपयगदेवा ॥१॥ चवलचवलचित्तकोलणदवप्पिया गहिरहसियपिया गीयणि
 झरती यणमालामेलमउलकुलसच्छदधियउस्सियाजरणचारुन्नसणधरा सखीयसुरज्जिकुसुमसुरइयपलवसीहत
 कतवियसितचित्तयन्नमालरइयवच्छा कामकामा कामरुवदेहधरा नाणाविहयन्नरागधरवत्यललतचित्तचित्त
 गणिवसणा विविहदेसीणेत्यगहियवेसा समुडयकडप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासयोलवज्जला श्रसि
 भोगरससिक्तुतहत्या श्रुणगमणिरयणविविहनिजुत्तचित्तचिधगयासुरूवा महिहिया महज्जुतिया महायसा
 महायला महाणुजागा महासोस्का हारविराडययच्छा कण्णतुण्णिययन्नूया मगयकुलमठगजुयलक
 खपीठधारी विचिप्तहत्याजरणा विचिप्तमालामउलिकक्षाणगपवरवत्यपरिहिया कक्षाणगपवरमत्ताणुलेवणघ

रावसा किंकरा किंमुसपा पुज्जगपतयय महाकाया गत्यवेगयाय निपुणगत्यवगीतरतयः, अरुपकीपणपणो श्रुपिवादीवेवज्जुतवादी च । कस्सीय
 मराकन्दी कोरुगळीवेवपतयय ॥ १ ॥ यतेही देवविषयाः, जसपसचित्तकोलमद्रविषयाः मस्मीरइसियाप्रिया गीतनृत्यरतयो वममासापीठमुज्जु
 टकुलसलस्यद्विकुर्वितानरयचकपूयधराः सर्वर्तुवसुरज्जिकुसुमसुरचित्तप्रसम्यशीप्रमानकालविकांसितचित्तजनमासरचित्तवसुः कामकामाः
 कामरुपवेधरा नामाविषयरगवरयकावित्तिसिद्धिः (ददीप्यमान इत्यर्थः) निवसना विविषयेषीनेप्यगहृतवेयाः समुदितवन्त्यवसदन्नेति
 लाइसप्रिया शसवोलवपुला यस्मिन्नुदरसिक्तुलइसा यमकमखिरत्ताविविचिनियुत्ताविकप्रचित्तगताः सुखया महहिना मङ्गयुतिका मङ्गयुतयो
 महइसा महानुभाव महशाल्या हारविराजितवसुः अटकट्टिटवकास्मितज्जुयाः अङ्गुरकुसुमतसुहरडगुलसकखपीठधारियो विचित्रइलाज्जरा

ललगन्त्रीरस्वायफल्लिहा पागारहालयकवाक्रीरणपक्रिद्वारदेसजागा जतसयग्धिमुसलन्नसहिपरिवारिया झु
 उज्जा सया जया सया गुप्ता झुनयालकुठरहयझुनयालकयधमाला खेमा सिवा किकरामरतक्रोवररिक्
 या लाउझोष्ठयमहिया गोसीसरसरस्रचदद्वरविश्वपचगुलितला उवचियध्वंदणकलसा चदणधनसुकयतो
 रणपक्रिद्वारदेसजागा झ्यासस्रोसस्रविउलग्रहवर्गारियमस्रदामकलाया पचवस्रसरसुरन्निमुक्तापफपुजोव
 यारकलिया कालागुरुपधरक्कुतुरुक्कुधूमधमधतगधुधुयान्निरामा सुगधयरगधिया गधवाहेनूया झुच्छ
 रगणसधयिकिक्का विस्सुक्रियस्रस्रपन्तदिया पन्नागमालाउलाज्जिरामा स्रसरयणमया झुच्छा सरहा लठा
 घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्कककच्छाया सप्पत्ता ससिरीया सउज्जोया पासादीया वरिसणिज्जा
 झुन्निरूया पक्रिक्का पल्लय धाणमतराण देयाण पज्झप्तापज्झाणं ठाणा पयात्ता । तिसुवि लोगस्स झुस

बत्थानवस्त्रिता शर्वाकर्त्तरविपुलनभीरकालवस्त्रिताः प्राकाराहासकपाटतोरेवप्रतिहारदेवभावा यशस्ततमिमुससमुच्चविहपरिवारिता जायोप्याः
 सदाजयाः सदागुमाः षट्पत्तारिहाकोष्ठकरविशारुपत्वारिहस्तकतवज्जालाः शेमाः झिक्काः विक्कुरारनरदवहोपरिहताः साउझोष्ठयमहिताः मोक्षी
 ववरवरकचपन्नदरदक्षपन्नाकुलितला उपचितचपन्नकलसाः चपन्नचट्टसुस्ततोरेवप्रतिहारदेवभावा कारत्तोत्सुक्कविपुलस्रस्रव्यारियमास्वदा
 नकलायाः पचवस्रसरसुरन्निमुक्तापफपुजोपचारकमिताः कालागुरुपधरक्कुतुरुक्कुधूमधमधतगधुधुयान्निरामा सुगधयरगधिया गधवाहेनूया झुच्छ
 वत्तिन्नुता चप्परोवकस्रुविबीर्षी दिक्कवृत्तमिमादव्यवन्विताः पत्ताकवासाकुलान्निरामाः चवेरवज्जया चप्पा स्रहा स्रहा पूहा पूहा भीरज्जो
 निवसा निप्पन्ना निक्कककच्छायाः सप्पत्ताः चप्पीकाः सोपोताः प्रासादीया स्रसिरीया सउज्जोया चद वानज्जकाराकर्षी देवानो चयोता
 पयोहार्षा झावधि प्रज्झाणि । चिक्कपि (ज्ञानेदु) कोठकाचकुपुजानं चद चदको वानज्जकारा देवाः चरिक्कवत्ति कयथा-विधाया जूला चदा

रयणामयस्स कस्स जीयणसहस्सथाहत्तस्स उधारि एण जीयणसय उग्गाहिता हिठावेग जीयणसय वज्जि
त्ता मज्जे श्रुत्तसु जीयणसएसु एत्थण पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा ओमेज्जा नगरावाससयसहस्सा पण्डि
न्नवतीति मस्काय तेण ओमेज्जा नगरा थाहि वहा जहा ठहिठ न्नयणवसुत्तं तहा न्नाणियधो जाव पण्डि
वा, एत्थण पिसायाण देवाण पज्जाप्तापज्जाप्ताण ठाणा पण्डिता, तिसुवि लोगस्स श्वसखेज्जाइन्नागे तत्थण
यहये पिसाया परिवसति महिहिया जहा ठहिठिया जाव विहरति । कहिण न्ते ! दाहिणिस्साण पि
इदा पिसायरामाणो परिवसति, महिहिया महज्जइया जाव विहरति ? गो० ! जयदीवे २
सायाण देवाण ठाणा पण्डिता । कहिण न्ते ! दाहिणिस्सा पिसाया देवा परिवसति ? गो० ! जयदीवे २
मदस्स पण्डयस्स दाहिणंण इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए रयणामयस्स कठस्स जीयणसहस्सवाहत्तस्स उधारि
एण जीयणसय उग्गाहिता हिठावेग जीयणसय वज्जिप्ता मज्जे छुत्तसु जीयणसएसु एत्थण दाहिणिस्साण

[illegible]

रा नासुररथोदी पलवधवणमालधरा दिव्येण वक्त्रेण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्येण सन्धानेण दिव्याए इ
 ह्रीए दिव्याए जूर्हए दिव्याए पन्नाए दिव्याए एच्छायाए दिव्याए अस्त्रीए दिव्येण एरण दिव्याए छेस्साए दसदि
 साठ उज्जीवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तस्य साण२ नोमेज्जाणगराधाससयसहस्साण अस्सस्त्रिज्जाण साण २
 सामाणियसाहस्सीण साण२ अगमहिस्सीणं साण२ सपरिवाराण साण२ अणियाण साण२ अणियाहिअ
 ईण साण २ अयस्सकेयसाहस्सीण अस्सुसि च अक्खण याणमतराण देवाणय देवीणय अहावेवच्च पोरेयच्च
 सामिन्न नहिंत्त महत्तराण्ण साणार्हसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महायाहनहगीयवाइयततीतलत्ताल
 तुक्किधणमुइगपट्ठप्पवाइयरवेण दिव्याइ नोगनोगाइ नुजमाणा विहरति। कहिण नत्ते! पिसायाण देवाण
 पज्जसापज्जसाण ठाणा प०। कहिण नत्ते! पिसायादेवा परिवसन्ति? गो०! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए

विचित्रमाणाभुक्कुटाः कस्याश्चक्रप्रवरकपरिहितः कस्याश्चक्रप्रवरमास्यानुलेपनपरा आसुरबोन्द्याः प्रसस्त्ववममालपरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गधे
 न दिव्येन रथोद्दि दिव्येन संज्ञानेन दिव्यया अस्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रजया दिव्यया क्वायया दिव्येनाचिया दिव्येतिनेन दिव्यया सेइय
 या इव दिव्य दद्योतपन्तः प्रजासयपन्तः तत्र स्त्रियां २ मीमेयनगरावाससप्तसहस्राको अश्वस्त्रेयानो स्त्रियां २ सामानिकतइत्ताका स्त्रियां अयमदि
 यीकां सपरिवाराकां स्त्रियां २ अनीकानां स्त्रियां २ अनीकाचिपतीना स्त्रिया २ आत्तरुद्धदेवसहस्राकामस्त्रेयान् अङ्गुना आनयन्तराका देवानो दे
 वीनाम्नाचिपत्यं पुरोवर्तित्वं स्नामित्वं जगृत्वा मत्तरकालमाशेषरत्न सेनापतित्वं कुञ्चः पालयन्तो अइवाइतस्यस्त्रीतकादिचतस्त्रीतस्तत्तास्तुटित
 यनइरुपटुप्रकारितरवेका दिव्यानि प्रोक्तामोनानि पुक्कातो विहरन्ति। अत्र दत्तः। पिच्छाचामी देवानो पयोसापर्योमाना स्थानानि प्रकृतानि अत्र
 इत्य। पिच्छाया देवाः परिचरन्ति? नोदन्। कस्मा रजसकावसः पूर्विका रजसपक्व कावका योजनलवका इत्यस्त्रोपमं योजनलवकावका

रयणामयस्स कस्स जीयणसहस्सयाहस्स उयारि एग जीयणसय उग्गाहिता हिठावेग जीयणसय बज्जि
 त्ता मज्जे श्युठसु जीयणसएसु एत्यण पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा नोमेज्जा नगरायाससयसहस्सा
 न्नवतीति मस्काय तेण नोमेज्जा नगरा वाहि घटा जहा ठहिठे न्नयणवसुठे तथा न्नाणियद्यो जाव पक्रि
 या, एत्यण पिसायाण देवाण पज्जात्तापज्जात्ताण ठाणा पक्खत्ता, तिसुवि लोगस्स श्यसखेज्जाइन्नागे तत्यण
 यह्वे पिसाया परिवसति, महिहिया जहा ठहिठ्या जाव विहरति, काला महाकाला इत्य दुवे पिसाय
 इदा पिसायरायाणो परिवसति, महिहिया महज्जुइया जाव विहरति ? गो० । जवूदीवे २
 सायाण देवाण ठाणा पक्खत्ता । कहिण न्ने ! दाहिणिस्सा पिसाया देवा परिवसति ? गो० । जवूदीवे २
 मद्दरस्स पद्दयस्स दाहिण्ण इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए रयणामयस्स कस्स जीयणसहस्सयाहस्स उवारे
 एग जीयणसय उग्गाहिता हिठावेग जीयणसय बज्जिन्ता मज्जे श्युठसु जीयणसएसु एत्यण दाहिणिस्सा
 मद्दरस्स पद्दयस्स दाहिण्ण इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए रयणामयस्स कस्स जीयणसहस्सयाहस्स उवारे

एग जीयणसय उग्गाहिता हिठावेग जीयणसय बज्जिन्ता मज्जे श्युठसु जीयणसएसु एत्यण दाहिणिस्सा
 मद्दरस्स पद्दयस्स दाहिण्ण इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए रयणामयस्स कस्स जीयणसहस्सयाहस्स उवारे
 एग जीयणसय उग्गाहिता हिठावेग जीयणसय बज्जिन्ता मज्जे श्युठसु जीयणसएसु एत्यण दाहिणिस्सा
 मद्दरस्स पद्दयस्स दाहिण्ण इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए रयणामयस्स कस्स जीयणसहस्सयाहस्स उवारे

पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा ओमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति मरुकाय , तेण नवणा जहा
 ठहिंठ नयणवखत्तुं तहेय प्राणियव्वो जाय पफिळ्ळा एत्यण दाहिणिस्साण पिसायाण देवाण पज्जाप्पज्जा
 ताण ठाणा पखत्ता । तिसुवि लोगस्स सुसखेज्जाहन्नागे तत्यण यव्वे दाहिणिस्सा पिसाया देवा परिवसति
 महेहिंठिया जहा ठहिंठिया जाव विहरति काले जत्य पिसायहुद पिसायराया परिवसति महेहिंठिण जाव पन्ना
 सेमाणे सेणं तत्य तिरियमसखेज्जाण ओमेज्जा नगरावानसयसहस्साण चउरुह सामाणियसाहस्सीण चउरुह
 सुग्गमहिंसीण सपरियाराण तिरुह परिसाण सत्तरुह सुणियाण सत्तरुह सुणियाहिंठुण सोउत्तरुह सुय्यर
 स्कंदेयसाहस्सीण सुन्नेसिच यत्तुण दाहिणिस्साण यागमत्तराण देवाणय देवीणय सुहेचत्तु जाय विहरति ।
 उत्तरिस्साणं पुच्छा गो० ! जहेय दाहिणिस्साण यत्तुया तहेव उत्तरिस्साणपि नत्तर मदस्स पट्टयस्स उत्तरे
 ण महाकाले जत्य पिसायहुदे पिसायराया परिवसति जाय विहरति एव जहा पिसायाण तहा नूयाणपि

तियमसखेज्जाणि ओमयज्जनगरावाससहस्साणि प्रवत्तीति मयाक्यातम् । त ओमेया (इत्यादि) यथोत्पत्तो प्रवत्तवर्त्येन सत्तेव प्रवित्तव्यो या
 वरप्रतिरूपा एव दाहिवात्यानां पिडावात्यानां देवानां पर्वोसापर्वोसाणा त्वानानि प्रवृत्तानि , त्रिद्विपि लोकस्यादृश्यमान सत्तव्वदो दाहिका
 त्याः पिडाया देवाः परिवसन्ति , महाहिंठा यावदायमावत्तल सत्त तिर्यगसखेयानां ओमेयनगरावासावत्तलवाद्यानां चतस्रणा कामाणिचत्ताए
 लीनां चतुर्धामयमहिंसीनां सपरिवाराणा तिस्रणा चत्तरेण समानामनीकानां समानामनीकाचिपतीना मोल्लयाणात्तरकवेवकाहलीकाल्लोका
 एव चत्तरेण दाहिवात्यानां वागल्लकराणां देवानां देवीनां वागल्लय यावद्विहरन्ति । ओत्तरिकाणां एवञ्च ओत्तम । चत्तेव दाहिवात्याना सत्त
 चत्ता चत्तेवोत्तरिकाणां चपि चत्तरे चत्तरेण चत्तवत्तोत्तरदो जहावासीय पिडावेत्तुः पिडावाद्याणां चत्तिरिक्कन्ति जायविहरन्ति एवं चत्ता पिडा

जाय गधक्षाण नयर इदेषु नागत्तं प्राणियसु इमेणपि धिहिणा नयाण सुखयपक्खिवा जस्काण पुमान्नाद
 माणिन्नदं रक्कसाण नीममहाजीमा किन्नराण किन्नरिकपुरुसा किपूरिसाण सप्युरिसमहापुरिसा महोर
 गाण स्युडकायमहाकाया गधक्षाण गीतरङ्गीतजसा जायगीयजसे विहरति-कालेयमहाकाले सुखयपक्खि
 रुवपसुज्जेय । अमरवडमानज्जे नीमेयतहामहाजीमे ॥ १ ॥ किन्नरिकपूरिसेखलु सप्युरिसेखलुतहामहा
 पुरिसे । स्युडकाएमहाकाए गीयरतिचेयगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिण जते । अणवन्नियाण देवाण ठा
 णा प०, कहिण जते ! अणवन्निया देवा परिचसति गो० ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए रयणामयस्स
 फळस्स, जोयणसहस्सबाहस्स उवरि हिठायएग जोयणसय वज्झिन्ना मज्जे स्युठसु जोयणसएसु स्युत्य
 ण अणवन्नियाण देवाण तिरियमसखिज्जा नवणा धाससयसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण जाय पक्खिवा

वाना तथा मूतानामपि यावद्वन्यवर्षां नवरभिन्द्रपु नानात्वं प्रवृत्तव्यमनेन विचिन्ना मूताना सुखप्रतिक्रिया, यथासा पूणप्रदमाखिज्जो, रच
 सां नीममहाजीमो, बिहराया बिहरबिम्बुसुपौ, किम्बुसुपाखौ सत्यरुपमहापुरपौ महोरगायामतिशायमहाकायो, गन्धर्वोर्वां गीतरतिगीतय
 शाय, यावद्विहरतः । बालसुमहाकात्, सुखप्रतिक्रियापूजनद्रास । अमरपतिमाखिज्जो नीमद्यतयामहाजीमः प०॥ बिहराकिम्बुसुपौखलु सत्यरुप
 यलुतयामहापुरयः । अतिशायमहाकायो गीतरतिद्येयगीतयशाः ॥ २ ॥ विहरति । सु प्रदत्त । अणवन्नियाणा देवानां स्थानानि प्रपन्नानि, सु
 प्रदत्त । अणवन्निया देवा परिवसन्ति ? गीतम् । अस्या रयप्रजायाः पायका रयमयस्य कायस्य योजनसहस्त्रवाहस्यस्योपरि अयद्यत्र योजनसहस्रत
 यजयित्वा मध्येष्टु योजनशतेश्चावपन्निकानां देवानां तियगसङ्ख्यान मयमावासागमसङ्ख्यावि प्रवत्तीति मयास्थातम् । ते च यावरप्रतिक्रिया
 अत्राणपन्निकाणा देवानां स्थानानि प्रपन्नानि । अत्रापि लोकस्यासहस्रय भागं तथाचपन्निका देवाः परिवसन्ति महादेवा यथा पिच्छाया यावद्विह

पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा ओमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति मस्कायं, तेण नयणा जहा ठहिठ नयणयखत्तं तहेय ज्ञाणियच्चो जाय पफिरुत्ता एत्यण दाहिणिस्साण पिसायाण देवाण पज्जप्तापज्जा साण ठाणा पसुत्ता । तिसुत्ति ओगस्स अस्सखेज्जाइत्ताणे तत्यण ग्रहणे दाहिणिस्सा पिसाया देवा परिवसति महिहिया जहा ठहिया जाव विहरति काले जत्य पिसायइत्त पिसायराया परिवसति महिहिय जाव पज्जा सेमाण सेण तत्य तिरियमसखेज्जाण ओमेज्जा नगरावाससयसहस्साण चउत्तह सामाणियसाहस्सीण चउत्तह अग्गमहिस्सीणं सपरिवाराण तिरह परिमाण सत्तह अणियाण सत्तह अणियाहिअहण सोत्तसह अयार स्कंदेयसाहस्सीण अन्तेसिच बन्नेण दाहिणिस्साण याणमतराण देवाणय देवीणय अहिअत्त जाय विहरति । उत्तरिस्साण पुच्छा गो० ! जहेय दाहिणिस्साण यत्तच्चया तहेय उत्तरिस्साणपि नयार मदस्स पच्चयस्स उत्तरे ण महाकाले जत्य पिसायइत्ते पिसायराया परिवसति जाव विहरति एव जहा पिसायाण तहा नयाणपि

तिबर्बल्वानि श्रीमयजनगरावागुह्यतद्व्याधि प्रवर्त्ततीति मयाकृतम् । त श्रीमेया (इत्यादि) यथोपिको प्रवर्त्तकक कर्त्तव्य प्रवर्त्तकको या
 वरप्रतिरूपा अत्र दाखिलात्यानो विद्याथानो देवानो पर्योतापर्योताना स्वाभानि प्रवर्त्तानि, विद्वदि सोवकमावृत्त्यमान कत्र अहको दाखिला
 त्याः पिद्याचा देवा परितवन्ति, अहद्वैका यावत्प्रवाद्ययन स्ते तत्र तयंगवस्वेयानो श्रीमयजनगरावागुह्यतद्व्याधो वतवुको कामानिबन्धाह
 लीको वतुकोदयमधिषोका अपरिवारको तिलुका पवर्धं समानामनीधानो समानानीधानात्तरकवदेवडाहलीकालम्बवा
 न्य अहूना दाखिलात्यानो कामान्तराको देवानो देवीना वाचिपत्य वावद्विष्टरनि । औत्तरिकाको वृष्ठा नीतन । अर्द्ध दाखिलात्यानो अत्र
 अथा पयोवापरिकाका अवि अमर्दं अमर्दक अमर्दकोष्टरको अवाकाकोत्र विद्याथेन्द्रः विद्याथराजा अरिभक्त्यि वावद्विष्टरनि एवं अथा पिद्या

जाय गघष्ठाण नयर इदं सु नागत्तं प्राणियसु इमेणपि विहिणा नूयाण सुखपकिरुवा जस्काण पुसाजद्
 माणिजद् रक्कसाण नीममहानीमा किन्तराण किन्तरकिंपुससा किंपुरिसाण सप्युरिसमहापुरिसा महोर
 गाण अडकायमहाकाया गघष्ठाण गीतरुंगीतजसा जावगीयजसे विहरति—कालियमहाकाले सुखपकि
 रुयपसुजद्देय । अमरघडमाणजद्दे नीमेयतहामहानीमे ॥ १ ॥ किन्तरकिंपुरिसेखलु सप्युरिसेखलुतहामहा
 पुरिसे । अडकाएमहाकाए गीयरतिचेयगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिण जत्ते । अणवन्नियाण देवाण ठा
 णा प०, कहिण जत्ते । अणयन्निया देवा परिधसति गो० ! इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए रयणामयस्स
 कऊस्स, जोयणसहस्सबाहस्स उवरि हिठायएग जोयणसय वज्जिआ मज्जे अठसु जोयणसएसु अत्य
 ण अणवन्नियाण देवाण तिरियमसस्सिज्जा जवणा वाससयसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण जाव पकिरुवा

वाना तथा मूलानामपि यावद्वृष्यवर्षां नवरभिन्नुपु नानास्व प्रक्षितव्यमनेन विचिन्ता प्रूताना सुखप्रतिकूपी, यस्यां पूर्णनद्रमाकिनद्रो, रस
 र्वां नीममहावीमी, किन्नराणां बिम्बरबिम्बुरुपी, किम्बुरुपाणां सत्यसुयमहापुसपी मधोरगाणामतिकायमहाकापी, गन्धर्वोवा गीतरतिगीतय
 श्वाय, पावाहिरत्त । कालवमहाकालः । सुखप्रतिकूपपूर्वजद्राव । अमरपतिमाकिनद्रो नीमद्यतयामहावीमी ॥१॥ बिम्बरबिम्बुरुपीखलु सत्यसुय
 एलुतयामहापुसपुयः । अडिकायमहाकापी गीतरतिचेयगीतयश्वा ॥ २ ॥ विहरति । अणवन्नियाण देवानां स्वामानि प्रक्षप्तानि, क
 नदत्त । अणपकिवा देवाः परिवसन्ति । गीतम् । अस्या रयप्रजायाः पायव्या रजमयस्य काशत्स योजनसदृशस्योपरि अयदेक योजनशतं
 वज्रयित्वा मध्येष्टु योजनशतं यथावपिज्जाना देवानां तियगसुहेयान् मन्त्रावायुशतसहस्राणि जवलीति मयास्मात् ॥ ते च यावत्प्रतिकूपय
 यथावपिज्जाना देवानां स्वामानि प्रक्षप्तानि । त्रियपि लोकास्सासत्यय भाग तथावपिज्जाना देवाः परिवसन्ति मर्द्दादेका यथा पिज्जाना यावद्विह

एत्यण स्युणवन्तिया देवाण ठाणा प०, उयवाएलो० समुग्घाएलो० सठाणेणलो० तत्यण स्युणवन्तिया देवा
परिवसति महिहििया जहा पिसाया जाव विहरति सन्निहियसामाणा इत्य दुवे स्युणवन्तिया स्युणवन्ति
यकुमाररायाणो परिवसति महिहििया जहा कालमहाकाला एव जहा कालमहाकालाण दोरहापि दाहिणि
स्वाण उत्तरिस्वाणय ज्ञाणिया तथा सन्निहियसामाणाणपि ज्ञाणियस्वा सगहणि गाहा-स्युणवन्तियपणवन्तिय
इसियाइयन्नयथाइएवेव । कदियमहाकदिय कुहन्नयपयगंदेवाय इमे इवा-सन्निहियासामाणा धाडविचाएय
इसीयठसियाले ईस्सरमहेस्सरविय हउउनुत्येविसाये ॥१॥ हासेहासरइविय सेएयन्नयेतंहामहासेए पयगेप
यगपएविय नेयस्वास्याणपुष्पीए ॥२॥ कहिण जते । जोहसियाण देवाण पज्जात्ताण२ ठाणा प० ? कहिण जते ।
जोहसिया देवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पज्जाए पुठवीए यज्जसमरमणिज्जाठं जूमिन्नागाठं सत्तणउ
इ जोयणसए उहु उप्पइत्ता दसुत्तरं जोयणसय थाहत्ते तिरियमसस्विज्जे जोइसविसए एत्यण जोहसियाण

रत्ति, सकिंहितसमानो चाव हावकपकिंकावावपकिंकराज्जानो परिवसतो जहाइको यथा कासमहाकासो एवं यथा कासमहाकासोद्वयो दो
किंकात्ययो रीत्तरकावाण (कणव्यथा) भवित्ता तथा सकिंजितसामानिकयोरपि प्रवित्तव्या सुद्धाविंशत्या-अकपकिंकायपज्जिका वृत्तिवादी ये
पसूतवादी च । कन्दीनमहाकन्दी कोइवहीचैवपठव ॥१॥ इम इत्थाः सकिंहित सामानो पादाविंशत्ययवार्धेपास्तः । इत्तरमहादीकलु जवति
पुवलोविद्यासव ॥२॥ इत्थोहाकसरतिःकलु खेतकप्रवत्ताया महास्वेताः पतवः पतकयदीपिय ज्ञातव्या ज्ञानुपूज्या च २५ इ भवन्त । ज्योति
कावा देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्वाकानि प्रवृत्ताणि च जदन्त । ज्योतिष्का देवाः परिवसन्ति ? भोतव । यस्या रजजवावाः पविन्ना अनुत्तर
महीमाहु भूमिप्राया स्वप्नववतिपोवमववमूहे मुत्तल दकोत्तरं योवमवव वादन्तं तिवेनवंकवेच ज्योतिष्काविचवमव ज्योतिष्कावा देवानां विचव

देवाण तिरियमसखिज्जा जोइसियविमाणायात्तसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण विमाणा अरुक्कयिठग
 सठाणसठिया सहफालियामया अड्ढगयमुत्तियपहसियाडव यिविहमणिक्कणरयणत्तिचिन्ता आउत्तुत
 यियजयेजयतीपन्नागाच्छुभ्राड्ढक्कत्तकलिया तुगा गगनतलमहिहधमाणसिहरा जालतरयणपजरुम्मीलियम्भ
 मणिक्कणगयूत्रियागा यियसियसयपत्तपोद्दरीया तिलगरयणरुक्कचिन्ता नानामणिमयदामालकिया अत्तो
 यहि च सरहा तवणिज्जकइलआलुयापत्त्यन्ना सुहफासा ससिरीयरुक्का पासार्हया ठरिसणिज्जा अन्निरुक्का
 पन्निरुक्का एत्थण जोइसियाण पज्जन्ना २ ण ठाणा पक्खसा, तिसुत्ति लोगस्स अस्ससेज्जाइन्नागे तत्थण यहवे
 जोइसिया देवा परिवसति तज्जा—यहस्सईचदासूरासुक्कासणिच्छराराज्जधूमकेतुवुधाअगारगा तत्ततवणि
 ज्जकणगवन्ना जेगहा जोइसमि चार चरति कंसुयगतिरडया अष्टाधीसडाविहाय नस्सक्ता देययगणा ना
 णासठाणसठियाइय पचवन्तात्त तारयात्त ठवियलेस्साचारिणो अविस्साममळगई पत्तेय णामकपगंजि

सुखयानि प्रवणावासश्चसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि अदृक्पितृवत्स्थानवस्थितानि सर्वैस्सटिकमयानि यन्मुद्रितोत्स
 तप्रसृतप्रवासितानि विविधसौख्यमकरवज्रच्छिन्नादि धातोदुपुनविजयवैजयन्तीपताकच्छत्रातिच्छत्रकलितानि तुङ्गानि भगवत्तलानुसिखिच्छि
 राणि आसाभरवज्रज्जरोन्मीलितमित्य मालिकमसूत्रपिक्वानि विवक्षितक्षानपत्रपुण्डरीकतिलकरमाईवज्रच्छिन्नाणि नागामणिमयदाभासदुस्तानि
 यत्तत्राह्वय सत्त्वादि तपनीयसुचिरवाक्कुवामल्लतानि अन्नपक्काणि सत्रीकरपाणि प्रासादीयानि द्यौनीयानि अन्निरुक्काणि प्रतिकृपाणि अन्न ज्यो
 तिराकां पर्यामापयोमाना स्वानानि प्रदत्तानि त्रिष्टुपि लोभ्यासुख्येय ज्ञाय तन्न अहो ज्योतिष्कदेवाः परिवसन्ति तद्यथा—दृष्टस्पतय धम्माः
 सूर्यो भुक्ताः अनेयरा राहवः कतवो बुधा अङ्गुरास्सप्तपत्नीयवनववर्षा य यथा ज्योतिषके चार चरन्ति केतवो गतिरतिवहा अष्टाविष्टाविविधा

यच्चिधमउक्ता महिहिंया जाव प्यन्नासेमाणा तेण तत्य साण२ थिमाणायाससयसहस्साण साण२ सामाणि
 यसाहस्सीण साण २ थुग्गमहिंसीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण २ थुणियाण साण २ थुणि
 याहिंघईण साण२ थ्यायरक्कदेवसाहस्सीण थुन्नेसिं व बल्लण जोहसियाण देवाणय देवीणय थ्याहेवञ्च जाव
 विहरति चादिमसरियाय एत्य दुबे जोहसिंदा जोहसियारायाणो परिवसति महिहिंया जाव पन्नासेमाणा ते
 ण तत्य साण २ जोहसियथिमाणायाससयसहस्साण चउरह सामाणियसाहस्सीण चउरह थुग्गमहिंसीण
 सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह थुणियाण सत्तरह थुणियाहिंघईण सोलसयह थ्यायरक्कदेवसाहस्सी
 ण जोहसियाण देवाणय देवीणय थ्याहेवञ्च जाव विहरति । कहिण ऋते ! वेमाणियाण देवाण पज्जत्ता२
 ण ठाणा प० ? कहिण ऋते ! वेमाणिया देवा परिग्रसति ? गो० । इमींसे रयणप्पन्नाए पुठयीए बहुसमरम

(अष्टविंशतिवक्का अत्रिक्किताया सोढमविद्धा) नवत्ता देवतया मातासत्यामसत्त्वियाय पण्णवर्गोत्तारता (त्ताराएतेसर्बेत्ति) अवस्त्वित्तेत्तया
 चारिको उविमाममवहसगत्तिकाः प्रत्येकं नामाहुमवकटितच्चिमुकुटा मव्वद्विक्का यावत्प्रजासयत्त को तत्र स्वयो २ विमानावासत्तवइत्ताका रवे
 वरं २ खानामिबसइत्ताकां स्वेयो २ अयमद्विपोका सपरिवाराका स्वेयो २ पयदा स्वेयो २ वनीकाना स्वेयो २ वनीकाचिपतीना स्वेयो २ चाल्तर
 रुद्धेवइत्ताका अण्णयाण्ण वड्डनां ज्योतिष्काकां देवानां दवीमाण्णचिपत्य पुरोवत्तिल यावद्विहरन्ति सुपांअण्णमसो चात्र द्वौ ज्योतिष्केभ्यो
 ज्योतिष्कराजानो परिवसतः । अद्विक्को यावत्प्रजावयन्ती तौ तत्र स्वयो २ ज्योतिष्कविमानावासत्तवइत्ताकां चतुर्धां खानामिबसइत्ताका चतु
 र्धांमयमद्विपोकां सपरिवाराकां वक्काकां पक्का सुत्तानावनीकानां सुत्तानामनीकाचिपतीना जोहकानामालरक्कदेवइत्ताकां ज्योतिष्काकाण्णवर्गो
 वड्डनां देवाना एवीमाण्णचिपत्य यावद्विहरतः । अ नदत्त ! वेमाणिकाकां देवाना पयोसापयोद्गाकां चारनाणि प्रकटानि अ नदत्त ! वेमाणिका

निज्जातं नृभिन्नागात् उह चंविमसूरियगहनस्कसुतारारुवाण यल्लइ जीयणसमाइ यल्लइ जीयणसहस्सा
इ यल्लगात् जीयणकांकीत्तं यल्लगात् जीयणकांकीत्तं उह दूर उपपइत्ता एत्यण सोहम्मीसाणसणकु
मारमाहिदयन्नलोगलतगमहासुक्कसहस्सारश्चाणयपाणयश्चारणश्चुयगेविज्जाणत्तरेसु तल्य एत्यण वेमाणि
याण देवाण चउरासीडविमाणसयसहस्सा सत्ताणउईजंयसहस्सात्ते तेवीस विमाणा हयतीतिमस्काय तेण
विमाणा सधुरयणामया श्च्छा सरहा लठा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्काकळ्ळाया सप्पहा
ससिरीया सउज्जीया प्रासादीया दरिसणिज्जा अन्निरुवा पफिरुवा इत्यण वेमाणियाण देवाण पज्जात्ताप
ज्जासाण ठाणा प० तिसुवि लोगस्स श्चसखंजइन्नागे तल्यण वहेवे वेमाणिया देवा परिवसत्ति त०—सोह
म्मीसाणसणकुमारमाहिदयन्नलोगलतगमहासुक्कसहस्सारश्चाणयपाणयश्चारणश्चुयगेविज्जाणत्तरेववाडया
देवा तेण मिथमहिसवराहसीहल्लगलदहुहुरहयगयवडनुयगस्सगउसन्नकिविक्किमपागणियचिधमउठा पसिठिल

[illegible]

यच्चिधमउक्ता महिहिंया जाय प्यन्नासेमाणी तेण तत्थ साण २ यिमाणायाससयसहस्साण साण २ सामाणि
यसाहस्सीण साण २ अग्गमहिंसीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणि
याडियइण साण २ आयरस्कदेवसाहस्सीण अक्खोसि च यत्थण जोडसियाण देवाणय देवीणय आहिवच्च जाय
विहरति चविमसूरियाय एत्थ दुवे जोडसिवा जोडसियरायाणो परिवसति महिहिंया जाय पन्नासेमाणा ते
ण तत्थ साण २ जोडसिययिमाणायाससयसहस्साण अउरइ सामाणियसाहस्सीण अउरइ अग्गमहिंसीण
सपरिवाराण तिरइ परिसाण सत्तरइ अणियाण सत्तरइ अणियाहिंयइण सोलसइह आयरस्कदेवसाहस्सी
ण जोडसियाण देवाणय देवीणय आहिवच्च जाय विहरति । कहिण ज्ञते ! वेमाणियाण देवाण पज्जस्ता २
ण ठाणा प० ? कहिण ज्ञते ! वेमाणिया देवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए अहुसमरम

(यथाविद्यवित्तमत्याका अन्नविनाद्या सोऽन्नमसिद्धा) नवत्रा देवगका नामासल्यामसत्विताय पण्यवर्त्तासारका (स्तारायतेसर्वापि) अन्नस्त्वितसेयया
चारिको ऽविद्याममवहसपतिष्ठाः प्रत्येक नामाहुप्रवर्त्तितचित्तमुमुहता । मन्त्रदिक्का पावत्प्रजासुयन्त स्ते तत्र स्वर्ग्या २ विमानावासयतवइस्त्राका रवे
पा २ सामानिबसइस्त्राका स्वर्ग्या २ अयमक्षिणीका सपरिवाराका स्वर्ग्या १ पयर्वा स्वर्ग्या २ अनीनामा स्वर्ग्या २ अनीकापिपतीना स्वर्ग्या २ आत्तर
इवदेवसइस्त्राकां अन्वेयान् बहूनां ज्योतिष्कारां देवानां दधीमाब्बाच्चिपत्वं पुरोवत्तिस्व पावोइइरन्ति भूयोचन्द्रमसी आच ह्रीं ज्योतिष्केन्द्रो
ज्योतिष्कराश्रमो परिवसतः, मन्त्रिणो वावत्प्रजासुयन्तो तौ तत्र स्वर्ग्या २ स्वातिक्कविमानावासयतवइस्त्राकां अतुको सात्तानिबसइस्त्राकां अतु
पमयमन्त्रिणीकां सपरिवाराकां अयार्कां पयर्वां सत्तानामनीकानां समानामनीकापिपतीनां वीरुक्कानामात्तरवदेवसइस्त्राकां ज्योतिष्काकान्नेका
बहूनां देवानां दधीमाब्बाच्चिपत्वं पावोइइरतः । अ भदन् । वेमाणिक्कां इवना पयोस्तायनीक्कां ज्ञानानि प्रवसन्ति अ भदन् । वेमाणिक्का

णिज्जाते नमिज्जागाते उहु चंदिमसूरियगहनस्कसतारारूवाण बल्लइ जीयणसर्धाइ वज्जइ जीयणसहस्सा
 इ वज्जगाते जीयणकांकीते वज्जगाते जीयणकाकांकीते उहु दूर उप्पहत्ता एत्थण सोहम्मीसाणसणक
 मारमाहिद्वयजलोगलतगमहासुक्कासहस्सारश्चाणयपाणयश्चारणश्चमुयगेविज्जाणत्तरेसु तस्य एत्थण वेमाणि
 याण देवाण चउरासीद्विमाणसयसहस्सा सत्ताणउर्द्धवेसहस्साते तेवीस विमाणा हयतीतिमस्काय तेण
 विमाणा सत्तरयणामया श्चक्का सण्हा लठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककच्छाया सप्पहा
 ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसणिज्जा श्चनिरूवा पणिरूवा इत्थण वमाणियाण देवाण पज्जात्ताप
 ज्जात्ताण ठाणा प० तिसुवि लोगस्स श्चसखेज्जइन्नागे तत्थण वहन्ने वेमाणिया देवा परिवसति त०—सोह
 म्मीसाणसणकुमारमाहिद्वयजलोगलतगमहासुक्कासहस्सारश्चाणयपाणयश्चारणश्चमुयगेवेज्जाणत्तरेववाड्या
 देवा तेण मियमहिसयराहसीहल्लगलददुहरहयगयवड्ढनुयगस्सगउसन्नकियिन्निमपागन्धियिचिमउम्हा पसिढिल

देवाः परिवसन्ति । गौतम । अस्या रत्नप्रज्ञाया पृथिव्या यदुत्तरमरमणीयात्तन्निष्ठागादूर्ध्वं बन्धमूययइत्यतारारूपाया यदूनि योजनज्ञानानि य
 दूग्न योजनसहस्राणि यदूयो योजनकोटीर्बोध्य ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्त्या य सौपमेक्षानसन्तकुमारमारान्द्रप्रज्ञतालावशुद्धसहस्रारान्त
 प्रावतारण्यतन्मैयवकानुत्तरं तत्रैतर्पा येमानि नामा देवाभ्यं चतुरशीतिविमानगतसहस्राणि सप्तनयनिसहस्राणि त्रयोविंशतिर्विमानानि त्रय
 क्षीति मयाग्यातम, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अष्टानि शस्त्रानि लघानि पृष्ठानि भीरुजांसि निर्मलानि निष्पद्मानि निष्कण्टक
 ख्यायानि स्रग्मणि सोद्योतानि प्रासादीयानि वज्रानीयानि अत्रिस्तुपाणि अत्र येमानि काना देवाना पर्याप्ताप्याप्ता स्यामानि प्रप्र
 स्तानि, त्रियपि लोबस्यासद्येयं ज्ञानं यत्र यद्वो वेमानि च तद्यथा-सौचर्मयानसन्तकुमारमारान्द्रप्रज्ञतालावशुद्धसहस्रारान

वरमउठसिरीरुघारिणो धरकुललुञ्जोहयाणणा मउठविस्सिरया रत्ताजा पउमप्पहगीरा नासेया सुहव्रखुग
 घफासा उत्तमवेडविणो पवरवत्थगधमस्त्राणुलेत्रणधरा महिद्विया महज्जुडया महायसा महस्त्रा महाणुजा
 गा महासोरका हारविशराहययत्था कल्लगतुक्रिययत्त्रिया धुगदकुल्लमठगल्लकसपीठधारी विच्चिस
 हत्याजरणा विच्चिसमालामउल्लिक्खणपवरवत्थपरिहिया कल्लगगपत्ररमस्त्राणुलेत्रणा नासुरयोदो पल्लय
 णमालधरा विस्सेण यत्तेणं विस्सेण गधेण विस्सेण फासेण विस्सेण सधयणण विस्सेण सठाणेण विस्साए इहीए
 विस्साए जुईए विस्साए पन्नाए विस्साए च्छायाए विस्साए सुस्सीए विस्सेण तेएण विस्साए लसाए दसदिचानं उ
 ज्जीवेमाणा पन्नासंमाणा तेण तत्थ साण २ विमाणायाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण सा
 ण २ तावहीसगाण साण २ लोमपाळाण साण २ धुग्गमहिस्सीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण

नमावतारवाचुत्तपेवेयवानुसरोपपातिका इवा स्तेन सुगमहिपवरार्थसिद्धयत्तदुर्दरपणवपत्तिपुत्रगल्लपुत्रमाकुविदिमच्चिमुक्ताः प्राक्षिपित
 वरमुक्ताकिरीटधारिको वरमुक्तावलाघोतितामना मुकुटदीर्घाशिरसा रत्तानाः पट्टप्रवर्गीरा प्राक्षराः सुप्रवर्णवत्पक्षी वत्तमवेकुविधाः प्रवरवका
 न्यमात्मानुत्तपत्तवरा महद्विका महाधुतिका महायक्षस महइसा मन्त्रानुवाका महेष्टास्त्रा वारविराजितवक्त्राः कटकुटितल्लितपुत्रा वज्रुर
 वरल्लसुहव्रतल्लकपीठधारिको विविधइसावरका विविधमाशामीलिकत्वाकाप्रवरवक्त्रपरिहृताः कल्पाकप्रवरनात्मानुत्तपना आसुबोण
 यः प्रलम्बजनमालवरा दिव्येन वस्त्रेण दिव्येन वस्त्रेण दिव्येन वस्त्रेण दिव्येन वस्त्रेण दिव्येन वस्त्रेण दिव्येन वस्त्रेण दिव्येन वस्त्रेण दिव्येन वस्त्रेण दिव्येन
 प्रवरा दिव्यया च्छायाया दिव्येनाचिवा दिव्येनैतेन दिव्यया केइयया इअ दिअ लघोतयल्लः प्रभावरयल्ल को लव रवेको २ विज्जामाणावलावका
 र्थी स्वेवा २ वानानिकवइकादी क्खवी २ वापविक्काना क्खवी २ कोकवाज्जाना स्वेवी २ अपमदिप्पीकां सपरिवारादी रवेका २ पक्कदी स्वेवा २

२ स्थणियाण साण २ स्थणियाहिब्रईण साण २ श्यायरस्कदेवसाहस्सीण छुन्नेसिं च यत्तण वेमाणियाण
 देवाण देधीणय श्याहेवच्च पोरैवच्च सामित्त जहित्त महत्तरगत्त श्याणाइसरसणावच्च कारेमाणा पालेमाणा
 महयाइयनहणीयवाइयततीतलतालतुत्तियचणमुहगपप्पवाडयरवेण दिस्सुइ जोगभोगाइ जुजमाण विह
 रत्ति । कहिण भत्ते । सोहम्मगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० कहिण भत्ते ! सोहम्मगदेवा परिवससति ?
 गो० ! जयूदीवे २ मदरस्स पख्यस्स ढाहिणण इमीसे रयणप्पत्ताए पुठवीए वज्जसमरमणिज्जाए न्नुमिन्ना
 गाए उहु चदिमसूरियगहगणनस्कत्तताराण वज्जणि जीयणसयाइ वज्जणि जीयणसहस्साइ वज्जणि जीयण
 सयसहस्साइ वज्जगाए जीयणकोफीन वज्जगाए जीयणकोफाकोफीन उहु दूर उप्पडत्ता एत्थण सोहम्मे ना
 म कप्पे पत्तसे, पाचीणपफीणायातं उदीगढाहिणविच्छिन्ने श्छुचदसठाणसठिंए श्चिमालिन्नासरासिचत्ता

अनीकानो स्वया २ अनीकापिपतीता स्वया २ आत्तरवत्तवसइत्थाया आत्तेया च यद्दनां वेमाणिकानां देवानां च दवीनां चापिपत्य पुरोवर्त्त
 त्वं स्थानित्वं जतुत्वं मइत्तरवत्तमासेयुरसेनापतित्वं कुवत्तः पालपत्तो विहरात्त मइत्ताइत्तदुत्तगीतवाविज्जत्तगीतलतासन्नुटितचनसुवक्कपटुप्रवा
 विज्जदेव दिव्यानि मागजागानि जुज्जानो विहरात्त । कु जत्तल । सीपमकदेशमा पयोसापयोसाणा स्वामानि प्रप्राप्तानि, कु जत्तल । सीपम
 कदयाः परिवसन्ति ? नीतम । अत्थुदाप २ मन्दरस्य पर्वतस्य दासिचतो ऽस्या रत्नप्रज्ञायाः पृथिव्या यदुसमरमकीयादुमुमिभागादूर्ध्वं अन्नसूय
 पुनरावत्तनाराक्ष्येन्या यद्भूनि पावनश्रुतानि यद्भूनि योजनशतसहस्राणि यद्भूनि योजनकोट्या यद्भूनि योजनकोटीकोट्य
 अर्धं दूरमुत्पत्यात्र सीपमे नाम कस्य प्रप्राप्तं प्राचीनपतीनीमायतमटीचीनदास्यविक्षीपे अद्भुतसंस्थानसंस्थितमभिर्मोत्तावासारोशिवशोचनं अस
 रयया योजनकोट्योऽसुरयेया योजनकोटीकोट्य प्रायामविक्षमाप्यामसुरयेया यात्रनकोटीकोट्यः परित्यज्य सर्वत्रमप मच्च यावत्प्रतिरूप यत्र

ने अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयण
 कोप्पिणीं परिस्सयेण सवुरयणामए अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयण
 सयसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण विमाणा सवुरयणमया अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं
 मज्जेदसज्जाए पचयन्तसएया पक्खत्ता, त०—असो गवन्तसए चपगवन्तसए धूयवन्तसए मज्जेतसए
 सोहम्मवन्तसए तेण वन्तसया सवुरयणमया अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयण
 ठाणा प०, तिसुवि लोगस्स अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं
 सेमाणा तेण तस्य साण २ विमाणावाससयसहस्साण साण २ अग्गमहिंसीण साण २ सामाणिमसहस्सी
 ण एव जहेव ठहिंयाण तहेय एतेसिपि आणियसु जाय अयस्सकदेवसाहस्सीण अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं
 म्मगकप्पयासीण वेमाणिमाणा देवाणा देवीणाय अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं

सोचमवदेवानो इन्द्रिन्द्रिमाणाससुतसहस्साणि प्रवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सवरजनयानि कण्ठानि यावत्प्रतिरूपाणि तथा वि
 मानाना बहुमध्यदेशमात्रं पंचावतंसका प्रकृतास्तथापि—अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं
 यावतंसका सवरजनया कण्ठा यावत्प्रतिरूपाः यत्र सोचमवदेवानो यपोत्तापपोत्तापो स्त्रानानि प्रकृताणि, त्रिद्विपि लोककावयेयं ज्ञानं तत्र
 ब्रह्मः सोचमवदेवानो परिचक्षन्ति महादिका यावत्प्रभासुयन्त स्त तत्र स्वर्गो २ विमानावासायतनसहस्साणां स्वर्गो २ यययद्विदीकां स्वर्गो २ ययय
 त्रिकहस्सावासेनं ब्रह्मैवात्यवानो तपदेतवावपि प्रक्षितस्य यावद्वाल्सरकदेवसहस्सावावपि च त्रूणां सोचमवदेववावपि देवानां देवीनां
 पाणिपत्वं यावद्विपरिचक्षन्ति । अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं अस्वेज्जातं जीयणकोप्पिणीं

राया परिवसह वज्रपाणी पुरंदरे सयक्लउ सहस्सस्के मधव पागसासणे दाहिणहुलीगाहिबई धत्तीसधिमा
 णावाससयसहस्साहिबई एराधणवाहण सुरिदे श्रयवरयत्यधरे श्रालइयमालमउठे नवहेमचाचिचिचधंमल
 कुलधिलिहिज्जामाणगठे महिहिण जाय पन्नाममाणे सेण तत्य धत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण चउरा
 सीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगण चउरह लीगपालाण अठरह श्रगमहिंसीण सपरि
 धाराण तिरह परिसाण सत्तरह श्रणियाण सत्तरह चउरह चउरासीण श्रायरस्कदेवसाह
 स्सीण छन्तेसि च वल्लण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय श्राहेवसु पोरेवसु कुल्लमाणे
 जाव विहरति । कहिण जत्ते । ईसाणगदेवाण पज्जसापज्जाणा ठाणा ५० ? कहिण जत्ते । ईसाणगदेवा परिच
 सति ? गो० ! जयूदीवे २ मदरस्स पट्टयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पजाए पुठ्ठीए वज्जसमरमणिजाए चू
 मिजागाए उहु चदिमसूरियगहगणनस्कत्ततारारूवाण वल्लइ जोयणसयाइ वल्लइ जोयणसहस्साइ जाय

पति ह्रीविज्जहिमानावाससुत्तसहस्राधिपति रैरावणय । जतः सुरेव्हीउरवोम्यरवणपर चालयितमालमकुटी नवहेमचाचिचिचधंमलकुणलविहित्य
 मानगठो मद्दिबो यावहपन्नासयग्ग सव ह्रीविज्जहिमानावाससुत्तसहस्राणा चतुरङ्गीत्या । सामानिकसहस्राणा उपस्थिशरसंस्याकानां प्रायविश
 कदेवाना चतुर्वां लोकाणां अष्टानामपमद्विपीकां उपरिवाराणां तिसुवा पर्यवसायानाममीकानां सप्तानाममीकानां चतुषा चतुरङ्गी
 त्यास्सरसहस्रसहस्राणा अग्रेयां च यदूनां वीर्यमस्यवासिदधानां देवीना चाधिपत्यं कुवन्त्ये लपन् यावद्विहरति । इ प्रदत्त । ईसाणगदेवानां प
 र्याप्तापर्याप्तानां त्यामानि प्रज्जसांनि इ प्रदत्त । ईशाणदेवाः परिवसन्ति ? गोतम । जम्बूद्वीप द्वीपे मन्दरस्य पवतस्योत्तरतोल्याः रवप्रजायाः प
 चिव्या चतुस्रमरमणीयास्तुप्पुमिजागादूरे चत्तस्रयग्रहगणनस्कत्ततारारूपस्यो वदूनि योजनसुत्तसहस्राणि पाठदुत्पत्यानेशान

उप्यङ्गता एत्यणं ईसाणे नाम कप्पे पक्खे, पाङ्गणपणीणायए उदीणवाहिणविच्छिन्ने एव जहा सोहम्मे जाव पणिसुक्खे तत्यण ईसाणगदेवाण अठ्ठावीस विमाणावाससयसहस्सा हवतीति मरकायं तेण विमाणा सव्व रयणामया जाव पणिरुत्ता, तेसिण बज्जमज्जेदेसत्ताए पच यणिसगा पक्खत्ता, अक्खवणिसए फलिहवणिसए रयणयणिसए जाव सक्खवणिसए मज्जे इत्य ईसाणवणिसए, तेण वणिसया सव्वरयणामया जाव पणिरुत्ता एत्यण ईसाणाण देवाण पज्जत्तापज्जसाण ठाणा पक्खत्ता । तिसुवि लोगस्स असखेज्जहन्नागे सेस जहा सो हम्मगदेवाण जाव विहरति, ईसाण इत्य देवेद देवराया परिवसति सुलपाणी उसन्नयाहणे उव्वरहुलो गादिव्वई अठ्ठावीसविमाणावासत्तयसहस्साहिव्वई अरयत्तयत्थरे सेस जहा सक्खस्स जाव पत्तासमाने तस्य अठ्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साण असीतीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तायसीसगाण वउत्तइ लोगपाळाण अठ्ठइह अगमहिंसीण सपरित्थाराण तिसइ परिसाण सव्वइह अणियाण सव्वइह अणि

नाम कइय प्रज्ञं, प्राचीनप्रतीचीनायत सुत्तरदण्डिविस्तीकमेव यथा सीधर्को यावत्प्रतिकृप तत्रेद्यान्वक्तानां दधानां वृष्टाविवृति विंशतिमात्राव द्यतसहस्रादि प्रवक्तव्याख्यात तानि विधानान् अवलोक्यमानि यावत्प्रतिकृपाय तेषां बहुमध्यदद्यामाने पञ्चावतसकाः प्रज्ञासहस्राः-अङ्का बतसकः स्फटिकावतसको बावत्सुकुपावतसको मध्ये अष्टानावतसकः आवावतसकाः सर्वरजसया यावत्प्रतिकृपा अष्टावक्तानां दिवानां पयोमापयो साना स्वानानि प्रज्ञासनि, विद्याय साक्षाद्वेपलागः सेवं यथा सीधमकदधाना यावद्विहरन्ति । इज्जान्नाव इवेन्तो देवराजः परिववृत्ति अल पाविनूअज्जाइन वहराहसोकावपति रत्ताविद्यतिविमानावासवत्तवदकावियति अवरोधस्वरकपरः अर्थ यथा अक्ख (अक्खलोत्ता तथा वा पि) यावत्तथावत्तथावद्विद्यतिविमानावासवत्तवदकावन्मयीतिः आत्मानिकवदकावो यथावत्तवदकावो अणुवो लोकपाळानां च

याद्विवर्द्धेण चउर्रोह शुसीतीण आयररकदेवसाहस्सीण अन्नेसि च यत्तण इंसाणकप्पयसीण वेमाणियाणं
 देवाण य देवीण य आहंयच्च पोरैयच्च कुञ्जमाणे जाय त्रिहरड, कहिण जत्ते । सणकुमारदेवाण पज्जता
 पज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । कहिण जत्त । सणकुमारा देवा परिचसति ? गोयमा । साहम्मस्स कप्पस्स उ
 प्पिं सपस्सि सपप्पिदिसि यत्तइ जोयणाइ यत्तइ जोयणसयाइ यत्तइ जायणसयसहस्साइ यत्तगात्त जोय
 णकोप्पीत्त यत्तगात्त जोयणफोप्पाकोप्पीत्त उहु दूर उप्पट्ठा एत्थण सणकुमारे नाम कप्पे पणत्ते । पाईण
 पप्पीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्म कप्पे जाव पप्पिक्खे, एत्थण सणकुमाराण देवाण वारस
 विमाणायाससयसहस्सा हयतीति मस्साय, तण विमाणा सत्तरयणामया जाय पप्पिक्खया तेसिण विमाणाण
 यत्तमज्जेदेसनागे पच यप्पिसगा पणत्ता, तज्जा-असागयप्पिसए सत्तयसुयप्पिसए चपगवप्पिसए चूयवप्पि

शुभामप्रमद्विषोका उपरिवारावा तिसुवा पयवा सतानामनीकानां समानामनीकापिपतीनां वतवां चतुरवीतिसामानिकसङ्ख्याया मन्थेया च
 यद्भूना मीशानमवत्यवाविदेवानां इवीना व्यापिपत्यं पुरावर्तित्वं मुशव्यावाहुरति । क्व प्रवत्त । सनत्कुमाराणां देवाना पयोमापयोसाना स्वाभा
 नि मज्जसानि क्व प्रवत्त । सनत्कुमारदेशाः पोरैयसन्ति ? गौतम । सोयमस्य कल्पस्यापरि सपत्तं सुवर्तदिक् यद्भूतिं याजमानि यद्भूतिं योजमश
 तानि यद्भूतिं याजमशतसङ्ख्याणि यद्भूता योजमकाटोकाट्य कर्त्तुं दूरमुत्पत्यात्र सनत्कुमार नाम कल्पं प्रवत्त, प्राचीनप्रतीची
 नायतमुत्तरदीर्घावलीकौ यथा सोयमं बल्यो यावत्प्रतिकूपः तत्र सनत्कुमाराणां यद्भूता दादशोविमानावासज्जतसङ्ख्यावि जवकीति मयाख्या
 तम्, तानि विमानानि सुवरजमयानि बभूवन्ति यावत्प्रतिकूपाणि तेषां विमानानां मध्ये यद्भूमज्जदेवजायम पञ्चावत्सुखाः प्रवत्तानाद्यथा-यद्भूता
 कावत्सुका यद्भूपर्वावत्सुकावत्सुका यद्भूतावत्सुको मय्य तत्र सनत्कुमारावत्सुका स्थावत्सुकाः सुवरजमया बभूव यावत्प्रतिकूपा स्थावत्सुका

उप्यइहा एत्यण ईसाणे नाम कप्पे पत्तस्से, पाट्टणपणीणायए उदीगदाहिणविच्छिन्ने एव जहा सोहम्मे जाय पणिसुरेव तत्यण ईसाणगदेवाण सुठावीस त्रिमाणावाससयसहस्सा हवतीति मरकाय तेण विमाणा ससुरयणामया जाय पणिरूवा, तेसिण भज्जमज्जदेसनाए पच यणिसगा पयाप्ता, सुकवणिसए फलिहवणिसए रयणयणिसए जाय सरुववणिसए मज्जे इत्य ईसाणयणिसए, तेण वणिसया ससुरयणामया जाय पणिरूवा एत्यण ईसाणाण देवाण पज्जप्तापज्जप्ताण ठाणा पयप्ता । तिसुवि लोगस्स असवेज्जज्जागे सेस जहा सो हम्मगदेवाण जाय विहरति, ईसाण इत्य देविद देवराया परिवसति सुलपाणी उसन्नयाहणे उप्परहुलो गादिवइ सुठावीसत्रिमाणावाससयसहस्साहित्रइ सुयरययत्यधरे सेस जहा सकस्स जाय पन्नासमाणे तत्य सुठावीसाए विमाणावाससयसहस्साण सुसीतीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तायप्तीसगाण सउरइ लोगपालाण सुठयइ सुग्गमहिचीण सपरित्राराण तिरइ परिसाण ससुरइ सुणियाण ससुरइ सुणि

नाम कर्पं प्रकृतं, याचीनप्रतीचीनायत मुपरददिविच्छिन्नेव यथा सौचर्मो यावरप्रतिकर्पं तत्रेद्यानकाभां इवाना जहाविच्छति विमानाबाध सतसइत्यादि प्रवन्तात्याक्यात तानि विमानात्त सुवरजसयानि यावरप्रतिकर्पाच्च तेवा बहुमध्यदक्षमाण पन्नासतयकाः प्रकृतसकयचा-भङ्गा बतसक स्फटिकावतचको यावत्सुकुपावतचको मध्ये ज्ञानागतसुख सावातंतयकाः सर्वरजसया यावरप्रतिकर्पा ज्ञानज्ञानानो दिवाना पयोमापयो ज्ञाना ज्ञानानि प्रकृतानि, त्रिविधं लोकासुखेयतान् श्रेयं यथा सौचमकदेवानां यावद्विहरन्ति । ज्ञानाज्ञान इवेन्द्रो देवराजः परिवहति सुल पादबुधप्रवाहम् कतराहलोकाचिपति रहाविच्छतिविमानाबाधसतसइत्यादिपतिः करकोप्परयकचरः श्रेयं यथा ज्ञानम् (सकलतोत्ता सचा वा वि) यावत्सकयचनसाहाविच्छतिविमानाबाधसतसइत्यादिमहीतिः ज्ञानानिकसइकाकां यथाकर्मय् यावद्विच्छन्तानां यमुचीं लोकापज्ञानो व

दध्नसए एव सेस जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरति माहिदे इत्य देविदे देवराया परिधसड श्रयधर
 व्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवर अठरह विमाणावाससयसहस्साण सत्तरीए सामाणिय
 साहस्सीण चउरह सत्तरीण आयरसकदेवसाहस्सीण जाव विहरइ । कहिण जत । बन्नलोगेदेवाण पज्जा
 हा २ ण ठाणा पन्नत्ता । कहिण जत ! बन्नलोगा देवा परिवसति ? गो० ! सणकुमारमाहिदाण कप्पा
 ण उप्पि सपरिक सपन्निदिसि बल्लइ जोयणाइ जाव उप्पडत्ता एत्थण बन्नलोए नाम कप्पे पाइणपढीणा
 यत्ते उदीणवाहिणविच्छिन्ने पफ्फिपुन्नचवसठाणसठिए अच्चिमालीनासरासिप्पन्ने अयसेस जहा सणकुमा
 राण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वरुसगा जहा सोहम्मस्स वरुसया नवर मज्जे इत्य बन्नलोयव
 रुसए एत्थण बन्नलोगाण देवाण ठाणा प०, सेस तेहेव जाव विहरति । बन्ने इत्य देविदे देवराया परिवस
 इ श्रयधरयत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउरह विमाणावाससयसहस्साण सठीए

माकुमारे बरपे यावादिहरति नवरमहाना विमानावासशतसहस्राका सतिः सामानिकसहस्राका पतुणा (पतुनेकाना) सप्तस्यात्सरद्वन्द्वयसर
 स्त्रायां (बन्नीत्यधिकशतद्वयमात्सरद्वन्द्वसहस्राकामित्यर्थः) यावदिहरति । ण जदत्त । ब्रह्मलोकदेवानां पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपन्नानि,
 क जदत्त । ब्रह्मलोका देवाः परिवसन्ति ? नीतम । सनत्कुमारमाह ब्रह्मस्ययोगपरि सपत्त समतिदिक् द्युमनि योजमानि यावदुत्पत्त्याप्र ब्रह्मलोक
 नाम ब्रह्मं प्रपन्नं प्राचीनप्रतीचीनायतभुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं प्रतिपूववन्त्रसंस्थानसंस्थितं अचिर्मात्ताजाराशिप्रपन्न अवशाव यथा सनत्कुमाराराणां नव
 र वत्तारि विमानावासशतसहस्रादि अवसत्तका यथा सीचर्मस्थावतसका नवरं मध्येन ब्रह्मलोकभावतसकोत्र ब्रह्मलोकाना देवाना स्थानानि प्र
 पन्नानि शेष वर्येव यावदिहरन्ति ब्रह्मान्न देवभ्यो देवराज परिवसन्त भस्मोन्मरवत्प्रयर एव यथा सनत्कुमारे यावदिहरति नवर पतुणा वि

सए मज्जे तस्य सणकुमारवहिसए तेण घणिसया सवुरयणमया झुक्खा जाव पणिरुवा तस्यण सणकुमारदे
 वाण पज्जाप्तापज्जाण ठाणा पयसुत्ता । तिसुवि लोगस्स झसखेज्जङ्गगे तस्यणं यहवे सणकुमारा देवा
 देवराया परिवसह झुरययथत्यधरे सेस जहा सकस्स सेण तस्य धारसरह विमाणावाससयसहस्साण यात्र
 सरीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा सकस्स झगमहिंसीयज्ज नवर घउरह वायसरीण झायररुक्खेयसाह
 स्वीण जाव यिहरइ । कहिण जते ! माहिवाण देवाण पज्जाप्तापज्जाण ठाणा पयसुत्ता । कहिण जते !
 माहिवागा देवा परिवसति ? गोयमा । ईसाणस्स कप्पस्स उपिय सपण्णिसि यज्जइ जीयणाइ जाव
 एवं जहेव सणकुमारे, नवर छठ विमाणायाससयसहस्सा वरुसया जहा ईसाणे नवरं मज्जे तस्य माहि

एवमारवां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रपन्नानि विद्वपि लोकास्वास्वसेयं माण तत्र ब्रह्माः ब्रह्मभुवाराः । इवाः परिवसन्ति ब्रह्मिणां
 पावद्विरिति नवरमयमाइयो नवन्ति ब्रह्मभुमारवाः देवभ्यो देवराजाः पारवन्ति वरकोम्बरवल्गवराः एवं यथा ब्रह्मस्य तत्र ब्रह्मभुवाराः
 विमानायावत्तद्वल्गवा द्विषन्तिः सामानिब्रह्मणां येन यथा ब्रह्मस्याश्रमद्विषन्ते नरं चतुर्वा द्विषन्त्यालरुक्खदेववल्गवाणां वावद्वि
 इति । इ प्रदत्त । नाहेन्द्राणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रपन्नानि इ मदन । नाहेन्द्रवा इवाः परिवसन्ति ? नीतव । इवावल्ग
 वल्गकोपरि कपवं ववन्तिद्विषन्ति ववन्ति वीरानि वावद्वल्गवा वीरान्कोटीकोज्ज एवं दूर सुप्यन् तत्र नाहेन्द्रं नाम कर्णं ब्रह्म ब्रह्मभुवारीणां
 यत् वावदेवं वीर्यं वल्गुमारं नवरभ्यो विजावावावत्तद्वल्गवा वि कर्तव्यत्वा यथा इवादे ववदं वल्गे तत्र वरकोम्बरवल्गव एवं वीरं वल्गव

दयक्रुसए एव सेस जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरति माहिदे इत्य देविदे देवराया परिवसह श्रयवर
 वत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाय विहरह नवर श्रुठणह विमाणावाससयसहस्साण सत्तरीए सामाणिय
 साहस्सीण चउणह सत्तरीण श्रायरकदेवसाहस्सीण जाय विहरह । कहिण नत । वंनलोगेदेवाण पज्जा
 हा २ ण ठाणा पन्नत्ता । कहिण नत ! वंनलोगा देवा परिवसति ? गो० ! सणकुमारमाहिदाण कप्पा
 ण उप्पि सपस्कि सपप्पिदिसि वल्लइ जोयणाइ जाय उप्पडत्ता एत्यण वंनलोए नाम कप्पे पाईणपणीणा
 यते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पप्पिपुत्तवदसठाणसठिए श्रुच्चिमालीनासरसिप्पन्ने श्रयसेस जहा सणकुमा
 राण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वक्रसगा जहा सोहम्मस्स वक्रसया नवर मज्जे इत्य वंनलोयव
 क्रुसए एत्यण वंनलोगाण देवाण ठाणा प०, सेस तहेव जाव विहरति । यजे इत्य देविदे देवराया परिवस
 इ श्रयवरयत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउणह विमाणावाससयसहस्साण सठीए

नत्कुमारे बस्ये यावद्विहरति नवरमहाना विमाणावाससयसहस्साकां ससतिः सामानिकसहस्साणा वतुणां (वतुगुणाना) सप्तत्यास्तरकृत्तदेवसह
 स्साका (वक्षीत्यपिब्रह्मतदुयास्तरकृत्तदेवसहस्साकामित्ययः) यावद्विहरति । क्व प्रदत्त । ब्रह्मलोकादेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रप्राप्तानि,
 क्व प्रदत्त । ब्रह्मलोका देवाः परिवसन्ति ? गीतम् । समत्कुमारमाहम्ब्रह्मण्योऽप्यपरि सपत्न्य समतिविक्थुं यद्भूतिं योजनानि यावदुत्पत्त्यात्र ब्रह्मलोका
 नाम बस्यं प्रप्राप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदिशिबिस्तीर्थे प्रतिपूजयन्त्रसंस्थानसंस्थित आचिर्माताप्रातःशिमन्त्र यवनाय यथा सत्तरकुमाराका नव
 र ब्रह्मादि विमाणावाससयसहस्सादि यवतंसका यथा सौपमस्यावतसका नवरं मण्यत्र ब्रह्मलोकावतसकोत्र ब्रह्मलोकाभा ववाना स्थानानि प्र
 चसन्ति क्षेप तथैव यावद्विहरन्ति ब्रह्मात्र देवभ्रो देवरात्र परिवसत्त अरजोम्बरवत्खपर एव यथा समत्कुमारे यावद्विहरति नवर वतुणां वि

सामाणियसाहस्सीण चउरुहयसीण स्यायररुकेवसाहस्सीण सुन्नोसि च यत्तण जाव विहरइ । कहिण जते । छतगदेवाण पज्जाप्पज्जासाण ठाणा पक्खत्ता, कहिण जते ! छतगदेवा परिबसति ? गोयमा ! यन्नलोगरस्स कप्पस्स उप्पि सपस्सिकय सपप्पिदिसि यत्तइ जीयणसयाइ जाव यहुईत्त जीयणकोफ्फाकीणीत्त उहु दूर उप्पहप्पा एत्थण छतए नाम कप्पे पक्खत्ते, पार्हेणपणीणायते जहा यन्नलोए नवर पन्नासाविमाणा याससहस्सा हवतीतिमरकाय, यरुसगा जहा ईसाणवरुसगा नवर मज्जे इत्थ छतगयरुसए देवा तहेव जाय विहरति, छतए इत्थ देविदे देवराया परिबसइ जहा सणकुमारं नयर पन्नासाए थिमाणावाससइ स्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण चउरुह पन्नासाण स्यायररुकेवसाहस्सीण सुन्नोसि च यत्तण जाव विहरइ । कहिण जते ! महासुक्काण देवाण पज्जाप्पज्जासाण ठाणा पक्खत्ता । कहिण जते ! महासुक्कादे

मामावाससवसरुसाणां ससतिः सामानिबसइसाणां वतुणीं (वतुमुंबाणां) पत्थालररुकेवसरुसाणां (वत्थारिखदचिक्कयत्तहुयेवसरुसाणां) वययपाण वट्टुणां पावट्टिइरति । इ जइत्थ । सात्तकदेवानां यमीसायपीसाणां स्वाप्पानि प्रज्जहाणि, इ जइत्थ । सात्तकदेवाः परिबसन्ति ? नो । प्रससोके नवरं पन्नाप्पज्जिमाणावासवसरुसाणां वट्टुणि योजनयत्तानि यावदूरमुत्थत्थाय सात्तकं जाव वइय प्रज्जहं प्राचीनप्रतीचीनावत्तं वया सयैव पावट्टिइरन्ति सात्तकोत्त इवेत्तो देवराज परिबसति यथा वजत्तुमारं नवरं पन्नाप्पज्जिमाणावासवसरुसाणां पन्नाप्पज्जिमाणावत्तवसरुसाणां पन्नाप्पज्जिमाणावत्तवसरुसाणां वट्टुणां (वतुमुंबाणां) पन्नाप्पज्जिमाणावत्तवसरुसाणां (सत्तुत्थालररुकेवसरुसाणां) वत्तेवर्गं च वट्टुणां पावट्टिइरति । इ जइत्थ । जहा वट्टुणां देवानां स्वाप्पानि प्रज्जहाणि, इ जइत्थ । जहावट्टुणां देवाः परिबसन्ति ? नोवत्त । सात्तकवत्त वत्तकोत्तपरि वत्तं वत्ततिदिच्च वावत्तुत्थ

वा परिवसति ? गोयमा ! लतस्स कप्पस्स उप्पि सपक्कि उप्पि सपक्कि जाव उप्पइत्ता एत्थण महासुक्को
 नाम कप्पे पक्खते, पाईणपणीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा यन्नलोए नवर चत्तालोस विमाणावा
 ससहस्सा हवतीति मक्काय, वरुसगा जहा सोहम्मवक्रसगा नवर मज्जे तल्य महासुक्कवक्रसए जाव विह
 रइ महासुक्को इत्य देविदे देवराया जहा सणकुमारे नयरं चत्तालीसाए विमाणायाससाहस्सीण चत्ताली
 साए सामाणियसाहस्सीण चउरह चत्तालीसाण आयरस्कदेयसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण जते !
 सहस्सारदेवाण पज्जन्ता २ ण ठाणा प० । कहिण जते ! सहस्सारा देवा परिवसति ? गो० ! महासुक्कस्स
 कप्पस्स उप्पि सपक्कि सपक्कि जाव उप्पइत्ता एत्थण सहस्सारे नाम कप्पे प०, पाईणपणीणायते
 जहा यन्नलोए नवर विमाणावाससहस्सा हवतीति मक्काय देवा तहेव वरुसगा जहा ईसाणस्स वरुसगा
 नवर मज्जे इत्य सहस्सारवक्रसए जाव विहरति, सहस्सारे इत्य देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकु

त्यात्र महाशुक्र नाम कर्षं प्रक्षप्तम् प्राचीमप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविक्षीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर चत्वारिंशद्दिग्भागावासशतसहस्राणि प्रवर्त्तन्ती
 ति मयास्थातमवतसका यथा सौषमावतसका नवरं मध्ये तत्र महाशुक्रावतसको यावद्विहरति, महाशुक्रोत्र देवेन्द्रो देवराजो यथा समस्तुमारो
 नवर चत्वारिंशद्दिग्भागावासशतसहस्राका चत्वारिंशत्क्षरसामानिकसहस्राका वत्तुणा चत्वारिंशदात्मरचकदेवसहस्राणो यावद्विहरति । क्व प्रदत्त ।
 सहस्रारदेवानो पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रक्षप्तानि क्व प्रदत्त । सहस्रारदेवाः परिवसन्त १ गीतम् । महाशुक्रस्य कल्पस्योपरि सप्तं सप्तवि
 दिक् पावदुत्पत्यात्र सहस्रार नाम कर्षं प्रक्षप्तं प्राचीमप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविक्षीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर पद्मविमाणावासशतसहस्राणि प्र
 वर्त्तन्तीति मयास्थात देवाक्षर्येवावतसका यथा ब्रह्मलस्यावतसका नवर मध्ये यत्र सहस्रारावतसको यावद्विहरति, सहस्रारोत्र देवेन्द्रो देवरा

सामाणियसाहस्सीण चउण्हयसठीणं श्यायररकदेवसाहस्सीण श्युत्तेसि च यत्तण जाव विहरइ । कहिण जते ! छतगदेवाण पज्जाप्तापज्जात्ताण ठाणा पयससा, कहिण जते ! छतगदेवा परियसति ? गोयमा ! यन्नोगस्स कप्पस्स उप्पि सपरिकय सपत्तिदिसि यत्तइ जोयणसयाइ जाव यहुद्वेत्त जोयणकोफाकोफीत्त उहु दूर उप्पइत्ता एत्थण छतए नाम कप्पे पयस्से, पाईणपफीणायते जहा यन्नोए नयर पन्नासायिमाणा वाससहस्सा हवतीतिमस्काय, वरुसगा जहा ईसाणवरुसगा नयरं मज्जे इत्थ लतगयऊसए देवा तहेव जाय विहरति, छतए इत्थ देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकुमारे नयर पन्नासाए यिमाणावाससह स्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह पन्नासाण श्यायररकदेवसाहस्सीण श्युत्तेसि च यत्तण जाव विहरइ । कहिण जते ! महासुक्खाण देवाण पज्जाप्तापज्जात्ताण ठाणा पयससा । कहिण जते ! महासुक्खादे

सामाणावसवइत्तावां ससतिः सामानिक्खइत्तावा वतुधी (वतुनुंवाणां) पब्बात्तरकदेवसइत्तावां (वत्थारिक्खविक्खयतइयदेवसइत्तावां) जयेपाण्ण वट्ठुनां पावट्ठिरति । इ प्रदत्त । सान्नादेवानां पयोप्तापयोप्ताणा स्त्रानानि प्रज्जासनि, इ प्रदत्त । सान्नादेवाः परियसन्ति । नो प्रसत्तोक्क मवरं पब्बाञ्चट्ठिमानावावसवइत्तावां वट्ठुनि योवन्नइत्तानि पावट्ठुरमुत्थत्थाव सान्नात्तं नाम कल्पं प्रज्जतं प्राचीनप्रतीचीनायत्तं यथा सायव पावट्ठिरति, सान्नाकोत्र देवेत्तो इवदन्तः परियसन्ति यथा वणत्तुमारं मवरं पब्बाञ्चट्ठिमानावावसवइत्तावां मवरं मज्जेय सान्नावावसवत्तो देवा वा वतुधी (वतुनुंवाणा) पब्बाञ्चट्ठिमात्तरकदेवसइत्तावां (सइत्तावात्तरकदेवसइत्तावां) जयेत्तां च वट्ठुनां पावट्ठिरति । इ प्रदत्त । जहा मुत्तावां देवानां स्त्रानानि प्रज्जासनि, इ प्रदत्त । जहापुत्ता देवाः परियसन्ति ? नोवन् । सान्नाकोत्रिक्खयत्तं यत्तसिदिक्क मावत्तुत्त

वा परिवसति ? गोयमा । एतस्स कप्पस्स उप्वि सपन्निदिसि जाय उप्वहत्ता एत्यण महासुक्कं
 नाम कप्पे पण्णत्ते, पार्इणपणीणायते उदीणवहिणविच्छिन्ने जहा यन्नलोए नवर चत्तालीस विमाणाया
 ससहस्सा हवतीति मरुकाय, वरुसगा जहा सोहम्मवरुसगा नवर मज्जे तस्य महासुक्कवरुसए जाव विह
 रइ महासुक्कं इत्य देविदे देवराया जहा सणकुमारं नयर चत्तालीसाए विमाणायाससाहस्सीण चत्ताली
 साए सामाणियसाहस्सीण चउरह चत्तालीसाण व्यायररुक्कदेयसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण नत्ते !
 सहस्सारदेवण पज्झत्ता २ ण ठाणा प० । कहिण नत्ते । सहस्सारा देवा परिवसति ? गो० ! महासुक्कस्स
 कप्पस्स उप्वि सपन्निदिसि जाय उप्वहत्ता एत्यण सहस्सारे नाम कप्पे प०, पार्इणपणीणायते
 जहा यन्नलोए नवर व्विमाणायाससहस्सा हवतीति मरुकाय देवा तहेव वरुसगा जहा ईसाणस्स वरुसगा
 नवर मज्जे इत्य सहस्सारथरुसए जाव विहरति, सहस्सारे इत्य देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकु

त्यात्र महाश्रुक् नाम कप्य प्रचसम् प्राचीनप्रतीचीमायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर तत्पारिवर्तिगृहिमानावाससप्तसप्तश्राणि प्रवर्त्तन्ती
 ति मयाक्यातमवतसका यथा सौचमोवतसका नवरं मध्ये तत्र महाश्रुक्तावतसको यावद्विहरति, महाश्रुकोत्र देवेन्द्रो देवराजो यथा सप्तश्रुमारो
 मवरं तत्पारिवर्तिगृहिमानावाससप्तसप्तश्राया तत्पारिवर्तिगृहिमानावाससप्तसप्तश्राया चतुणा तत्पारिवर्तिगृहिमानावाससप्तसप्तश्राया यावद्विहरति । क्षु प्रवत्त ।
 सहस्सारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्यान्ति प्रचसन्ति, क्षु प्रवत्त । सहस्सारदेवा परिवसन्ति ? गोतम । महाश्रुक्तस्य कल्पस्योपरि सप्तं सप्तति
 दिक्षु पावदुत्पत्यात्र सहस्सार नाम कल्पं प्रचसन्ति प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर पट्विमानावाससप्तसप्तश्राणि प्र
 वत्तीति मयाक्यातं देवाक्यैवावतसका यथा ईसाणस्यावतसका नवर मध्ये यत्र सहस्सारावतसको यावद्विहरति, सहस्सारोत्र देवेन्द्रो देवरा

मारे नवर तरुह विमाणायाससहस्त्राण तीसाए सामाणियसाहस्सीण चउरइय तीसाण आयरस्कदेयसाह
 रसीण जाव आहेवच्च कारेमाणे विहरति । कहिण भते ! आणयपाणयेदेवाण पज्झाप्ता २ ण ठाणा ५०
 कहिण भते ! आणयपाणयेदेवा परिवसति ? गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिं सपरिक्क सुपाणिदि
 सि जाय उप्पट्ठप्ता एत्थण आणयपाणयनामेण दुवे कप्पा पन्नत्ता, पाईणपणीणायते उदीणदाहिणविच्छि
 न्ता अरुचदसठाणसठिया अस्सिमालीन्नासरासिप्पन्ना सेस जहा सणकुमारे जाव परिक्खा तत्थण आण
 यपाणयेदेवाण चत्तारि विमाणायाससया हवतीति मरुकाय जाव परिक्खा, वरुसगा जहा सोहम्मे नवर
 मज्जे पाणयधनंसए तेण वरुसगा सवुरयणामया अच्छा जाव परिक्खा, एत्थण आणयपाणयेदेवाण पज्जा
 ष्ठापज्झाण ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असस्वेज्जइजागे तत्थण अहवे आणयपाणयेदेवा परिवसति

कः परिवसति यथा सप्तकुमारो नवरं यको विमानावायसतसहस्राणां त्रिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्धां त्रिंशदाल्मरुदेवसहस्राणां यावदापि
 त्वं दुर्वन्निहरति । इ प्रदत्त । आगतमावतदवाना पर्योतापर्योताना त्वानां प्रक्षप्तानि इ भवन्त । आगतमावतदेवाः परिवसन्ति ? नोतन ।
 बह्मरस्य कल्पस्यापरि सपर्यं समतिदिक् यावदुत्पत्यात्रान्ततमावतनमामो द्वौ नश्यौ प्रक्षप्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतौ उत्तरदक्षिणविक्षीर्णौ अर्धव
 त्रयं त्वानवर्त्तन्ती चचिनोताभारार्धसुप्रभौ अथ यथा सप्तकुमारो वावरप्रतिकूपौ तत्रानतमावतदेवानां तत्वारि विमानावायसतसहस्राणि च
 वन्तीति मयाक्यातम् यावरप्रतिकूपौ, यवतसुका यथा सीचर्त्त नवर मध्ये प्रावतावतसव तावावतसकाः ववरजनया कप्पा वावरप्रतिकूपा अत्रा
 नतमावतदेवानां पर्योतापर्योतानां त्वानां प्रक्षप्तानि त्रिंशपि लोकाव्यावक्यं प्रार्णं तत्र बहव आगतमावतदेवाः परिवसन्ति नर्वादेवा याव
 तप्रमावयन्ता ता तत्र त्वेधां २ विमानावायसतानां यावद्विहरन्ति मावतवाय देवेन्द्रो इवरावः परिवसति, यथा सप्तकुमारो नवरं चतुर्धा वि

महिद्विया जाव पन्नासेमाणा तेण तल्य साण२ विमाणावाससयाण जाय विहरति पाणए इत्थ देविदे देवरा
या परिवसति जहा सणकुमारे णयर चउएह विमाणावाससयाण वोसाए सामाणियसाहस्सीण असीतीए
आयरकदेवसाहस्सीण अद्वेसि च बल्लण जाव विहरति । कहिण जते ! आरणसुयाण देवाण पज्झत्ता
२ ण ठाणा पयसत्ता । कहिण जते ! आरणसुया देवा परिवसति ? गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाण
उप्पि सपरिक सपकिदिसि एत्थण आरणसुयानाम दुवे कप्पा पयसत्ता पार्हणपट्ठीणायगा उदीणदाहिणवि
च्छिन्ता अरुचवसठाणसठिया अस्मिंमालीनासरासिवन्नाना अस्सिखिज्जाठं जोयणकोफाकोठीठं आयामवि
रक्केण असस्सेज्जाठं जोयणकोफाकोठीठं परिक्वेण सहरयणामया अक्खं सरहा लठा घठा मठा नीरया
निम्मला णिप्पका निक्ककळ्ळया सप्पना ससिरीया सउज्जाया पासाईया दरिसिज्जा अन्निरुवा पळ्ळि
रूवा एत्थण आरणसुयाण देवाण तित्ति विमाणाधाससया हवतीति मस्काय , तेण विमाणा सहरयणाम

मानावासवतानं विच्छति । सामानिबससुखा अशीति आत्तरवकदेवससुखानामयेया च वड्डना यावहिहरति । क्व जवत्त । आरब्धुताना दे
वानो पयोत्तापयोत्तानो स्थानानि मच्चत्तानि क्व जवत्त । आरब्धुतका देवाः परिवसन्ति । गीतम । आगतप्रायतयोः कश्योरुपरि सपत्तं सप्र
तिदिक् चत्रातप्रायतनामानो द्वौ कश्यो मच्चत्तौ प्राचीनप्रतीचीनापलायुत्तरदाक्षविकीर्णौ अर्धचन्द्रसंख्यामसंख्यवो आचमोत्तापाराक्षिप्रप्रती
असंख्येया योजनकोटीकोट्य आयामविष्णुमात्स्यां असंख्येया योजनकोटीकोट्यः परिक्षेप सवरेवमयी अश्वो दृष्टो सप्तो पृष्टो मृष्टो नीरजसो
निमलो निप्पदुो निक्ककळ्ळयापौ सप्पनो ससिरी सोद्योतो प्रासादोपौ दक्षोनीयो अमिक्खो प्रतिकूपो अत्रारब्धुतानां देवाना वीच्च विमाना
वासवतानि जवन्तीति मयास्यात् । तानि विमानानि सवरत्नमपानि अश्वानि दृष्टानि सटानि पृष्टानि मृष्टानि नीरजानि निमलानि निप्पका

या अष्टा सरहा उठा घठा मठा नीरया निमला निप्यका निक्किकरुच्छाया सप्यन्ना ससिरीया सउज्जीया
 पासादीया दरिणिज्जा अन्निरुवा तेसिण विमाणाण यज्जमज्जेदसन्नाए पच वरुंसया पसुप्ता, तजहा
 अकयकसए फलिहयकसए रयणवकसए जाव रुववकसए मज्जे इत्य अञ्जुयवकसए, तेण वरुंसया ससुरय
 असखेज्जइज्जाने तत्यण बहवे अरणञ्जुया देयाण पज्जप्तापज्जप्ताण ठाणा पसुप्ता । तिस्रवि लोगस्स
 जहा पाणए जाव विहरति नवर तिरह विमाणावाससयाणं दसरह सामाणियसाहस्सीण वत्तालीसाए
 आयररुद्धेयसाहस्सीणं आह्वेयञ्च जाव कुञ्चमाने विहरति, यत्तीसठावीसा वारसाठचउरोसयसहस्सा
 पन्ताचत्तालीसा लञ्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्ये चत्वारिसयारणञ्जुएतिणि । सप्तविमाणस
 याइ चउसुधिएसुकप्येसु ॥ २ ॥ सामाणियसगहणीगाहा—चउरासीइत्थसीति वायसुरिससुरीयसठीए ।

नि निपयसुद्धपायाणि वमन्नादि समीकादि सोद्योताणि प्रासादीयाणि सर्वनीयाणि अमिरुपादि प्रतिक्रियादि तेषां विमानाना बहुमप्यदेशना
 ये पन्थावतंबकाः प्रवृत्ता लघुया—यंकावतंसकः स्फटिकावतंसको रत्नावतंसको यावदूपावतंसको मध्ये तदाच्युतावतंसक को पावतंसकाः स्वरज
 रिवहन्ति यावद्विहरन्ति चत्वारवाच्युताना देवाना पर्यासापर्यासानां लानानि प्रवृत्तानि विधुपि कोकावंक्षेयप्रानं तत्र बहव वारवाच्युता देवाः य
 निक्कसइगुका पत्तारिज्जदाल्लरुद्धेयसइगुका आक्षिपत्य पुरोभत्तित्त यावत्सुवन् विहरति इतिविहरति विमानावावतंसानां इज्जानां वाना
 पन्थावत्पत्तारिज्ज त्पुक्कसइकाजिहरज्जदि ॥ १ ॥ जावत्पन्थावत्कप्ये पत्तारिज्जवाप्तारवाच्युतेपीदि । अमरिवात्पत्तारिज्जदि यमुदेयेतेपुक्कप्येसु ॥

पन्नाचमालीसा तीसावीसादसहस्सा ॥ ३ ॥ एएचेत्र आयरस्का चउगुणा । कहिण जते ! हिठिमगेविज्जा
गदेवाण पज्झप्ता २ ण ठाणा पक्खप्ता २ कहिण जते । हेठिमगेविज्जागा देवा परिधसति ? गोयमा ! आ
रणसुयाण कप्पाण उप्पि जाव उहु दूर उप्पइत्ता एत्थण हेठिमगेविज्जागाण देवाण ततो गेवेज्जाविमाण
पत्थप्ता पक्खप्ता, पाईणपर्हणायगा उदीणदाहिणविच्छिक्का पक्रिपुक्खचदसठाणसठिया अग्निमालीजासरसि
वत्तान्ना संस जहा अजलोगे जाव पक्रिक्का, तत्थण हेठिमगेविज्जागाण देवाण एक्कारसुत्तरे विमाणायास
सए हवतीति मस्काय तेण विमाणा सहरयणामया जाव पक्रिक्का, एत्थण हेठिमगेविज्जागाण देवाण
पज्झप्ताण २ ठाणा पक्खप्ता, तिसुवि लोगस्स असखेज्जाइजागे तत्थण बहवे हेठिमगेविज्जागा देवा परि
धसति सहे सममहिहीया सहे समजसा सहे समथला सहे समानुजावा महासोरका अ
णिदा अप्पेरसा अपुरोहिया अहमिदा नाम ते देवगणा पक्खप्ता समणाउसो ! कहिण जते ! मज्झिमगाण

२ ॥ सामानिकसगुहविणा-चतुरशीतिरशीति द्विसप्ततिः सप्ततिषष्टिषष्टि । पचाशसुत्तारिमात् त्रिंशद्विंशदसहस्राणि ॥ १ ॥ एते चैव चतुर्गुणा
व्याप्तरवाः । ॥ मदन्त । अचक्षन्पदेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्वार्थानि प्रश्नानि, क्व प्रदन्त । अचक्षन्पदेयकदेवाः परिवसन्ति ? गीतम् ।
आरकाभ्युत्तकस्योदपरि सपत्नं सप्रतिदिक् पावदूमुत्पत्त्याश्च वक्षन्पदेयकानां देवानां ग्रैययकप्रकटाणि प्रश्नानि प्राचीनप्रतीचीनानां पत्तानि सप्त
रदक्षिणावस्तीर्णानि प्रतिपूषचक्षुस्त्वानसस्थितानि अचिन्तोत्तानाराशिबर्णानि श्रेयं यथा प्रसन्ताके यावत्प्रतिरूपाणि, तत्रापक्षान्ग्रैययकदेवा
नां एकादशाक्षरं विमामावासक्षतं प्रवर्तीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि, अत्रापक्षान्ग्रैययकानां देवानां
पर्याप्तापर्याप्तानां स्वार्थानि प्रश्नानि त्रिविधं शोभस्यासम्भेयं प्राग वत्त यद्भवो वक्षन्पदेयका देवाः परिवसन्ति सर्वे सममहोदका सर्वे सम

गेयिज्जगदेवाण पज्जसा २ ण ठाणा पसुत्ता । कहिण भत्ते ! मज्झिमगेयिज्जगदेवा परिवसति ? गोयमा !
 हेठिमगेयिज्जगण उप्पि सपरिक सपान्निदिस जाव उप्पइहा एत्थण मज्झिमगेयिज्जगदेवाण ततो गेयिज्ज
 गेयिमाणपत्थना पसुत्ता पार्इणपणीणायता जहा हेठिमगेयिज्जगण नयर सत्तुवरे विमाणाधाससए हव
 सीति मरकाए, तेण विमाणा जाव पन्निरुया एत्थण मज्झिमगेयिज्जगण देवाण जाव तिसुयि लोगस्स झस
 खेज्जन्नगे तत्थण धहवे मज्झिमगेयिज्जगा देवा परिवसति जाव झ्हमिदा नाम देवगणा पसुत्ता । सम
 णाउसो ! कहिण भत्ते ! उवरिमगेयिज्जगा देवाण पज्जात्तापज्जसाण ठाणा पसुत्ता । कहिण भत्ते ! उवरिम
 गेयिज्जगा देवा परिवसति ? गोयमा ! मज्झिमगेयिज्जगदेवाण उप्पि जाव उप्पइहा तत्थण उवरिमगेयिज्ज
 गाण देवाणं सठ गेयिज्जगविमाणपत्थना पसुत्ता पार्इणपणीणाठं सेसं जहा हेठिमगेयिज्जगण नवर

पुत्तिकाः सर्वे वसपयकः सर्वे समवसाः सर्वे महाभुवावा महाकाका कनिष्ठा जमेष्वा अपुरोहितः कनिष्ठा नामत स्ते देवकदाः प्रज्जसाः अम
 व । आपुसन् । ॥ अदत्त । मध्यमयेवकदेवाना पर्यासापर्यासानां स्थानानि प्रज्जसानि । ॥ अदत्त । मध्यमयेवकदेवा परिवसन्ति ? पीतम । अ
 वसानयेवकदेवानामुपरि सपत्तं अतिदिक् पावदुत्पत्त्याव मध्यमयेवकदेवानां येवकप्रसटाणि प्रज्जसानि प्राचीनप्रतीचीनायताम्युत्तरदिशि
 विकीर्णानि यथा वसानयेवकाना मवर ससोत्तरं विमानावाकस्यत मवतीति मयाक्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रसिद्धयानि ज्ञानमध्यमयेवे
 पवानां देवानां स्थानानि यावत्प्रसिद्धयि कोवकावक्येवं ज्ञानं तव वदन्तो मध्यमयेवकदेवा देवाः परिवसन्ति यावद्विज्जगा नाम ते देवाः प्रज्जसाः
 मवत् । आपुसन् । ॥ अदत्त । अपरिमयेवकदेवानां पर्यासाः स्थानानि प्रज्जसानि ॥ अदत्त । अपरिमयेवकदेवा परिवसन्ति ? पीतम । अ
 प्परिमयेवकदेवानामुपरि वावदुत्पत्त्यव ससोपरिमयेवकानां देवानां येवकप्रसटाणि प्रज्जहाणि प्राचीनप्रतीचीनावतानि ज्ञेवं यथावसानयेवकदा

एणे विमाणावाससए हवतीति मस्काए, संस तहेव ज्ञाणियह्व जाय अहमिदा नाम ते देवगणा पणप्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसत्तुत्तरचमज्जिमए । समयेगउवरिमए पचेअअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिण जते ! अणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जात्ता २ ण ठाणा पणप्ता ? कहिण जते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पत्ताए पुठयीए वज्जसमरमणिज्जाते नूमिजागाते उहु चदिमसू रियगह्गणनस्कत्तताराऊवाण वल्लइ जोयणसयाइ वल्लइ जोयणसयसहस्साइ वल्लइ जोयणसयसहस्साइ यज्ज गाते जोयणकोळीते वज्जगाते जोयणकोळीकोळीते उहु दूर उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिदवज्ज लोगलतगसुक्कसहस्सारअणयपाणयअणयसुयकप्पा तिणियअठारसुत्तरे गेविज्जायिमाणावाससए यित्ती वइत्ता तेय परदूरगता णीरया निम्मला यित्तिमिरा विसुत्ता पचदिसि पच अणुत्तरा महतिमहालया महा विमाणा पणप्ता, तजहा-विजये वेजयंते जयते अपराजिए सवुठसिद्धे । तेण विमाणा सवुरयणामया

मां मवरं एवं विमानावाससुत्त प्रवतीति मयास्यातम्, धीरं तथैव मखितव्य यावदहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रपत्ताः यमव । आयुषन् । एका वसोत्तरमप-स्तनेयु सतोत्तरंतुमाप्यामिक्षे । अतमेकमीपदिविक्षे पञ्चैवानुत्तरविमानाः ॥ १ ॥ इन्द्र । अनुत्तरोपपातिकाना देवाना पर्याप्तप योत्ताना स्थानानि प्र० इन्द्र । अनुत्तरोपपातिका देवाः परिवसन्ति ? नीतस । अस्या रवप्रजायाः पृथिव्याः यदुसमरमखीपाद्भूजुमिन्नागादूक्षे बन्धसूययश्मगमकृताराऊपाका यद्भूनि योजनानि यद्भूनि योजनशतानि यद्भूनि योजनसहस्राणि यावदूक्षे दूरमुत्पत्यान्त्रीपर्मज्ञानसन्तुमारमा वेन्द्रप्रक्षतान्तकशुक्लसहस्सारानतमायतारबाधुतकस्या स्त्रीणि बाष्पादक्षोहराणि ग्रंथेयकविमानावाससुत्तानि व्यतिप्रत्य (वल्लप्य) तेज्योपि परं दूरं नता नीरवसो निर्मेता यित्तिमिरा विमुत्ताः पणप्ता दिशु पञ्चानुत्तरा मयाविमानाः प्रपत्ता स्तद्यथा-विषयविषयतोषयतो

गोविज्जगदेवाण पज्झन्ता २ ण ठाणा पयुत्ता । कहिण ज्ञते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति ? गोयमा !
 हेठिमगेविज्जगण उपि सपस्कि सपकिविंसि जाव उपपइहा एत्थण मज्झिमगेविज्जगदेवाण तत्तोगेविज्जा
 गोविमाणपत्थना पयुत्ता पाईणपणीणायता जहा हेठिमगेविज्जगण नवरं सत्तुसरे विमाणवाससए हव
 तीति मस्काए, तेण यिमाण जाव पक्रिया एत्थण मज्झिमगेविज्जाण देवाण जाव तिसुयि लोगस्स स्यस
 खेज्जह्मगे तत्थण यहवे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसन्ति जाव स्यहमिदा नाम देवगणा पयुत्ता । सम
 णाउसो ! कहिण ज्ञते ! उवरिमगेविज्जगा देवाण पज्झत्तापज्झाण ठाणा पयुत्ता । कहिण ज्ञते ! उवरिम
 गोविज्जगा देवा परिवसन्ति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उपि जाव उपपइहा तत्थण उवरिमगेविज्जा
 गाण देवाणं तठ गोविज्जगोविमाणपत्थना पयुत्ता पाईणपणीणाठ सेस जहा हेठिमगेविज्जगण नवर

पुत्तिका) सर्वे समयस्युः सर्वे समवकाः सर्वे महाभुजावा महाशक्त्या समिन्त्रा समेका समुपरोहिता समिन्त्रा नामत स्तो देववकाः प्रज्जाताः अथ
 च । आयुस्मन् । इ प्रवत्त । मध्यमयैवेयकदेवानां पयोसापर्याप्तानां स्वामानि प्रज्जासामि । इ प्रवत्त । मध्यमयैवेयकदेवाः परिववन्ति ? भौतम । अ
 थकमयैवेयकदेवानामुपरि सप्तमं समतिदिक् वायुदुत्यस्याश्च मध्यमयैवेयकदेवानां यैवेयकप्रकटाणि प्रज्जासामि प्राचीनप्रतीचीनापताम्युत्तरदिशि
 विकीर्णानि यथा वस्तमयैवेयकाना नवर सप्तोत्तरं विमानावाश्रयत मवतीति मयाक्यातम् । तानि विमानानि वावत्प्रतिद्विपादि वस्तमय्ययैवे
 यकानां देवानां स्वामानि यावच्चिदपि लोचक्याश्रयेयं प्राप्तं तच्च जहवो मध्यमयैवेयका देवाः परिववन्ति वावद्विभिन्ना नाम ते देवाः प्रज्जाताः
 प्रवत्त । वायुस्मन् । इ प्रवत्त ! उपरिमयैवेयकदेवानां पयोसाः स्वामानि प्रज्जासामि इ प्रवत्त । उपरिमयैवेयकदेवाः परिववन्ति ? भौतम । न
 मध्यमयैवेयकदेवानामुपरि वायुदुत्यस्य सप्तोपरिवयैवेयकानां देवानां यैवेयकप्रकटाणि प्रज्जासामि प्राचीनप्रतीचीनापतामि स्तोत्रं यथा वस्तमयैवेयका

एणे विमाणावाससए ह्यतीति मस्काए, सेस तहेव ज्ञाणियह्व जाय झ्हमिदा नाम ते देवगणा पयात्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरहे ठिमिसुसत्तुत्तरचमज्जिमए । सयमेगउवरिमए पचेयझुणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिण नते ! झुणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पयसत्ता ? कहिण नते ! झुणुत्तरोववाइया देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्यजाए पुत्थीए यज्जसमरमणिज्जाए न्नीमिजागाए उह चदिमसू रियगहगणनस्कत्ततारारूवाण यत्तइ जोयणसयाइ यत्तइ जोयणसहस्साइ यत्तइ जोयणसयसहस्साइ यज्ज गाए जोयणकोफ्ठीए यज्जगाए जोयणकोफ्ठाकोफ्ठीए उह दूर उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणसणकुमारमाहिदयन लोगलतगसुक्कसहस्सारस्थाणयपाणयस्थारणझुञ्जुकप्पा तिणिययझुठारसुत्तरगेविज्जाविमाणावाससए विती यइत्ता तेय परदूरगता णीरया निम्मला वितीमिरा विसुत्ता पचदिंसि पच झुणुत्तरा महतिमहालया महा विमाणा पयसत्ता, तजहा-विजये वेजयते जयते झुपराजिए सव्वठसिद्धे । तेण विमाणा सव्वरयणामया

ना मवरं एक विमानावाससत्तं प्रवर्तीति मयास्यात्तम्, छेवं तथैव मखितव्य यावद्वह्निन्ना नाम ते देवगणाः प्रवृत्ताः यमव । आयुस्सन् । एका यद्धोत्तरमप-स्तनेपु सतोत्तरंतुमाप्यामिहे । इतमेकमीपरदिमिहे पम्मेवानुत्तरविमानाः ॥ १ ॥ प्रवत्त । अनुत्तरोपपातिकामां देवाना पर्याप्ताप योसाना स्वाप्तानि प्र० ६ प्रवत्त । अनुत्तरोपपातिता देवाः परिवसन्ति ? गीतम । अस्या रत्नपत्राया पृथिव्याः यद्भुसमरमणीयात्तुन्निष्ठागावसूरे चन्द्रसूर्यपद्मवक्त्रतारारूपाया यद्भूति योचनानि यद्भूति योचनसङ्ख्यादि यावदसूरे दूरमुत्पत्याग्र सीचमैज्जानसुनस्कुमारमा हेन्द्रप्रसन्तात्तकसुखसङ्खारामतावतारणाथुत्तकस्या खीदि आटाइसोठरासि ग्रयेयकविमानावाससत्तानि व्यतिव्रज्य (वल्लभ्य) तेज्योपि परं दूरं गता नीरवसो निर्मसा वितीमिरा विमुत्ताः पचसु विहु पम्मानुत्तरा मशविमशसया मशविमानाः प्रवृत्ता स्वद्या-विजयविजयसोवपसो

गेयिज्जगदेवाण पञ्चसत्ता २ ण ठाणा पसुत्ता । कहिण ज्ञते ! मज्झिमगेयिज्जगदेवा परिवसति ? गोयमा !
 हेठिमगेयिज्जगण उपि सपस्सि सपस्सिदिस्सि जाय उपपइत्ता एत्थण मज्झिमगेयिज्जगदेवाण ततोगेयिज्जा
 गयिमाणपत्थणा पसुत्ता पार्हणपणीणायता जहा हेठिमगेयिज्जगण नयरं सत्तुत्तरं विमाणावाससए हव
 तीति मस्साए, तेण यिमाणा जाय पस्सिदा एत्थण मज्झिमगेयिज्जाण देवाण जाय तिसुयि लोगस्स सस
 खेज्जठजगे तत्थण बहवे मज्झिमगेयिज्जगा देवा परिवसति जाय स्यहमिदा नाम देवगणा पसुत्ता । सम
 णाउसो ! कहिण ज्ञते ! उवरिमगेयिज्जगा देवाण पज्जातापज्जसाण ठाणा पसुत्ता । कहिण ज्ञते ! उवरिम
 गेयिज्जगा देवा परिवसति ? गोयमा ! मज्झिमगेयिज्जगदेवाण उपि जाय उपपइत्ता तत्थण उवरिमगेयिज्जा
 गाण देवाणं तठ गेयिज्जगयिमाणपत्थणा पसुत्ता पार्हणपणीणाठ सेस जहा हेठिमगेयिज्जगण नयर

पुत्तिबाः सर्वे समयस्य सर्वे समवसताः सर्वे महानुज्जावा महाकात्या अग्निना समेषा अपुरोहित्वा अग्निना नामत स्ते देवयक्षाः प्रज्ज्ञासाः अम
 ब । आयुष्मन् । ॥ अदत्त । मध्यमयेवेयकदेवानां पर्योतापर्योतानां स्थानानि प्रज्ज्ञासानि । ॥ अदत्त । मध्यमयेवेयकदेवा परिवसन्ति ? नीतम । अ
 यत्तमयेवेयकदेवानामुपरि सपत्नं अमतिदिक् आबहुत्पत्वा मध्यमयेवेयकदेवानां येवेयकप्रकटाणि प्रज्ज्ञासि प्राचीनप्रतीचीनायताभ्युत्तरदिशि
 विशीर्षाणि यथा यत्तमयेवेयकानां नगर वसोत्तरं विनाभावावसृतं मवतीति मयाक्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रसिद्धयानि अत्रमध्यमयेवे
 यकानां देवानां स्थानानि यावच्छिवि लोककावक्ष्येवं जाय तत्र जइवो मध्यमयेवेयका देवा परिवसन्ति यावत्प्रसिद्धा नाम ते देवाः प्रज्ज्ञासाः
 अमव । आयुष्मन् । ॥ अदत्त । उपरिमयेवेयकदेवानां पर्योताः स्थानानि प्रज्ज्ञासानि ॥ अदत्त । उपरिमयेवेयकदेवाः परिवसन्ति ? नीतम । अ
 म्यमयेवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्तं ततोपरिमयेवेयकानां देवानां येवेयकप्रकटाणि प्रज्ज्ञासि प्राचीनप्रतीचीनायतानि ज्ञेवं यथायत्तमयेवेयका

धहुमज्जद्वेसजाए अठ्ठजोयणिए खेहे अठ्ठजोयणाइ वाहल्लेण पव्वहे, ततो अणंतर चण माताए २ पाए
 सपरिहाणीए २ परिहायमाणी २ सहेसु चरिमतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अणुलस्स सखेज्जाइनागे वाहल्ले
 ण पयात्ता, इसीपप्पाराएण पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पयात्ता, इसीतिवा इसीपप्पाराइवा तणूतिवा
 तणुयरीतिवा सिद्धीतिवा सिद्धालएतिवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा लोयगगयून्नियातिवा लोय
 पान्नुज्जणाइवा सवपाणन्नयजीवसत्तसुहावहा यइवा । इसीपप्पाराण पुढवी सेता सखदलधिमलसोच्छिय
 मुणालदगरयतुसारगोस्कीरहारवत्ता उत्ताणयत्तसठाणसठिया सवज्जुणसुखमई अच्चा सरहा लरहा घठा
 मठा पीरया निम्मला निप्पका निक्काकच्छाया सप्पजा ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसणिज्जा अ
 न्तिरुवा पान्तिरुवा इसीपप्पाराएण नीसाए जोयणमि लोगतो तस्सण जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाउए तस्सण
 गाउयस्स जेसे उवरिल्ले तप्पाने एत्थण सिद्धा नगवतो सादिवा अपज्जवसिया अणुगजातिजरामरणजो

क्षमयाया परिहीयमाना सर्वेण परिमानेषु भक्षिष्यन्तीत्यतस्वी अणुलासत्येयनाय याइत्येन प्रचत्ता, इयत्ताप्रान्नारायाः पुपिक्वा हावदा ना
 मयेयानि प्रवन्तीति तद्यथा-इयदिति वा इयत्ताप्रान्नारेति वा तन्वीति वा तन्तुरीति वा सिद्धुरिति वा सिद्धासय इति वा मुत्तिरिति वा मुत्ता
 सय इति वा लोकाय इति वा लोकायसूचिकति वा लोकायमतिवादितीति वा सवप्राणन्नूतकीवसत्तसुखयइ इति वा साधेयप्रान्नारा पुपिक्वा
 येता काहुदसविमलधीवसिक्कसुणासद्वज्जलज्जाएगोशीरधारवत्ता उत्तामकक्कसत्तानसत्थिता सवाज्जेमसखेयमयो अच्चा सत्था लहा पूहा मूहा
 भीरवा निमस्ता निप्पन्ना निष्कटकच्चाया समभा समीका सोद्योता पासादीया दवभीया अन्तिरुपा प्रतिसूपा इंपप्राप्रान्नाराया पुपिक्वा निमि
 दिगत्या योजन लोकात्त सत्था च योजनस्य यदुपरितन गम्युत्त तस्य गम्युत्तस्य यदुपरितन पद्दनाय यत्र सिद्धा नगवत्त सादिवा अपपवसिता अनेकजा

अष्टौ संह्या घटा मठा नीरया निम्मला निष्पका निष्ककच्छाया संपन्नां चिसिरीया सउज्जीया पासा
 दीया दरिसणिज्जा अन्निरुवा पन्निरुवा एत्थण अणुत्तरोवयाइयाण देवाण पज्जसापज्जसाण ठाणा प० ।
 तिसुचि लोगस्स अस्सेज्जाइज्जागे तत्थण यहेवे अणुत्तरोवयाइया देवा परिवसति सहे सममहहिंया सहे
 समयला सहे समाणुजाया महासीस्का अणिदा अप्पेस्सा अपुरोहिंया अहमिदा ते देवगणा पक्खत्ता । स
 मणाउसी । कहिण नत्ते ! चिद्वाण ठाणा पक्खत्ता । कहिण नत्ते ! चिद्वा परिवसति ? गोयमा ! सव्वठस्स
 महाविमाणस्स उव्वारिक्खान् यूनियग्गान् दुवालसजोयणे उहु अवाहाए एत्थण क्खसीपप्पारा नाम पुठवी प० ,
 पणयालीसं जोयणसयसहस्साइ अयामविरक्खेण एगजोयणकोफीहं वायालीस च सयसहस्साइ तीस सहे
 स्वाइ दीन्ति य अउणापन्ते जोयणसए किच्चिविसेसाहिए परिकेवेण पक्खत्ता । इसीपप्पाराएण पुठवीए

परावित्तः सर्वाचविदः । ते विमानाः स्ववस्त्रमवा कृत्वा सत्त्वा पूष्टा सृष्टा नीरजसो निर्मला निष्पन्ना निष्ककच्छायाः संपन्नाः समीका सोद्यो
 ताः प्रासादीया दर्शनीया अन्निरुवा पन्निरुवा अणुत्तरोपपातिकाया देवाना पर्योतापर्योताना स्वानानि प्रकृष्टानि चिद्यपि (आसापकेव)
 सोबत्सासंख्यं प्राग तत्र बह्वीनुत्तरोपपातिका देवाः परिवसन्ति सर्वे समहिंकाः सर्वे समज्जसा सर्वे समानुजाया महेश्वरस्या जनिन्ना अपुरोहि
 ता अप्रप्या अहमिन्ना नाम ते देवमन्त्राः प्रकृष्टाः जगत् । आयुषम् । इ मठम् । सिद्धानां स्वानानि प्रकृष्टानि इ मठम् ! सिद्धाः परिवसन्ति ?
 नौतम् । सर्वाचस्य महाविमानलोपारमायाः कृत्पिकाया द्वादशयोगानामूर्ध्वं अवाचया ब्रह्मप्राग्भारा नाम पृथिवी प्रकृष्टा , पंचपत्वारिंशद्योगान
 यतश्चक्ष्वाणि आयामविरक्खन्त्याः मेकाबीजनकोटी द्विचत्वारिंशद्यतश्चक्ष्वाणि त्रिंशत्चक्ष्वाणि चैकोनपचाशद्योगानकृते चिन्विचिद्विंशतिचि
 मि परिकेपक प्रकृष्टा ब्रह्मप्राग्भाराया पृथिव्या अनुनय्यदेशजाने ऽष्टयोनिभिर्लोकैश्च कर्तरी बीजनाभि वाइस्सव प्रकृष्टं सर्वानन्दं भावया इ मठे

तानयस्त्वयिमुक्ता । धृत्नोन्नसमोगाढा पुठासर्वेविलोयते ॥ ९ ॥ फुसहश्चणतंसिद्धे सध्वपएसेहिनिधमसो
सिद्धा । तत्रिश्चसखेजगुणा देसपदेसेहिजेपुठा ॥ १० ॥ अस्सीराजीवधणा उवउत्तादसंयनाणेय । सागा
रमणागारं छरकणमेयतुसिद्धाण ॥ ११ ॥ केयलणाणवउत्ता जाणतीसध्वनाथगणनावे । पासतिसध्वउखलु
केशलदिठीहिणताहि ॥ १२ ॥ नविश्चाल्यमानुसाण तसास्कंनल्यसध्वदेवाण । जासिद्धाणसुख अद्धावाहउवग
याण ॥ १३ ॥ सुरगणसुहसमत सध्वधापिप्रियश्चणतगुण । नविपायडमुत्तिसुहणताहिवग्गत्रगूहि ॥ १४ ॥
सिद्धस्ससुहोरासी सध्वधापिप्रिजहहविज्जा । सोनतवग्गजइने सध्वगासणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामको
द्वमिच्छो नगरगुणवज्जाविहविजाणतो । णवएडपरिकेहउ उवमाएताहिश्चसतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणसोख अ
णोयमनल्यतस्सठवम्म । किचिविसेवेणिती सारिस्सकामगुणिय ॥ १७ ॥ जहसध्वकामगुणिय पुरिसो

अवगाहनपासिद्धः प्रवर्तिनागेन भवन्तिपरिशीला । वृत्तानमभिरपस्य पञ्जरमरयतिमुत्तानाम् ॥ ८ ॥ यत्रचैवःसिद्ध स्तत्रामस्ताप्रययविमुक्ताः ।
 अन्योप्यधमवगाढाः इष्टाः (सन्नाः) सर्वपितोक्तास्ते ॥ ९ ॥ इष्टश्रुत्यनक्तान् सिद्धान् सर्वप्रवर्गानैयमज्ञाःसिद्धाः । तेव्यसक्यंयगुहा देशप्रवञ्चयेष्टप
 स्ता ॥ १० ॥ चवारीराजोवचना उपयुक्तादज्ञान तथाज्ञाने । साकारानाकारं लक्षणमतस्तुसिद्धानाम् ॥ ११ ॥ क्षेत्रज्ञानापयुक्ताः ज्ञानान्तिवस्यंम्रावगु
 यन्तावान् । पश्यन्तिस्वतस्तु स्तेवसक्यंष्टिभिरमन्ताभिः ॥ १२ ॥ नैवास्तिमनुयाया मरसीक्यनास्तिमयवेवता । यरिसद्माना सीत्यमव्यायायामुपग
 तानाम् ॥ १३ ॥ मुरगबसुसंभमस्तु सर्वाष्टापिस्तिमननतनुवम् । मप्राप्नोतिमुक्तास्तुष्टु भनभौवने यधर्गितसर्वपि ॥ १४ ॥ सिद्धस्यसुराज्ञाः सर्वा
 द्वापिस्तितायंवि प्रयत् । सोमननवर्गनक्तः सर्वा काष्ठोतोमान्तिमरसीत्यम् ॥ १५ ॥ स्त्रीकयिद्राम ययांविविजामव्यष्टुखगरगुहान् । पारिकययितुन
 क्रो त्युपमायास्तत्रभावात् ॥ १६ ॥ इतिस्तिद्वानावौक्य मनुपर्मनास्तितस्यवोपस्यम् । किञ्चिद्विष्टापकतोस्य सादृश्यं श्रुतवद्व्यमाश्चमिदम् ॥ १७ ॥

निससारकलकलीजावपुणम्रवगम्रवासवसही एवते समझक्तांता सासयमणागयद् काल चिठति, तत्यवियते
 स्ववेदा स्वयेयणाणिममा स्वसगायससारविष्यमुक्ता । पदेसनिस्ससिचठाणा ॥ १ ॥ कहिपकिहयासिदा कहि
 सिदापडठिया । कहिथोदीवइसाण कहगतूणसिज्जइ ॥ १ ॥ खलोएपकिहयासिदा लोयग्गेयपडठिया ।
 इहथोदीवइत्ताण तत्यगतूणसिज्जइ ॥ २ ॥ वीहवाहस्सवा जवरिमजवेहविज्जसठाण । तत्तोत्तिजागहीणा
 सिठाणोगाहणान्णिया ॥ ३ ॥ सठाणतुइह जवचयतस्सचरमसमयम्मि । खासीयपदेसघण तसठाणताहि
 तस्स ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेप्पिसा घणुस्सिजागीयहोइनायसो । एसाखलुसिदाण उक्कोसोगाहणान्णिया ॥ ५ ॥
 चत्तारियरयणीत्ति रयणितिजागूणियायधीधवा । एसाखलुसिदाण मज्झिमोगाहणान्णिया ॥ ६ ॥ एगाय
 होइरयणी स्थेवयस्यगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिदाण जहओगाहणान्णिया ॥ ७ ॥ सेगाहणाएसिदा
 जवतिजागेणेहोइपरिहीणा । सठाणमाणित्यत्य जजरामरणविष्यमुक्ताण ॥ ८ ॥ जत्ययएगीसिद्धो तत्यस्यण

विजरामरणविषयकारकसंक्षेपान्नावपुण्णसंनयसति रेवं च इमपिकाथाः आश्रयमनामताद्वा कासं तिष्ठति, तत्रापि च ते एवेदा एवेदना निममा
 जकहुव । संसारविममुखा । अदेइमिनेत्तवत्ताना ॥ १ ॥ केमप्रतिष्ठा-विदा केमविदाः प्रतिष्ठिताः । जवथोदिंत्तयात्तया नत्तासिचयत्तिक्ताचते ॥ १ ॥
 यतोवेमप्रतिष्ठा-विदा लोकायेमप्रतिष्ठिताः । इहोक्कोसोदित्ताते नत्तासिचयत्तिक्ताचते ॥ २ ॥ इपेकात्तया जवरमप्रदे एवेत्तुत्तानं । तत्तकि
 जावहीमा । विदुमानववाइमानविदा ॥ ३ ॥ यत्तत्तानिह मज्झिमस्यजवरमसमेव । जावीत्तप्रदेइत्तानं तत्तत्तानं जवत्तत्तानं ॥ ४ ॥ वीविज्जवाभि
 मयिदि-जवत्तुक्कानो जवत्तिक्ताचत्ताना मुत्तकाववाइमानविदा ॥ ५ ॥ जवत्तुक्काना रजिज्जिजापोमावीत्ताना । एवाकमुदि
 दावो नत्तासिचयत्तिक्ताचत्ताना ॥ ६ ॥ एकावत्तुक्काना रजिज्जिजापोमावीत्ताना ॥ ७ ॥ एकावत्तुक्काना रजिज्जिजापोमावीत्ताना ॥ ८ ॥

हिया दिसानुवाएण सङ्ख्योवा छाउकाइया पञ्चिमेण पुरिच्छिमेण दहिणेण दिसेसाहिया दिसेसाहि
या उत्तरेण विसेसाहिया, दिसानुवाएण सङ्ख्योवा तेउकाइया दहिणुत्तरेण पुरिच्छिमेण दिसेसाहिया
पञ्चिमेण विसंसाहिया दिसानुवाएण सङ्ख्योवा याउकाइया पुरिच्छिमेण पञ्चिमेण विसंसाहिया दा
हिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसंसाहिया । दिसानुवाएण सङ्ख्योवा वणस्सडकाइया पञ्चिमेण पुर
िच्छिमेण विससाहिया दहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण दिसानुवाएण सङ्ख्योवा वेइदि
या पञ्चिमेण पुरिच्छिमेण विसेसाहिया दहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया, दिसानुवाएण
सङ्ख्योवा तेइदिया पञ्चिमेण पुरिच्छिमेण विसंसाहिया दहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया,
एव चउरिदियात्रि, दिसानुवाएण सङ्ख्योवा णेरइया पुरिच्छिमपञ्चिमेण उत्तरेण दहिणेण विससेऊ
गणा, दिसानुवाएण सङ्ख्योवा रयणप्पनापुढियिणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिमेण उत्तरेण दहिणेण विससे

[illegible]

भोत्तृणभोयणकोड । तएहालुहाविमुक्को छच्छिज्जजहास्यमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयससुहालतिहा सुउलनि
 घाणमुत्रगयासिद्धा । सासयमसुहायाह च्छिठतिसुहीसुहपप्पा ॥ १९ ॥ सिद्धसिययुद्धसिय पारगतत्तियपरपर
 गतत्ति । उम्मुक्ककम्मकयया स्यजरास्यमरास्यसगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नससुद्धुस्का जातिजरामरणयधणवि
 मुक्का । सुधायाहसुक्क स्यणुहोतीसासयसिद्धा ॥ २० ॥ यितिय पद सम्मत्त ॥ २ ॥
 दिसिगइहदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तुणाणदसण सजयउवट्ठगस्यहाहरे ॥ १ ॥ ज्ञासगपरित्तप
 ज्ञा ससुज्जमसखीयत्तवत्यिसेच्चरिमे । जीवयस्वेत्तयधे पुग्गलमहदणुच्चय ॥ २ ॥ त्रिसानुआएण ससुत्थोया
 जीया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया पञ्चच्छिमेण त्रिसानुआएण
 ससुत्थोया पुढायिकाहया दाहिणेण उम्हरेण विसेसाहिया पुरच्छिमेण विसेसाहिया पञ्चच्छिमेण विसेसा

ययासववामगुणवत्तं पुरुषोमुक्तायोजन कोपि । त्वयप्राप्तुयाविमुक्ता क्तिष्ठतिसोषासुसुतसुतः ॥ १८ ॥ इतिसंबेहालपुता सुतुलनिर्वाकमुपगताः सि
 द्धाः । आसुतमवावाप्यं तिष्ठन्तिमुक्ता नुखपासाः ॥ १९ ॥ सिद्धादतिबुद्धादति पारनताइतिपरम्परगताः ॥ २० ॥ उम्मुक्ककर्मकववा सजरासमरास्य
 नाह ॥ २० ॥ निस्सीरेसुद्धुःका जातिजरामरबन्धनविमुक्ताः । सव्यावाप्यसोस्य मनुभवंतिज्ञासुतंसिद्धाः ॥ २१ ॥ इति श्री रामचन्द्रनाथ श्रिय्यना
 मचन्द्राये विरचिते प्रज्ञापनानुवादे द्वितीय पद समाप्तम् ॥ २ ॥
 दिक्चमतीन्द्रियकाया योभोवेदान्तवायस्तदपह । सम्यक्ज्ञानदार्ढ्यं संयतोपयोनीतवाहारः ॥ १ ॥ आचक्षरीतयपी सिद्धसुखबन्धीप्रकाशितचरमा
 वि । जीवतेष्वन्त्यः पुद्गलमहादवतबलस्युः ॥ २ ॥ दिनमुपातेन (दिव्योपिकत्येत्यर्थः) स्वकोका जीवाः पद्मिनेन पूर्वव विचक्षाचिवा इक्षिणेन
 विक्षेपाचिवा उम्हरेव विक्षेपाचिवाः, दिनमुपातेन स्वकोकाः पद्मिनीवायिका इक्षिणोत्तरेव च विक्षेपाचिकाः पूर्वव विक्षेपाचिकाः पद्मिनेन

[illegible][illegible]

ज्ञगुणा, विसानुवाएण सत्त्वत्योवा सक्करप्पन्नापुढायिणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्स
 खेज्जगुणा । विसानुवाएण सत्त्वत्योवा णेरइया वालुयप्पन्नापुढविपुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्स
 खिज्जगुणा । विसानुवाएण सत्त्वत्योवा पक्कप्पन्नापुढविणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्सखे
 ज्जगुणा । विसानुवाएण सत्त्वत्योवा धूमप्पन्नापुढविणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्सखेज्ज
 गुणा । विसानुवाएण सत्त्वत्योवा तमप्पन्नापुढायिणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्सखेज्जगुणा
 विसानुवाएण सत्त्वत्योवा अहे सत्त्वमापुढविणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेहिती अहे सत्त्वमापुढ
 विणेरइएहिती ठठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण अस्सखेज्जगुणा, दाहिणेण अस्स
 खेज्जगुणा, दाहिणिहिती तमापुढविणेरइएहिती पचमाधूमप्पन्नाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिम

ण खल्लोकाः इकरममपचिबीनिरयिकाः पूर्वपचिबीमोत्तरं दक्षिणेनाख्येयगुणाः, दिग्गुणातन सर्वलोका नैरयिका मासुब्रज्जापचिबीनैरयिका
 पूर्वपचिबीमोत्तरं दक्षिणेना ख्येयगुणाः, दिग्गुणातेन सर्वलोकाः पद्मप्रजपचिबीनैरयिकाः पूर्वपचिबीमोत्तरं दक्षिणेनाख्येयगुणाः, दिग्गुणातेन
 सर्वलोका भूमप्रजपचिबीनैरयिकाः पूर्वपचिबीमोत्तरं दक्षिणेना ख्येयगुणाः, दिग्गुणातन खल्लोका स्तनाःप्रजपचिबीनैरयिका पूर्वपचिबीमोत्तरं
 दक्षिणेनाख्येयगुणाः दिग्गुणातन खल्लोका अथाःसप्तमापचिबीनैरयिकाः पूर्वपचिबीमोत्तरं दक्षिणेनाख्येयगुणा पूर्वपचिबीमोत्तरं
 स्तनाः पचिन्ना नैरयिका पूर्वपचिबीमोत्तरं दक्षिणेनाख्येयगुणा दक्षिणेनाख्येयगुणाः, दक्षिणात्यप्यस्तनापचिबीनैरयिकेभ्यः दक्षिणा
 याः पचिन्ना नैरयिका पूर्वपचिबीमोत्तरं दक्षिणेनाख्येयगुणा दक्षिणेनाख्येयगुणाः दक्षिणात्यप्ये भूमप्रज्जापचिबीनैरयिकेभ्य दक्षिणात्यप्ये भूमप्रज्जा
 पचिन्ना नैरयिकाः पूर्वपचिबीमोत्तरं दक्षिणेनाख्येयगुणा दक्षिणेनाख्येयगुणाः दक्षिणात्यप्ये भूमप्रज्जापचिबीनैरयिकेभ्य दक्षिणात्यप्ये भूमप्रज्जापचिबीनैरयिकेभ्य

उत्तरेण असखेज्जागुणा , दाहिणेण असखेज्जागुणा । दाहिणिस्सेहितो धूमप्यन्नापुढाधिनेरइएहितो चउत्थीए पकप्पन्नाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपम्भच्चिमउत्तरेण असखेज्जागुणा । दाहिणेण असखेज्जागुणा । दाहिणेण निस्सेहितो पकप्पन्नापुढाविनेरइएहितो तइयाए दालुयप्यन्नाए पुढाविनेरइया पुरच्छिमपम्भच्चिमउत्तरेण असखेज्जागुणा , दाहिणेण असखेज्जागुणा । दाहिणिस्सेहितो वालुयप्यन्नापुढाविनेरइएहितो वीयाए सक्करप्पन्नाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपम्भच्चिमउत्तरेण असखेज्जागुणा । दाहिणेण असखेज्जागुणा दाहिणिस्सेहितो सक्करप्पन्नापुढाविनेरइएहितो इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपम्भच्चिमउत्तरेण असखेज्जागुणा । दाहिणिस्सेण असखेज्जागुणा, विसानुवाएण सद्वत्योया पचिदियतिरिस्कजोण्या पम्भच्चिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया , दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, विसानुवाएण सद्वत्योवा मनुस्सा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण सखेज्जागुणा । पम्भच्चिमेण विसेसाहिया । विसानुवाएण सद्वत्योवा नवणवासी देवा पुरच्छिमपम्भच्चिमेण उत्तरेण असखेज्जागुणा । दाहिणेण असखेज्जागुणा , विसानुवाएण सद्वत्योवा

[illegible]

वाणमतरादेवा पुरिच्छिमेण पञ्चच्छिमेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, दि
 सानुयाएण सख्योवा जोहसिया देवा पुरिच्छिमपञ्चच्छिमेण दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया
 दिसानुवाएण सख्योवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरिच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण अस्सखेज्जगुणा, दाहिणेण विसे
 साहिया, दिसानुयाएण सख्योवा देवा धंसानेकप्पे पुरिच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण अस्सखेज्जगुणा दाहिणे
 ण विसेसाहिया, दिसानुवाण सख्योवा देवा सणकुमारेकप्पे पुरिच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण अस्सखेज्जगु
 णा, दाहिणेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सख्योवा देवा माहिदे कप्पे पुरिच्छिमेण पञ्चच्छिमेण, उत्तरेण
 अस्सखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सख्योवा यत्तलोए कप्पे देवा पुरिच्छिमपञ्चच्छि
 मउत्तरेण दाहिणेण अस्सखेज्जगुणा दिसानुयाएण सख्योवा यत्तलोए कप्पे देवा पुरिच्छिमपञ्चच्छि
 रेण दाहिणेण अस्सखेज्जगुणा । दिसानुवाएण उत्तरेण दाहिणेण
 अस्सखेज्जगुणा । दिसानुवाएण सख्योवा देवा महासुक्की कप्पे पुरिच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अस्स

काः उत्तरेण विद्योवापिका दक्षिणेन विद्योवापिका । दिग्गुपातेन सबळोका ज्योतिष्का देवाः पूर्वेपदिमेन दक्षिणेन विद्योवापिका उत्तरेण विद्यो
 वापिकाः, दिग्गुपातेन सर्वळोका देवाः शीघर्मे कप्पे पूर्वपदिमेनोत्तरेण सबवेवन्नुका दक्षिणेन विद्योवापिकाः, दिग्गुपातेन सर्वळोका देवा इ
 दाने कस्य पूर्वपदिमेनोत्तरेण सर्वेयन्नुका दक्षिणेन विद्योवापिकाः, दिग्गुपातेन सबळोका देवाः समत्तुगारे कस्य पूर्वपदिमेनोत्तरेण सबवेवन्
 वा दक्षिणेन विद्योवापिका, दिग्गुपातेन सर्वळोका देवा नावेग्गे कप्पे पूर्वपदिमत उत्तरेण सबवेवन्नुका दक्षिणेन विद्योवापिकाः दिग्गुपातेन
 सबळोका उत्तरेण सर्वोक्तं देवाः पूर्वेपदिनोत्तरेण दक्षिणेनावेवन्नुकाः, दिग्गुपातेन सर्वळोका देवा सात्तली कप्पे पूर्वपदिनोत्तरेण दक्षिणेनावेव

खेज्जगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कव्वे पुराच्छिमपच्चिम्मउत्तरेण दाहिणेण अस्सखे० तेषा
 पर यज्जसमोववन्तगा समणाउसो ! दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुराच्छिमेण सखेज्जगु
 णा, पच्चिच्छिमेण विसंसाहिया दार १ । एएसिण भत्ते ! नेरइयाण तिरिस्कजोणियाण मणुस्साण देवाण
 सिद्धाणय पच्चगइसमासेण कयरे कयरोहिती अण्णयाया यज्जयाया तुल्लावा यिसंसाहिया वा ? गोयमा !
 सव्वत्थोवा मणुस्सा नेरइया अस्सखेज्जगुणा देवा अस्सखेज्जगुणा सिद्धा अण तगुणा तिरिस्कजोणिया अण
 तगुणा । एएसिण भत्ते ! नेरइयाण तिरिस्कजोणियाण मणुस्साण मणुस्सीण देवाण
 सिद्धाणय अण्ठगतिसमासेण कयरे कयरोहिती अण्णयाया यज्जयाया तुल्लावा यिसंसाहिया वा ? गोयमा !
 सव्वत्थोवा मणुस्सीत्त मणुस्सा अस्सखेज्जगुणा । नेरइया अस्सखेज्जगुणा तिरिस्कजोणिणीत्त अस्सखेज्जगुणा

अयमुक्त्वा, दिगन्तपातेन सव्वत्थोका देवा महाशुद्धे कल्पे पूर्वपापमोक्षरेण दक्षिणेनासस्येयगुणाः, दिगन्तपातेन सव्वत्थोका देवा सहस्सारे कल्पे
 पूर्वपापमोक्षरेण दक्षिणेनासस्येयगुणाः, तत्र परं बहुसमोपपन्नकाः अमन्त्रायुष्यन् । दिगन्तपातेन सव्वत्थोका सिद्धा दक्षिणोत्तरेण पूर्वेषु सस्येयगु
 णाः पदिमेन विशेषापापकाः, द्वारम् । १ । एतत्तत्र नदन्त । नैरयिकाया तयग्यानिकानां मनुष्याणा देवाना सिद्धानाम् पञ्चगतिसमासेन कत्तरे
 कत्तरज्योत्स्ना वा बहुका वा तुल्याना विज्जपापिका वा ? गौतम । सव्वत्थोका मनुष्या नैरयिका असस्येयगुणा देवा असस्येयगुणाः सिद्धा अमन्त्र
 गुणाः तियग्योनिका अमन्त्रगुणाः । एतेषा नदन्त । नैरयिकाणां तियग्योनिकानां तियग्योनिकानां मनुष्याणा मानुषीका देवाना सिद्धानां आट
 गतिसमासम कत्तर कत्तरेज्योत्स्ना वा बहुका वा तुल्या वा विशेषापापिका वा ? गौतम । सव्वत्थोका मानुषो मनुष्या असस्येयगुणाः नैरयिका अ
 सदयगुणा तियग्योनिका असस्येयगुणा देवा असस्येयगुणा दव्व सस्येयगुणाः सिद्धा अमन्त्रगुणा तियग्योनिका अमन्त्रगुणा । द्वारम् । २० ए

[illegible][illegible]

कयरोहितो ह्यप्यावा यज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियाया ? गोयमा ! सव्वत्योवा पज्जत्तगा चउरिदिया
 पचिदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, येइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया,
 एगिदिया पज्जत्तगा ह्यणत्तगा, सइदिया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सइदियाण पज्जत्ताप
 ज्जत्तगाण कयरे कयरोहितो ह्यप्यावा यज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियाया ? गोयमा ! सव्वत्योवा सइदिया
 ह्यपज्जत्ता पज्जत्तगा सइदिया सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! एगिदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरे
 हितो ह्यप्याया ? गोयमा ! सव्वत्योवा एगिदिया पज्जत्तगा एगिदिया ह्यपज्जत्तगा ह्यस ० । एएसिण जते !
 येइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरोहितो ह्यप्याया ? गोयमा ! सव्वत्योवा येइदिया पज्जत्ता
 येइदिया ह्यपज्जत्ता ह्यसखेज्जगुणा । एएसिण जते ! तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरोहितो ह्य
 प्याया ? गोयमा ! सव्वत्योवा तेइदिया पज्जत्तगा ह्यसखेज्जगुणा । एएसिण जते !

सन्नानो कतरे कतरेज्ज्योऽस्या वा यज्जया वा तुल्ला वा विसेयापिका वा ? गोयमा ! सर्वस्वोकाः पर्याप्तकायतुरिन्द्रियाः पञ्चद्विया पर्याप्तका वि
 सेयापिका स्त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका विसेयापिका स्त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका विसेयापिका स्त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका यज्जयाः सेन्द्रियाः पर्याप्तकाः सख्येय
 गुणा । एतेषा नदन्त । सेन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योऽस्या वा यज्जया वा तुल्ला वा विसेयापिका वा ? गोयमा ! सर्वस्वोकाः
 सेन्द्रिया अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सेन्द्रियाः सख्येयगुणाः । एतेषा नदन्त । सेन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योऽस्या वा ? गोयमा !
 सर्वस्वोका एकेन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका सख्येयगुणाः । एतेषा नदन्त । स्त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योऽस्या वा ? गोयमा !
 सर्वस्वोका स्त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका सख्येयगुणाः, एतेषा नदन्त । स्त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योऽस्या वा ? सर्वस्वो

त । देवा अस्वेज्जगुणा । देवीतं सखेज्जगुणानं सिद्धा अणतगुणा तिरिस्क्कजोणिया अणतगुणा दार २ । एएसिण नत्ते ! सइदियाण एगिदियाण बेइदियाण तेइदियाण चउरिदियाण तेइदियाण पचिदियाण अणेदियाणय कयरे कयरेहिती अण्णयाया यज्जयाया तुल्लाया विसंसाहियावा ? गीयमा ! सइत्योवा पचिदिया चउरिदिया विसंसाहिया तइदिया विसंसाहिया बेइदिया विसंसाहिया अणितगुणा एगिदिया अण ० सइदिया वि० । एसिण नत्ते ! सइदियाण एगिदियाण बेइदियाण चउरिदियाण तेइदियाण पचिदियाण अण्णत्तगण कयरे कयरेहिती अण्णयाया यज्जयाया विसंसाहियावा ? गीयमा ! सइत्योवा पचिदिया अण्णत्तगणा चउरिदिया अण्णत्तगणा विसंसाहिया, तेइदिया अण्णत्तगणा विसंसाहिया, बेइदिया अण्णत्तगणा विसंसाहिया, एगिदिया अण्णत्तगणा अणतगुणा, सइदिया अण्णत्तगणा विसंसाहिया । एएसिण नत्ते ! सइदियाण एगिदियाण बेइदियाण चउरिदियाण पचिदियाण पण्णत्तगण कयरे

[illegible]

याण पुढायिकाइयाण स्याउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण स्याकाइ
याण कयरे कयरोहिती स्याप्यावा ४ ? गोयमा ! सस्योवा तसकाइया तेउकाइया स्यासखेज्जगुणा, पुढवि
काइया विसेसाहि्या, स्याउकाइया विसेसाहि्या, वाउकाइया विसेसाहि्या स्याकाइया स्याणतगुणा,
वणस्सइकाइया स्याणतगुणा, सकाइया विसेसाहि्यावा । एणसिण ज्ञते ! सकाइयाण पुढायिकाइयाण
स्याउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय स्यापज्जत्तगाण कयरे कय
रोहिती स्याप्यावा ४ ? गोयमा ! सस्योवा तसकाइया स्यापज्जत्तगा, तेउकाइया स्यापज्जत्तगा स्यासखे
ज्जगुणा, पुढविकाइया स्यापज्जत्तगा विसेसाहि्या, स्याउकाइया स्यापज्जत्तगा विसेसाहि्या, वाउकाइया
स्यापज्जत्तगा विसेसाहि्या, वणस्सइकाइया स्यापज्जत्तगा स्याणतगुणा । सकाइया स्यापज्जत्तगा विसेसाहि्या

पर्याप्तका विद्येयापिक्काः । द्वारम् । ३ । एतया प्रदत्त । सत्तायिकानां पुचिबीकायिकानां अत्तायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वन
स्पतिबायिकानां त्रसत्तायिकानामकायिकानां कतरं कतरंभ्यो अस्या वा ४ ? गौतम । सर्वलोकास्त्रसत्तायिका स्तेजस्कायिका असस्येयगुणाः । पुचि
बीकायिका विद्येयापिक्का अत्तायिका विद्येयापिक्का वायुकायिका अत्तायिका अमन्तगुणा वनस्पतिकायिका अमन्तगुणाः सत्तायिका
विद्येयापिक्काः । एतेया प्रदत्त । सत्तायिकानां पुचिबीकायिकानां अत्तायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसत्तायि
कानामपर्याप्तकानां कतरं कतरंभ्यो अस्या वा ४ ? गौतम । सर्वलोकास्त्रसत्तायिका अपर्याप्तका स्तेजस्कायिका अप० असस्येयगुणा पुचिबीकायिका
अ० विद्येयापिक्का अत्तायिका अ० विद्येयापिक्का वायुकायिका अप० विद्येयापिक्का वनस्पतिकायिका अप० अमन्तगुणा सत्तायिका अपर्याप्तका
विद्येयापिक्काः । एतेया प्रदत्त । सत्तायिकानां पुचिबीकायिकानां अत्तायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसत्तायि

चउरिदिद्याण पज्जसापज्जसाण कयरे कयरोहिंतो स्यप्पाधा १ ? गोयमा ! सव्वत्योधा चउरिदिद्या पज्जसा
 गा चउरिदिद्या पज्जसाण ससखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! पचेदिद्याण पज्जसापज्जसाण कयरे कयरोहिंतो
 स्यप्पाधा १ ? गोयमा ! सव्वत्योधा पचेदिद्या पज्जसाण ससखेज्जगुणा । एएसिण
 नत्ते ! सइदिद्याण एगिदिद्याण तेइदिद्याण चउरिदिद्याण पचेदिद्याण पज्जसापज्जसाण कयरे २
 हिंतो स्यप्पाधा १ ? गोयमा ! सव्वत्योधा चउरिदिद्या पज्जसाण पचेदिद्या पज्जसाण विसेसाहि्या , येइ
 दिद्या पज्जसाण विसेसाहि्या , तेइदिद्या पज्जसाण विसेसाहि्या , पचेदिद्या स्यपज्जसाण ससखेज्जगुणा
 चउरिदिद्या स्यपज्जसाण विसेसाहि्या , तेइदिद्या स्यपज्जसाण विसेसाहि्या , येइदिद्या स्यपज्जसाण विसे
 साहि्या , एगिदिद्या स्यपज्जसाण स्यणतगुणा , सइदिद्या स्यपज्जसाण विसेसाहि्या , एगिदिद्या पज्जसाण
 सखेज्जगुणा , सइदिद्या पज्जसाण विसेसाहि्या , सइदिद्या विसेसाहि्या दार ३ । एएसिण नत्ते ! सकाइ

बालीगिद्विपाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । यतर्पा भवन्त । चतुरिन्विपाका पर्याप्तं कतरज्जोऽस्या वा ४ नीतम् । सवस्ताका चतु
 रिन्विपाः पर्याप्तका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः । एतेषां प्रवन्त । पचेदिपाका पर्याप्तकापर्याप्तं कतरेऽ अस्या वा ४ नीतम् । सवस्तोकाः पचेदिपाः
 पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां प्रवन्त । चैदिपाकाचैदिपाकां द्वीदिपाकां चतुरिन्विपाकां पचेदिपाका पर्याप्तकापर्याप्ता
 वा कतरेऽ अस्या वा ४ नीतम् । सवस्तोका चतुरिन्विपाः पर्याप्तकाः पचेदिपाका विज्जेवापिका द्वीदिपाः पर्याप्तका विज्जेवापिकाः चैदि
 पाः पर्याप्तका विज्जेवापिका पचेदिपा अपर्याप्तका चतुरिन्विपा अपर्याप्तका विज्जेवापिका चैदिपा अपर्याप्तका विज्जेवापिका द्वी
 दिपा अपर्याप्तका विज्जेवापिका चैदिपा अपर्याप्तका विज्जेवापिका चतुरिन्विपाः पचेदिपाकाः चैदिपाकाः असंख्येयगुणाः चैदिपाकाः चैदिपाकाः

याण पुढाविकाइयाण स्याउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण स्याकाइ
याण कयरे कयरेहिती स्याप्यावा ४ ? गोयमा ! सद्धत्योवा तसकाइया तेउकाइया स्यासखेज्जगुणा, पुढावि
काइया विसंसाहिया, स्याउकाइया विसंसाहिया वाउकाइया विसंसाहिया स्याकाइया स्यातगुणा,
वणस्सइकाइया स्यातगुणा, सकाइया विसंसाहियावा । एएसिण नत्ते ! सकाइयाण पुढाविकाइयाण
स्याउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय स्यापज्जत्तगा स्यासखे
रोहिती स्याप्यावा ४ ? गोयमा ! सद्धत्योवा तसकाइया स्यापज्जत्तगा, तेउकाइया स्यापज्जत्तगा स्यासखे
ज्जगुणा, पुढाविकाइया स्यापज्जत्तगा विसंसाहिया, स्याउकाइया स्यापज्जत्तगा विसंसाहिया, वाउकाइया
स्यापज्जत्तगा विसंसाहिया, वणस्सइकाइया स्यापज्जत्तगा स्यातगुणा । सकाइया स्यापज्जत्तगा विसंसाहिया

[illegible]

एएसिण नते ! सकाडयाण पुढाविकाडयाण स्याउकाडयाण तेउकाडयाणं वाउकाडयाण वणस्सइकाडयाण तसकाडयाणय पज्झसाण कयरे कयरोहिती स्यप्पावा ? गोयमा ! सव्वलोवा तसकाडया पज्झसागा, तेउकाडया पज्झसागा अस्सज्जगुणा, पुढाविकाडया पज्झसागा विसंसाहिआ स्याउकाडया पज्झसागा विसंसाहिआ, वाउकाडया पज्झसागा विसंसाहिआ, वणस्सइकाडया पज्झसा अणतगुणा, सकाडया पज्झसा विसंसाहिआ ! एएसिण नते ! सकाडयाण पज्झसापज्झसाण कयरे कयरोहिती स्यप्पावा यज्जाया तुळावा नते ! पुढाविकाडयाण पज्झसापज्झसाण कयरे कयरोहिती स्यप्पावा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा ! एएसिण गोयमा ! सव्वलोवा पुढाविकाडया स्यपज्झसागा, पुढाविकाडया पज्झसागा सखेज्जगुणा ! एएसिण स्याउकाडयाण पज्झसापज्झसाण कयरे कयरोहिती स्यप्पावा ? गोयमा ! सव्वलोवा स्याउकाडया स्यप

बानां च पर्याप्तानां कतरेऽप्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सर्वस्रोता कतकायिकाः पर्याप्तका स्तेवरकायिकाः पर्या० असंख्येयबुधाः पृथिवीका
 यिका विहीयापिका जम्ब्यापिका विहीयापिका वायुकायिकाः पर्याप्तका विस्त्रेयापिका जलरपतिकायिकाः पर्याप्तका जलजबुधाः सकायिका पर्याप्त
 का विस्त्रयापिकाः । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेऽप्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सर्वस्रोताः सकायिका अपर्याप्त
 कायिका अपर्या० पर्या० संख्येयबुधाः । एतेषां भदन्त । पृथिवीकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे २ ज्वी जम्ब्या वा ? नीतम् । सर्वस्रोताः पृथिवी
 कापर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयबुधाः । एतेषां भदन्त । जम्ब्यायिकानां कतरे २ ज्वोऽप्या वा ? नीतम् । सर्वस्रोताः जम्ब्यायिका
 कापर्याप्तकाः पर्याप्तकाः स्तेवरकायिकानां पर्या० जम्ब्यायिका वा ४ ? नीतम् । सर्वस्रोताः स्तेवरकायिका

ज्ञातगा, श्याउकाइया पञ्जाप्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! तेउकाइयाण पञ्जाप्तापञ्जाप्तगा कयरे
 कयरेहिती श्यप्पावा ४ ? गोयमा । सध्वत्योवा तेउकाइया श्यपञ्जाप्तगा, तेउकाइया पञ्जाप्तगा सखेज्जगुणा
 एएसिण नत्ते ! वाउकाइयाण पञ्जाप्तापञ्जाप्तगा कयरे कयरेहिती श्यप्पावा ४ ? गोयमा । सध्वत्योवा वाउ
 काइया श्यपञ्जाप्तगा, वाउकाइया पञ्जाप्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! वणस्सइकाइयाण पञ्जाप्ता २ ण
 कयरे कयरेहिती श्यप्पावा ४ ? गोयमा ! सध्वत्योवा वणस्सइकाइया श्यपञ्जाप्तगा, वणस्सइकाइया पञ्ज
 त्तागा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! तसकाइयाण पञ्जाप्तापञ्जाप्तगा कयरे कयरेहिती श्यप्पावा ४ गोय
 मा ! सध्वत्योवा तसकाइया पञ्जाप्तगा, तसकाइया श्यपञ्जाप्तगा श्यसखेज्ज ० । एएसिण नत्ते ! सकाइयाण
 पुढविकाइयाण श्याउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पञ्जाप्ता २ ण
 कयरे कयरेहिती श्यप्पावा ४ ? गो ० ! सध्वत्योवा तसकाइया पञ्जाप्तगा, तसकाइया श्यपञ्जाप्तगा श्यसखे
 ज्जगुणा, तेउकाइया श्यपञ्जाप्तगा श्यसखेज्जगुणा पुढविकाइया श्यपञ्जाप्तगा विससाहिंया, श्याउकाइया श्य

ण्यका अपपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सख्येयगुणाः । एतया नदन्त । वायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरज्योऽस्पा वा ४ ? गीतम । सर्वेस्तो
 वा वायुकायिका अपपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सख्येयगुणाः । एतया नदन्त । वनस्पतिवायिकानां पर्याप्त २ नां कतरे २ ज्योऽस्पा वा ४ ? गीतम ।
 सुवस्तीका वनस्पतिवायिका अपपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सख्येयगुणाः । एतया नदन्त । वनस्पतिवायिकानां पर्याप्त २ नां कतरे २ ज्योऽस्पा वा ४ ?
 गीतम । सुवस्तीकावायुकायिकाः पर्याप्तकाः अपपर्याप्तकाः सख्येयगुणाः । एतेषां नदन्त । सकायिकानां पुष्पिणीकायिकानामप्यायिकानां तेषां
 यिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिवायिकानां वनस्पतिवायिकानां पर्याप्तपर्याप्तकानां कतरे कतरज्योऽस्पा वा ४ वायुकाया तुल्या वा विद्येयाधिका वा ?

एएसिण नते ! सकाडयाण पुढविकाडयाण स्याउकाडयाण तेउकाडयाणं वाउकाडयाण वणस्सइकाडयाण तसकाडयाणय पज्झासगाण कयरे कयरोहिती स्यप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वल्योवा तसकाडया पज्झासगा, तेउकाडया पज्झासगा स्यसखज्जगुणा, पुढविकाडया पज्झासगा विसेसाहिंया स्याउकाडया पज्झासगा विसेसाहिंया, वाउकाडया पज्झासगा यिसेसाहिंया, वणस्सइकाडया पज्झासगा स्यणतगुणा, सकाडया पज्झासगा विसेसाहिंया १ गोयमा ! सव्वल्योवा सकाडया स्यपज्झासगा, सकाडया पज्झासगा सखज्जगुणा । एएसिण गोयमा ! सव्वल्योवा पुढविकाडया स्यपज्झासगा, पुढविकाडया पज्झासगा विसेसाहिंया २ स्याउकाडयाण पज्झासगापज्झासगाण कयरे कयरोहिती स्यप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वल्योवा स्याउकाडया स्यप

काना च पर्याप्तानां कतरे कतरेश्चोऽप्य वा ४ ? नीतम् । सर्वकोका सत्त्वकायिकाः पर्याप्तका सत्त्वकायिकाः पर्या० असंबन्धेयमुक्ता पृथिवीका
यिका विद्येयायिका सत्त्वकायिका विद्येयायिका वायुकायिका पर्याप्तका विद्येयायिका मनस्पतिवायिकाः पर्याप्तका समन्तमुक्ता सत्त्वकायिकाः पर्याप्त
का विद्येयायिकाः । एतयां भद्वत् । सत्त्वकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेष्वोऽप्य वा ४ ? नीतम् । सर्वकोकाः सत्त्वकायिका अपर्याप्त
कायिका अपर्या० पर्या० संबन्धेयमुक्ताः । एतेका भद्वत् । पृथिवीकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे २ प्रती नस्या वा ? नीतम् । सर्वकोकाः सत्त्वकायिका अपर्याप्त
अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संबन्धेयमुक्ताः । एतेनां भद्वत् । सेवकायिकानां पर्या० अपर्या० कतरे कतरेष्वोऽप्य वा ४ ? नीतम् । सर्वकोका सत्त्वकायिका

ज्ञातगा, आउकाइया पञ्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण नत्ते । तेउकाइयाण पञ्जात्तापञ्जत्ताण कयरे
 कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा । सध्वल्योवा तेउकाइया अप्पज्जत्तगा, तेउकाइया पञ्जत्तगा सखेज्जगुणा
 एएसिण नत्ते ! वाउकाइयाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा । सध्वल्योवा वाउ
 काइया अप्पज्जत्तगा, वाउकाइया पञ्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! वणस्सइकाइयाण पञ्जात्ता २ ण
 कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सध्वल्योवा वणस्सइकाइया अप्पज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पञ्ज
 त्तागा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते । तसकाइयाण पञ्जात्तापञ्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ गोय
 मा ! सध्वल्योवा तसकाइया पञ्जत्तगा, तसकाइया अप्पज्जत्तगा अप्पज्जत्तगा ० । एएसिण नत्ते ! सकाइयाण
 पुढयिकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पञ्जात्ता २ ण
 कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गो ० ! सध्वल्योवा तसकाइया पञ्जत्तगा, तसकाइया अप्पज्जत्तगा अप्पज्जत्तगा
 ज्ञगुणा, तेउकाइया अप्पज्जत्तगा अप्पज्जत्तगा पुढयिकाइया अप्पज्जत्तगा विसेसाहिदा, आउकाइया अप्प

पयका अप्पयोत्तगाः पर्योत्तगाः सखेयगुणाः । एतथा नदत्त । वायुकायिकानां पर्योत्तपर्योत्तकानां कत्तरे कत्तरेऽप्योत्तगा वा ४ ? गोतम । सवस्तो
 का वायुकायिकानां अप्पयोत्तगाः पर्योत्तगाः सखेयगुणाः । एतथा नदत्त । वनस्पतिकायिकानां पर्योत्तगा वा ४ ? गोतम ।
 सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अप्पयोत्तगाः पर्योत्तगाः सखेयगुणाः । एतथा नदत्त । वनस्पतिकायिकानां पर्योत्तगा वा ४ ?
 गोतम । सर्वस्तोकायिकायिका अप्पयोत्तगाः पर्योत्तगाः सखेयगुणाः । एतथा नदत्त । सखायिकानां पुण्यीकायिकानां पर्योत्तगा वा ४ ?
 यिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां वनस्पतिकायिकानां पर्योत्तपर्योत्तकानां कत्तरे कत्तरेऽप्योत्तगा वा ४ ? गोतम ।

पञ्चतगा विसेसाहिया, वाउकाइया अण्डागुणा, तेउकाइया पञ्चतगा सखेजगुणा, पुढवि
काइया पञ्चतगा विसेसाहिया, अण्डागुणा पञ्चतगा विसेसाहिया, वाउकाइया पञ्चतगा विसेसाहिया,
अण्डागुणा घण० अण्डागुणा सखेजगुणा, सकाइया अण्डागुणा विसेसाहिया, सकाइया पञ्चत
गा सखेजगुणा सकाइया विसेसाहिया। एण्डागुणा नते। सुजमाण सुजमपुढविकाइयाण सुजमअण्डागु
याण सुजमतेउकाइयाण सुजमवाउकाइयाण सुजमवणस्सइकाइयाण सुजमणिठयाणय कयरे कयरेहिती
अण्डागुणा? गोयमा! सखेजगुणा सुजमतेउकाइया, सुजमपुढविकाइया विसेसाहिया सुजमअण्डागुणा अण्डा
विसेसाहिया, सुजमवाउकाइया विसेसाहिया, सुजमणिठयाण सुजमवणस्सइकाइया अण्डागुणा सुज
गुणा, सुजमा विसेसाहिया। एण्डागुणा नते! सुजमअण्डागुणा सुहुमपुढविकाइयाण अण्डागुणा सुज
मअण्डागुणा अण्डागुणा सुजमतेउकाइयाण अण्डागुणा सुजमवाउकाइयाण अण्डागुणा सुजम

गीतम् । श्वस्तोकाखसुर्वापिकाः पर्याप्तका खप्योसका स्तत्रस्कायिका अपयोसका अपयोसका वि
भ्रायापिका पञ्चायिका अपयोसका विद्येवाचिका बायुकायिका अपयोसका स्तत्रस्कायिकाः पर्याप्तका संख्येयगुहाः पर्याप्तोकायि
काः पर्याप्तका विद्येवाचिका पञ्चायिका पर्याप्तका विद्येवाचिका अपयोसका स्तत्रस्कायिका अपयोसका
गुहाः पर्याप्तका खप्येयगुहाः सुकायिका अपयोप्तका विद्येवाचिका सुकायिकाः खप्येयगुहाः । एतेषां प्रवृत्त । भूलाकां भूलापुत्रि
वीकायिकानां भूलापञ्चायिकानां भूलास्तेत्रस्कायिकानां भूलाबायुकायिकानां भूलास्तत्रस्कायिकानां भूलाविद्येवाचिकां च तत्रे तत्रेभ्योऽप्या वा
७ ? गीतम् । खप्योसकाः भूलास्तत्रस्कायिकाः भूलापुत्रिवाचिकाः विद्येवाचिकाः भूलाबायुकायिका विद्येवाचिकाः

वणस्सइकाइयाण अण्डत्तगाण सुहुमनिगोदाण अण्डत्तयाणय कयरे कयरेहिती अप्यावा४ ? गोयमा ।
सव्वलोवा सुहुमतेउकाइया अण्डत्तया, सुहुमपुढविकाइया अण्डत्तगा विसंसाहिया, सुहुमअण्डका
अण्डत्तया विसंसाहिया, सुहुमवाउकाइया अण्डत्तया विसंसाहिया, सुहुमनिगोदा अण्डत्तगा अ
सखंजगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अण्डत्तगा अणत्तगा, सुहुमा अण्डत्तगा सुहुमतेउकाइयपज्ज
न्ते ! सुहुमपण्डत्तगाण सुहुमपुढविकाइयपण्डत्तगाण सुहुमअण्डकाइयपण्डत्तगाण सुहुमनिगोदपण्डत्तगाणय कयरे कय
त्तगाण सुहुमयाउकाइयापण्डत्तगाण सुहुमवणस्सइकाइयापण्डत्तगा, सुहुमपुढविकाइयापण्डत्तगा वि
रोहिती अप्यावा४ ? गोयमा ! सव्वलोवा सुहुमतेउकाइया पण्डत्तगा, सुहुमपुढविकाइया पण्डत्तगा विसंसाहिया, सुहु
सेसाहिया, सुहुमअण्डकाइया पण्डत्तगा विसंसाहिया, सुहुमवाउकाइया पण्डत्तगा विसंसाहिया, सुहुमापण्डत्तगा विसंसा
मनिगोदा पण्डत्तगा अण्डत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइयापण्डत्तया अणत्तगा, सुहुमापण्डत्तगा विसंसा
हिया दार ३ । एणसिण न्ते ! सुहुमाण पण्डत्तगा २ ण कयरे कयरेहिती अप्यावा४ ? सव्वलोवा सुहुमा

[illegible]

[illegible][illegible]

सखेज्ज० । एएसिण नत्ते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती धप्पावा ४ ? गोयमा !
 सव्वत्थोया सुज्जमवणस्सइकाइया धपज्जत्तगा, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण
 नत्ते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती धप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोया सुज्जमनिगोदा
 धपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढविकाइयाण सुहुम
 ध्याउकाइयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमनिगोदायाण सुहुमपुढविकाइया
 ण कयरे कयरेहिती धप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोया सुज्जमतेउकाइया धपज्जत्तया, सुज्जमपुढविकाइया
 धपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमध्याउकाइया धपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया धपज्जत्तया
 विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ज
 मध्याउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा धपज्जत्तगु

संखेयगुणाः । यत्तया सूत्तवनरपटिक्कायिक्कानां पर्योपपर्योनां कतरे कतरेज्जोऽस्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्लोका सूत्तमयमरपटिक्कायिका अपया
 प्तकाः पर्योऽका संखेयगुणा, यत्तेया सूत्तमनिगोदाभा पर्योपपर्योना कतरे कतरेज्जोऽस्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्लोकाः सूत्तमनिगोदा अपपर्यो
 काः पर्योऽका संखेयगुणा । यत्तेयां नदत्त । सूत्तमाभा सूत्तमपुटिक्कायिक्कानां सूत्तमाप्यायिक्कानां सूत्तमययुक्कायिक्कानां सूत्तम
 वमरपटिक्कायिक्कानां सूत्तमनिगोदानाञ्च पर्योपपर्योऽकानां कतरे कतरेज्जोऽस्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्लोका सूत्तमतेधस्कायिका अपयात्ता सूत्तम
 पुटिक्कायिका अपयात्ता विसेपायिकाः सूत्तमाप्यायिका अप० विसेपायिकाः सूत्तमाप्यायिका अप० विसेपायिकाः सूत्तमतेधस्कायिकाः पर्यो
 काः संखेयगुणा सूत्तमपुटिक्कायिकाः पर्यो विसेपायिकाः सूत्तमाप्यायिकाः पर्यो विसेपायिकाः सूत्तमवायुक्कायिकाः पर्यो विसेपायिकाः सूत्तम

सखेज्ज्ञ० । एएसिण नते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती व्युप्पावा ४ ? गोयमा !
 सव्वत्योवा सुज्जमवणस्सइकाइया व्युपज्झत्ता, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्झत्तागा सखेज्जगुणा । एएसिण
 नते ! सुहुमनिगोदाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती व्युप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्जमनिगोदा
 व्युपज्झत्ता, सुहुमनिगोदा पज्झत्तागा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढविकाइयाण सुहुम
 थ्याउकाइयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमधणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्झत्ता २
 ण कयरे कयरोहिती व्युप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्जमतेउकाइया व्युपज्झत्ता, सुज्जमपुढविकाइया
 व्युपज्झत्ताया विसेसाहिया, सुहुमथ्याउकाइया व्युपज्झत्ताया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया व्युपज्झत्ताया
 विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्झत्ताया सखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्झत्ताया विसेसाहिया, सुज्ज
 मथ्याउकाइया पज्झत्तागा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्झत्तागा विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा व्युपज्झत्तागा

सव्वेयगुणाः । एतया सूक्ष्मतरपटिकायिकानां पर्योऽपर्योऽनां कतरे कतरेभ्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोक्ता सूक्ष्मवमरपटिकायिका अपरा
 पटिकाः पर्योऽक्ता सव्वेयगुणाः, एतेषा सूक्ष्मनिगोदानां पर्योऽपर्योऽना कतरे कतरेभ्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोक्ता सूक्ष्मनिगोदा अपरा
 काः पर्योऽक्ता सव्वेयगुणा । एतेषा प्रदत्ता । सूक्ष्माद्या सूक्ष्मपर्यवर्तीकायिकानां सूक्ष्माप्यायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्म
 वमरपटिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाम् पर्योऽपर्योऽनां कतरे कतरेभ्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोक्ता सूक्ष्मतेपर्यवर्तीका अपरापटिका सूक्ष्म
 पर्यवर्तीकायिका अपरापटिका विशेषायाः सूक्ष्माप्यायिका अपरा विशेषायाः सूक्ष्मवायुकायिका अपरापर्यवर्तीका अपरापटिका सूक्ष्म
 वाः संस्पृग्नाः सूक्ष्मपर्यवर्तीकायिका पर्योऽविशेषायाः सूक्ष्माप्यायिका पर्योऽविशेषायाः सूक्ष्मवायुकायिका पर्योऽविशेषायाः सूक्ष्म

अपञ्चस्रगा सुहमा पञ्चस्रगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहमपुढविकाइयाण पञ्चस्रगा २ ण कयरे २
हिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुहमपुढविकाइया अपञ्चस्रगा, सुहमपुढविकाइया पञ्चस्रगा
सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहमस्थाउकाइयाण पञ्चस्रगा २ ण कयरे २ हिती अप्पावा ४ गोयमा ! सव्व
त्योवा सुहमस्थाउकाइया अपञ्चस्रगा, सुहमस्थाउकाइया पञ्चस्रगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुह
मतेउकाइयाण पञ्चस्रगा २ ण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुहमतेउकाइया अप
ञ्चस्रगा सुहमतेउकाइया पञ्चस्रगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहमवाउकाइयाण पञ्चस्रगा २ ण कयरे २
हिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुहमवाउकाइया अपञ्चस्रगा, सुहमवाउकाइया पञ्चस्रगा

इमवायुकाविकपर्योक्तानां सूक्ष्मवभरपतिकापपर्योक्तानां सूक्ष्मानिनोद्वयं क्वाभा न क्तररेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्का
विभा प० सूक्ष्मपृथिवीकाविकाः प० विज्जपाविकाः प० विज्जपाविकाः सूक्ष्मापकाः सूक्ष्मापकाः प० विज्जपाविकाः सूक्ष्मापकाः सूक्ष्मतेजस्काः प०
संस्त्वयुकाः सूक्ष्मवभरपतिकाविकाः प० अमन्तुकाः सूक्ष्माः पर्योक्तानां विज्जपाविकाः । द्वारम् । ४ ॥ एतवां जदन्त । सूक्ष्माणां पर्योक्तानां
क्तररेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्योक्तानाः सूक्ष्माः पर्योक्तानाः सुक्ष्मगुणाः । एतेवां जदन्त । सूक्ष्मपृथिवीकाविका
नां पर्योक्तानां क्तररेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्योक्तानाः सूक्ष्माः पर्योक्तानाः सूक्ष्मगुणाः । सूक्ष्मपृथिवीकाविका
काः । एतेवा जदन्त । सूक्ष्मापकापानामपर्योक्तानां क्तर क्तररेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मपृथिवीकाविका अपर्योक्तानाः पर्योक्तानाः संस्त्वयु
काः । एतेवा सूक्ष्मतेजस्कापपर्योक्तानां क्तर क्तररेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्काविका अप० पर्योक्तानाः संस्त्वयु
काः । एतेवां सूक्ष्मापकाविकाभा क्तररेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मापकाविका बाहुकाविकाः क्तररेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम् ।

[illegible][illegible]

णा, सुहुमा अण्जगुणा विसेसाहिया, सुहुमा यणस्सइकाइया पञ्ञत्तगा सखेज्जगुणा, सुहुमा पञ्ञाप्तगा विसेसाहिया । एएसिण भते ! यादरगाण यादरपुढविकाइयाण यादरअण्डकाइयाण यादरतेउकाइयाण यादरवाउकाइयाण यादरयणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाइयाण यादरनिगीदाण यादरतसका इयाणय कयेरे ? हितो अप्याथा यज्जायाथा तुळाया विसेसाहियावा ? गीयमा । सव्वत्योया यादरतेउकाइया यादरतेउकाइया असखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर यादरवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा याथरनिगीया असखेज्जगुणा , यादरपुढविकाइया असखिज्जगुणा , यादरअण्डकाइया असखेज्जगुणा यादरवाउकाइया असखे उज्जगुणा यादरयणस्सइकाइया अपणत्तगुणा यादरा विसेसाहिया, एएसिण भते ! यादरापज्जप्तगाण यादर पुढवीकाइया अपज्जप्तगाण यादरअण्डकाइया अपठजप्तगाण यादरतेउकाइया अपपज्जत्तगाण यादरवाउ काइया अपज्जप्तगाण यादरवणस्सइया अपज्जप्तगाण पत्तेयसरीरयणस्सइकाइया अपज्जप्तगाण यादरनि

निमोदा अथ अस्मनुकाः सुखमनिमोदः पर्योऽ सङ्गुणः सुखमवस्यति कायिका अथ का अन्तमुकाः सुखमा अथ योऽका विज्ञेयायिकाः सुखम
वस्यति कायिकाः पर्योऽ अस्मनुकाः सुखमाः पर्योऽका विज्ञेयायिकाः । एतया भवन् । आदराका आदरपृथ्वीकायिकाना आदरायिकायिकानां
वादरेवस्वायिकानां आदरायुकायिकाना आदरवस्यति कायिकाना प्रत्येकद्वीरादरवस्यति कायिकाना आदरनिमोदानां आदरवस्यति का
ना न कतर कतरयोऽस्या का ४ । गीतन । सर्वतोका आदरवस्यति कायिका आदरेवस्वायिका अस्मनुकाः प्रत्येकद्वीरादरवस्यति कायिका
अस्मनुका आदरनिमोदा अस्मनुका आदरपृथ्वीकायिका अस्मनुका आदरायिका अस्मनुका आदरवस्यति कायिका
स्यति कायिका अन्तमुका आदरा विज्ञेयायिकाः । एतेका भवन् । आदरवस्योऽकायिकाना आदरायिकानां आदरायिकानां अन्तमुकायिकानां

गोदा अपञ्जतगण वादरतसकाडया अपञ्जतगणय कयरे कयरेरिहोतो अप्पावा यज्जयावा तुल्लावा यि
सेसाहियाया ? गोयमा । सव्वत्थोवा वादरतसकाडया अपञ्जतगण, वादरतेउकाडया अपञ्जतगण अप्सखेज्ज
गुणा, पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाडया अपञ्जतगण अप्सखेज्जगुणा, वादरनिगोदा अपञ्जतगण अप्सखेज्ज
गुणा, वादरपुढवीकाडया अपञ्जतगण अप्सखेज्जगुणा, वादरआउकाडया अपञ्जतगण अप्सखेज्जगुणा,
वादरवाउकाडया अपञ्जतगण अप्सखेज्जगुणा, वादरवणस्सइकाडया अपञ्जतगण अप्णतगुणा, वादरअप
ज्जसगण विससाहिया ? । एएसिण वते ! वादरपञ्जतगण वादरपुढविकाडयाण पञ्जतयाण, वादरआउ
काडयाण पञ्जतयाण वादरतउकाडयाण पञ्जतयाण वादरवाउकाडयाण पञ्जतयाण वादरवणस्सइकाडयाण पञ्ज
तयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाडयापञ्जतयाण वादरनिगोदपञ्जतयाण वादरतसकाडयापञ्जतयाणय
कयरे कयरेरिहोतो अप्पावा यज्जयावा तुल्लावा विससोया वादरतेउकाडया प

बादराप० तेजस्कायिकाना बादरापयो० आयुक्तायिकाना बादरापयो० प्रत्यक्षरीरवन्तरपत्तिकायिकानां बादरनि
गोदानामपयो०कानां बादरापयो० प्रसकायिकानां कतरे २ प्याऽप्या वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वाका बादरश्रसकायिका अपयो०का बादरतेजस्कायि
का अप० असस्ययगुणाः प्रत्यक्षरीरवाद्बन्तरपत्तिकायिका अप० असस्येयगुणा बादरनिगोदा अपयो०का असस्येयगुणा बादरपुष्पिकायिका
अपयासका असस्यगुणा बादराप्कायिका अप० असस्यगुणा बादरवायुकायिका अप० असस्यगुणा बादरवन्तरपत्तिकायिका अपयो० अनननगणा वा
दरापयो०का विक्षयापिकाः । २ । एतथा ३० । बादरपयो०काना बादरपुष्पिकायिकपयासकाना पर्याप्तवादराप्कायाना पयो० बादरतेजस्कायिका
नां पर्याप्तवादरायुकायाना पर्याप्तवादरवन्तरपत्तिकायिकाना पर्याप्तवादरनिगोदाना पर्याप्तवादरश्र

यादरतेउकाइयाण पज्झाप्ता २ ण कयरे कयरेहिती अण्णवा यज्झयावा तुप्पावा विसेसाहियावा ? गोयमा !
सह्वयोवा यादरतेउकाइया पज्झाप्ता यादरतेउकाइया अण्णवाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरथाउकाइया पज्झा
रवाउकाइयाण पज्झाप्ता २ ण कयरे कयरेहिती अण्णवाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइयाण पज्झाप्ता २ ण
त्ता । यादरवाउकाइया अण्णवाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २ गोयमा ! यादरवणस्सइकाइ
कयरे कयरेहिती अण्णवाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २ ण कयरे
या अण्णवाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २
कयरेहिती अण्णवाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २
णस्सइकाइया अण्णवाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २
अण्णवाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २ गोयमा ! सह्वयोवा यादरवणस्सइकाइया पज्झाप्ता २

यिः पर्याप्तता असम्पुङ्गाः । एतेषां प्रदम् । वादरतेजस्कानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरं कतरं ज्योऽस्या वा ? गीतम् । सर्वस्वो
का वादरतेजस्कानां पर्याप्तता अपर्याप्ततादरतेजस्कानां असम्पुङ्गा । एतेषां प्रदम् । वादरवायुकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरं क
तरं ज्योऽस्या वा ? गीतम् । सबलोका वादरवायुकायिकाः पर्याप्तता अपर्याप्ततादरवायुकायिका असम्पुङ्गा । एतेषां प्रदम् । वादरवमरसप
तिक्कायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरं कतरं ज्योऽस्या वा ? गीतम् । सबलोका वादरवमरसपतिक्कायिका अपर्याप्ततादरवमरसपति
क्कायिका असम्पुङ्गा । एतेषां प्रदम् । प्रत्येकशरीरवादरवमरसपतिक्कायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरं कतरं ज्योऽस्या वा ? गीतम् । सब
लोका अपर्याप्ततादरवमरसपतिक्कायिकाः पर्याप्तता अपर्याप्ततादरवमरसपतिक्कायिका असम्पुङ्गा । एतेषां प्रदम् । वादरनिगो

उच्यते, यादरतसकाइया पञ्जसगा अस्वेज्जगुणा । पत्तेयसरीरयादरयणस्सइकाइया पञ्जत्तगा अस्वेज्जगुणा । यादरनिगोदा पञ्जसगा सस्वेज्जगुणा । यादरपुढविकाइया पञ्जसगा अस्वेज्जगुणा । यादरकाइया पञ्जसगा अस्वेज्जगुणा । यादरथाउकाइया पञ्जत्तगा अस्वेज्जगुणा । यादरवणस्सइकाइया पञ्जसगा अस्वेज्जगुणा । यादरा पञ्जसगा विसंसाहिया ३ । एएसिण नत्ते ! यादराण पञ्जात्ता २ ण कयरे कयरोहितो अप्पावा ४ गोयमा । सव्वत्थोवा यादरा पञ्जात्तगा । यादरा अस्वेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! यादरपुढविकाइयाण पञ्जात्ता २ ण कयरे कयरोहितो अप्पावा ४ गोयमा । सव्वत्थोवा यादरपुढविकाइया पञ्जसगा १ । यादरपुढविकाइया अस्वेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! यादरथाउकाइयाण पञ्जात्ता २ ण कयरे कयरोहितो अप्पावा ४ गोयमा । सव्वत्थोवा यादरथाउकाइया पञ्जसगा । एएसिण नत्ते !

कायिकानां च कतर कतरस्योऽस्या वा ४ ? नीतम् । सर्वलोकाः पर्याप्तबादरसेजसकायिका पर्याप्तबादरसकायिका अर्धक्यगुणाः पर्याप्तप्रत्येक
बादरीबादरवमरपसिकायिका अर्धक्यगुणाः पर्याप्तबादरनिनोदा अर्धक्यगुणाः पर्याप्तबादरपुष्पिणीकायिका अर्धक्यगुणाः पर्याप्तबादराध्यायिका अ
र्धक्यगुणाः पर्याप्तबादरकाकुकायिका अर्धक्यगुणाः पर्याप्तबादरनरपसिकायिका अर्धक्यगुणा बादराः पर्याप्तका विजयायिकाः । ३ । एतेषा मर
न । बादराणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरस्योऽस्या वा ४ ? नीतम् । सबलोका बादराः पर्याप्तका अपयोऽ अर्धक्यगुणाः । एतेषां अर्ध० । बा
दरपुष्पिणीकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतर कतरस्योऽस्या वा ४ ? नीतम् । सबलोका बादरपुष्पिणीकायिकाः पर्याप्तकाः १ बादरपुष्पिणीका
यिका अपर्याप्तका अर्धक्यगुणाः । एतेषां अर्धम् । बादराध्यायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरस्योऽस्या वा ? नीतम् । सबलोका बादराध्या

वादरतेउकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरेहिती अय्प्यावा तुप्पावा विसेसाहियावा ? गोयमा !
 सव्वत्थोवा वादरतेउकाइया पज्झत्ताया वादरतेउकाइया अयपज्झत्ताया अयसखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वाद
 रवाउकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरेहिती अय्प्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरवाउकाइया पज्झ
 त्ता । वादरवाउकाइया अयपज्झत्ताया अयसखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरवणस्सइकाइयाण पज्झत्ता २ ण
 कयरे कयरेहिती अय्प्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरवणस्सइकाइया पज्झत्ताया । वादरवणस्सइकाइ
 या अयपज्झत्ताया अयसखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे
 कयरेहिती अय्प्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया पज्झत्ताया । पत्तेयसरीरवादरव
 णस्सइकाइया अयपज्झत्ताया अयसखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरनिगोदा पज्झत्ता २ ण कयरे कयरेहिती
 अय्प्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरनिगोदा पज्झत्ताया । वादरनिगोदा अयपज्झत्ताया अयसखेज्जगुणा ।

पियाः पर्याप्तता अपर्याप्तता असंख्यगुणाः । एतथा प्रदत्त । वादरतेजस्कायाना पर्याप्तापर्याप्तकामा कतर कतरेज्जोऽस्या वा ? गोतम । सवस्सो
 का वादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तता अपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः । एतेषां प्रदत्त । वादरवायुकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे क
 तरेज्जोऽस्या वा ? गोतम । सर्वलोका वादरवायुकायिकाः पर्याप्तताः अपर्याप्तवादरवायुकायिका असंख्यगुणाः । एतेषां प्रदत्त । वादरवनस्प
 तिकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्जोऽस्या वा ४ ? गोतम । सवस्सोका वादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तता अपर्याप्तवादरवनस्पति
 कायिका असंख्यगुणाः । एतेषां प्रदत्त । मत्त्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेज्जोऽस्या वा ४ ? गोतम । सव
 स्सोका मत्त्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तताः अपर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः । एतेषां प्रदत्त । वादरनिगो

ए०सिण भ०ते ! यादरत्नसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहि०तो अ०प्याया ४ ? गो०यमा ! स०न्योवा
 यादरत्तसकाइया पज्ज०त्ता १ । यादरत्तसकाइया अ०पज्ज०त्ता ४ । ए०सिण भ०ते ! यादराण
 यादरपु०ढाविकाइयाण यादरअ०उकाइयाण यादरवा०उकाइयाण यादरवण०स्स०इकाइयाण
 पत्त०यसरीयादरवण०स्स०इकाइयाण यादरनिगो०दाण यादरत्तसकाइयाण पज्ज०त्ता २ ण कयरे कयरोहि०तो
 अ०प्याया यज्ज०यावा तु०त्तावा यि०सेसा०हियावा ? गो०यमा ! स०न्योवा यादरत्त०उकाइया पज्जत्तया १ । याद
 रत्तसकाइया पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया
 यण०स्स०इकाइया पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया
 या पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया अ०पज्ज०त्ताया

दा०ना पर्या०सापर्या०साना क०तरे क०तरेज्यो०अ०स्या वा ४ ? गो०तम । सुव०स्त्रो०का वादर०निगो०दाः पर्या०स०का अ०पर्या०स०वादर०निगो०दा अ०स०इय०गु०दाः । ए०तया
 प्र०द०त्त । वादर०त्र०स०काया०नां पर्या०सापर्या०साना क०तरे क०तरेज्यो०अ०स्या वा ४ ? गो०तम । सुव०स्त्रो०का वादर०त्र०स०काया०नां पर्या०स०का वादर०त्र०स०काया०नां
 अ०पर्या०स०का अ०स०इय०गु०दाः । ४ । ए०तया ज०द०त्त । वादरा०ना वादर०पु०ढाविकाया०ना वादरा०प्या०ना वादर०त्र०स०काया०ना वादर०वा०प्या०ना वादर०वा०प्या०ना
 वादर०व०न०श०प०ति०काया०ना म०त्येक०शरीर०वादर०व०न०श०प०ति०काया०ना वादर०निगो०दाना वादर०त्र०स०काया०ना पर्या०सापर्या०साना क०तरे क०तरेज्यो०अ०स्या
 वा ४ ? गो०तम । सुव०स्त्रो०का वादर०त्र०स०काया०नां पर्या०स०का अ०स०इय०गु०दाः २ । वादर०त्र०स०काया०ना अ०पर्या०स०का अ०
 स०इय०गु०दाः ३ । पर्या०स०वादर०म०त्येक०शरीर०वादर०निगो०दा अ०स०इय०गु०दाः ४ । पर्या०स०वादर०निगो०दा अ०स०इय०गु०दाः ५ । पर्या०स०वादर०पु०ढाविकाया०ना अ०स०
 इय०गु०दाः ६ । पर्या०स०वादरा०प्या०ना अ०स०इय०गु०दाः ७ । पर्या०स०वादर०त्र०स०काया०ना अ०स०इय०गु०दाः ८ । अ०पर्या०स०वादर०त्र०स०काया०ना अ०स०इय०गु०दाः ९ ।

त्रगा अस्वेज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अयपज्जत्तगा अस्वेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइका
 इया अयपज्जत्तगा अस्वेज्जगुणा १० । धादरनिगोदा अयपज्जत्ता अस्वेज्जगुणा ११ । वादरपुठविकाइया
 अयपज्जत्तगा अस्वेज्जगुणा १२ । वादरअ्याउकाइया अयपज्जत्तगा अस्वेज्जगुणा १३ । वादरवाउकाइया
 अयप० अस्वेज्जगुणा १४ । वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अयतगुणा १५ । वादरपज्जत्तगा विसेसा
 हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अयपज्जत्तगा अस्वेज्जगुणा १७ । वादरा अयपज्जत्तगा विसेसाहिया १८ ।
 यादरा विसेसाहिया २० । एणसिण ज्ञते ! सुज्जमाण सुज्जमपुठविकाइयाण सुज्जमअ्याउकाइयाण सुज्जमतेउ
 काइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादरपुठविकाइयाण
 वादरअ्याउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण पत्तेयसरीरवादरवण

अपयोसप्रत्येकशरीरवादरवनस्पत्तिकायिका असंख्यगुणा १० । अपयोसवादरनिगोदा असंख्यगुणा ११ । अपयोसवादरपुण्यवीर्यायिका असंख्यगु
 णा १२ । अपयोसवादराष्कायिका असंख्यगुणा १३ । अपयोसवादरवायुकायिका असंख्यगुणा १४ । पयोसवादरवनस्पत्तिकायिका अनन्तगुणा १५ ।
 पयोसा वादरा विज्ञेयायिका १६ । अपयोसवादरवमस्पत्तिकायिका असंख्यगुणा १७ । अपयोसा वादरा विज्ञेयायिका १८ । वादरा विज्ञेयायि
 का १९ । एतेषा ज्ञदन्त । सूक्ष्माण सूक्ष्मपुण्यवीर्यायिकाना सूक्ष्माष्कायिकाना सूक्ष्मवायुकायिकाना सूक्ष्मवनस्पत्तिका
 यिकाना सूक्ष्मनिगोदाना वादराणां वादरपुण्यवीर्यायिकाना वादराष्कायिकाना वादरवायुकायिकाना वादरवनस्पत्तिकायि
 काना प्रत्येकशरीरवादरवनस्पत्तिकायिकाना वादरनिगोदानां वादरवमस्पत्तिकायिकाना व कतरे कतरप्योऽस्या वा ४ ? गौतम । सब्बलोका वादरत्र
 सत्तायिका १ । वादरतेजस्कायिका असंख्यगुणा २ । प्रत्येकशरीरवादरवनस्पत्तिकायिका असंख्यगुणा ३ । वादरनिगोदा असंख्यगुणा ४ । वाद

एएसिण ऋते । धादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहितीं स्युप्पाया १ ? गोयमा ! सस्युप्पोवा
धादरतसकाइया पज्जसुगा । धादरतसकाइया स्युपज्जसुगा १ । एसिण ऋते । धादराण
धादरपुठविकाइयाण धादरस्युउकाइयाण धादरतसकाइयाण धादरवाउकाइयाण धादरवणस्सइकाइयाण
पत्तयसरीरयादरवणस्सइकाइयाण धादरनिगोदाण धादरतसकाइयाण पज्जसुगा २ ण कयरे कयरोहितीं
स्युप्पाया यज्जयावा तुप्पावा यिसेसाहियावा ? गोयमा ! सस्युप्पोवा धादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । धाद
रतसकाइया पज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा २ । धादरतसकाइया स्युपज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा ३ । धादरपत्तेय
वणस्सइकाइया पज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा ४ । धादरनिगोदा पज्जसुगा स्युसखेज्ज ० ५ । धादरपुठविकाइ
या पज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा ६ । धादरस्युउकाइया पज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा ७ । धादरवाउकाइया पज्ज

सुगा पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्जोऽस्या वा ४ । गौतम । सर्वलोका धादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तधादरनिगोदा अर्धवपुषा । एतयां
प्रदत्त । धादरवसुकायाणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेज्जोऽस्या वा ४ । गौतम । सर्वलोका धादरवसुकायिकाः पर्याप्तका धादरवसुकायिका
अपर्याप्तका अर्धवपुषाः । ४ । एतयां प्रदत्त । धादराणां धादरपृथिवीकायिकानां धादराज्जायानां धादरतेज्रकायिकानां धादरवापुकायिकानां
धादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येककरीरधादरवनस्पतिकायिकानां धादरनिगोदाणां धादरवसुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेज्जोऽस्या
वा ४ । गौतम । सर्वलोका धादरतेज्रकायिकाः पर्याप्तकाः १ धादरवसुकायिकाः पर्याप्तका अर्धवपुषाः २ । धादरवसुकायिका अपर्याप्तका अ
र्धवपुषाः ३ । पर्याप्तधादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका अर्धवपुषाः ४ । पर्याप्तधादरनिगोदा अर्धवपुषाः ५ । पर्याप्तधादरपृथिवीकायिका अर्ध
वपुषा ६ । पर्याप्तधादराज्जायिका अर्धवपुषा ७ । पर्याप्तधादरतेज्रकायिका अर्धवपुषाः ८ । अर्धपर्याप्तधादरतेज्रकायिका अर्धवपुषाः ९ ।

ह्यसखेज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइका
 ह्या अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा १० । यादरनिगोदा अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा ११ । यादरपुठयिकाइया
 अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा १२ । यादरअ्याउकाइया अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा १३ । यादरवाउकाइया
 अ्यप० असखेज्जगुणा १४ । वादरवणस्सइकाइया पज्जह्मगा अ्यणतगुणा १५ । वादरपज्जह्मगा विसंसा
 हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा १७ । यादरा अ्यपज्जह्मगा विसंसाहिया १९ ।
 यादरा विसंसाहिया २० । एणसिण जते । सुज्जमाण सुज्जमपुठविकाइयाण सुज्जमअ्याउकाइयाण सुज्जमतेउ
 काइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण यादरपुठविकाइयाण
 यादरअ्याउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण पत्तेयसरीरवादरवण

अपयोसमयेकशरीरवादरवमरपत्तिकायिका असस्यगुणाः १० । अपयोसवादरनिगोदा असस्यगुणाः ११ । अपयोऽवादरपुठयिका असस्यगु
 णा १२ । अपयोऽवादराप्यायिका असस्यगुणाः १३ । अपयोऽवादरवायुकायिका असस्यगुणा १४ । पयोऽवादरवनस्पतिकायिका अनस्यगुणाः १५ ।
 पयोसा वादरा विअपायिका १६ । अपयोसवादरवनस्पतिकायिका असस्यगुणाः १७ । अपयोसा वादरा विअपायिकाः १८ । वादरा विअपायि
 का १९ । एतेषा जइल । सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्यायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिका
 यिकानां सूक्ष्मनिगोदानां वादराणां वादरपुण्यवीकायिकानां वादराप्यायिकानां वादरतेजस्कायिकानां वादरवायुकायिकानां वादरवनस्पतिकायि
 कानां प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकानां वादरनिगादानां वादरयसकायिकानां च कतर कतरज्योज्जसा वा ४ ? गौतम । सबंस्सोका वादरअ
 सस्ययिका-१ । वादरतेजस्कायिका असस्यगुणाः २ । प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असस्यगुणाः ३ । वादरनिगोदा असस्यगुणा ४ । वाद

स्सइकाइयाण यादरनिगोदानं यादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिती अय्यावा? गोयमा ! सव्वत्योवा
 यादरतसकाइया १ । यादरतेउकाइया अस्सखेज्जगुणा अस्सखेज्जगुणा अस्सखेज्जगुणा ।
 यादरनिगोदा अस्सखेज्जगुणा । यादरपुढाविकाइया अस्सखेज्जगुणा ५ । यादरथाउकाइया अस्सखेज्जगुणा
 यादरवाउकाइया अस्सखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाइया अस्सखेज्जगुणा । सुज्जमपुढाविकाइया विसेसाहिया ।
 सुज्जमथाउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमवाउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमनिगोदा अस्सखेज्जगुणा ।
 यादरवणस्सइकाइया अणतगुणा यादरा विसेसाहिया । सुज्जमवणस्सइकाइया अस्सखेज्जगुणा १५ ।
 सुज्जमायिसेसाहिया १ । एएसिण नते ! सुज्जमअपज्जयाण सुज्जमपुढाविकाइयाण अपज्जसगाण सुज्जम
 थाउकाइया अपज्जतयाण सुज्जमतेउकाइयाण अपज्जतयाण सुज्जमथाउकाया अपज्जतयाण सुज्जमयण
 स्सइकाइयाण अपज्जतयाण सुज्जमनिगोदा अपज्जतयाण यादरा अपज्जतयाण यादरपुढाविकाइया अप

रपुण्णिवीहायिका वसक्यनुवाः १ । यादराप्याविका वसक्यनुवाः ६ । यादरवायुवायिका वसक्यनुवाः ७ । सुज्जमतेअवायिका वसक्यनुवाः ८ ।
 सुज्जमपुण्णिवीहायिका विवोवायिकाः ८ । सुज्जाप्याविका विवोवायिकाः १० । सुज्जवायुवायिका विवोवायिकाः ११ । सुज्जमानोदा वसक्यनुवाः
 १२ । यादरवणस्सइकायिका वसक्यनुवाः १३ । यादरा विवोवायिकाः १४ । सुज्जमवणस्सइकायिका वसक्यनुवाः १५ । सुज्जा विवोवायिकाः १६ ।
 एतेयां वदन् । सुज्जापयोसकानां सुज्जपुण्णिवीहायिका वसक्यनुवाः १७ । सुज्जमवणस्सइकायिका वसक्यनुवाः १८ । सुज्जा विवोवायिकाः १९ ।
 युवायिकानामपयोसकानां सुज्जवणस्सइकायिका वसक्यनुवाः २० । यादरपयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां
 यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापयोसकानां

ज्ञातयाण यादरथाउकाहयश्चपञ्जस्रयाण यादरतेउकाहयाश्चपञ्जस्रयाण यादरवाउकाहयश्चपञ्जस्रयाण
 यादरवणस्सइकाहयश्चपञ्जस्रयाण पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाहयश्चपञ्जस्रयाण यादरनिगोदा चपञ्ज
 स्रयाण यादरतसकाहया चपञ्जस्रयाण कयरे कयरेहिती चप्यावाः १ गीयमा ! सव्वत्थोवा यादरत
 सकाहया चपञ्जस्रया । यादरतेउकाहया चपञ्जस्रया चसखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाहया
 चपञ्जस्रया चसखेज्जगुणा ३ । यादरनिगोदा चपञ्जस्रया चसखेज्जगुणा । यादरपुढविकाहया चपञ्ज
 स्रया चसखेज्जगुणा । यादरथाउकाहया चपञ्जस्रया चसखे ० ६ । यादरवाउकाहया चपञ्जस्रया चस
 खेज्जगुणा , सुज्जमतेउकाहया चपञ्जस्रया चसखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाहया चपञ्जस्रया विसेसाहिया १
 सुज्जमथाउकाहया चपञ्जस्रया विसेसाहिया १० । सुज्जमवाउकाहया चपञ्जस्रया विसेसाहिया , सुज्जम
 निगोदा चपञ्जस्रया चसखेज्जगुणा , यादरवणस्सइकाहया चपञ्जस्रया चणतगुणा , यादरा चपञ्जस्रया

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तवाहरनिगोदासमा अपर्याप्तवाहरवसकायिकानाम्ब कसरे कसरेज्जोऽश्वा वा ४ १ गीतम । सर्वस्वोका अपर्याप्तवा
 हरवसकायिका १ । अपर्याप्तवाहरवसकायिका असंख्यगुणा २ । अपर्याप्तप्रत्येकवरीरवादरवमस्पतिकायिका असंख्यगुणा ३ । अपर्याप्तवा
 हरनिगोदा असंख्यगुणा ४ । अपर्याप्तवाहरपुचिबीकायिका असंख्यगुणा ५ । अपर्याप्तवाहराकायिका असंख्यगुणा ६ । यादरवायुकायिका अप
 र्याप्तका असंख्यगुणा अपर्याप्ततूत्तवसकायिका असंख्यगुणा ७ । अपर्याप्तसूत्तनिगोदा विसोपायिका ८ । अपर्याप्तसूत्ताकायिका विसोपा
 यिका १० । अपर्याप्तसूत्तवायुकायिका विसोपायिका ११ । अपर्याप्तसूत्तनिगोदा असंख्यगुणा अपर्याप्तवाहरवमस्पतिकायिका अनन्तगुणा वा
 दरा अपर्याप्तका विसोपायिका अपर्याप्तसूत्तवसकायिका असंख्यगुणा अपर्याप्तका २ । एतेषा मदन्त । सूत्तपर्याप्तकाना

विसेसाहिया, सुजमयणस्सइकाइया अणपज्जसुगा अणसखिज्जगुणा, सुजमा अणपज्जसुगा विसेसाहिया २ ।
 एएसिण भत्ते । सुजमपज्जसुयाण सुजमपुठविकाइयपज्जसुगाण सुजमअण्यकाइयपज्जसुगाण सुजमतेउका
 इयपज्जसुयाण सुजमवाउकाइयपज्जसुयाण सुजमयणस्सइकाइयपज्जसुयाण सुजमनिगीयपज्जसुयाण
 यादरपज्जसुगाण यादरपुठविकाइयपज्जसुयाण यादरअण्यकाइयपज्जसुयाण यादरतेउकाइयपज्जसुयाण
 यादरवाउकाइयपज्जसुयाण यादरवणस्सइकाइयपज्जसुयाण पत्तयसरीरयादरयणस्सइकाइयपज्जसुयाण वा
 दरीनिगीदपज्जसुयाण यादरतसकाइयपज्जसुयाणय कयरे कयरोहिती अण्यथा ४ ? गीयमा ! ससुत्थोवा वा
 दरतउकाइया पज्जसुगा । यादरतसकाइया पज्जसुया अणसखिज्जगुणा । पत्तयसरीरयादरयणस्सइकाइया
 पज्जसुगा अणसखेज्जगुणा । यादरनिगीदा पज्जसुया अणसखेज्जगुणा, यादरपुठविकाइया पज्जसुया अणस
 यादरअण्यकाइया पज्जसुया अणसखेज्जगुणा, यादरवाउकाइया पज्जसुगा अणसखेज्जगुणा । सुजमतेउकाउ

सुत्तपयिबीबायिकपर्यांकाणा पर्यांअसूत्ताप्पायिकानां पर्यांअसूत्तवस्सायिकानां पर्यांअसूत्तवायुकायिकानां पर्यांअसूत्तवमरपत्तिवायिकाना प
 र्यांअसूत्तमनिगीदाणा यादरपर्यांकाणा पर्यांअवाडरपयिबीबायिकानां पर्यांअवाडराप्पायिकाना पर्यांअवाडरतत्रस्सायिकानां पर्यांअवाडरवायुकायि
 कानां पर्यांअवाडरवमरपत्तिवायिकानां पर्यांअत्येकवरीरवाडरवमरपत्तिवायिकानां पर्यांअवाडरअवकायिकानां अ कतर कत
 रम्योअया वा ४ ? भौवम । अवंकाणाः पर्यांअवाडरतेअस्सायिकाः पर्यांअवाडरअवकायिका अवंक्यमुक्ताः पर्यांअत्येकवरीरवाडरवमरपत्तिवायिका
 अवंक्यमुक्ताः पर्यांअवाडरनिगीदाः अवंक्यमुक्ताः पर्यांअवाडरपयिबीबायिका अवंक्यमुक्ताः पर्यांअवाडराप्पायिका अवंक्यमुक्ताः पर्यांअवाडरवायुकायि
 का अवंक्यमुक्ताः पर्यांअसूत्तवमरपत्तिवायिका अवंक्यमुक्ताः पर्यांअसूत्तपयिबीबायिका अवंक्यमुक्ताः पर्यांअसूत्तवायुकायिका अवंक्यमुक्ताः पर्यांअसूत्तवमरपत्तिवायिका

या पञ्चाक्षया अक्षयगुणा, सुक्षमपृथ्विकाइया पञ्चाक्षया विसेसाहिया, सुक्षमआउकाइया पञ्चाक्षया
 विसेसाहिया, सुक्षमवाउकाइया पञ्चाक्षया विसेसाहिया । सुक्षमनिगोदा पञ्चाक्षया अक्षयगुणा, वाद
 रवणस्सठकाइया पञ्चाक्षया अक्षयगुणा, वादरपञ्चाक्षया विसेसाहिया, सुक्षमयणस्सठकाइया पञ्चाक्षया
 अक्षयगुणा । सुक्षमपञ्चाक्षया विसेसाहिया ३ । एएसिण जते ! सुक्षमाणवादराणय पञ्चाक्षया २ ण
 कयरे कयरोहितो अक्षयया ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा वादरा पञ्चाक्षया, वादरा अक्षयगुणा अक्षयगुणा
 सुक्षमा अपञ्चाक्षया अक्षयगुणा, सुक्षमा पञ्चाक्षया सक्षयगुणा । एएसिण जते ! सुक्षमपृथ्विकाइयाण
 वादरपृथ्विकाइयाणय पञ्चाक्षया २ ण कयरे कयरोहितो अक्षयया ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा वादरपृथ्वि
 काइया पञ्चाक्षया वादरपृथ्विकाइया अक्षयगुणा, सुक्षमपृथ्विकाइया अक्षयगुणा अक्षय
 खंजगुणा, सुक्षमपृथ्विकाइया पञ्चाक्षया सक्षयगुणा । एएसिण जते ! सुक्षमआउकाइयाण वादरआउ

वायुकायिका विक्षेयापिका पर्याप्तसूक्षमनिगोदा अक्षयगुणाः पर्याप्ता वादरा विक्षेयापिका पर्याप्त
 दमयनरपिकायिका अक्षयगुणा सूक्षमाः पर्याप्ता विक्षेयापिकाः ३ । एतेषां प्रदत्त । सूक्षमाणां वादरापञ्चाक्षय पञ्चाक्षयापञ्चानां कतरे कतरे
 ल्योऽप्या वा ४ ? गीतम । सर्वलोका वादराः पर्याप्ता अपर्वांका वादरा अक्षयगुणा सूक्षमा अपर्वांका अक्षयगुणा सूक्षमाः पर्याप्ताः सक्षय
 गुणा । एतयो प्रदत्त । सूक्षमपृथ्वीकायिकानां वादरपृथ्वीकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरल्योऽप्या वा ४ ? गीतम । सर्वलोकाः पर्या
 दनवादरपृथ्वीकायिका अपर्वांका वादरपृथ्वीकायिका अपर्वांका अपर्वांकायिका अक्षयगुणाः पर्याप्तसूक्षमपृथ्वीकायिका सक्षय
 गुणा । एतेषां प्रदत्त । सूक्षमापञ्चाक्षयिकानां वादरापञ्चाक्षयिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरल्योऽप्या वा ४ ? गीतम । सर्वलोकाः पर्याप्तवादरापञ्चा

काङ्क्षयाण पञ्जज्ञा २ ण कयरे कयरेहिती सुप्पाया ४ ० गोयमा ! सव्वत्थोवा यादरथाउकाङ्क्षया पञ्जज्ञया
 यादरथाउकाङ्क्षया सुपञ्जज्ञया सुसस्वगुणा, सुपञ्जज्ञया सुसस्वगुणा, सुज्जमथा
 उकाङ्क्षया पञ्जज्ञगा सस्वगुणा । एएसिण जते । सुज्जमतेउकाङ्क्षयाण यादरतेउकाङ्क्षयाणय पञ्जज्ञा २ ण
 कयरे कयरेहिती सुप्पाया ४ ० गोयमा ! सव्वत्थोवा यादरतेउकाङ्क्षया पञ्जज्ञया, यादरतेउकाङ्क्षया सुप
 ज्ञज्ञतया सुसस्वगुणा, सुज्जमतेउकाङ्क्षया सुपञ्जज्ञया सुसस्वगुणा, सुज्जमतेउकाङ्क्षया पञ्जज्ञगा सस्वगु
 गुणा । एएसिण जत ! सुज्जमथाउकाङ्क्षयाण यादरथाउकाङ्क्षया पञ्जज्ञया २ ण कयरे कयरेहिती सुप्पा
 या ४ ० गोयमा ! सव्वत्थोवा यादरथाउकाङ्क्षया पञ्जज्ञया यादरथाउकाङ्क्षया सुपञ्जज्ञया सुसस्वगुणा !
 सुज्जमथाउकाङ्क्षया सुपञ्जज्ञया सुसस्वे ० । सुज्जमथाउकाङ्क्षया पञ्जज्ञया सुसस्वगुणा । एएसिण जते !
 सुज्जमथाणस्सउकाङ्क्षयाण यादरथाणस्सउकाङ्क्षयाणय पञ्जज्ञा २ ण कयरे कयरेहिती सुप्पाया ४ ० गोयमा !

यिका अपयोऽवादराप्कायिका असक्कमुक्का अपयोऽनुसमाप्कायिकाः सक्कमुक्काः । एतेषां प्रदत्त । दूरमतेजस्का
 यिकानां वाहरतजस्कायिकानां पयोऽपयोऽन्ना कतर कतरत्थेऽस्या वा ४ १ नीतम् । सब्बलोकाः पयोऽवाहरतेजस्कायिका अपयोऽवाहरतेजस्का
 यिका सक्कमुक्का अपयोऽनुसमतेजस्कायिका सक्कमुक्काः पयोऽनुसमतेजस्कायिकाः सक्कमुक्काः । एतेषां प्रदत्त । दूरमथापुकायिकानां वाहरता
 यथायिकानां च पयोऽपय कतर कतरत्थेऽस्या वा ४ २ नीतम् । सब्बलोकाः पयोऽवाहरतापुकायिका अपयोऽवाहरतापुकायिका सक्कमुक्का च
 पयोऽनुसमथापुकायिका सक्कयेयमुक्काः पयोऽनुसमथापुकायिका सक्कयेयमुक्काः । एतेषां प्रदत्त । दूरममत्थयिकायि
 कानां पयोऽपयोऽन्ना कतर कतरत्थेऽस्या वा १ नीतम् । सब्बलोकाः पयोऽवाहरमत्थयिकायिका अपयोऽवाहरमत्थयिकायिका सक्कयेयमुक्का

सहस्रयोवा वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, 'यादरवणस्सइकाइया' अपज्जत्तया अस्सिज्जगुणा, सुज्जम
वणस्सइकाइया अपज्जत्तया अस्सिज्जगुणा । सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तया सस्सिज्जगुणा । एएसिण भत्ते !
सुहुमनिगोदाण वादरनिगोदाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहिती अप्पयावा ४ ? गोयमा ! सहस्रयोवा वाद
रनिगोदा पज्जत्तया, वादरनिगोदा अपज्जत्तया असस्से ०, सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तया अस्सिज्जगुणा,
सुज्जमनिगोदा पज्जत्तया सस्सेज्जगुणा ४ । एएसिण भत्ते ! सुज्जमाण सुज्जमपुदयिकाइयाण सुज्जमअ्याउका
इयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादर
पुदयिकाइयाण वादरअ्याउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाण पत्ते
यसररिवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहिती अप्पया
वा ४ ? गोयमा ! सहस्रयोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वादरतस्सइकाइया पज्जत्तया असस्सगुणा २

अपयो ० सुहमवमरपत्तिकायिका असस्सगुणा पर्योसुहमवमरपत्तिकायिकाः सहस्रगुणा । एतथा प्रदत्त । सुहमनिगोदाना वादरनिगोदाना पर्यो
स्तापर्योक्तानां कतरे कतरेज्जोअया वा ४ ? गोतम । सर्वकोणाः पर्योक्ता वादरनिगोदा अपयोसवादरनिगोदा असस्सगुणा अपयोससूक्ष्मनिगो
दा असस्सगुणाः पर्योससूक्ष्मनिगोदाः सहस्रगुणाः । एतथा प्रदत्त । सूक्ष्माणां सुहमपुदयिकानामां सूक्ष्माण्यानां सुहमतजस्सायिकानां सूक्ष्म
वमरपत्तिकायिकानां सुहमवायुकायिकानां सुहमनिगोदाना वादराणां वादरपुदयिकानामां वादराण्यायिकानां वादरतेजस्सायिकानां वादरवा
युकायिकानां वादरवमरपत्तिकायिकानां प्रत्येकशरीरवावरवमरपत्तिकायिकानां वादरनिगोदानां वादरतजस्सायिकानां पर्योस्तापर्योक्तानां कतरे कत
रज्जोअया वा ४ ? गोतम । सर्वकोणां वादरतजस्सायिका पर्योक्ताः १ । पर्योस्तावादरतजस्सायिका असस्सगुणा २ । अपयोसवादरतजस्सायिका

यादरतसकाहया अपउजत्तया असखिउजगुणा ३ । पत्तियसरीवादरयणस्सहकाहया पउजत्तया असखिउज
 गुणा ४ । यादरनिगोदा पउजत्तया असखिउजगुणा ५ । यायरपुढाविकाहया पउजत्तया असखिउजगोणा ६ ।
 यादरथाउकाहया पउजत्तया असखिउजगुणा ७ । यादरवाउकाहया पउजत्तया असखिउजगुणा ८ । यादरतउ
 यादरनिगोदा अपउजत्तया असखिउजगुणा ९ । पत्तियसरीवादरयणस्सहकाहया अपउजत्तया असखिउजगुणा १० ।
 इया अपउजत्तया असखे ११ । यादरयाउकाहया अपउजत्तया असखे १२ । यादरथाउका
 हया असखेउजगुणा १३ । यादरयाउकाहया अपउजत्तया असखे १४ । सुज्जमतेउकाहया अपउज
 त्तया विसेसाहिया १५ । सुज्जमपुढाविकाहया अपउजत्तया विसेसाहिया १६ । सुज्जमथाउकाहया अप
 सखि ११ । सुज्जमपुढाविकाहया पउजत्तया विसेसाहिया १८ । सुज्जमतेउकाहया पउजत्तया
 सुज्जमयाउकाहया पउजत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमथाउकाहया पउजत्तया विसेसाहिया २१

असखेयगुणा १ । पर्याप्तमत्तयेकहरीरवादरबनस्पतिकाविका असख्यगुणा २ । पर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा ३ । पर्याप्तवादरपञ्चिकाविका
 असख्येयगुणा ४ । पर्याप्तवादराविका असख्येयगुणा ५ । पर्याप्तवादरायुकाविका असख्यगुणा ६ । पर्याप्तवादरतेजस्वाविका असख्यगुणा ७ ।
 असख्येयगुणा ८ । अपर्याप्तमत्तयेकहरीरवादरबनस्पतिकाविका असख्यगुणा ९ । अपर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा १० । अपर्याप्तवादरपञ्चिकाविका असख्यगुणा ११ ।
 अपर्याप्तवादराविका असख्यगुणा १२ । अपर्याप्तवादरायुकाविका असख्यगुणा १३ । अपर्याप्तवादरतेजस्वाविका असख्यगुणा १४ । अपर्याप्तवादरपञ्चिकाविका असख्यगुणा १५ ।
 अपर्याप्तमत्तयेकहरीरवादरबनस्पतिकाविका असख्यगुणा १६ । अपर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा १७ । अपर्याप्तवादरपञ्चिकाविका असख्यगुणा १८ ।

दा पञ्चमया सखि० २४ । यादरयणस्सहकाइया पञ्चमया अणतगुणा २५ । वादरपज्जत्ता विसेसाहिंया २६ ।
यादरयणस्सहकाइया अणतगुणा २७ । वादरअणतगुणा २८ । वादरा
विससाहिंया २९ । सुज्जमयणस्सहकाइया अणतगुणा ३० । सुज्जमअणतगुणा विसेसाहिंया ३१
सुज्जमयणस्सहकाइया पञ्चमया सखे० ३२ । सुज्जमपञ्चमया विसेसाहिंया ३३ । सुज्जमा विसेसाहिंया ३४
दार ४ । एएसिण ज्ञते ! जीवाण सजोगीण मणजोगीण वयजोगीण कायजोगीण अजोगीणय कयर २
हितो अप्पावा यज्जावा तुम्हावा विसेसाहिंयाया ? गोयमा । सव्वत्योवा जीवा मणजोगी वयजोगी अ
सवेज्जगुणा अजोगीअणतगुणा कायजोगी अणतगुणा सजोगी विसेसाहिंया , दार ५ । एएसिण ज्ञते !
जीवाण संवेदगाण इत्थीविंदगाण परिसंवेदगाण नपुसंगवेदगाण अवेदगाणय कयर २ हितो अप्पावा ४

काः १८ । पर्याप्तसूक्ष्मतेजस्वायिकाः संक्षयगुणाः १८ । पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विक्षेपायिकाः २० । पर्याप्तसूक्ष्माकायिका विक्षेपायिकाः २१ । पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विक्षेपायिकाः २२ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगादाः संक्षयगुणाः २३ । पर्याप्तसूक्ष्मनिगादाः संक्षयगुणाः २४ । पर्याप्तवाटरवमररपति कायिका अनन्तगुणा २५ । पर्याप्ता वाटरा विक्षेपायिकाः २६ । अपर्याप्तवाटरधनरपति कायिका संक्षयगुणाः २७ । अपर्याप्ता वाटरा विक्षेपायिका २८ । वाटरा विक्षेपायिका २८ । अपर्याप्तसूक्ष्मवनरपति कायिका संक्षयगुणाः ३० । सूक्ष्मा अपर्याप्ता विक्षेपायिकाः ३१ । पर्याप्ता सूक्ष्मवनरपति कायिकाः संक्षयगुणाः ३२ । पर्याप्ताः सूक्ष्मा विक्षेपायिकाः ३३ । सूक्ष्मा विक्षेपायिकाः ३४ द्वारम् । ४ । यत्रया प्रदन्त । जीवानां स्योगिनां मनोयोगिनां वाग्यागिनां काययोगिनां अयोगिनां व जतर जतरस्याऽल्पा या ४ ? गीतम् । सबस्तीका जीवा मनोपागिनो वाग्योगिनोऽसंक्षयेय गुणा अयोगिनीऽनन्तगुणाः आपयोगिनो मन्तगुणाः स्योगिनो विक्षेपायिकाः । द्वारम् । ५ । एतेषां प्रदन्त । जीवानां सर्वेक्षानां खोबेदकामा

यादरत्तसकाह्या अपउजत्तया अस्खिउजगुणा ३ । पत्तियसरीयादरवणस्सहकाह्या पज्जत्तया अस्खिउज
 गुणा ४ । यादरनिगोदा पज्जत्तया अस्खिउजगुणा ५ । यायरपुढाविकाह्या पज्जत्तया अस्खेउजगेणा ६ ।
 यादरथाउकाह्या पज्जत्तया अस्खिउजगुणा ७ । यादरवाउकाह्या पज्जत्तया अस्खेउजगुणा ८ । यादरत्तेउ
 काह्या अपउजत्तया अस्खिउजगुणा ९ । पत्तियसरीयादरवणस्सहकाह्या अपउजत्तया अस्खेउज १० ।
 यादनिगोदा अपज्जत्तया अस्खे ११ । यादरथाउकाह्या अपउजत्तया अस्खे १२ । यादरथाउका
 ह्या अपज्जत्तया अस्खे १३ । यादरथाउकाह्या अपज्जत्तया अस्खे १४ । सुज्जमत्तेउकाह्या अपज्ज
 त्तया अस्खेउजगुणा १५ । सुज्जमपुढाविकाह्या अपज्जत्तया विसेसाहिया १६ । सुज्जमथाउकाह्या अप
 ज्जत्तया विसेसाहिया १७ । सुज्जमथाउकाह्या अपज्जत्तया विसेसाहिया १८ । सुज्जमत्तेउकाह्या पज्जत्तया
 अस्खि १९ । सुज्जमपुढाविकाह्या पज्जत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमथाउकाह्या पज्जत्तया विसेसाहिया २१
 सुज्जमथाउकाह्या पज्जत्तया विसेसाहिया २२ । सुज्जमनिगोदा अपउजत्तया अस्खे २३ । सुहुमनिगो

वस्खेपमुखाः ३ । पयोसवादरनिगोदा वस्खेपमुखाः ४ । पयोसवादरनिगोदा वस्खेपमुखाः ५ । पयोसवादरपुच्छीकायिका
 वस्खेपमुखाः ६ । पयोसवादरपुच्छीका वस्खेपमुखाः ७ । पयोसवादरवावुकायिका वस्खेपमुखाः ८ । पयोसवादरतेजस्कायिका वस्खेपमुखाः ९ ।
 अपयोसवादरवावुकायिका वस्खेपमुखाः १० । अपयोसवादरनिगोदा वस्खेपमुखाः ११ । अपयोसवादरपुच्छीकायिका
 वस्खेपमुखाः १२ । अपयोसवादरपुच्छीका वस्खेपमुखाः १३ । अपयोसवादरवावुकायिका वस्खेपमुखाः १४ । अपयोसवादरतेजस्कायिका वस्खेपमुखाः १५ ।
 अपयोसवादरपुच्छीकायिका वस्खेपमुखाः १६ । अपयोसवादरपुच्छीका वस्खेपमुखाः १७ । अपयोसवादरवावुकायिका वस्खेपमुखाः १८ । अपयोसवादरतेजस्कायिका वस्खेपमुखाः १९ ।
 अपयोसवादरपुच्छीकायिका वस्खेपमुखाः २० । अपयोसवादरपुच्छीका वस्खेपमुखाः २१ । अपयोसवादरवावुकायिका वस्खेपमुखाः २२ । अपयोसवादरतेजस्कायिका वस्खेपमुखाः २३ ।

सम्प्रामिच्छदिठीण च कयरे कयरोहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सधृत्योवा जीवा सम्प्रामिच्छदिठी, सम्प्र
 दिठी ह्यणतगुणा मिच्छदिठीह्यणतगुणा, दार ९ । एएसिण जते । जीवाण ह्यन्निगिबोहियणाणीण
 सुयणाणीण ठह्णिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरोहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सध
 त्योवा मणपज्जवनाणी ठह्णिनाणी ह्यस० ह्यन्निगिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव
 लनाणी ह्यण० । एएसिण जते ! जीवाण मडह्यणाणीण सुयह्यणाणीण विजगनाणीणय कयरे कयरोहितो
 ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सधृत्योवा जीवा विजगनाणी मडह्यणाणी सुयह्यणाणी दोवि तुल्ला ह्यणतगुणा ।
 एएसिण जते ! जीवाण ह्यन्निगिबोहियनाणीण सुयनाणीण ठह्णिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणी
 ण मतिह्यणाणीण सुयह्यणाणीण विजगनाणीणय कयरे कयरोहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सधृत्योवा

प्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सबस्सोका जीवा सम्पत्तिमप्यावृष्टिभः सम्पद्वृष्टिनोत्तगुणाः, द्वारम् । ८ । एतेषा जदन्त ।
 जीवाभामामिनिबोधिक्कञ्चानिमा भुत्तञ्चानिमावपिञ्चानिमा ममपयवञ्चानिमा केवलसञ्चानिमा च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सबस्सोका
 मन पर्यवञ्चानिमा उवाचिञ्चानिमाऽसस्यगुणा ह्यन्निबोधिक्कञ्चानिमाः भुत्तञ्चानिमा द्वावपि तुल्यो विसेयापिक्को केवलसञ्चानिमाऽनन्तगुणाः । एते
 पा जदन्त । मत्सञ्चानिमा जीवामा भुत्तञ्चानिमा विभङ्गञ्चानिमा च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सबस्सोका जीवा विजङ्गञ्चानिमा मत्स
 ञ्चानिमाः भुत्तञ्चानिमा द्वावपि तुल्यो भजन्तगुबी । एतेषा जदन्त । जीवाना ह्यन्निबोधिक्कञ्चानिमा भुत्तञ्चानिमावपिञ्चानिमा ममपयवञ्चानिमा
 मिमा केवलसञ्चानिमा मत्सञ्चानिमा भुत्तञ्चानिमा विजङ्गञ्चानिमा कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सबस्सोका जीवा ममपयवञ्चानिमाऽव
 पिञ्चानिमाऽसस्यगुणाः ह्यन्निबोधिक्कञ्चानिमाः भुत्तञ्चानिमा द्वावपि तुल्यो विसेयापिक्को, विजङ्गञ्चानिमाऽवसेयगुणाः केवलसञ्चानिमाऽनन्त

? गोयमा ! सद्युतोवा जीवा परिसवेदगा हत्यीवेदगा सखेज्जगुणा, छवेदगा छणतगुणा नपुसगवेदगा
 छणतगुणा सवेयगा यिससाहिद्या, दार ६ । एएसिण जते । जीवाण सकसाईण कोहकसाईण माणक
 साईण मायाकसाईण लोन्नकसाईण स्यकसाईणय कयरे कयरोहितो स्यप्पावा ४ ? गोयमा ! सद्युतोवा जीवा
 स्यकसाई माणकसाई स्यणतगुणा, कोहकसाई यिससाहिद्या, मायाकसाई विससाहिद्या, लोन्नकसाई यिससा
 हिद्या, सकसाई विससाहिद्या, दार ७ । एएसिण जते । जीवाण सलेसाण किरहलेसाण नीललेसाण काउ
 लेसाण तउलेसाण पम्हलेसाण सुक्खलेसाण स्यलसाणय कयरे कयरोहितो स्यप्पावा ४ ? गोयमा ! सद्युतोवा
 जीवा सुक्खलेसा पम्हलेसा सखिज्जगुणा तउलेसा सखिज्ज ० स्यलेसा स्यणतगुणा काउलेसा स्यणतगुणा नील
 लेसा विससाहिद्या किरहलेसा विससाहिद्या, दार ८ । एएसिण जते ! जीवाण सम्मदिठीण मिच्छादिठीण

पुरुषवदवानां नपुसकवदवानामवेदवानां च कतरे कतरेज्जोऽस्या वा ४ । नीतम । सद्यस्तोकाः जीवाः पुरुषवदकाः खीवेदकाः सद्यगुणा सवेदका
 सद्यन्तमुका नपुसकवदका सनन्तगुणाः सवेदका विद्येवाचिकाः दार ६ । एतथां प्रदन्त । जीवानां सद्ययायिना लोचकयायिना मानकयायिना मा
 याकयायिना लोन्नकयायिना सकयायिना च कतरे कतरेज्जोऽस्या वा ४ । नीतम । सद्यस्तोकाः जीवा सकयायिनो मानकयायिनो नन्तगुणाः को
 यकयायिनो विद्येयायिका मायाकयायिनो विद्यवाचिका सद्ययायिनो विद्यवाचिका दारम् ७ । एतथा प्रदन्त ।
 जीवानां ससङ्गानां कण्ठसेइयाना नीलसङ्गाना कायोतसेइयाना तेजोसेइयाना पटलसङ्गानां सङ्गसेइयाना सलेइयानां च कतरे कतरेज्जोऽस्या
 वा ४ ? नीतम । सद्यस्तोका जीवाः सुक्खसङ्गः पटलसेइयाः सद्यन्तमुका सद्योलेइयाः सद्यन्तमुका कायोतसेइया सनन्तमुका नी
 लसङ्गः विद्येवाचिका कण्ठसेइया विद्यवाचिकाः । दारम् ८ । एतेवा प्रदन्त । सम्मग्गुठिना मिज्झादुठिना सव्यक्किज्झादुठिनां च कतरे कतरे

सम्प्रामिच्छदिठीण च कयरे कयरेहिती क्षुप्यावाः ? गोयमा । सह्योवा जीवा सम्प्रामिच्छदिठी, सम्प्र
 दिठी क्षुणतगुणा मिच्छदिठीक्षुणतगुणा, दारः ? । एएसिण नते ! जीवाण आनिनिवोहियणाणीण
 सुयणाणीण उहिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरेहिती क्षुप्यावाः ? गोयमा । सह्य
 त्योवा मणपज्जवनाणी उहिनाणी क्षुस० आनिनिवोहियनाणी सुयनाणी दोयि तुह्वा यिसेसाहिया केव
 लनाणी क्षुण० । एएसिण नते ! जीवाण महक्षुणाणीण सुयक्षुणाणीण विजगनाणीणय कयरे कयरेहिती
 क्षुप्यावाः ? गोयमा ! सह्योवा जीवा यिजगनाणी महक्षुणाणी सुयक्षुणाणी दोयि तुह्वा क्षुणतगुणा ।
 एएसिण नते ! जीवाण आनिनिवोहियनाणीण सुयनाणीण उहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणी
 ण मतिक्षुन्नाणीण सुयक्षुन्नाणीण विजगनाणीणय कयरे कयरेहिती क्षुप्यावाः ? गोयमा ! सह्योवा

प्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सबसोका बीधाः सम्पग्मिप्यावृष्टिन् सम्पग्मृष्टिमोमन्तगुणाः, द्वारम् । ६ । एतेषा नदन्त ।
 बीधानामानिययोपिक्कञ्चानिना सुतञ्चानिनामवपिञ्चानिना मनपयवञ्चानिना केवलञ्चानिना च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सबसोका
 मन पर्ययञ्चानिनो उवापिञ्चानिनोऽसस्यगुणा आनिनिवोपिक्कञ्चानिनाः सुतञ्चानिमद्य द्वावपि तुस्यो विक्षपापिक्की केवलञ्चानिमोऽनन्तगुणाः । एते
 पां नदन्त । मत्तञ्चानिनां बीधानां सुतञ्चानिनां विभङ्गञ्चानिना च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सबसोका बीधा विभङ्गञ्चानिनो मत्त
 चानिनाः सुतञ्चानिनाश्च द्वावपि तुस्यो अनन्तगुणौ । एतेषा नदन्त । बीधानां आभिर्मयोपिक्कञ्चानिनां सुतञ्चानिनामवपिञ्चानिना मनपययञ्चा
 निना केवलञ्चानिना मत्तञ्चानिना सुतञ्चानिनां विजङ्गञ्चानिनाश्च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सबसोका बीधा मनपययञ्चानिनोऽव
 पिञ्चानिनोऽसस्यगुणा आनिनयोपिक्कञ्चानिनाः सुतञ्चानिमद्य द्वौ अपि तुस्यो विक्षपापिक्की, विभङ्गञ्चानिनोऽसस्यगुणाः केवलञ्चानिनोऽनन्त

जीवा मणपञ्जवनाणी ठिहनाणी अस्खिज्जगुणा, अन्निणिदोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला विसंसाहि
 या विचगनाणी अस्खेज्ज० केवलनाणी अणतगुणा मइअन्नाणीय सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला विसंसाहि
 या, विचगनाणी अस्खेज्ज०, केवलनाणी अणतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला अणतगु
 णा, दार १० । एएसिण नत्ते ! जीवाण चरकुदसणीण अचरकुदसणीण ठिहदसणीण केवलदसणीणय क
 यरे कयरोहिती अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्वयोवा जीवा ठिहदसणी चरकुदसणी अस्खेज्जगुणा, केवलदस
 णी अणतगुणा अचरकुदसणी अणतगुणा, दार ११ । एएसिण नत्ते ! जीवाण सजयाण असजयाण सज
 यासजयाण नोसजयाण नोअसजयाण नोसजया २ णय कयरे २ हिती अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्वयोवा
 जीवा सजयासजया असजया अस्खेज्जगुणा, नोसजता नोअसजता नोसजतासजता अणतगुणा, असज
 ता अणसगुणा, दार १२ । एएसिण नत्ते ! जीवाण सागारोवडप्पाण अणगारोवडप्पाणय कयरे २ हिती

[illegible]

अय्योवाः ? गोयमा ! सवृत्योवा जीवां अणुणागरोवउत्ता सखिज्जगुणा, दारं १३ । एए
 सिण नत्ते ! जीवाण अणुहारगण अणुहारगणय कयरे ? हितो अय्योवाः ? गोयमा ! सवृत्योवा जीवा
 अणुहारगा अणुहारगा असखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिण नत्ते ! जीवाण न्नासगाण अणुनासगाणय क
 यरे कयरोहितो अय्योवा अज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सवृत्योवा जीवा न्नासगा अणु
 सगा अणुतगुणा, दार १५ । एएसिण नत्ते ! जीवाण परिह्वाण अणुपरिह्वाण नोपरिह्वा नोअणुपरिह्वाणय
 कयरे कयरोहितो अय्योवाः ? गोयमा ! सवृत्योवा जीवा परिह्वा नोपरिह्वा नोअणुपरिह्वा अणुतगुणा
 अणुपरिह्वा अणुतगुणा, दार १६ । एएसिण नत्ते ! जीवाण पज्जाह्वाण अणुपज्जाह्वाण नोपज्जाह्वा नोअणुपज्जाह्वा
 णय कयरे कयरोहितो अय्योवाः ? गोयमा ! सवृत्योवा जीवा नोपज्जाह्वाणोअणुपज्जाह्वा अणुपज्जाह्वा
 अणुतगुणा पज्जाह्वा सखिज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! सुज्जमाण वादराण नोवादराणय कयरे ?

वातामनाहारवाना च कतरे कतरेज्योअणु वा ४ ? गोतम । सवस्तोका जीवा अनारका वाहारका असस्यगुणाः । द्वारम् । १४ । एतेषा मद
 न् । जीवानां प्रापकानामप्रापकाना च कतरे कतरेज्योअणु वा तुल्या वा विशेषाधिक्का वा ? गोतम । सवस्तोका जीवा प्रापका अप्रापका च
 नल्लगुणाः । द्वारम् । १५ । एतेषा नदन्त । जीवाना परीतानामपरीताना नो परीताना नो अपरीताना च कतरे कतरेज्योअणु वा ? गोतम ।
 सवस्तोका जीवाः परीता नोपरीता नो अपरीता अनल्लगुणा अपरीता च कतरे कतरेज्योअणु । द्वारम् । १६ । एतेषा मदन्त । जीवाना पर्याप्तानामपर्याप्ता
 नो नोपर्याप्ताना नोअपर्याप्ताना च कतरे कतरेज्योअणु वा ४ ? गोतम । सवस्तोका जीवा नोपर्याप्तका नो अपर्याप्तका अनल्लगुणाः
 पर्याप्तकाः सस्यगुणाः । एतेषा नदन्त । मूलारका वादराणां नो वादराणां च कतरे कतरेज्योअणु वा ४ ? गोतम । सवस्तोका जीवा

हिती श्रुप्पावाः ? गोयमा ! सङ्ख्योवा जीवा नोसुज्जमा नोयादरा, बाढरा श्रुणतगुणा सुज्जमा श्रुसखे
उगुणा, दार १८ । एएसिण जते । जीवाण सङ्कीण श्रुसन्कीण नोसन्कीण नोश्रुसन्कीणय कयरे कयरे
हिती श्रुप्पावाः ? गोयमा ! सङ्ख्योवा सन्ती नोसन्ती नोश्रुसन्ती श्रुणतगुणा, श्रुसन्ती श्रुणतगुणा ।
दार १९ । एएसिण जते ! जीवाण नवसिद्धियाण श्रुजयसिद्धियाण नोजयसिद्धियनोश्रुजयसिद्धियाणय
कयरे कयरेहिती श्रुप्पावाः ? गोयमा ! सङ्ख्योवा श्रुजयसिद्धिया नोजयसिद्धिया, नोश्रुजयसिद्धिया
श्रुणतगुणा नवसिद्धिया श्रुणतगुणा, दार २० । एएसिण जते । धम्मालिकायश्रुधम्मालिकायश्रुगास
तिकाय जीवलिकाय पुग्गलतिकाय श्रुदासमयाण दव्वठयाए कयरे कयरेहिती श्रुप्पावाः ? गोयमा !
धम्मालिकाए श्रुधम्मालिकाए श्रुगासतिकाए एए तिकवि तुळा दव्वठयाए सङ्ख्योवा जीवलिकाए दव्व

[illegible]

ठया० अणन्तगुणेषुमाळित्यिकाए दसुठयाए अणतगुणे अरुसमए दसुठयाए अणतगुणे । एएसिण नते !
 धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोगालत्थिकायअरुसमयाण पदेसठयाए कयरे
 कयरोहितो सुप्पावा ४ ? गोयमा । धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिण दोवि तुल्ला पदेसठयाए सव्व
 त्योवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणे पांगलत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणे अरुसमए पदेसठ
 याए अणतगुणा आगासत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणा । एएसिण नते ! धम्मत्थिकायस्स दसुठयाए पदे
 सठयाए कयरे कयरोहितो सुप्पावा बज्जावा तुल्लावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा एगे धम्म
 त्थिकाए दसुठयाए सोचंय पदेसठयाए असखिज्जगुणा । एएसिण नते । अधम्मत्थिकायस्स दसुठयपदे
 सठयाए कयरे कयरोहितो सुप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्योव एगे अधम्मत्थिकाए दसुठयाए सोचंय पदे
 सठयाए असखिज्जगुण । एतस्सण नत ! आगासत्थिकायस्स दसुठपदेसठयाए कयरे कयरोहितो सुप्पावा ४
 ? गोयमा । सव्वत्योव एगे आगासत्थिकाए दसुठयाए सोचंय पदेसठयाए अणतगुणा , एतस्सण नते !

उपपा वा १ गीतम । धर्मोत्तिक्कायाधर्मोत्तिक्कायो द्वावप्येतौ तुल्यो प्रदेक्षार्थतया सर्वस्तोको जीवोत्तिक्काय प्रदेक्षार्थतयानन्तगुणः पुद्गलार्ति
 कायप्रदेक्षार्थतयाऽनन्तगुणो ऽप्युत्तमयः प्रदेक्षार्थतयानन्तगुण आकाशोत्तिक्कायः प्रदेक्षार्थतयानन्तगुणः । अस्य भद्रम् । धर्मोत्तिक्कायस्य
 द्रव्यायतया प्रदेक्षार्थतया कतरं कतरज्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोको एकोऽधर्मोत्तिक्कायः प्रदेक्षार्थतया स एवानन्तगुणः । अस्य भद्रम् ।
 अपधर्मोत्तिक्कायस्य द्रव्यायतया प्रदेक्षार्थतया कतरं कतरज्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोको एकोऽधर्मोत्तिक्कायो द्रव्यायतया स एव प्रदेक्षार्थतया
 ऽवस्थगुणः । एतस्य भद्रम् । आकाशोत्तिक्कायस्य द्रव्यायप्रदेक्षार्थतया कतरं कतरज्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोको एक आकाशोत्तिक्कायो

जीवतित्थिकायस्स दह्ठपदेसठयाए कयरे कयरो हितो ह्यप्पावा १ ? गोयमा । सवत्थोवे जीवतित्थिकाए दह्ठ
ठयाए सोचेत्र पदेसठयाए ह्यसखिज्जगुणा, एतस्सण जत्ते । पुग्गलित्थिकायस्स दह्ठपदेसठयाए कयरे २
हितो ह्यप्पावा २ गोयमा । सवत्थोवा पुग्गलित्थिकाए दह्ठयाए सोचेत्र पदेसठयाए ह्यसखिज्जगुणा ह्य
दासमए'ण पुच्छिज्जह पदसान्नावा । एएसिण जत्ते । धम्मत्थिकाय ह्यधम्मत्थिकाय ह्यागासत्थिकाय जीव
त्थिकाय पोग्गलित्थिकाय ह्यदासमयाण दह्ठयाए पदेसठयाए कयरे कयरो हितो ह्यप्पावा १ ? गोयमा ।
धम्मत्थिकाए ह्यधम्मत्थिकाए ह्यागासत्थिकाएय एएणे तित्थिञ्च तुल्ला, दह्ठयाए सवत्थोवा धम्मत्थिकाए
ह्यधम्मत्थिकाएय एएण दोस्सित्तुल्ला पदेसठयाए ह्यसखेज्जगुणा, जीवतित्थिकाए दह्ठयाए ह्यणत्तगुणे सो
चत्र पदेसठयाए ह्यसखिज्जगुणे पोग्गलित्थिकाए दह्ठयाए ह्यणत्तगुण सोचेत्र पदेसठयाए ह्यसखेज्जगुणे

ब्रह्मायतया स एव प्रदेष्टार्यतयाऽनन्तबुधः । यतस्य भवन् । श्रीवास्तिकायस्य ब्रह्मार्चप्रदेष्टायतया कतर कतरज्योऽस्या वा ४ ? सर्वसोको श्रीवा
स्तिकाय एको ब्रह्मार्चतया स एव प्रदेष्टार्यतया ऽवस्थबुधः । यतस्य भवन् । पुद्गलास्तिकायस्य ब्रह्मायप्रदेष्टार्यतया कतर कतरज्योऽस्या वा ४ ?
योतम । सर्वसोको- पुद्गलास्तिकायो ब्रह्मायतया स एव प्रदेष्टार्यतया ऽवस्थबुधः । कदाचनयो नपुंश्रते प्रदेष्टाप्रदात् । यतवा भवन् । यमी
स्तिकायापमोस्तिकायवास्तिकायश्रीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायादासुनयाना ब्रह्मायतया प्रदेष्टार्यतया कतर २ ज्योऽस्या वां ४ ? योतम । य
मीस्तिकायो ऽपमोस्तिकाय वाकाद्यास्तिकाय एते त्रयस्तस्या ब्रह्मार्चतया सवन्तावाः यमीस्तिकायोवन्तास्तिकाय एतौ वाक्यि तुल्यौ प्रदेष्टार्ये
तया ऽवस्थपन्तौ श्रीवास्तिकायो ब्रह्मार्चतया नन्तबुधः स एव प्रदेष्टार्यतया ऽवस्थबुधः । पुद्गलास्तिकायो ब्रह्मार्चतया ऽवस्थबुधः स एव प्रदेष्टार्य
तया ऽवस्थबुधः । कदाचनयो ब्रह्मार्चप्रदेष्टार्यतयाऽनन्तबुधः । वाकाद्यास्तिकायः प्रदेष्टार्यतयाऽनन्तबुधः । द्वारत् २१ । यतवा भवन् । श्रीवा

अथासमए दक्षठपदेसठयाए अणतगुणे अणतगुणा दम् २१ । एएसिण जते ।
 जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा अचरिमा च
 रिमा अणतगुणा दार २२ । एएसिण जते । जीवाण पोग्गलाण अथासमयाण सव्वदक्षाण सव्वपएसाण
 सव्वपज्जायाण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा पोग्गला अणतगुणा अथास
 मया अणतगुणा सव्वदक्षा विसंसाहिंया सव्वपदेसा अणतगुणा सव्वपज्जाया अणतगुणा दार २३ । खित्ता
 णाएण सव्वत्योवा जीवा उहुलोयतिरियलोए अहोलीय विसंसाहिंया तिरियलोए असखि
 ज्जागुणा तेलुक्को असखंज्जागुणा उहुलोए असखंज्जागुणा अहोलीए विसंसाहिंया, खेत्ताणवाएण सव्वत्योवा
 नेरडया तेलुक्को अहोलोगतिरियलोगे असखंज्जा० अहोलीए असखंज्जागुणा । खेत्ताणवाएण सव्वत्योवा

मां चरमावाचरमाखां च कत्तर कत्तरेप्पोऽज्जा वा ४ ? गोतम । सबसोका जीवा अपरमादरमा अमल्लगुणा । द्वारम् २२ । एतेपा जवण ।
 जीवाना पुट्टलानामदासमयानां सवद्रव्याया सवप्रदेशाभा सवंपयवाणा च कत्तरे कत्तरेप्पोऽज्जा वा ४ ? गोतम । सर्वस्तोका जीवाः पुट्टला अन
 लगुणा अदासमया अनल्लगुणाः सवद्रव्यावि विशेषोपापिकानि सवप्रदेशा अनल्लगुणाः सवंपयवा अनल्लगुणाः । द्वारम् २३ । सेत्रानुपातेन सबस्तो
 का जीवा कसुलाकतिर्यस्तोके अपोलोकातिर्यस्ताके विशेषोपापिकास्तिर्यस्ताके असव्वगुणा खोलोकासव्वगुणा कसुलाकसव्वगुणा अघासोका वि
 क्षपाधिका सेत्रानुपातेन सबस्तोका नेरपिकाखोलोके अपोलोकातिर्यस्तोका असव्वगुणा अपासोके असव्वगुणा । सेत्रानुपातेन सबस्तोकावि
 यग्योनिक्का कसुलोकातिर्यस्ताके अपासाकतिर्यस्तोके विक्षपापिकारनयस्तोके असव्वगुणा खोलोका असव्वगुणा कसुलोके असव्वगुणा अपोलोके
 विशेषोपापिकाः । सेत्रानुपातेन सबस्तोकास्तिर्यग्योनिक्का कसुलोके कसुलाकतिर्यस्तोके असव्वगुणा खोलोके असव्वगुणा अपोलोकातिर्यस्तोके संख्ये

तिरिस्कजोणिया उहुलोयतिरियलोए अहोलीगतिरियलोए यिसेसाहिंया तिरियलोए असखेजगुणा, ते
 दुक्के असखेजगुणा उहुलोए असखेजगुणा अहोलीए विससाहिंया, खेसाणुवाएण सवत्योवा तिरिस्कजो
 णिणीउ उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा अहोलीयतिरियलोए सखिजगुणाउ
 अहोलीए सखजगुणाउ तिरियलोए सखिजगुणाउ खेसाणुवाएण सवत्योवा मणस्सा तेलुक्के उहुलोयतिरि
 यलोए असखेजगुणा अहोलीयतिरियलोए सखिजगुणा अहोलीए सखेजगुणा तिरियलोए सखेजगुणा।
 खेसाणुवाएण सवत्योवाउ मणस्सीउ तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए सखेजगुणाउ अहोलीयतिरियलोए सखे
 जगुणाउ उहुलोए सखेजगुणाउ अहोलीए सखेजगुणा तिरियलोए सखेजगुणा, खेसाणुवाएण सवत्योवा
 देवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणा तेलुक्के असखेजगुणा अहोलीए तिरियलोए असखेजगुणा०

यनुवा कपीसाके संख्यगुणा स्तियगुणाके सवपगुणाः । सेवानुपातेन सर्वस्तोका मनुया कोलोक्क उहुलोयतिरियलोके उवंपगुणा कपीलोयतिरिय
 लोके सवपेयगुणा कपीलोके संख्यगुणा स्तियगुणाके सवपगुणाः । सेवानुपातेन सर्वस्तोका मनुया कोलाक्के उहुलोयतिरियलोके सवपगुणा कपी
 लोयतिरियलोके सवपगुणा उहुलाके संख्यगुणा कपीलोके सवपगुणा स्तियगुणाके सवपगुणाः । सेवानुपातेन सर्वस्तोका देवा उहुलोके सवलोयति
 यलोके उवंपगुणा कोलोक्के उवंपगुणा कपीलोके सवपगुणा उवंपगुणा स्तियगुणाके सवपगुणाः । सेवानुपातेन सर्वस्तो
 का देवा उहुलोके उहुलोयतिरियलोके उवंपगुणा कोलोक्के सवपगुणा कपीलोके सवपगुणा स्तियगुणाके सवपगुणाः । सेवानुपातेन सर्वस्तोका
 कपीलोके उवंपगुणा उहुलोके सवपगुणा उहुलोके सवपगुणा स्तियगुणाके सवपगुणाः । सेवानुपातेन सर्वस्तोका कपीलोके उवंपगुणा
 यस्ताउ उवंपगुणाः । कपीलोके उवंपगुणाः । सेवानुपातेन सर्वस्तोका कपीलोके उवंपगुणा उहुलोके सवपगुणा उहुलोके सवपगुणा स्तियगुणाके सवपगुणाः । सेवानुपातेन सर्वस्तोका कपीलोके उवंपगुणा

अहोलीए सखिज्जगुणानं तिरियलीए सखिज्जगुणानं खेत्ताणुवाएण ससुत्थोवानं देयीनं उहुलीए उहुलीए
 तिरियलीए असखेज्जगुणानं तेलुक्को सखेज्जगुणानं अहोलीयतिरियलीए असखेज्जगुणानं अहोलीए सखे
 ज्जगुणानं तिरियलीए सखिज्जगुणानं खेत्ताणुवाएण ससुत्थोवा नवणथासीदेवा उहुलीए उहुलीयतिरियलीए
 असखेज्जगुणानं तेलुक्को सखिज्जगुणानं अहोलीयतिरियलीए असखेज्जगुणानं तिरियलीए असखिज्जगुणानं
 अहोलीए असखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण ससुत्थोवा नवणवासिणोतं देयीनं उहुलीए तिरियलीए असखि०,
 तेलुक्को सखेज्जगुणानं अहोलीए तिरियलीए असखेज्ज०, तिरियलीए असखिज्ज० अहोलीए असखिज्ज०
 खेत्ताणुवाएण ससुत्थोवा वाणमतरादेवा उहुलीए उहुलीयतिरियलीए असखिज्जगुणानं तेलुक्को असखिज्ज०
 अहोलीए तिरियलीए असखेज्जगुणानं अहोलीए सखेज्जगुणानं तिरियलीए सखिज्ज०, खेत्ताणुवाएण ससुत्थो

अपोसोकातिपत्तोके उववपुणास्तपत्तोके उववपुणा अपोसोके अववपुणाः । वेत्ताणुपातेन सबसोका वानव्यन्नरा देवा ऊदसोके ऊदसोका
 तियत्तोके उववपुणा खेतोस्वे उववपुणा अपोसोकातिपत्तोके उववपुणा स्तिपत्तोके सस्यगुणा । वेत्ताणुपातेन सबसो
 का वानव्यन्नार्मी दव्य ऊदसोके ऊदसाकातिपत्तोके, उववपुणा खेतोस्वे सस्यगुणा अपोसोकातिपत्तोके अववपुणा अपोसोके सवपुणा स्तिप
 त्तोके उववपुणाः । वेत्ताणुपातेन सबसोका स्पोतिक्का देवा ऊदसोके ऊदसोकातिपत्तोके उववपुणा खेतोस्वे सवपुणा अपोसोकातिपत्तोके
 उववपुणा अपोसोके उववपुणा स्तिपत्तोके उववपुणाः । वेत्ताणुपातेन सबसोका न्यतिक्कवेव्य ऊदसोके ऊदसाकातिपत्तोके उववपुणा इत्ते
 तास्य उववपुणा अपोसोकातिपत्तोके उववपुणा अपोसोके उववपुणाः । वेत्ताणुपातेन सबसोका वेत्ताणुपातेन सबसोका देवा ऊद
 सोकातिपत्तोके वेत्तोस्व सस्यगुणा अपोसोकातिपत्तोके सस्यगुणा अपोसोके उववपुणा ऊदसोके उववपुणाः । वेत्ताणु

तिरिस्कजोणिया उहुलोयतिरियलोए छुहोलीगतिरियलोए यिसेसाहिंया तिरियलोए अस्खेज्जगुणा, ते
 लुक्के अस्खेज्जगुणा उहुलोए अस्खिज्ज० अहोलीए यिसेसाहिंया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा तिरिस्कजो
 णिणीत्त उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अस्खेज्ज०, तेलुक्के अस्खेज्ज० अहोलीयतिरिओए सखिज्जगुणात्त
 अहोलीए सखज्जगुणात्त तिरियलोए सखिज्जगुणात्त खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा मणुस्सा तेलुक्के उहुलोयतिरि
 यलोए अस्खेज्जगुणा अहोलीयतिरियलोए सखिज्जगुणा अहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखेज्जगुणा।
 खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवात्त मणुस्सीत्त तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए सखेज्जगुणात्त अहोलीयतिरियलोए सखे
 ज्जगुणात्त उहुलोए सखेज्जगुणात्त अहोलीए सखज्ज० तिरियलोए सखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा
 देवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अस्खेज्जगुणा तेलुक्के अस्खेज्जगुणा अहोलीए तिरियलोए अस्खेज्ज०

यमुका अपोत्तादे संकयमुका स्तियगुलोके संकयमुका। वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मनुका अपोत्तादे संकयमुका अपोत्तादे
 स्तोके संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका स्तियगुलोके संकयमुका। वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मनुका अपोत्तादे संकयमुका अपो
 तोत्तादे संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका। वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मनुका अपोत्तादे संकयमुका अपो
 यगुलोके संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका। वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मनुका अपोत्तादे संकयमुका अपो
 का देवा उहुलोके संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका। वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मनुका अपोत्तादे संकयमुका अपो
 का। वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मनुका अपोत्तादे संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका। वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मनुका अपोत्तादे संकयमुका अपो
 यगुलोके संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका अपोत्तादे संकयमुका। वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मनुका अपोत्तादे संकयमुका अपो

सधृत्योवा एगिदिया जीवा उहुलोए तिरियलोए, अहोलीयतिरियलोए धिसेसाहिया, तिरियलोए अस
 खेजगुणा, तलुक्के अस०, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीय धिमसाहिया । खेत्ताणुवाएण सधृत्योवा
 एगिया जीवा अपजत्तगा, उहुलोयतिरियलोए अहोलीय तिरियलोए धिमसाहिया, तिरियलोए अस
 खजगुणा, तलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखिजगुणा, अहोलीय तिरियलोए धिमसाहिया, तिरियलोए
 सधृत्योवा एगिया जीवा पजत्तगा, उहुलोयतिरियलोए अहोलीय तिरियलोए धिमसाहिया । खेत्ताणुवाएण
 असखजगुणा, तलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीय धिमसाहिया । खेत्ताणुवाएण
 सधृत्योवा येइदिया उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तलुक्के अस०, अहोलीय तिरियलोए
 असखेजगुणा, अहोलीय तिरियलोए, तलुक्के असखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण सधृत्योवा येइदिया अ
 पजत्तगा उहुलोए । उहुलोयतिरियलोए सखजगुणा, तलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए अस
 खजगुणा, अहोलीय सखे०, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणुवाएण सधृत्योवा येइदिया पजत्तगा उहुलोए उ
 हुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोली
 ए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण सधृत्योवा तेइदिया उहुलोए उहुलोयतिरियलो

क्यगुणा अपासोबतियलाके उवक्यगुणा अपोमोके सखमुखा । क्षिपभाक मरुपगुणा । योगानुपातेन सर्वेस्ताः द्वीन्धिया अपयोमका क्यस्ताम
 क्यस्ताबतियलाके संक्यगुणाए लाक्य असक्यगुणा अपासोबतियलाके अस । गणा अपोसोके सखपगुणा । क्षिपलोके सखपगुणा । केत्रानुपातम
 सखसोका द्वीन्धियाः पयासका क्यस्ताबतियलाके उवक्यगुणा । के लोपपुसखपगुणा । अपोसोबतियलाके उवक्यगुणा अपोसोके संक्य

घातं धागमतरिनु देवीनु उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अस्खिजगुणात तेलुक्के सखिजगुणात अहोलीए
 तिरियलोए अस्खिज० अहोलीए सखिज० तिरियलोए सखिजगुणात सखिजगुणात सखिजगुणात सखिजगुणात
 सिया देवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अस्खिज० तेलुक्के सखिजगुणा अहोलीए तिरियलोए अस्खिज०
 गुणा अहोलीए सखिजगुणा तिरियलोए अस्खिजगुणा सखिजगुणा सखिजगुणा सखिजगुणा सखिजगुणा
 उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अस्खिजगुणात तेलुक्के सखिजगुणात अहोलीयतिरियलोए सखिज०, अहो
 लोए सखि० तिरियलोए अस्खि० सखिजगुणात तेलुक्के सखिजगुणा तिरियलोए सखिज०, अहो
 तेलुक्के सखिज० अहोलीयतिरियलोए सखिज० अहोलीए सखिजगुणा तिरियलोए सखिज० उहुलोए
 अस्खिज० सखिजगुणात सखिजगुणात वेमाणिनीत देवीनु उहुलोयतिरियलोए तेलुक्के सखिजगुणात अ
 होलीयतिरियलोए सखिज० अहोलीयसखिज० तिरियलोए सखिज० उहुलोए अस्खि० सखिजगुणात अ

पातन सर्वताका वेमानिनीयो देव उहुलोयतिरियलोए सखिज० अहोलीयसखिज० तिरियलोए सखिज० उहुलोए अस्खि० सखिजगुणात अ
 मुका उहुलोय उहुलोय० । वेमानुपातेन सर्वताका एकान्त्रिया लीला उहुलोयतिरियलोए अहोलीयसखिज० तिरियलोए सखिज० उहुलोए अस्खि० सखिजगुणात अ
 रयमुका अहोलीय उहुलोय० उहुलोयतिरियलोए अहोलीयसखिज० तिरियलोए सखिज० उहुलोए अस्खि० सखिजगुणात अ
 तिरियलोए अहोलीयतिरियलोए अहोलीयसखिज० तिरियलोए सखिज० उहुलोए अस्खि० सखिजगुणात अ
 मुपातेन सर्वताका एकान्त्रिया लीला उहुलोयतिरियलोए अहोलीयसखिज० तिरियलोए सखिज० उहुलोए अस्खि० सखिजगुणात अ
 मुका उहुलोय उहुलोय० । वेमानुपातेन सर्वताका एकान्त्रिया लीला उहुलोयतिरियलोए अहोलीयसखिज० तिरियलोए सखिज० उहुलोए अस्खि० सखिजगुणात अ

सप्तत्योधा एगिदिया जीवा उहुलोए तिरियलोए, अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अस
 खेजगुणा, तेलुक्के अस०, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विमसाहिया । खेत्ताणवाएण सप्तत्योवा
 एगिया जीवा अपज्जन्गा, उहुलोयतिरियलोए अहोलीए तिरियलोए विमसाहिया, तिरियलोए अस
 खेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखिजगुणा, अहोलीए विमसाहिया । खेत्ताणवाएण
 सप्तत्योधा एगिया जीवा पज्जन्गा, उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विमसाहिया, तिरियलोए
 असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विमसाहिया । खेत्ताणवाएण
 सप्तत्योधा येइदिया उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के अस०, अहोलीए तिरियलोए
 असखेजगुणा, अहोलीए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणवाएण सप्तत्योधा येइदिया अस
 पज्जन्गा उहुलोए । उहुलोयतिरियलोए सखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए अस
 खेजगुणा, अहोलीए सखे०, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणवाएण सप्तत्योधा येइदिया पज्जन्गा उहुलोए उ
 हुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोली
 ए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणवाएण सप्तत्योधा तेइदिया उहुलोए उहुलीयतिरियलो

क्यगुणा अपासोबतिपग्गाले उअक्यगुणा अपोसोले सअग्गुणा । तियग्गुणा सअग्गुणा । सेयानुपातेन सअग्गुणा । होन्त्रिया अपपोसका कथ्येलाक
 कथ्येलाकतिर्येसोले सअग्गुणा लेलाकप उअक्यगुणा अपोसोबतिपग्गाले उअग्गुणा । अपोसोले सअग्गुणा । तियग्गुणा सअग्गुणा । सेयानुपातेन
 सअग्गुणा हीन्त्रिया पयातका कथ्येसोले कथ्येलाकतिपग्गाले उअक्यगुणा अपोसोले सअग्गुणा । अपोसोले सअग्गुणा । तियग्गुणा सअग्गुणा । सेयानुपातेन

ए अस्० । तेलुक्के अस्सखेज्जगुणा, अघोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताण्वाएण स
स्योवा तेइदिया अपज्जगुणा उहुलीए उहुलीयतिरियलीए अस्सखेज्जगुणा, तेलुक्के अस्सखेज्जगुणा, अ
होलीयतिरियलीए अस्सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताण्वाएण स
त्योवा तेइदिया पज्जगुणा उहुलीए उहुलीयतिरियलीए अस्सखेज्जगुणा, तेलुक्के अस्सखेज्जगुणा, अहोली
ए तिरियलीए अस्सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताण्वाएण स
त्योवा वउरिदिया नीया उहुलीए उहुलीयतिरियलीए अस्सखेज्जगुणा । तेलुक्के अस्सखेज्जगुणा, अहोली
यतिरियलीए अस्सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताण्वाएण स
वउरिदिया नीया अपज्जगुणा उहुलीए, उहुलीयतिरियलीए अस्सखेज्जगुणा, तेलुक्के अस्सखेज्जगुणा, अ
होलीयतिरियलीए अस्सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताण्वाएण स

[illegible]

त्योवा चउरिदिया जीवा पज्जत्तगा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अस्खेज्जगुणा, तेलुक्के अस्खेज्जगुणा
 अहोलीयतिरियलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणुवाएण सव्वत्यो
 वा पचिदिया तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलीए तिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए
 सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलोए अस्खेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्योत्रा पचिदिया
 अ्पज्जत्तया, तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलीयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए
 सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा पचिदिया पज्जत्ता
 उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अस्०, तेलुक्के अस्०, अहोलीयतिरियलोए सखेज्ज० अहोलीए सखेज्ज०
 तिरियलोए अस्खेज्ज० । खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा पुठविकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए

पोसोवतियक्ख्लोक्क असंख्यगुणा अपोसोके सवययगुणा स्तियक्ख्लोके सवययगुणा । अत्रानुवातेन सवस्तोमायतारन्ध्रिया जीवाः पर्याप्तगा ऊच्य
 लोके ऊच्यलोकातिरियक्ख्लोके असंख्यगुणा अपोसोकातिरियक्ख्लोक्क असंख्यगुणाः अपोसोके संख्येयगुणाः तिरियक्ख्लोके संख्येयगुणा ।
 अत्रानुवातेन सवस्तोमाः पन्धेन्ध्रिया खेत्तोक्के अहोलीयतिरियक्ख्लोके सवययगुणाः अपोसोकातिरियक्ख्लोके सवययगुणाः तिरियक्ख्लोके
 सवययगुणा । अत्रानुवातेन सवस्तोमाः पन्धेन्ध्रियाः अपर्याप्तगा खेत्तोक्क ऊच्यलोकातिरियक्ख्लोके असंख्येयगुणा अपोसोकातिरियक्ख्लोके
 असंख्यगुणाः अपोसोके संख्येयगुणा अपोसोके संख्येयगुणाः । अत्रानुवातेन सवस्तोमाः पन्धेन्ध्रियाः पर्याप्ता ऊच्यलोके
 ऊच्यलोकातिरियक्ख्लोके असंख्येयगुणाः अपोसोकातिरियक्ख्लोक्क असंख्येयगुणाः अपोसोके संख्येयगुणाः तिरियक्ख्लोके असंख्येयगु
 णाः । अत्रानुवातेन सवस्तोमाः पचिदीकायिकाः ऊच्यलोकातिरियक्ख्लोक्क विक्षेयायिकाः, तिरियक्ख्लोके असंख्येयगुणाः त्रिलोक्के

विसंसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए
 विसंसाहिया । खंसाणवाएण सवत्थोवा पढयिकाइया अपज्जत्तया उहुलीयतिरियलोए अहोलीयतिरिय
 लोए विसंसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहो
 लोए विसंसाहिया । खंसाणवाएण सवत्थोवा पढयिकाइया पज्जत्तया उहुलोए तिरियलोए तिरियलीयअ
 होलोए विसंसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहो
 लोए विसंसाहिया । खंसाणवाएण सवत्थोवा पढयिकाइया अपज्जत्तया उहुलीयतिरियलोए वि
 संसाहिया । खंसाणवाएण सवत्थोवा पढयिकाइया अपज्जत्तया उहुलीयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि

पसंसेयमुयाः ऊर्दूलोके पसंसेयमुयाः अथोलीके विद्येवाचिबाः । सेवानुवातेन सबलोमा पयिबीकायिबाः अपर्यासा ऊर्दूलोकेतिर्यक्लोके च
 थोलीकेतिर्यक्लोके विद्येवाचिबाः तिर्यक्लोके चरयेयमुयाः त्रैलोक्य चरयेयमुयाः ऊर्दूलोके पसंसेयमुयाः अथोलीके विद्येवाचिबाः । सेवानु
 वतेन सर्वकामाः पयिबीकायिबाः पर्याप्ततया ऊर्दूलोके तिर्यक्लोकाथोलीके विद्येवाचिबाः तिर्यक्लोके चरयेयमुयाः त्रैलोक्य च
 रयेयमुयाः ऊर्दूलोके चरयेयमुयाः अथोलीके विद्येवाचिबाः । सेवानुवातेन सबलोमा पयिबीकायिबाः अपर्यासा ऊर्दूलोकेतिर्यक्लोके च
 विद्येवाचिबाः तिर्यक्लोके चरयेयमुयाः त्रैलोक्य चरयेयमुयाः ऊर्दूलोके पसंसेयमुयाः अथोलीके विद्येवाचिबाः । सेवानुवातेन सबलोमा
 पयिबीकायिबाः अपर्याप्ततया ऊर्दूलोकेतिर्यक्लोके अथोलीकेतिर्यक्लोके विद्येवाचिबाः । सेवानुवातेन सबलोमा पयिबीकायिबाः अपर्यासा ऊर्दूलोकेतिर्यक्लोके च
 चरयेयमुयाः अथोलीके विद्येवाचिबाः । सेवानुवातेन सर्वकामाः पयिबीकायिबाः अपर्यासा ऊर्दूलोकेतिर्यक्लोके च
 विद्येवाचिबाः तिर्यक्लोके चरयेयमुयाः त्रैलोक्य चरयेयमुयाः ऊर्दूलोके पसंसेयमुयाः अथोलीके विद्येवाचिबाः । सेवानुवातेन सबलोमा

सेसाहिया तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए विसे
 साहिया । खेत्ताणयाएण सव्वत्थोवा अयाउकाइया पज्जसया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि
 सेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए विसे
 साहिया । खेत्ताणयाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया,
 तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्ज०, उहुलोए असखेज्ज०, अहोलीए विसेसाहिया । खेत्ताण
 याएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जसया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि
 यलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खेत्ता
 णयाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जसया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि

लोक विरोधापिबा तियक्कलोके असखेयगुणा खेत्तोके असखेयगुणा ऊसुलोके असखेयगुणा । सेवानुवातेन सवस्ता
 मासेत्रावायिका ऊसुलोकेवियक्कलोके असखेयगुणा विरोधापिबाः तिर्यक्लोके असखेयगुणा त्रेलाके असखेयगुणा ऊसुलोके अस
 खेयगुणा अपासोके विरोधापिबाः । सेवानुवातेन सवस्तामा सत्रावायिकाः अपर्याप्तया ऊसुलोकेवियक्कलोके अपोसोकेवियक्कलोके विरोधापि
 बाः तियक्कलोके असखेयगुणा त्रेलोके असखेयगुणा ऊसुलोके असखेयगुणाः । सेवानुवातेन सवस्तामासज्जवायि
 काः पर्याप्तया ऊसुलोकेवियक्कलोके अपोसोकेवियक्कलोके विरोधापिबा तियक्कलोके असखेयगुणाः त्रेलोके असखेयगुणा ऊसुलोके असखेय
 गुणा अपोसोके विरोधापिबाः । सेवानुवातेन सवस्तामा वायुवायिकाः ऊसुलोकेवियक्कलोके विरोधापिबाः तियक्कलोके
 असखेयगुणा त्रेलोके असखेयगुणा ऊसुलोके असखेयगुणा अपासोके विरोधापिबाः । सेवानुवातेन सवस्तामा वायुवायिकाः अपर्याप्तया

उह्लोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सध्त्थोया वणस्सडकाडया अपज्जत्तया
 उह्लोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विनसाहिया, तिरियलोए असखिज्जगुणा, तेलुक्की असखिज्जगु
 णा, उह्लोए असखेज्जगुणा, अहोलाए विनसाहिया । खेत्ताणवाएण सध्त्थोया वणस्सडकाडया पज्ज
 त्तया उह्लोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विनसाहिया । खेत्ताणवाएण सध्त्थोया तस्सकाडया तेलुक्की
 ज्जगुणा, उह्लोए असखिज्जगुणा, अहोलोए विनसाहिया । खेत्ताणवाएण सध्त्थोया तस्सकाडया तेलुक्की
 उह्लोयतिरियलोए असखिज्जगुणा, अहोलायतिरियलोए सखेज्जगुणा, उह्लोए सखेज्जगुणा, अहोलोए
 सखेज्जगुणा, तिरियलोए असखिज्जगुणा । खेत्ताणवाएण सध्त्थोया तस्सकाडया अपज्जत्तया तेलुक्की उह
 लोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, उह्लोए सखिज्जगुणा, अहोलोए सखिज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्ज
 गणा । खेत्ताणवाएण सध्त्थोया तस्सकाडया पज्जत्तया तेलुक्की उह्लोयतिरियलोए असखिज्जगुणा, अहो
 लोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उह्लोए सखिज्जगुणा, अहोलाए सखिज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्जगु

कायका वेत्ताप्य ऊक्षुलोकातिपक्कलोक असस्सेयगुणा अपात्ताकातयफन्नाके सम्म्ययगुणा ऊक्षुलाके सत्थेयगुणा अपात्ताक सत्थेयगुणास्तिपक्कला
 के असम्पगुणा । अत्रानुपात्तन सवस्तामात्तसकायिका अपपाप्ततया वेत्ताप्य ऊक्षुलाकातिपक्कलोके असम्पगुणा ऊक्षुलोके सत्थेयगुणा । अपोलीके
 सत्थेयगुणास्तिपक्कलोके असम्पगुणा । अत्रानुपात्तन सवस्तामात्तसकायिका पर्याप्तता ऊक्षुलोकातयक्कलोके असम्पगुणा । अपोलीकातिप
 ग्लक सत्थेयगुणा ऊक्षुलोके सत्थेयगुणा अपात्ताके सम्म्ययगुणा स्तिपक्कला अपात्ताक असम्पगुणा । हारम् २४ । यत्तया प्रदत्त । जीवानामाप्य असम्प
 कायस्थानामपर्याप्तानां पर्याप्तानां सुप्तानां जायता समवृत्तानामसमवृत्तानां सात्तावेदज्ञानामसात्तावेदज्ञानामिन्द्रियाप्युक्तानां ना इन्द्रियो

यलोए अस्खेजगुणा, तेलुक्के अस्खेजगुणा, उहुलोए अस्खेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेज्ञा
णवाएण सव्त्योवा याउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ
स्खेजगुणा, तेलुक्के अस्खिजगुणा उहुलोए अस्खेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेज्ञाणयाएण
सव्त्योवा याउकाइया अपजप्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
अस्खेजगुणा, तेलुक्के अस्खेजगुणा, उहुलोए अस्खिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेज्ञाणयाएण
सव्त्योवा याउकाइया पजप्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
अस्खेजगुणा, तेलुक्के अस्खेजगुणा, उहुलोए अस्खेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेज्ञाणयाएण
सव्त्योवा वणस्सइकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के अस्खेजगुणा

अनुसोक्ततियक्लोके अपीसोक्ततियक्लोके विद्येवापिवाः तियक्लोके असदयेयमुदा औसोके असदयेयमुदा अनुसोके असदयेयमुदा अपोसोक्त
विद्येवापिवाः । वेदानुवातेन सुवस्तामा वायुकायिकाः पर्याप्ततया अनुसोक्ततियक्लोके अपोसोक्ततियक्लोके विद्येवापिवाः तियक्लोके असदये
ये अपोसोक्ततियक्लोके विद्येवापिवाः अपोसोक्त विद्येवापिवाः । वेदानुवातेन सुवस्तामा वायुकायिकाः तियक्लोके असदयेयमुदा अपोसोक्त
तिकायिका अपर्याप्ततया अनुसोक्ततियक्लोके असदयेयमुदा औसोके असदयेयमुदा अनुसोक्ततियक्लोके असदयेयमुदा अपोसोक्त
असदयेयमुदा अपोसोक्त विद्येवापिवाः । वेदानुवातेन सुवस्तामा वायुकायिकाः तियक्लोके असदयेयमुदा औसोके असदयेयमुदा अनुसोक्त
वापिवाः तियक्लोके असदयेयमुदाः औसोके असदयेयमुदाः अनुसोक्ततियक्लोके अपोसोक्ततियक्लोके विद्येवापिवाः तियक्लोके असदयेयमुदा

लीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा उहुलोए असखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया
 दिसाणुवाएण सव्वत्योवा पोगला उहुदिसाए अहोदिसाए विससाहिया उत्तरपुरिच्छिमेण दाहिणपच्चिच्छि
 मेणय दोवि तुल्ला असखेज्जगुणा। दाहिणपुरिच्छिमेण उत्तरपच्चिच्छिमेणय दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरिच्छि
 मेण असखेज्जगुणा पच्चिच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विससाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणुवाएण
 सव्वत्योवा दव्वाइ तलुक्के उहुलीयतिरियलोए अणतगुणाइ अहोलीयतिरियलोए विसेसाहियाइ उहुलोए
 असखज्ज० अहोलीए अणतगुणाइ तिरियलोए सखज्जगुणाइ दिसाणुवाएण सव्वत्योवा दव्वाइ अहोइ
 साए उहुदिसाए अणतगुणाइ उत्तरपुरिच्छिमेण दाहिणपच्चिच्छिमेण दोवि तुल्लाइ असखेज्जगुणाइ दाहिण
 पुरिच्छिमेण उत्तरपच्चिच्छिमेणय दोवि तुल्लाइ विसेसाहियाइ पुरिच्छिमेण असखेज्जगुणाइ पच्चिच्छिमेण वि
 सेसाहियाइ दाहिणेण विसेसाहियाइ उत्तरेण विसेसाहियाइ। एएसिण जेतं । परमाणुपोगलाण सखेज्जप

[illegible]

सुत्ताण जागराण समाहयाण सुसमाहयाण सातावदगाण अमातावेदगाण इदियउवउत्ताण णोढदियउव
उत्ताण सागारोवउत्ताण अणगारोउत्ताणय कवरे कयेरोहितो अण्णयावा यज्जयावा तुत्वावा विसेमाहिया
या २ गोयमा । ससुत्ताया जीवा अउत्तस कम्मस्स यधगा अपज्जसया सखिज्जगुणा , सुत्ता सखिज्जगु
णा , समाहया सखिज्जगुणा , सातावदगा सखिज्जगुणा , इदियउवउत्ता सखिज्जगुणा , अणगारोवउत्ता
सखिज्जगुणा , सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा , नाढदियउवउत्ता विनसाहिया , असातावेदगा विससाहिया
असमाहिया विससाहिया , जागरा विससाहिया , पज्जसगा विससाहिया , अउत्तस कम्मस्स अयधगा
विससाहिया , दार २५ । खेत्ताणयाएण ससुत्तायाएण ससुत्ताया पोगला तेलुक्के उहुलीयतिरियलोए अणतगुणा अही

पुत्ताणा साकारोपपुत्तामामसाकारोपपुत्तामं कवरे २ अण्णयावा वुत्ता वा तुत्ता वा विद्यापाहिता वा १ । गौतम । सबसोमा जीवा कायुप । क
मंभो ययका अपयसिक्का सक्ययगुणा सुत्ताः सक्येयगुणा कायतः सक्येयगुणाः सातावेदकाः सक्येयगुणाः इन्द्रियोपपु
त्ता सक्ययगुणा यत्ताकारोपयत्ताः सक्ययगुणाः साकारोपपुत्ताः सक्येयगुणाः मो इन्द्रियोपपुत्ताः सक्येयगुणाः विद्यापाहिताः । असत्तवदकाः
विद्यापाहिताः असमाहया विद्यापाहिताः कायतो विद्यापाहिताः पयोसका विद्यापाहिता कायप कम्मका अयत्तका विद्यापाहिताः । असत्तवदकाः
पञ्चानुवातन सबकाया पुद्गला खेत्तोक्के उहुत्ताकतियक्कोक्के अणन्तगुणा अयोत्तोक्कतियक्कोक्के विद्यापाहिताः । असत्तवदकाः
साके विद्यापाहिताः । विद्यानुवातेन सर्वसोमा पुद्गलाः असुविद्यायापथीविद्यायां विद्यापाहिता पुद्गलाः अतरपूर्वस्यां दण्डि पयिमायां च इयोरपि
तुत्ता असयययगुणाः । दण्डि पूर्वस्यामुत्तरपयिमायां च इयोरपि तुत्ता विद्यापाहिता पुद्गला असयययगुणाः पयिमायां विद्यापाहिता

कयरे २ हितो अप्याधा १ ? गोयमा । सवृत्योवा एगपदेसोवगाढा पगला दवृतयाए सखेज्जपएसोवगा
ढा पगला दवृतयाए सखिज्जगुणा असखिज्जपदेसोगाढा पोगला दवृतयाए असखिज्जगुणा पदेसठयाए
सवृत्योवा एगपदेसोगाढा पोगला पदेसठयाए सखिज्जपदेसोगाढा पोगला पदेसठयाए सखेज्जगुणा अ
सखेज्जपदेसोगाढा पोगला पदेसठयाए असखेज्जगुणा दवृतपदेसठयाए सवृत्योवा एगपदेसोगाढा पोग
ला दवृतयपदेसठयाए सखेज्जपदेसोगाढा पोगला दवृतयाए सखेज्जगुणा तेचेव पएसठयाए सखेज्जगुणा । एएसिण
असखिज्जपएसोगाढो पोगला दवृतयाए असखेज्जगुणा तचेव पएसठयाए असखिज्जगुणा । एएसिण
अतं ! एगसमयठित्तीयाण सखिज्जसमयठित्तीयाण असखिज्जसमयठित्तीयाणय पोगलाण दवृतयाए पदे
सठयाए दवृतपदसठयाए कयरे २ हितो अप्याधा १ ? गोयमा । सवृत्योवा एगसमयठिइया पोगला
दवृतयाए सखेज्जसमयठित्तीया पोगला दवृतयाए सखेज्जगुणा असखिज्जसमयठिइया पोगला दवृतयाए

प्रदेशाद्यतया सशयपमदशावगाढः पुद्गला प्रदर्शार्थतया सशयेयप्रदेशावगाढः पुद्गलः प्रदेशाद्यतया असशयेयगुणा द्रव्यप्रदर्शार्थ
तया स्वस्तीमा एकमदशावगाढः पुद्गला द्रव्याद्यप्रदर्शाद्यतया सशयेयप्रदर्शावगाढः पुद्गलः द्रव्याद्यप्रदर्शावगाढः पुद्गलाः द्र
व्याद्यतया सशयगुणाः ते चैव प्रदर्शाद्यतया सशयगुणा असशयेयप्रदेशावगाढः पुद्गलः द्रव्याद्यतया असशय
गुणाः । एतत्परि नदल । एकसमयस्थितिकामा सशयसमयास्थितिकानामसशयेयसमयस्थितिकाना पद्गलाना द्रव्याद्यतया प्रदर्शार्थतया द्रव्याद्यप्र
देशाद्यतया कतरे० p । गीतम् । सर्वलोभा एकसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्याद्यतया सशय समयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्याद्यतया सशयेयगुणा अ
सशयसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्याद्यतया असशयगुणा प्रदर्शाद्यतया स्वस्तीमा एकसमयस्थितिकाः पुद्गलाः प्रदेशाद्यतया सशयेयसमयस्थिति

देमियाण असस्विज्जपदेसियाण अणतपदेवियाणय खधाण दसुठयाए पएसठयाए दसुठ पदेसठयाए
 कयरेर हितो अयाया ४ गो ० । ससुठ्योया अणतपदेसिया खधा दसुठयाए परमाणुपोगला वसुठयाए अ
 णतगुणा सस्विज्जपदेसिया खधा दसुठयाए सस्विज्जगुणा असस्विज्जपदेसिया खधा दसुठयाए असस्विज्जगुणा
 पदेसठयाए ससुठ्योया अणतपदेसिया खधा पदेसठयाए परमाणुपोगला अणतगुणा सस्विज्जपदेसिया
 खधा पदेसठयाए सस्विज्जगुणा असस्विज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए असस्विज्जगुणा दसुठपदेसठयाए ससु
 थ्योया अणतपदेसिया खधा वसुठयाए तेवेव पदेसठयाए अणतगुणा परमाणुपोगला दसुठपदेसठयाए
 अणतगुणा सस्विज्जपदेसिया खधा दसुठयाए सस्विज्जगुणा तेवेव पदेसठयाए असस्विज्जगुणा असस्विज्ज
 पदेसिया खधा दसुठयाए असस्विज्जगुणा तेवेव पदेसठयाए असस्विज्जगुणा । एएसिण जेत ! एगपदेसो
 गाढाण सस्विज्जपदेसोगाढाण असस्विज्जपदेसोगाढाणय पोगलाण दसुठयाए पदेसठयाए दसुठपदेसठयाए

त्याः प्रदद्याचतया परमाहुपुद्गला अनन्तमुक्ताः स्वत्वाः प्रदद्याचतया सकयेयमुद्गिकाः स्वत्वाः प्रदेष्टार्येतया अस
 रयेयमुद्गिकाः द्रव्याचप्रदद्याचतया सर्वतोभाः अनन्तप्रदेष्टिकाः स्वत्वाः द्रव्याचतया ते वेव प्रदद्याचतया अनन्तमुक्ताः परमाहुपुद्गला द्रव्याचप्रदद्याच
 तया अनन्तमुक्ता सकयेयमुद्गिकाः स्वत्वाः द्रव्याचतया सकयेयमुक्ताः तवेव च प्रदद्याचतया सकयेयमुक्ता सकयेयमुद्गिकाः स्वत्वाः द्रव्याचतया च
 सकयेयमुद्गिकाः तवेव प्रदद्याचतया असस्वेयमुक्ताः । एतथा जेत । एकप्रदेष्टावनाढाणा सकयेयमुद्गिकाः दानामसकयेय प्रदेष्टावनाढाणा च पुत्र
 तामा द्रव्याचतया प्रदेष्टाचतया द्रव्यप्रदेष्टार्येतया च अनन्त ० ० । नीतम् । सबत्तोभा यकप्रदद्यावनाढाः पुद्गला द्रव्याचतया सकयेयमुद्गिकाः प्रदद्याचतया
 दः पुद्गला द्रव्याचतया सकयेयमुक्ताः अनन्तमुद्गिकाः पुद्गला द्रव्याचतया सकयेयमुक्ताः प्रदद्याचतया सबत्तोभा यकप्रदद्यावनाढाः पुद्गलाः

छद्मं नृते । सर्वजीवपञ्च महाद्वय वत्तहस्वामि सर्वलोका गङ्गावक्त्रातिथिमणस्वा मणुस्सीठि सखेजगुणाद्य
 यादरतउकाडयापञ्चतया अस्सखिजगुणा अणुसरोयवाडया देवा अस्सखेजगुणा उद्यरिमगेवेज्जागा देवा सखे
 सखेजगुणा मज्झिमगेवेज्जागा देवा सखेजगुणा हेठिमगेवेज्जागा देवा सखेजगुणा अणुएकप्ये देवा सखेजगुणा अणु
 जगुणा अणुएकप्ये देवा सखेजगुणा पाणए कप्ये देवा सखेजगुणा अणुएकप्ये देवा सखेजगुणा अणु
 सत्तमाए पुठवीए णेरइया अस्सखेजगुणा ठठीए तमाए पुठवीए णेरइया अस्स० सहस्सारे कप्ये देवा अ
 सखेजगुणा महासुक्के कप्ये देवा अस्सखिजगुणा पचमाए धूमप्यजाए पुठवीए णेरइया अस्स० लतए कप्ये
 देवा अस्सखेजगुणा, चउत्थीए पकप्यजाए पुठवीए णेरइया अस्सखेजगुणा वज्रलोए कप्ये देवा अस्सखेज्जा
 गुणा तच्चाए वालुयप्यजाए पुठवीए णेरइया अस्सखेजगुणा माहिदे देवा अस्सखिजगुणा सणकुमारि कप्ये

पय नदत्त । सर्वजीवपञ्च महाद्वय वत्तपिप्पामि सर्वलोका गङ्गावक्त्रातिथिमणस्वा मणुः सख्यातगुणा यादरतेज्जायिका पर्याप्ततया
 असखेयगुणा अनुत्तरोपपातिनो देवा असखेयगुणा उपरितनयेवपका देवा असखेयगुणा मध्यमयेवपका देवा असखेयगुणाः अथस्तमयेवपका देवा
 असखेयगुणा अष्टुत कल्पे देवाः असखेयगुणाः आरक्षे कल्पे देवा असखेयगुणाः पानये कल्पे देवाः असखेयगुणाः आनते कल्पे देवा असखेयगुणाः
 अथ सप्तमाया पाचव्या नैरयिका असखेयगुणा पष्ठमाया पृथिव्या नैरयिका अस० सडझार कल्प देवा असखेयगुणा महागुरु कल्पे देवा अ
 असखेयगुणाः पञ्चमाया पूमप्रमाया पृथिव्या नैरयिका असखेयगुणाः लानके कल्पे देवा असखेयगुणाः चतुष्पा पट्टप्रमाया पृथिव्या नैरयिका
 असखेयगुणाः अष्टलोके कल्पे देवा असखेयगुणाः दृतीयस्त्री वासुधप्रमाया पृथिव्या नैरयिका असखेयगुणा माहर्द्रे देवा असखेयगुणाः सुत
 रहुमार कल्प देवा असखेयगुणाः द्वितीयस्या अकरप्रमाया पृथिव्या नैरयिका असखेयगुणाः इत्याने कल्पे देवा

असखिजगुणा पदसठयाए सवृत्योवा एगसमयठिईया पोगगला पदसठयाए सखेजसमयठिईया पोगगला
पपसठयाए सखिजगुणा असखिजसमयठिईया पोगगला पदसठयाए असखिजगुणा दसठयपदसठयाए
सवृत्योवा एगसमयठिईया पुगगला दसठपएसठयाए सखेजसमयठिईया पोगगला दसठयाए सखेजगुणा
तचय पदसठयाए सखेजगुणा असखिजसमयठिईया पोगगला दसठयाए असखिजगुणा तेचय पदस
ठयाए असखिजगुणा । एएसिण नत ! एगगुणकालगान सखिजगुणकालगान असखेजगुणकालगान
अणतगुणकालगानच पोगगलान दसठयाए पदसठयाए दसठपदसठयाए कयरे कयरोहेतो अण्प्याथा ४
? गोयमा । जहा परमाणुपोगगला तहा ज्ञाणियह्वा, एव सखेजगुणकालयाणवि, एव सेसाणवि वसुरस
गधा ज्ञाणियह्वा, फासाण कस्करमउयगरुयलज्जायाण जहा एगपदसीगाढाण ज्ञाणिय तहा ज्ञाणियह्वा अण्
सेसा फासा जहा वखा ज्ञाणिया तहा ज्ञाणियह्वा दार २६ ॥

[illegible]

रिदिया पञ्चतया सखेज्ज० पदिया पञ्चाग्यिसेसाहिया वेइदिया पञ्चाग्या यिसेसा । पचिदिया अण्ण
सया अण्णसखिज्जगुणा अउरिदिया अण्णपञ्चातया विसंसाहिया तेइदिया अण्णपञ्चाग्या विसंसाहिया वेइदिया
अण्णपञ्चाग्या विसंसाहिया पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाइया पञ्चातया अण्णसखेज्जगुणा यादरनिगोदा पञ्चा
ग्या अण्णसखेज्जगुणा यादरपुढसिकाइया अण्णपञ्चाग्या अण्णसखेज्जगुणा यादरअण्णउकाइया पञ्चातया अण्णसखिज्ज
गुणा यादरवाउकाइया पञ्चाग्या अण्णसखिज्जगुणा यादरतेउकाइया अण्णपञ्चाग्या अण्णसखेज्जगुणा पत्तेयसरी
रयादरवणस्सइकाइया अण्णपञ्चाग्या अण्णसखिज्जगुणा यादरनिगोदा अण्णपञ्चाग्या सखिज्जगुणा यादरपुढायि
काइया अण्णपञ्चाग्या अण्णसखेज्जगुणा यादरअण्णउकाइया अण्णपञ्चाग्या अण्णसखिज्जगुणा यादरताउकाइया अण्ण
पञ्चाग्या अण्णसखेज्जगुणा सुज्जमतउकाइया अण्णपञ्चाग्या अण्णसखेज्जगुणा सुज्जमपुढायकाइया अण्णपञ्चाग्या विसं

[illegible]

देवा अस्खेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पज्जाए पुठ्थीए भेरइया अस्स० समुच्छिममणुस्सा अस्सखेज्ज० ईसाणे
 कप्पे देवा अस्स० ईसाणे कप्पे देवीत्तं सस्से०, सोहम्मो कप्पे देवा सस्खेज्ज० सोहम्मो कप्पे देवीत्तं सस्खेज्ज०
 गुणात्तं जवणथासीदेवा अस्सखेज्जगुणा जवणथासिणीत्तं देवीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं । इणीसे रयणप्पज्जाए पुठ्ठ
 थीए नरइया अस्सखेज्जगुणा सव्वचरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया पुरिसा अस्सखेज्जगुणा सव्वचरपच्चिदियति
 रिरक्कजोणिणीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं थलयरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया पुरिसा अस्सखेज्जगुणा थलयरपच्चिदियति
 रिरक्कजोणिणीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं जलयरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया पुरिसा सस्खेज्जगुणा जलयरपच्चिदियतिरि
 रक्कजोणिणीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं थाणमतरा देवा सस्खेज्जगुणा थाणमतरात्तं देवीत्तं सस्खेज्ज० जोहसिया देवा
 सस्खेज्जगुणा जोहसिणीत्तं देवीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं सव्वहयरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया नपुसया सस्खेज्ज० थल
 यरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया नपुसया सस्खेज्ज० जलयरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया नपुसया सस्खेज्ज० थल
 यरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया नपुसया सस्खेज्ज०

वव० इच्छाणे कप्पे देवाः वक्कयेयमुक्काः। सोपमे कहर देवा वक्कयेयमुक्काः। सोपमे कप्पे देवाः वक्कयेयमुक्काः। वक्कयेयमुक्काः जवणथासिणीत्तं देवीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं । इणीसे रयणप्पज्जाए पुठ्ठ
 थीए नरइया अस्सखेज्जगुणा सव्वचरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया पुरिसा अस्सखेज्जगुणा सव्वचरपच्चिदियति
 रिरक्कजोणिणीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं थलयरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया पुरिसा अस्सखेज्जगुणा थलयरपच्चिदियति
 रिरक्कजोणिणीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं जलयरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया पुरिसा सस्खेज्जगुणा जलयरपच्चिदियतिरि
 रक्कजोणिणीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं थाणमतरा देवा सस्खेज्जगुणा थाणमतरात्तं देवीत्तं सस्खेज्ज० जोहसिया देवा
 सस्खेज्जगुणा जोहसिणीत्तं देवीत्तं सस्खेज्जगुणात्तं सव्वहयरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया नपुसया सस्खेज्ज० थल
 यरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया नपुसया सस्खेज्ज० जलयरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया नपुसया सस्खेज्ज० थल
 यरपच्चिदियतिरिक्कजोणिया नपुसया सस्खेज्ज०

रिदिया पञ्जात्तया सखेज्ज० पदिया पञ्जात्तायिसेसाहिद्या वेइदिया पञ्जात्ता त्रिसेसा । पचिदिया अयपजा
त्तया अयसखिज्जगुणा चउरिदिया अयपञ्जात्तया त्रिसेसाहिद्या वेइदिया अयपञ्जात्तया त्रिसेसाहिद्या वेइदिया
अयपञ्जात्तया त्रिसेसाहिद्या पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाइया पञ्जात्तया अयसखेज्जगुणा यादरनिगोदा पञ्जा
त्तया अयसखेज्जगुणा यादरपुठसिकाइया अयपञ्जात्तया अयसखेज्जगुणा यादरआउकाइया पञ्जात्तया अयसखिज्ज
गुणा यादरवाउकाइया पञ्जात्तया अयसखिज्जगुणा यादरतेउकाइया अयपञ्जात्तया अयसखेज्जगुणा पत्तेयसरी
रयादरवणस्सइकाइया अयपञ्जात्तया अयसखिज्जगुणा यादरनिगोदा अयपञ्जात्तया सखिज्जगुणा यादरपुठयि
काइया अयपञ्जात्तया अयसखेज्जगुणा यादरआउकाइया अयपञ्जात्तया अयसखिज्जगुणा यादरताउकाइया अयप
ञ्जात्तया अयसखेज्जगुणा सुज्जामतेउकाइया अयपञ्जात्तया अयसखेज्जगुणा सुज्जामपुठयिकाइया अयपञ्जात्तया त्रिसे

विशेषपाहिताः द्वीन्द्रियाः पर्याप्त विज्ञेयाः० । पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तया असुर्येयगुणाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तया विशेषपाहिताः । खोन्द्रिया अप
र्याप्तया विशेषपाहिता द्वीन्द्रिया अपर्याप्तया विशेषपाहिताः प्रत्येकशरीरयादरवणस्सपत्तिक्कायिकाः पर्याप्तया असुर्येयगुणा यादरनिगोदाः पर्याप्त
या असुर्येयगुणाः यादरपचिचीक्कायिकाः अपर्याप्तया असुर्ये० यादरवायुक्कायिकाः पर्याप्तया असुर्ये० यादरतेज
क्कायिकाः अपर्याप्तया असुर्ये० प्रत्येकशरीरयादरवणस्सपत्तिक्कायिकाः अपर्याप्तया असुर्ये० यादरनिगोदा अपर्याप्तया असुर्ये० यादरपचिचीक्कायिका अपर्याप्त
या असुर्ये० यादरवायुक्कायिका अपर्याप्तया असुर्ये० यादरवायुक्कायिका अपर्याप्तया असुर्ये० सुक्ष्मपचिचीक्कायिका
अपर्याप्तया विशेषपाहिताः सुक्ष्माक्कायिका अपर्याप्तया विशेष० सुक्ष्मवायुक्कायिका अपर्याप्तया विशेषपा० सुक्ष्मतेजः क्कायिका अपर्याप्तया असुर्ये० सुक्ष्म
पचिचीक्कायिकाः पर्याप्तया विशेष० सुक्ष्माक्कायिका अपर्याप्तया विशेषपा० सुक्ष्मवायुक्कायिकाः पर्याप्तया विशेष० सुक्ष्मपचिचीक्कायिका अपर्याप्तया असुर्ये० सुक्ष्म

साहिंया सुज्जमथाउकाइया अणपज्जसया विसेसाहिंया सुज्जम
तेउकाइया पज्जसया अणसखिज्जं० सुज्जमपुढाविकाइया पज्जसया विसेसाहिंया सुज्जमथाउकाइया पज्जस
या विसेसाहिंया सुज्जमथाउकाइया पज्जसया विसेसाहिंया सुज्जमथाउकाइया पज्जसया विसेसाहिंया सुज्जम
गोदा पज्जसया सखिज्जगुणा अणतगुणा पणवसिद्धिंया सुज्जमणिगोदा अणपज्जसया सुज्जमणि
गुणा वादर धणस्सइकाइया पज्जसया अणतगुणा वादरपज्जसया विसेसाहिंया वादरवणस्सइकाइया अणत
ज्जसया अणसखिज्जगुणा वादरपज्जसया विसेसाहिंया वादरा विसेसाहिंया सुज्जमवणस्सइकाइया अणपज्ज
सया अणसखेज्जगुणा सुज्जमा अणपज्जसया विसेसाहिंया सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जसया सखेज्जं० सुज्जम
पज्जसया विसेसाहिंया सुज्जमा विसेसाहिंया नवसिद्धिंया विसेसाहिंया निगोदा जीवा विसेसाहिंया धण
स्सइजीवा विसेसाहिंया एणिदिंया विसेसाहिंया तिरिक्कजोणिंया विसेसाहिंया मिक्खदिठ्ठी विसेसाहिंया
अधिरया विसेसाहिंया ठउमत्या विसेसाहिंया सजोगी विसेसाहिंया ससारत्या विसेसाहिंया सव्वजीवा वि
सेसाहिंया ॥ पण्यत्रणाए नगवहंए वज्जवसव्वपदं सम्मत्तं ॥

विनीटाः पर्याप्तताः सुखेऽप्यन्यथाः ॥ ३ ॥
 रण्योपायः विद्यायाः ॥ ४ ॥
 सुखेऽप्यन्यथाः सुखेऽप्यन्यथाः ॥ ५ ॥
 यथाऽप्यन्यथाः यथाऽप्यन्यथाः ॥ ६ ॥
 प्रजापत्याः भगवत्याः ॥ ७ ॥

साहिंया सुकमथाउकाइया अणसुअया विसेसाहिंया सुकम
तेउकाइया पणसुअया असुखिअं सुकमपुठविकाइया पणसुअया विसेसाहिंया सुकमथाउकाइया पणसुअ
मा विसेसाहिंया सुकमथाउकाइया पणसुअया विसेसाहिंया सुकमथाउकाइया पणसुअया विसेसाहिंया सुकम
गोदा पणसुअया सुखिअगुणा अणसुअया विसेसाहिंया सुकमथाउकाइया पणसुअया विसेसाहिंया सुकम
गुणा वादर वणस्सइकाइया पणसुअया अणसुअया विसेसाहिंया सुकमथाउकाइया पणसुअया विसेसाहिंया सुकम
अणसुअया सुखिअगुणा वादरपणसुअया विसेसाहिंया सुकमथाउकाइया पणसुअया विसेसाहिंया सुकम
तया अणसुअगुणा सुकमा अणसुअया विसेसाहिंया सुकमथाउकाइया पणसुअया विसेसाहिंया सुकम
पणसुअया विसेसाहिंया सुकमा अणसुअया विसेसाहिंया सुकमथाउकाइया पणसुअया विसेसाहिंया सुकम
स्सइजीवा विसेसाहिंया एगिदिया विसेसाहिंया तिरिकजोणिया विसेसाहिंया विसेसाहिंया विसेसाहिंया
अणसुअया विसेसाहिंया उमत्या विसेसाहिंया सजोगी विसेसाहिंया ससारत्या विसेसाहिंया ससुजीवा वि
सेसाहिंया ॥ पणसुअया ए नगयइए वणसुअपद समत्त ॥ ३ ॥

[illegible]

